No ६१३८ — ५८



अथ अंवरीष अस्य चरितं ॥ सोरठा ॥ गुरुव
र दीन नि वाज । इह आख्यान वखान मैं अं
वरीष ऋषि राज ॥ कीन जथा श्रवणन क
हो ॥ चौपाई ॥ अव तहि चरित चारु वर आ
ना । करहुं मोर मति जथा वखाना । अदभु
त स्रवद सुभ्र मन भावन । कृस भक्ति रिति
प्रेम वढावन । परम पुनीत भीत भ्रम हारी
जथा प्रसिद्ध लोक जग मारी । रहा एकमें

८
मं॰
१

डिल पति काहू॥ अलप नृपति संज्ञा जगजा
हू॥ पुत्री एक रुचिर गृह नामा॥ अति सुशी
ल सुभग गुण रामा। सुततें अधिक प्रानतें
प्यारी। जननि जनक जनु जियन निहारी।
समय पाय पुत्री नृप सोई। जुवा वैस कहं
प्रापत होई॥ मंडलीस नव नाम सुहावा॥
सदिन सोधि उद वाहु रचावा॥ लागे विवि
ध वाजने वाजे। मंगल मंजु मनोहर साजे।

करहिं गान कल कोकल वैनी। सुंदर वदनि ललित मृग नैनी। उतसभ भयो भूप गृहमा
रा। साज समाज विविध परकारा। निज वि
वाह रचना बरजोई। देखि दृगन नलयो न्रप
सोई। त्यगत लाज संकोच विहाई। भाषन ल
गी जनक पैं आई। विनय मोर पित सुनहु
सुजाना। अंबरीष छित पति विनु आना। सो
वरा। मैन वरहुं जगकोय। सत्य मोर प्रण

भ०
२

जनक इह संशय नाहिन होय। इहि मै कछु किंचन प्रभू ॥२॥ टीका। नाभा दासजी कहते हैं कि हे दीनोके पाल गुरु महारा ज इह एक गाथ जो अंबरीष राजाकी मैने जैसे सुनीथी सो कथन कर चुकाहूं अब तिस की और दूसरी गाथा जैसीकमेरी बुद्धीके अनुसा र होसकतीहै गायन करताहूं सो कैसीहै कि ब डीसुंदर अदभुत और सुख दायक मनकोभावती

२

भक्ती और प्रेम के अधिक करने वाली बड़ी
पवित्र है भय और भ्रमको भी नास करने वा
ली है कहते हैं कि एक कोई मंडिल पती
छोटासा राजाथा तिसके घर मे एक कन्या
उपजती भई सो कैसी कि बड़ी सुंदर और
सुशील सर्व गुणोंकी खानी और माता पिता
को प्राणोसे प्यारीथी तब समय पायकर
सो राजाकी कन्या जवा अवस्थाको प्रापत।

होगई राजाने जो देखा कि कन्या वर लायक
भईहै तन काल सुभदिन ग्रोर महूरत विचा
र कर तिसके विवाहका प्रारंभ करदिया न
व ग्रनेक प्रकारके बाजे जोहैं सो बाज
ने लगे ग्रौर घर घर मै मंगल ग्रौर
उत्सव होने लगे राजा के भवनो मै
वंदनि वार ग्रौर धजा पता का इत्यादि
सब सजाय गये को कल वैनी ।

३

और मृग नैनी वाला मिलकर बडे हरषसे गा
यन करने लगीं इस प्रकार अपने विवाहकी
रचना देखकर सो राजाकी कन्या लाज और
संकोचको त्यागहुये अभय होकर पिताके
पास आय करके कहने लगी कि हे तात
मै जानतीहूं जो तुमने मेरे विवाहकी रच
ना रचाईहै परंतु इस मे मेरा प्रणहै सो आ
प सुनो कि मै अंबरीष राजाके विना संसा

रैसे और किसीको नहीं वरूंगी हे पिता इहमे
रा प्रण सत्य करके है इसमैं कुछ संशय न
हींहै।२।चौपाई।कबहुं कि निदरि मोर प्रण
एहा।वला तकार आन नकि गेहा।करहु
विवाह मोर नहि संगा।तव विलोकि आप
न प्रण भंगा।इह कायानिज देहुं तयागी।
मोहि पति अंबरीष हित लागी।सुनि अस
वचन पुत्रि निजराई।भयो सोच वस हरष।

बिहाई। चिंतन करत बिपिन जिय माहीं। कछु बिचार बनि आवत नाहीं। तब निज पतनि निकट न्पजाई। लगेपा कहन अस बदन बुझाई। सुनु तोर मति भई बौरानी अन हित बिकट करत मखे बानी। महं नरीस दात जगसारी। सकुनि अंबरीष उ पकारी। चक्रावती भूप बर सोई। आज जा स सदृश नहीं कोई। मैलहु मंडली स धन

९ भे. ५

हीना। समता जाय तासु किमि कीना। कहि
विधि करहिं गृहृण मम सोई। श्रुति प्रवीन ता
ज ऋष जोई। इह संकोच सोच मोहि भारी।
यद्यपि वनहिं बात सब प्यारी। तद्यपि कह
हिं कवन नहि जाई। कन्या वरहु असक नृप
आई। पति माव सुनत वचन अस रानी। वि
थत सोच वस उर विसमानी। प्रीति पूर्वक
सुता बुलाई। विविध भांति सादिर समझाई

५

सुनहु शुचि गुन सील प्रवीना । हमहें असमक दीन धन हीना । ते उदार त्रैलोक उजागर । स हां भूप संपति गुण सागर । हमरी उन मन कस बनि आई । कहां मेरु गौरव कहं राई । सोरठा । सुननहिं राज कुमारि । निज जननि सुख वचन अस । संजुत सपथ उचारि । क हत सुनहु प्रण मात मम ।२। टीका । फिर राज कुमारी कहने लगी कि हे पिता जी ।

९ मं. ६

कदी तुम मेरे प्रणको निदर करके जोरावरी।
किसी और के साथ मेरा विवाह कर देवोगे तो
मैं अपना प्रण भंग जानकर राजा अंवरीषके
हिनसे प्राणोंका नास कर देऊंगी एक क्षण
भी नाजीऊंगी ऐसे पुत्री का वचन सुनकर
राजा हरषसे रहित होकर वडे शोकको प्रा
पत होजाता भया और व्याकुल होकर हृद
य मे अनेक विचार करने लगा परंतु जव

६

कुछ वन नहीं पड़ा तब अपनी स्त्रीको पास।
बुलाय कर कहने लगा कि हे वाले तेरी क
न्यां की बुद्धी बावरी होगईहै जोलज्जाको त्या
ग कर बड़े कठिन और अन हित वचन जो
हैं से निरशंक होकर कहतीहै देखो वह
भूप शिरोमणी राजा अंबरीष चक्रवती औ
र सूक्तनरूप परम उपकारी और मै छोटेसे
एक मंडलका पती दीन और धनसे हीन।

९ भं. २

मेरेसे तिसकी बरोबरी कैसे होसकतीहै कि जि
सके समान जगतमै आज हमरा कोई नहींहै
और वह मेरे ऐसे दीनकी कन्याको किस प्रका
र वरेगा इत्यादी इह सोच और संकोच मेरे
चित्तमै अतसे करके है यद्यपि कदाचित मे
रे मनमै इसबातीका उतसाह भी हो जावे त
द्यपि तिस महान राजाको कौन जायकर क
हे कि तुम अमक राजाकी कन्या जोहै सो व

२

तो इस प्रकार पतीके मुखसे वचन सुनकर
रानी बड़ी व्याकुल और सोचके वश होक
र अनसे प्रेम और प्रीतीसे पुत्रीको पास बि
ठाय करके अनेक भांतीसे समझाने लगी
किहे सुशीले और प्रवीन पुत्री तू बिचार
करके देख कि हम सामर्थसे रहित दीन
और धन हीन तथा राजके अधिकारी
और वह महाभूप परम उपकारी गुणोंका

समुद्र तीन लोकमै उजागर हमारी उनसे
कैसे बन आवेगी हे पुत्री कहा मेरु और क
हा राई ऐसे माताके मुखसे वचन सुनक
र सो राजाकी कन्या मुगंद करके माताके
मनभाव जैसा प्रणकरतीभई सो आगे कथ
न किया जाताहै ॥२॥ चौपाई ॥ अवरीष नि
श्चय पति मोरा। जेतव करहु मान वर जो
रा। मरहूं नवहिं उरदंवंथन लाई। ननर मर

हूं ह्वाला हल खोई। अंबरीष विनु आनन वर
हूं। मानु सपथ नव चरनन करहूं। सुनि अ
स राज कुंवरि मुखवानी। दुखित जननि मा
नस अकुलानी। पतिपें आई विथत मनमा
रे। करि रोदन मुख वचन उचारे। नाथ सुवि
दारुण हठ धारा। किये यतन नहीं होतनि
वारा। तांते तजहु नाम उदवाहा। मानहु प्रा
ण पती मम काहा। रचना तुमहुं जवन वि

रचाई। साज समाज साज समदाई। पति ह
रि और हूं जनन विचार हु। मोर कथन।
निश्चय जियधारहु। पतनि वचन सुनि भूप
सुजाना। परम शोक मानस निज माना।
कीन जवन आरंभ विवाहा। सोमन मानि
पतनि निज काहा। नहितें भा नहन्य पति
यरना॥ चिंतासोच जाय नहीं वरना। अतिसी
घसता जवन सावदाई। असीयलाग उखदआयिकाई

९ भ ९

९

निसदिन सोच विवस गात थीरा। भयो उरीव न अति कृषण सरीरा। रहेसि लषन मरम इह जोई। प्रकट्यो सहज सहज कछु सोई। इक हमर कर स्रवणन परहीं। लोक पर स्पर चरचा करहीं। वर्षो वात ग्रामांतर जा ई। अंवरीष लग पहुं विस जाई। इह ह्तांत मंजल सुनिराई। भयो प्रेम वस हरष अघा ई। सोरठा। सादिर लीन बुलाय। नाम जन

क कहं न्तस्मिनव। मातु हाल समझाय। भ
नो वदन मडु वचन ग्रस।३। टीका। सो राज
कुमारी कहतीहै कि हे माता अंबरीष राजा
जोहै सो निश्चय करके मेरा पतीहै ग्रैार जे
कदी तम जोरावरीसे मेरेको निसनें निवाह
ए करोगे तोमै गलेमे बंधन लगाय करके
मरजाऊंगी नहीं तो विष खाय करके मरूंगी
हे जननी मेरेको तेरे चरनो की लाख सोगंद

है जोमैने अंवरीषके विना और किसी को न
हीं वरना इसप्रकार कन्याका प्रण सुनकर
माता जोहै सो व्याकुल भई हुई वडे कलेश
को प्रापत हो करके पतीके पास आयकर
नेत्रोंमे रुदन रूपी जल भरकर कहने लगी
किहे नाथ पुत्रीने वडा कठिन हठ धारन कि
याहै सो जतन किये भी निवारण नही हो
सकता तांते हे प्राणपती अव पही वारना

१ भ ॥

भलीहै कि जिसके विवाहका त्याग करदेवो
और जिसकी सब रचनाको छोड़ कर कोई
और यतन विचारो कि जिससे कन्याका मनो
रथ सिद्ध होवे औसे रानीकी वानी सुनकर रा
जा बड़ा चिंताकुल और शोकके वश होकर
विवाहकी रचनासे न हस्तहो जाता भया औ
र जोप्राणोंसे प्यारी सुख दायक कन्याथी सो
महादुख दायक और परम अप्रीया भासने ॥

लगी रात्री दिन चिंता करके दुखी भये हृयेका
शरीर जोहै सो बड़ा कुरूप हो जाताभया तब
इह बाती जो लुपत रही हूईथी होती होती
लोकोमै प्रकट हो जातीभई और सब कोई
चरचा करने लगपड़ा बाहिर ग्रामोतकभी
इह वारता फैलगई तब जाती जाती अंबरीष
के पास भी पहुंच गई सो राजा अंबरीष महा
प्रवीन और शरणागत की रक्षा करने वाला

जिस वारता को सुनकर ततकाल तिस कन्या के पिता को अपने पास बुलाय कर बडे प्रेम और सनमान पूर्वक अतसे कोमल वानीसे सिक्षादेने लगा ।३। चौपाई ॥ सुनहु भूप यद्यपि मम रानी । अधिक एकतें एक सयानी । ललितरूप पतिव्रता सुहाई । सभ विधि निउण शील सुखदाई । तद्यपि तोर सुत्रि वड भागन । संतन मोर चरन अनु रागन । विनु मोरे पति

१२

आनन चाहीं। ह्वचि सनेह निश्चय मन माहीं
इहितें नाम मनोरथ जोई। पुरवहुं मै प्रसन्न
मन होई। करहुं रुचिर रत्ना प्रण नासा। से
तन वचन मोर गुण रासा। सोरठा। सुनहु
वचन नरराय। जेमोहितें कोई जाचना। क
रहिं मनुज नृप आय। मै पुरवहुं नहि काम
सव। ४। टीका। अंवरीष कहने लगा कि हे
राजा यद्यपि मेरी रानीजोहैं सो एकते एक।

बडी चतुर और सयानीहैं सुंदर रूपवाली प
तिव्रता और सुशील सुखदायक भी हैं तद्यपि
बडे भागोंवाली तेरी कन्या निरंतर करके मे
रे चरनो की प्रेमवाली जो भईहै और मेरेवि
ना और दूसरा पती जो नहीं चहती केवल
मेरे मेंही जिसकी प्रीती और निश्चयहै इसतें
मै तिसका मनोर्थ जोहै सो अवश्य पूरण क
रके तिसके प्रणकी रक्षा करूंगा हेराजन ।

मेराभी धर्महै कि जो कोई पुरुष मेरेसें किसी प्रकार की जाचना करताहै मै तिसके मनोरथको अवश्य करके सिद्ध करताहूं ॥ ४ ॥ चौपाई। उचित तुमहिं अब सुनहु सुजाना। करहु चारु निज भवन पयाना। तहां जाय तुम रचहु विवाहा। विविध भांति मंगल उतसाहा सुदिन महूरत सुभ सुधाई। देहु हेत मोहि ओर पठाई। अलप न्टप्रि सुनि भूपति वचना

८ मं.
१४

सुंदर सुखद परम हित रचना। होत सियन पा
नन जग जोरी। विनय करत उर प्रीति नथो
री। अहो भाग वड मोर सुहावन। जोमम स
दन चरन प्रभ पावन। परहिं सकल दारद
दुख हरना। धन्य सुजस मम जाहिं नवरना।
पैक्रूपालमै दास नमारा। दीन हीन गुण सर्व प्र
कारा। प्रभ प्रताप जग सहश भाना। मै नविष्ट
खद्योत समाना। सरना छंद नाथमै दीना॥

१४

तव नदीस अवगाह प्रवीना। समता घाल कवन विधि रसिहैं। मोर ढिठाई देखि सब हसिहैं। ताते विनय जोरि जुगपाना। उचित न तुमहिं मोर गृह जाना। मैनादिक निज जवन कुमारी। ईहां लाऊं प्रभु सरण तुमारी। तव कृपाल सव विधि हित जानी। करहु विवाह रुचिर मद मानी। इहिमे नाथ मोर कल्पाना। सुजस मोद किमि जाय वखाना।

१
भ
१५

15

अलप न्टपति भाव सुनि अस वानी। परम व
नीत प्रीत हित सानी। कहा राऊ तव न्टपति
प्रवीना। संतन सत्य कथन सव कीना। पै न
देस तव सुनहु विचारा। मानऽपमान जग
ल संसारा। सोरठा। लोक करम मधहोय।
प्रेम सुभक्ति प्रसंगमै। इह कवहूं नहिंहोय।
निस्चय जानहु सत्य न्टप।५। टीका। फिर अव
धीप कहतेहैं कि हे राजन अव तुमको योगपहै नी

अपने घर को चले जावो और वहां जायकर ।
विवाह के संपूर्ण मंगल जो हैं सो रचाय देवो
तिसतें उपरांत शुभदिन और महूर्त देख कर
अपने हलकारा पत्रिका देकर मेरे पास भेज देवो
तो मैं विवाह के लिये तुमारे घर आजाऊंगा
इस प्रकार वड़े हित और सुखके देनेवाला श्रे
वशीषका वचन सुन कर सो राजा मनमुष ।
स्थित हो कर और दोनो हाथ जोड़ कर वशी

२ भं. १९

प्रीती भक्ती से बिनती करने लगा कि महाराज
मेरे धन्य भाग्यहैं जो सर्व दुखों और दारिद्रोंके
दूर करने वाले आपके पवित्र चरन जोहैं सो
मेरे घरमे पड़ेंगे और मै सर्वप्रकार करके जग
तमे सज्जनका भाजनहोजाऊंगा परंतु हे कृपा
निधान मै जोहूं सो एक हमारा दासानु दास
दीन और गुणोंमे हीन सर्व प्रकार करके दा
रिद्री खेद्यानके समानहूं अर्थात् एक जगत्

१९

वनहू और आप महा नरेस प्रतापके पुंज हू
रजके समान जगतमै प्रसिद्धहो तोने हे ना
थ मेरी और आपकी समता कैसे बन आवे
गी कहां तम अब गाह समुद्र और कहा मे
छुद्र नदी इह बारता कैसे हो सकेगी मेरी ढि
ठाईको देखकर लोग हासी करेंगे हेकृपानि
धान इसमै यही उचितहै कि आप मेरे घरमै
नाजाईये मैहीं आदर पूर्वक अपनी कन्याको

सं भ ८

ईहो आपके पास ले आताहूं आप आनंदसे ई
हो आपने घरमै ही विवाह कर लीजिये नवहे
टीनथाल इसमै मेरेको सर्वप्रकार करके सुख
और सजस [illegible] आपन होवेगा ऐसे निस ए
जाके सुखसे वडीवनीत और कोमल प्रीती औ
र हित की भरी हूई वानी सुनकर श्रवसीष क
हने लगे किहे प्रवीन राजन तैने निरंतर कर
के सब सत्यही कहाहै परंत मेरी वानसुन कि

१८

इह मान अपमान जोहै सो संसार के बीच लोक कर्मो मे सिद्ध होताहै भक्ती और प्रेम के प्रसंगामे हे राजन निश्चय करके जान इह कदाचित हूआही नहींहै ॥५॥ चौपाई ॥ जे भगवान लोक पति स्वामी। सदा दीन भक्तन अनुगामी। किन्नर नाग मनुज सुरराया। चिदानंद अनभव पतिमाया। कुवजा गोपिन। आदिक जोई। गनका प्रावरि भक्ति वशहोई।

नजिई स्वर्ग मान अपमाना। इनपैं आय आप्तु।
भगवाना। अवरिल भक्ति प्रेम जहं देखा। ऊंच
नीच नहं काहून लेखा। नस नव सगता माहिं
नर राई। प्रेम प्रीति मोरी अधिकाई। ईहां मे
गावन नास सुजाना। ह्वान प्रनीन न्रपति अ
पमाना। चलहुं आपमे सदन हमारे। सवबि
धि होहिं रुचिर हित प्यारे। सुनीहं नास मनो
रथजोई। करहुं विवाह मुदित मन होई। अ

१८

व तम जाहु भवन निज राजा। बिरवहु जाय विवाहु समाजा। सव विधि यथा शास्त्र अनु सारी। करहु काज उर सोच विचारी। कहा जवन तव [illegible] भूप प्रवीना। तम धनश्री मैं द्रव्य वहीना। इहि विवाह मे सहंशा नाई। कहि विधि मोर तोर वनि आई। सो नृप सवनहु द्रव्य रहू जोई। जलथ छाय इव थिर नहिं। होई। अरु संपति ईस्वर्य वडाई। सदा अति

त्व नृपति चलिआई। तुमसैं तुवन रंक है राया।
लखिन जाय माया पति माया। सोरठा। अस
विचारि कछु नाहिं। इहि मैं चिंता करहु नृप।
जाय मुदित गृह माहिं। रचहु विवाह समाज
तव॥९॥ टीका॥ फिर अंवरीष कहते हैं कि
हे राजा जो भगवान नाग किन्नर मानुष्य।
और देवताउंके स्वामी तीन लोकके नायक
सतचित आनंद रूप सते प्रकासक और मा

याके पतीहैं सो देखिये कैसे भक्त जनोके आधी
नहैं कि गोपी और ऊवजो गनका और शवरी
इत्यादकों की भक्ती और प्रेमके वश होकर
अपने ईश्वर्य और मान अपमान को त्यागकर
तिनके पास आप चले आवते भये भगवानने
जहां अव विल भक्ती और हद प्रेम देखा तहां
ऊच नीच कोई नहीं लखया तैसे हे राजन तेरी
प्रतीका निश्चय देखकर मै तिसकी भक्ती और

प्रेम के वश हो गया हूं अब ईहां मंगावने मै मे
रेको तिसका अपमान प्रतीत होताहै मै आप
हीं तुमारे घरमै चलूंगा और तहां विवाह कर
के तिसके मनोरथ को सिद्ध करूंगा तो सर्वप्रका
र करके संदर सुख दायक और वडी हितकी वा
ती होवेगी अब तुम जोहै सो अपने घर मे जाय
कर यथा शास्त्र समयके अनुसार विवाहकी र
चना रचो और हे राजन इरूजो तुमने कहा कि

तुम धनाढ्य और मै दारिद्री धन हीन और दीन
हूं मेरीवरोवरी कैसे होवेगी तो इस मै इह वा
र्ता सुनकि इह द्रव्य जोहै सो वादर की छाया
वत थिर नहीं रहताहै और इह संपती वडाई
भी सदैव अनित्यहीं चली आईहै क्यों कि क्ष
ण मै राजाजोहै सो रंकहो जाताहै और रंक
राजा होजाताहै मायाके [illegible] पती
[illegible] भगवान जोहैं तिनकी इहमाया लावीन

॥ भ॰ ॥ ४९

हीं जाती इसप्रकार विचार कर और चिंताको त्याग कर अपने घरमें जाय करके देवाजन विवाहका प्रारंभकरो। ५। चौपाई। अंबरीष सखि वचन सुहावा। सुनि अस अलप नृपति सुख पावा। आयसु मानि भवन निज आना। कीन तुरंत परम मदमाना। उहां जाय मंगल निजतानी। निकट बुलाय निपुण अति स्यानी। सकल वृतांत तासु समझावा। महिषी सुन

॥

त परम सुख पावा। बहुरि बंधु निज सखे स
जाती। सादर बोलि लीन जन नाती। उप
रोहित पुनि बोलि प्रवीना। तहि सन मरम
प्रकट सब कीना। ते अनुसास भूपवर पाई
लगन सुदिन सुभ उंड सुधाई। देखि महूर
त पत्रिक लेखी। मंगल समय सुगुनन व
सेखी। चलेया गौरि गणनाथ मनाई। अंबरी
षपें पहुंचिस जाई। प्रथम असीर वाद सख

४
भ
२२

कीनी। सादिर बहुरि पत्रिका दीनी। विधी पूर्व
क लेन सुराया। वाचित परम हरष उर छाया
नव बांधव संजन महिराई। सब विधि हाचिर
बगानस जाई। हास विलास करत अनिगाना।
बाजित विविध प्रकार निसाना। पन्नव फौज
संख धुनि घोरा। भेर नफीर करत रव सोरा।
सोरठा। अरु बाजन से नाई। न्रत्य करत कलकं
ठनी। मंजल भाव जनाई। गान तान नानाकरैं। ६।
२२

टीका। इस प्रकार अंवरीषके मुखसे वचन सुन
कर और आज्ञा लेकर सो राजा बडे आनंद पू
र्वक अपने घरको चला आया और तहां अप
नी रानीको पास बुलाय कर संपूर्ण वृतांत
सुनाय देताभया तव सो चन्द्ररानी ऐसे वृतां
तको सुनकर हृदयमें परम हरषको मानती
भई तिसतें उपरांत राजा अपने संपूर्ण बांधव
और नाती जातीके लोकोंको बुलायकर फिर

प्रे॰
भं॰
२२

उपरोहित कोभी बुलावताभया और तिसकोपा
स विठाय कर अंवरीषका प्रयोजन जोहै सो
सब सुनाय दिया तब उपरोहितने सुंदर लग
न और सुभ महूरत देखकर पत्रिका जोहै सो
लिखी और मंगल समय विचार कर तिस प
त्रिकाको लेकर राजा अंवरीषकेपास जायप्रा
पत होताभया और तहां पहिले आशीरवाद
देकर फिर आदर पूर्वक पत्रिका आगे रखदेता

२२

23

भया नव राजा तिस पत्रिकाको विधी अनुसार
लेकर वाचने लगा तिसमैं जो अपने मनका
मनोरथ पाया तो हरषसे गद गद वानी होगया
ततकाल बांधव और सज्जन संबंधियों को बु
लायकर सुंदर वरतन जोहै सो सजावताभया
और हास विलाससें लेकर अनेक प्रकारके
पखव फौज संख भेरी नफीरी वाजेजो हैं सो
वाजने लगे और अनेक गान तानसें न्रत्य ना

टकभी होने लगे ॥६॥ चौपाई ॥ राज कुवर वरन

रग निवावहीं । बांधे विरद सूर छवि पावहीं ।

चिकरहिं नाग वाजि है नाहीं । वाहन विविध

वरनि किमि जाहीं । धूम धाम मय चली वरा

ता । कौतक करत जाहिं मग जाता । महो वि

प्र वर संग सुहावहिं । सिवकन पर अरूढ़

छवि पावहिं । आई वरात निकट पुर जवहीं ।

खर भर भयो नगर सव तवहीं । वाहिन साजि

२५

मुदित मन नाना। आय लेन सादर अग वा
ना। कुवर कलस थार भरि नीके। भोजन अ
मिय सरस प्रीय जीके। फल वर वस्त्र अनेक
सुहाई। अति वचित्र कछु वरनिन जाई। महा
वसन भूषण मणि चारू। यथा उचित नृप
विविध प्रकारू। सादर मंजन प्रीति पठाये।
देखन अंवरीष सुखपाये। सोरठा। नव वर रु
चिर वरात। अगवायन वहु वरन लखी। कह

न परस पर बात। इह उपमा देखीन हग॥ ७॥

टीका॥ नव राजोंके पुत्र सरबीर जोहैं सो घो

डयों पर सवार भयेहूये तिनको अनेक प्रकार

निछावरतेहैं और हसतियोंका चिक्कार शब्द

होताजाताहै ऐसे धूमधामके सहित बरातचली जाती

और रसतेमे अनेक कौतकहोते जातेहैं और बडेबडे

मानी ब्राह्मण पालकियोंपर चढेहूये शोभा पावतेहैं

इसप्रकार बरात जब पुरके निकट आय गई।

९
भे०
५५

25

२५

तब नगरमें बड़ा शोर पड़गया और अनेक प्र
कारके वाहन सजाय कर बड़े सनमानसे ब
रातके लेने के वासते अगवायन आवते भये
और कावरी अर्थात् बहंगियों में अमृत के
समान अनेक भोजन और फल दिव्य वस्त्र
और भूषण जैसे कि योग्य थे राजा ने सब भेज
दिये तब अगवायन सोलेनेके वास्ते गये थे सो
ऐसी दिव्य बरात को देखकर परस्पर कहने

लगे कि हमने ऐसी उपमा आज तक नेत्रोंसेक

हीं देखी नहीं है । ७ । चौपाई । देखि वरात आव

त भगवाना । हने सि विविध प्रकार निसाना । भ

यो परस पर मेल सुहावा । इत उत न्रपति ज

गल सुखपावा । जो कछु अलप न्रपति नहं दी

ना । मांदिर अंवरीष सब लीना । भई पर सपर

विनय वडाई । सील सनेह वरनि किमि जाई ॥

देहु जवन जाचिक गण सारे । पाय इच्छ मन

भये सुखारे। नव जन वासहिं संग लिवाई। सादि
र चले परम हरषाई। दीन वास वर सभ सुखि
याना। भई पहुनाई रुचिर विधिनाना। जे सं
कलप जाहि मन कीना। सहजहिं सुलभ पा
य तहि लीना। जेव नार वहु भांति सुहाई। अ
मिय सरस कछु वरनिन जाई। जेवन समय
कंठ कल नारी। करहि गान सुख गारि उचा
री। समय जानि नव विप्रन आई। मंडलीस।

कहं लगन जनाई। सादिर बोलि बंधु जन नाती
करि संतोष सब कर सब भांती। यथा उचित
आसन बैठारी। विधी वेद जत वेद सवारी।
गावहिं गीत प्रीत स्रुङ बैनी। कोकिल कं
ठि कलित म्रग नैनी। अति वचित्र सेचा सन
सोहा॥ स्फाटिक मणिन खचत मन मोहा॥
तहि पर अंबरीष बर राई। बैठे उजन चरन
सिर नाई॥ सोरठा॥ पुनि विप्रन हरषाई॥ २८

२७ में ९ २८

27

बोलि लीन वर कुवरि न्टप। करि श्रृंगार सुहाई।
ल्याई निपुण सखि संगनिज।। टीका। नव व
रातियोंने देखा कि अगवायन आतेहैं बडे हर
षसे अनेक प्रकारके बाजे बजानेलगे तिसके
उपरांत परस्पर मिलनी जोहै सो भई और दो
नो राजे बडे आनंद को प्रापत हुये तिस समय
उस राजाने जो कुछदिया सो अंवरीष बडे स
नमान पूर्वक सबले लेता भया और परस्पर

९
भ·
२८

28

शील सनेह और विनय वडाई जोभई सो कही
नहीं जाती जाचिक अर्थात् मांगने वालेभी म
न वांछित द्रव्यको पाय कर वडे सुखको प्राप्त
हुये नव वरात को अनसे मनोहर अस्थानमें
निवास देकर प्रत्येकका यथा रुची भलीप्रका
र संतोष किया फिर नाना प्रकार के भोजन ।
जोहैं सो वडे प्रेम और प्रीतीसे जिमाये तिस
समय को किल कंठनी नारी गायनमें गारी

देदे कर दिखावने लगी तिसतें उपरांत समय
जानकर उ परोहित आया और राजाको लग
न जणाया नव तिसने अपने बांधव जाती ना
तियों को बुलाय कर यथा योग आसनो पर
बैठार कर और वेदकी रीतीसे वेदी की रचना
करके अंबरीषको बुलावते भये नव मणियों
करके खचित सो वरनका सुंदर संघासन
जोथा तिसपर ब्राह्मणोंके चरनोको वंदना क

९
भ॰
२९

र के अंबरीष आय कर बैठ जाते भये और रा।
जा की कन्या को भी मंगल रूपी सब श्रृंगार क
राय कर बडी चतुर सखी जो हैं सो साथ लेक
र तहां आय जाती भई।८। चौपाई। रूपरासगुन
धि शील कुमारी। सत्तम अंग मान रतिहारी। सं
उप मध्य आय जबराजी। सकुचमान मानसनिज
लाजी। श्रुतिपति चरन नलिन दृगदेखी। हरषि अ
लिनिरख हृदय बसेखी। बहुरिउजन वर अवसरपाई। प्रथम

२९

देव गण नाथ पुजाई। वेद वहीत रीत कुलदे
ई। संज्जत प्रीति सकल करि सोई। सादिर दी
न विवाह पठाई। अलप न्रपति नव उर हर
षाई। गहित रुचिर कन्या निजपानी। दीनस
मर्पि न्रपहिं मुदमानी। पानि गृहण जव भ
यो रसाला। हरषे अंवरीष महिपाला। मंग
ल गान करहिं कल नारी। सुंदर वदनि नैन
म्रगवारी। वाजन लगे विविध वरवाजा।।

भये हरष वस सकल समाजा। मणि गण खचित विभूषण चारू। रज कांचन धन विविध प्रकारू। दासी दास तुरग गज जाना। यथा शक्ति दायज रुप नाना। दीना विनय वहुविधि कीना। मै कृपाल जन संपति हीना। काप्रभु देहुं नाहिं कछु लायक। आप नाथ तुव दीन सहायक। मै किंकर तुव चरनन राया। कीन कृपाल दीन पर दाया। आज सफल जग जी

वन मोरा। देखि दिब्य वर दरसन तोरा। मोरस
दन संजुत परिवारा। भा प्रसाद नव पावन
सारा। दंपति ठाढ़ जुगल कर जोरी। हृदय
पुनीत प्रीत नहिं थोरी। इह दासी प्रभु चरन
नमारी। सुतसम हमहूं प्राणतें प्यारी। इहि
अपराध जानि परि हरहौ। किं करि चरनवा
स निज करहौ। अस कहि लीन पुत्रि उरला
ई। प्रेम विवस लोचन जल छाई। कहि कहि

९
भ॰
३१

वदन रुचिर मृदु बानी। शिक्षा दीन परम हित
सानी। सोरठा। नव जाचिक गण जोय। अंबरी
ष नृप सकल कर। मन प्रसन्न अति होय।
कौन रुचिर परि तोष नहो।९। टीका। सो कै
सी कन्या कि रूपकीराश और शीलकी नि
धी जो अपने सूक्ष्म अंगों करके कामदेवकी
स्त्रीका मान हरने वाली सो नहो वेदी मंडप
मै बडे संकोच और लज्जाके वश होकर आय

३१

बैठतीभई परंन पतीके चरन कमलों का दरसन
करके भ्रमरी वत हृदय मैं हरष मानती भई ॥
तिसतें उपरांत ब्रह्मणोंने गणपति आदि पूज
न करवाँकर वेदकी विधीसे कुलकी रीती अ
नुसार विवाह जोहै सो पका यदिया जव पि
ताने कन्याका हाथ अंबरीषके हाथ मैं देदि
या तव पानी गृहण होनेसे अंबरीष वडे हर
षको प्रापत हो जाता भया और मंगल गाय

९
भं.
२२

नभी अनेक प्रकारके होने लगे फिर मणियों
करके खचित अनेक भूषण और चांदी सुवरन
के सुंदर भाजन दासी दास गज रथ और सुंदर
वस्त्र सजाये हूये घोडे यथासामर्थ्य दायज देकर
सो राजा हाथ जोड कर बिनती करने लगा कि
नाथ मै दीन संपतीसे हीन हूं आपके चरनोका
एक दास हूं क्या देऊं कछु देनेके लायक नहीं हूं
आप महा उदार कृपाके धाम और दीन जनोके हितकारी हो

32

जोमेरेको अनाथ जानकर ईहां चरनधारे औ
र मेरे घर को पवित्र किया और सब जगतमे
एक सजन का भाजन बनाय कर अपने द
रसनसे संपूर्ण परिवार के सहित मेरे जी
वने और जनम को सफल करदिया है फि
र रानी और राजा दोनो प्रार्थना करतेहैं कि
हे कृपा निधान इह कन्या हमारी प्राणोंसे
प्यारी अतसे दीन आपके चरनोकी दासीहै

४
भ·
३३
33

जो कदाचित इससे कोई अपराधभी हो जावे
तो आप अनुगृह करके क्षमाहीं करते रहना
ऐसे कहिकर रोदन रूपीजल नेत्रोंमे भरक
र पुत्रीको हृदयमै लगाय लेते भये और
कोमल वानीसे जोजो शिक्षा देनी योगयथी ।
सो सब देकर भलीप्रकार प्रबोध करते भ
ये तब राजा अंबरीषने जाचिक जन जोथे
तिनको यथा रूची धन देकर सबको भलीप्र

३३

कार पवि तोष किया और जगतमैं सुंदर सुजस लिया। ९। चौपाई। सुदिन भवन पुनि कीन पयाना। बाजित विविध प्रकार निसाना। आये नगर निज सुदिन विचारी। रहे जवन पुर प विजन सारी। कीन विदाय सकल सनमाना करि संतोष सबकर विधिनाना। तहि रानी कहं वहुरि भुपाला। रचि नूतन इक भवन रसाला। दीन निवास सदन सुभ ताहे। करि

५
मे०
३५

34

सन मान विविध नरनाहा। चाह चेरि सेव
क सुखदाई। दीन उचित संपती सुहाई। नव
नृप पतनि नवल अनिसानी। पति अनुसास
पाय मुदमानी" मज्जनभवन वेग चलि आई।
प्रेम भक्ति मानस सरसाई। तहं देखि हरि
मूरति जोई। करत प्रणाम देउ वत होई। सुनि
सुनि हरष विवस अनुरागी। आपन भाग स
राहन लागी। मोहि सम धन्य आन नहींकाहू

इह पति धरम धीर नियजाहू। अस विचारि प
ति बना लिलामा। तहि दिन देखि भवन च
नस्यामा। मगन प्रमोद सदन चलिआई। तहि
उपरांत शेष निसिपाई। हरि मंदिर आवत वड
भागी। करहिं मार्जन मन अनुरागी। पूज्यप
कर्ण ललित सवजोई। पावन भक्ति प्रेम जुत
होई। करि शोधन मंदिर निज पानी। पुनि स
व यथा योग जिय जानी। प्रेम प्रीति जुत क

९ भै॰ ३५

रत स्थापन। आव हिं बहुरि भवन चलि आपन निसि दिन चरन चारु पतिदेवा। मन वच करम निरत रुचिसेवा। सोरठा। नव प्रवीन ऋषि राज। जुगल दिवस लग भवन प्रभ। देखत रहे समाज। हरि पूजन कर विमलसब

टीका॥ तिसते उपरांत राजा अंबरीष जो हैं सो बडे आनंदसे अनेक प्रकारके उत्सभ करते हुये तहांसे विदाय होकर और सुभ दिन

९

३५

विचार कर सब समाजके सहित अपने घर
मै आय प्रापत हूये तब पुरजन और परिजन
जो मेल आये हूयेथे तिन सबको राजा भली
प्रकार परितोष करके विदाय कर देताभया
फिर तिस नवीन रानीके वासते एक अत्यंत
सुंदर न्यारा घर बनवाय कर दासी दास धन
संपती आदि सब सनमान भलीप्रकार कर
ताभया तब सो रानी आनंद पूर्वक तहां नि

४ भं. ३६

वास करने लगी एकदिन पतीकी आज्ञा पाय
कर राजाका भजन भवन जोथा तिसमै चली
आवतीभई तहां भगवानकी मूरती देख कर
बडे हरष और प्रेमसे दंड वत प्रणाम करके
मनमै विचार करने लगी कि मेरे समान सं
सारमै धन्य कोई नहीं है जिसका ऐसा भग।
वानका भक्त [illegible] और धरमात्मा पती·
प्रापत भयाहै ऐसे विचार कर आनंदमै मग

न भईहुई दरसन और प्रणाम करके अपने
घरको चलीआई जिस दिनतें निज शेष रा
त्री लेकर उठती और भगवान के मंदरमे आ
ती तहां प्रथम मार्जन अर्थात् फाडू इत्यादि
सेवा करती फिर ठाकरों के संज मंज जोहैं सो
भक्ती पूर्वक भलीप्रकार शोधन करके और
यथा योग्य अस्थानमे स्थापन करके अपने घ
रको चली आवती और रात्री दिन पतीकी।

१८ भं. १८

सेवामें भी लीन रहती तबसे प्रवीन राजा अं
बरीष जोथे सो दोदिन प्रयंत भगवान के मं
दरमें आयकर देखते रहे कि ठाकरोंके सब
संज मंज शोभे और सवारे हूये रहतेहैं। ९।
चौपाई। बहुरि स्थापन निज निज जाहीं। होत
समाज भवन हरिमाहीं। तीसर दिवस भूप
तहं जाई। पूछन लगे मरम सकुचाई। इहह
रि नारायण कर भवना। सचि समाज पूजन

१८

37

प्रभु कवना। संपादन करि जाहिं सिधारी। क
रहु वदन मोहि प्रकट पुजारी। नव तिन मरम
सकल कहि दीना। जे कनिष्ठ नव ब्रीये नवीना
से निसि सेष पाय नरराई। सन्तुप करण नि
त्य समुदाई। संपादन करि निज निज थाना।
जाहिं सुशील निपुण गुण खाना। सुनि अस
वचन विप्र सुखराई। नवल पत्नि कहं मन
हरषाई। प्रेम भक्ति रत प्राण समाना। मानत

भयो भूप निधि ज्ञाना। कवि सुजन भगवान सु
खदाई। उठो वहुरि प्रभुदिन नर राई। गयो नि
कट निज नारि नवीना। तासु वदन अस आयु
स दीना। अब तुम आव गमन श्रम खोई। नि
जहिं निकेत मुदित मन होई। परम देव भग
वान सुहावा। करहु रुचिर सुजन मन भावा।
मै मंजुल इक भवन नवीना। तोरे सुजन हेत
प्रवीना। सोरठा। देहुं विलग विरचाय। सुचिस

२८

माज पूजन सकल। मादिर तहां रखाय। मै आ
वहुं निरम प्रती। ॥ टीका। फिर राजा को देख
ते हैं कि ठाकरों का सव समाज संज मंज इत्यादि
अपने अपने अस्थान मै यथा योग रखा हूआ
है तव तीसरे दिन राजा तहां जाय कर पुजारी
से पूछने लगा कि ईहां रात्री मेंही भगवान के
भवनमै मार्जन इत्यादि कौन कर्ता और ठाक
रों के नित्य संज मंज सव शोधन करके और

फिर यथा योग्य स्थानमें स्थापित करके कौ
न चला जाताहै हे पुजारी तुम सत्यकहो इस
प्रकार राजाका वचन सुनकर पुजारी कहने
लगा कि हे राजन आपकी छोटी नवीन रानी
जोहै सो कुछ शेष रात्री लेकर इहां नित्य आ
वतीहै सो मंदरकी मार्जन आदि सेवा करके
तिसतें उपरांत ठाकरों के मंज मंज वडी प्रीती
भक्तीसे शोधन करती और फिर सब समाज

अपने अपने अस्थानमै स्थापन करकै घरको
चली जातीहै ऐसे तिसका वचन सुन कर
राजा वडे हरष को प्रापत हो जाताभया और
तिस रानीको भगवानकी भक्ती और प्रेममै
लीन जान कर अपने समान मानताभया ति
सतें उपरांत भगवान का भजन करके राजा
तिस रानीके पास जाय कर वडी प्रीती और
सनमानसे प्रसन्न होकर कहने लगा कि हे

पारी अवनें तें आने जानेका श्रम त्याग करके भक्ती प्रीतीसे ईहां आपने चरमैहीं परमदेव भगवान जोहैं तिनका पूजन कियाकर मै तेरे पूजनके वास्ते चरमै हीं न्यारा मंदर वनवायकर तहां पूजनका सर्व समाज स्थापन करदेताहूं और तेरे पास आपमै नित्य आया करूंगा। ११।

चौपाई। सुनि अस बानि भूप मख रानी। सुंदर सुचि सनेह हित सानी। जुग कर जोरि हरष

५.

म. भ.

४०

वघाठाप्ती। करत प्रणा प्रीति उर गाप्ती। नव न
रेस विधि जत मनमाना। विरच्यो नरत भवन
भगवाना। तहां अनंत मोद मन मानी। भक्ति
प्रीति संजुत निज रानी। करहिं नित्य पूजा
दिक करमा। वहुरि सदन सुभ भूपस धरमा
रमन आदि सव करहिं विलासा। वढत जात
नित हरष हुलासा। नेस्त्र शील सेवन पति
लीना। मनवच करम भक्ति रत दीना। नव न

41

१ भ॰ ५।

देस कर हसर रानी। त्रिगुण एकतें एक सया
नी। तास प्रेम वस पति हिं निहारी। करत वि
चार परसपर सारी। हम जान्यो नहिं कारनका
हू। इहि वस भयो कवन विधिनाहू। बोलीएक
वदन मृदु वानी। इह जोई नवल रूप निधिरा
नी। सदा निरत नारायण पूजा। संतन रहत
[illegible] भाव नजि दूजा। भक्ति विलोकि तास व
स राऊ। भयो आन कारन नहिं काहू। तास

५।

कथन सुनि रानि सुहाई। निज निज करि वि
चार समुदाई। भई निरत पूजन भगवाना।
तीर्थहिं देखि कबहुं पनि प्राना। अस प्रकार
तिन मानस गाढ़ी। दिन दिन भक्ति प्रीति रुचि
वाढ़ी। नव नवीन त्रिय संग [illegible] नरीसा। रमन
करत कछु काल वनीसा। सुता सुशील अ
लप नृप सोई। अवसर पाय गरभ वनि होई
सोरठा। जब चन्द्ररथ षट मास। वीते कन्याक

विनेव। रूप सील गुणराम। तेमहिषी जन म
न भई।।१२। टीका। ऐसे राजाके मावेसे वडे म
नेहू वाले वचन सुनकर सोरानी हरषसे दो
नो हाथ जोड कर चरनोपर प्रणाम करतीभ
ई तव राजा तिसके पूजनके वास्ते विधी पू
र्वक एक संदर न्यारा भवन ततकाल रचाय
देताभया और तिसरानी के सहित आपभी
तहांहीं नित्यनेम और भगवान का पूजन जो

42

है सो करने लगा और रमन आदि विलासकी
रुची भी नित्य तिसके साथहीं रखता भया सो
सुशील रानीभी मन वचन काया करके पती
की भक्ती और सेवामे रात्रीदिन लीन रहतीथी
तब राजाकी और जितनी रानी एकते एक बडी
स्यानी और चतुर जोथीं पतीको तिसरानीके व
श हुये देखकर परस्पर कहने लगी कि हम
नहीं जानती क्या कारनहै पती क्यों कर इस

९ भ० ४३

के वश होगयाहै तब उनमै से एक वडी कोमल बानीसे कहने लगी कि मै जानती हूं इह जो सुशील नवीन रानीहै सो सदा नारायण की पूजामै निरंतर करके लीन रहतीहै इसीतें तिस की भक्ती और प्रीती देख कर राजा तिसके वश होगयाहै और कारन कोई नहीहै इस प्रकार तिसका वचन सुनकर सो संपूर्ण रानी भी भगवान के पूजन सेवन मै ततपर होजा

4 3

नी भई कि हमको भी भक्तीमान जानकर पती
किसीके समान नहीं जानेगा और रीझ कर प्रस
न्न होवेगा तबतिस नवीन रानीके साथ राजा
को रमन करते हुये कुछ काल बतीत होगया
सो समय पाय कर गरभवती होजाती भई औ
र जब दस महीने बतीत होगये तब सो रानी
रूप शील और गुणों की रासी कन्या जोहै सो
जनमती भई ।५२। चौपाई । तब नरिंद्र मन हर

९
भे.
४४

षि कुलासा। चारु नाम करमादिक नासा। संस
कार सब श्रुत समाना। सब विधि भयो करत गु
ण खाना। किये द्रव्य वय विविध नरेसा। दिये दा
न महि सुरन विसेसा। देखि सुदिन संजुत अभि
लाखा। श्री मति नाम रुचिर तहि राखा। सकल
पक्ष ससि सहस कन्या। भई सुलक्षन रूप गुण
धन्या। यो रहिं काल मध्य नव सोई। जब वैस क
हे आपन होई। सोरठा। सकल अंग गुण खान। ५५

भाव भक्ति गंभीरता। नखसिख रमासमान। अह
मोचिन मद मानरती। ६। टीका। नव राजा श्री
वरीष बडे हरषको प्रापत भया हूआ तिसका
जनमसे ले कर सब संसकार पुत्रके समानही
करके ब्राह्मणों और दीन जाचिक जनोको अने
क प्रकारके दान देता भया तिसतें उपरांत सुं
दर सुभदिन विचार कर तिसका श्रीमती ना
म जोहै सो रखदिया नव रूप और गुणों की

निथी सो कन्या शुकला पक्षके चंद्रमा की न्याई
दिन दिन बढ़ती जाती भई थोरेहीं कालमें सो
जवा अवस्थाको प्रापत होगई ऐसी कोमल औ
गोवाली गुणोंकी खानी सो कन्या रूप भाव
और भक्ती गंभीरता करके नखसिख लक्ष्मी
के समान भासने लगी और कामदेवकी स्त्री
रती जोहै तिसके [illegible] मान और मद कोभी हरने
लगी ।१३। चौपाई । ऐसे नहि निधि सील सुजाना

45

किमि अनंत छवि जाय वखोना। नारद अरु परवत मुनि दोई। तासु विलो कि प्रेम वस हो ई। अंवरीष पें जाचिन आये। भनत वदन अस वचन सुहाये। इहु तुमार जोई सुता रसाला। हम कहुं दान करहु महिपाला। सुनि अस मुनिन वचन नरराई। कहत चरन नमत सिर नाई। दीन कथन कछु अन चिन होई। मुनि वर महाराज तव दोई। कन्या एक मोर विधि।

बा० मा० ५६

वामी। इह कस वनहिं वात अव स्वामी। तोते वि
नवह्न वारंवारा। करहु कृपाल आप सई कारा।
सोरठा। स्वयं वर विधि जान घाल। इहिकर व
चहु विवाह मैं। परहिं जास उरमाल। नहि देव
ह्न संशय नहीं।५।टीका। इस प्रकार रूप और
शील की निधी वडी चतर और अनंत शोभा
वाली सो कन्या जो तिसको नारद और परवत
मनी देखकर रूप के वश भये हये तिसके।

46

पी

५६

मांगने के वासते दोनो राजाके पास आवते भ
ये और कहने लगे किहे राजन इहजो रूप
और शीलकी निधी तमारी कन्याहै सो हमको
दान कर देवो इस प्रकार मुनियोंका वचन
सुनकर राजा हाथ जोडकर नंम्र वानीसे क
हने लगा किहेमुनि महाराज आपतोदोहो
और कन्या मेरी एकहै कृपानिधान इहवार्ता
कैसे वनेगी तोते इसमैं मेरी प्रार्थनाहै किमै।

४
मं॰
५०

47

स्वयंवरकी विधीसे इस कन्याका विवाह रचना हूं जिसके गलेमे इह कन्या जैमाला डाल देवेगी मै तिसीके साथ इसका विवाह कर देऊंगा इस मै कुछ संशय नहींहै ।४। चौपाई । सुनि अस वचन नृप सब सोऊ । पृथक पृथक करि सुनि वरदोऊ । गये तुरत वैकुंठसिधारी । हरि सामीप सोच उरभारी । प्रथम जाय नारद परवीना । हरिहिं प्रणाम दंडवत कीना । बहुरि मनोरथ ।

आपन जोई। सादिर कहिस सदिन मन होई।
महि मंडिलपर दीनदयाला। गवन करत मै
देखि रसाला। कन्या अंबरीष ऋषिराई। रूप
राम निधि सील सुहाई। सोमानी मन मोर
सुनैना। नवमै कहिस भूप मन चैना। उहू म
दरि मोहि कहं न्रप देहो। आसिष मोर स
दित मनलेहो। कहाभूप नव वदन बुफाई।
स्वयंवर विधि संजुत मुनिराई। रचहु विवाह

५
म.
४८

48

छवि निज जोई। सो प्रसन्न मानस जहि होई।
स्वयंवर माल देहिं उर डारी। देहु हरष जन
तासु कुमारी। अस विचारि जिय जन अन्तरयामी
आवा शरण तोर प्रभुस्वामी। तेनदेस वरसता
प्रवीना। संतन भक्ति तोर प्रभु लीना। जहि अस
दीन घाल भगवाना। मन वच करम कविर प्र
णठाना। हरि सरूप पावन जगजोई। मोरे हो
हिं ललित वर सोई। तांते विनय मोर जन घा

ला। अति विचित्र निज रूप रसाला। देहु देव मोहि
आपु समाना। मागहुं नाथ जोरि जगपाना। बहु
रि आय मुनि परबत ज्ञानी। जिमि नारद मुख
विनय बखानी। तिमि धरि धरनि सीस गति
दीना। विनय बडाइ विविध भाव कीना। मुनिन
वचन सुनि श्रवण सुहाये। कौतुकि रमानाथ
मुस काये। निजस हृषा नव मंजुल काया।
दीनादयाल दीन करि दाया। नहिमै मरम प

क धनि राखा। आनन भये मुनिन सुग माखा।

सोरठा। अस अद्भुत जव कीन। तव मुनि हरि सहश रुचिर। सुचि सरूप निजचीन। नाय सी स गावने मदित।५। टीका। तव मुनी जोहैं सो राजाका कथन सुन कर न्यारे न्यारे हो करके वडा सोच करते हूये वैकुंठ मे भगवानके पा स चले जातेभये तव पहिले वडे प्रवीन नार दजी जायकर नारायण को दंड प्रणाम करके

49

नंम्रवानीसे अपना मनोर्थ कथन करने लगे
कि हे दीना नाथ मै जो फिरताफिरता पृथिवीमं
ऊलपर चलागया तो तहां अनसे रूपकी निधी
राजा अंबरीषकी कंन्याको देखकर तिसके रू
पके वश ब्याकुल होगया और राजाको कह
ताभया कि राजन इहकन्या मेरेको देवो और
आसीरवाद लेवो तव राजा कहने लगा कि हे
मनी स्वयंवरकी विधीसे इसका विवाह रचना

१ भ· ५·

है जिसके गलेमै इह प्रसन्न हो करके स्वयंवर
माला डाल देवेगी तिसीके साथ इसका विवाह
करदेऊंगा सो मै इसप्रकार राजाका प्रण सुन
करके हे दीनदयाल आप की शरण को प्राप
त भयाहूं क्योंकि सो राजाकी कन्या निरंतर क
रके आपकी भक्तीमै ही लीनहै और तिसने नि
श्चय करके इह प्रण धारा हूआहै कि भगवा
नके समान जिसकारूप होवेगा तिसको मै

50

व रूंगीनाने कृपानिधान मेरी हाथ जोडकर प
ही प्रार्थना और विनती है कि दीनको अपने
समान रूप दीजिये और मनोर्थ सिद्ध कीजिये
इतनेमे परवत मुनी भी आयगये जैसे नारद
जीने विनती करीथी तैसेही वार वार दंड प्रणा
म करके सो भी करते भये तव मुनियों को मो
हके वश हुये देखकर परम कौतकी भगवा
न जोहैं सो अपने मनमे समकावते भये और

भा. १०
पं. ५२
51

फिर अपने समान तिनके शरीर बनायकर बी
चमें अपनी मायाकरके ऐसा भेद रखदेते भये
कि तिनके शरीर तो सब भगवानके समान प
रंतु सब वानरोंकेथे जब कोतुकी रमाके ना
थ भगवानने ऐसा अद्भुत चरित्र किया तब
मायाकरके मोहितभये हुये सनी भगवानके
समान अपना सुंदर सरूप जान कर बारबार
प्रणाम करके आनंद पूर्वक चले आवतेभये।

१०
५२

चौपाई। जहं भूप स्वयंवर विरचाना। जैसो स
माज ललित विधिनाना। पाछिल रमानाथ
सुखशाला। नाम भक्ति वश दीन कृपाला।
मनुज रूप निज धारि अनूपा। आये अखिल
भवन कर भूपा। हरन कोटि छवि मनमथ
काया। पुंडरीक लोचन निधिदाया। नीलज
लधरुति निदरन वरना। चितवनि हृदय भ
क्त तम हरना। भुज आजान मान खल गंज

९
भ०
५२

52

न । ध्यान वचित्र मुनिन मन रंजन । चंदन ति ।
लक भालकल राजा । कच कुंचित जनु मधुन
समाजा । कलिन कीट भव भीत निवारन । पा
वन अरन चरन जल जारन । सोरठा । अस म
रवांग सहाय । वैसकि शोर कृपानिधी । कि
मि छवि वरनन जाय । नख सिख रूप अनूप
प्रभु । ९६ । टीका । जहां अंवरीषने स्वयं वर रचा
हू आया तहां अनेक राजे और ऋषिमुनी आय

ने अपने समाजके सहित सब आवने भये औ
र वह मनीभी तहां चले आये तिनके पीछे र
माके नाथ और दीनोके घाल सर्व भवनोके
नायक भगवान भी तिस कन्याकी भक्तीके
वशभये हूये अनसे मनोहर मानुष्यका भेष
धार कर तहां आय जाते भये सो अपने रूप
करके कैसेथे कि कामदेव की अनेक छवी
को हरने वाले और कमलोंकी न्याईं नेत्रोंकी।

९
भं॰
५३

53

शोभा वाले नीले बादर को निदरने वाला जिन
के शरीरका रंग और भक्तोंके हृदयका तम
अर्थात् अंधेरा हर करने वाली कृपाकी दृष्टी
और लंबियां सुंदर दोनो भुजा मुनी जनो के म
नको आनंद देने वाला बड़ा विचित्र ध्यान मस्त
कमें चंदनका मनोहर तिलक और सुंदर कुंडलों
वाले भ्रमरयोंके समाजवत स्याम केश लाली
मय कोमल चरन कमल और संसार के

५३

सर्व भयको हर करने वाला माथेका मनोहर म
कट ऐसे सर्व अंगो कर्के शोभायमान कशोर
अवस्था भगवानजोहैं तिनके नाखसिख रूप अ
नूपकी छवी वर्णन कर्नेको कोई सामर्थ नहींहै १६
चौपाई। भूमि भूप जहं तहं समुदाये। बैठे
निज निज रूप सजाये। तब सुंदर अवसर अ
नुसारी। तहि नृप श्रीमति नामकुमारी। संत
न निरत चरण भगवाना। लियेमाल स्वयंवर

निजधाना। सभामध्य संकोच बिहाई। त्यागतलाज
हरषत चलिआई। प्रथमहि देखि रूप भगवाना
मनुज भेष अद्भुत मनमाना। करत प्रणाम म
नहिं मन कन्या। रूपअनूप शील विधिधन्या। ख
यंवर माल ललित करजोई। जयदीन भगवन उ
रसोई। जैजै शाहदेव समदोई। करहिं प्रसूनको
म वर्षाई। तव नहि लिये संग भगवाना। मुदित
कीन निज भवन पयाना। तेनारद पर्वत मुनिदोई।

54

हृदय विचार करत निज सोई। रमानाथ वै
कुंठ निवासी। चिदानंद सद भवन प्रकासी।
धरि निज मनुज भेष असुरारी। करि विचित्र
कौतुक निज न्यारी। कन्या भूप रूप नियजो
ई। लिये आसु गवने प्रभु सोई। अस विचारि
जब आनन देखा। बलिमुख रूप हरन निज
लेखा। उपजा हृदय रोष तब धाये। हरिके
भवन गवन करि आये। अमीय वचन कहि

न दिस भीने। वदन देव ऋषि हरि मन कीने।
सोरठा। सुनहु श्रवण श्री ईस। जहि प्रकार छ
ल कपट करि। हम सन स्रोता महीस। हरिलै
आयो निउरन्नव। नसहिं वचन अवमोर। जे
नमार पतनीषि या। असुर वीर् वल जोर्।
हरि लै जाहिं प्रचंड दिश। ८०। टीका। नव ए
पवीके संपूर्ण राजे अपनी अपनी सज धज
बनाय कर जथा जोग आसनो पर बैठ गये

इतनेमें समयके अनुसार तिस राजाकी श्रीम
ती नामा कन्या जोनिरंतर करके भगवान के
ही चरन कमलों की प्रीती वालीथी हाथमें
स्वयंवर मालालिये हूये लाज श्रोर संकोचको
त्यागकर वडे हरषसें सभाके बीच चली श्राव
ती भई। श्रोर पहिले भगवान का ही मनोहर
रूप श्रोर श्रदभुत मानुष्य भेष देखकर बडे
श्रानंदको प्राप्त होगई फिर नारायण को

मनमैं हीं प्रारंभकरके सो स्वयंवर माला तिनके
गलेमैं पहिराय देतीभई जबइस प्रकार भगवा
न को माला पहिराय देई तब देवताउंके समूह
जो आकाशमैं कौतुक देख रहेथे जैजै शब्द
उचारन करके भगवानपर अनेक प्रकार पुष्पों
की वर्षा करने लगे तिसके उपरांत कौतुकी
भगवान जो हैं सो तिस राजाकी कन्याको सा
थ लिये हुये अपने धामको चले जावते भये

तब नारद और पर्वत मुनी जो थे सो परस्प
र विचार करने लगे कि रमाके नाथ वैकुंठ
निवासी सतचित आनंद रूप भगवान जो हैं
सो कौतुकसे मानुष्य भेष धार कर रूप की
रासी राजाकी कन्या जो थी तिसको हमारे सा
थ छल करके आप लेगये हैं ऐसे विचार क
र कर कहीं अकस्मात जलमें जो देखने लगे
तो अपने मुख वानरों के देखे तब तो महा

५
भ.
५८

कोपसे कांपते हुये भगवान के पास वैकुंठ
को धावते भये और तहां जाय कर देव ऋषी
जो नारदजीहैं सो भगवानको बडे अप्रीय शा
पक और कठोर वचन कहने लगे किहे ल
छमी के पती जैसे तू हमारे साथ कपट कर
के राजाकी कन्याको हरकरके ले आयाहैं ।
तैसेतू अब मेरा वचन जान कि तेरी प्रानप्या
री पतनी को भी महा सूरवीर असुर शत्रुकी

५८

57

न्याईं हरकर लेजावेगा। ९। चौपाई। संशयघना
हिं सुनहु भगवाना। तदपि उपरंत वचन मम
श्राना। कौन हमहूं मरकट मुख जोई। तदपि
विणाम प्रकट अस होई। वानर करहिं सहा
य तुम्हारी। सब विधि वनहिं मीन छितका
री। तुम उनकर रक्षारण लैहो। मोर वचन
संतन अब पैहो। सुनत श्रवण नारद मुख
शापा। बोले हरन जगत संतापा। विनय यु

क अति कोमल बानी। मंजुल मधुर सुखदहि
न मानी। मुनि नायक तव सत्य बखाना। कछु
संशय नाहिन निधिजाना। भावी काज करगर
बाई। आपहिं हमकुं अवश मुनि बाई। पेसन
है। तव मुनि वर धन्या। इह जोई अंबरीष न
पकन्या। सु निशिला निज मान सनेही। धारि
स हृदय रुचिर प्रण एही। बिन हरि आन
नाहिं बरमोरा। अस नेम कछु हृदय न बोरा

प्रेम नेम कछु हृदय न थोरा। इन्हिमें मोर ध
रम प्रण जोई। सब विधि तमहिं विदत म
नि सोई। सोरठा। जे संतन नरभाम। मोहि
कहँ भजहिं सप्रेम जन। मे प्रवक्तं तहि
काम। सत्यवचन संशय नहीं। ८०। टीका
फिर नारद मुनी कहते हैं कि हे भगवन
मेरे इस वचनमें कुछ संशय नहीं है अरु
तिसपर और भी मेरा वचन है कि जो न

मने हमारे वानरों के मुख कियेहैं तिसका त
मको प्रकट इह फल होवेगा कि वानरही त
मारे रणमै रक्षक होवेंगे श्रौर तुम उनकी
सहायता लेवोगे इसप्रकार मुनीके मुखसे
शाप सुनकर भगवान जोहैं सो वडी कोमल
श्रौर मीठीवानीसे नंम्र होकर कहने लगे
किहे मुनियों विषे श्रेष्ठ नारदजी श्रापने स
त्य कहाहै इसमै कछु संशय नहींहै इहभावी

की प्रबलता हमारे पर अवश्यही आवेगी एवं
त हेमवती सत्यम इह राजा अंबरीषकी कन्या
जोथी इसने अपनी माताकी शिक्षा लेकर
हृदयमें निरंतर करके भक्ती प्रीतीसे इह प्र
ण धारन कियाथा किमें विष्णुभगवानके
बिना और किसीको कदाचित नहीं वरूंगी
तो इसमें हेमवतीमें सत्यधर्म और प्रणजोहै
सो तमको भलीप्रकार विदतहै जो कोई स्त्री

२ भं. ६.

60

अथवा पुरुष भक्तोप्रीती पूर्वक मेरेको निरंत
रकरके भजताहै मै तिसकी कामना अवश्य
पूर्ण कर्ताहूं इसमे कुछ संशय नहीहै। चौपा
ई। इहितें सो कन्या पतिधरना। रह्यान उचित
तुमहिं सुनि बरना। इह अपराध मोर सुनि रा
या। मै जोई कीन तुमहु करि दाया। रहे तुमा
व जवन बचसोई। पूरव तुल्य बचन मम होई।
सुनि अस बचन बदन भगवाना। हृदय आनं

५६.

द युगल मनिमाना। विविध भांति अस्तुति
मव गाये। नाय सीस निज भवनसिधाये। वि
स्वनाथ नहि पतनि समेता। राजे निज बैकुंठ
नकेता। इह पुनीत वर चरित सुहावा। मैन्ट
प अंबरीष मन भावा। कीन यथा मति कथ
न रसाला। श्री गुरदेव दीन जनपाला। हर
न कलेस शोकविन सावन। मंजुल भक्ति प्रे
म प्रद पावन। अति उतकृष्ट सुखद सवकाहू

परहिं प्रीति जिन श्रवणन जाहू। सोरठा॥ पाव। हिं सो मनकाम। कपटदोष दावद मुकत। भक्ति रमापति राम। तहि उर संतत होहिं हद। ९९।

टीका। भगवान कहते हैं कि हे मुनी इस न मित्र करके सो राजाकी कन्या तुमारे वरने के योग्य नहीं थी मेरेही वरनेके योग्यथी। ताते मेरेसें इह तुमारा अपराध भयाहै अब अनुगृह करके मेरेको तुमाही करिये और

जौनसे तुमारे शरीरहैं सो मेरे वचन करके पूर्व वत जैसेथे तैसेही हो जावेंगे तब ऐसेभगवानके वचन सुनकर मुनीजोहैं सो परम हर्षको प्राप्त होजाते भये और फिर अनेक प्रकार भगवानकी अस्तुती गायन करके जय जय कहते हुये अपने अपने आश्रमकोचले गये और सर्व चराचर के स्वामी भगवान तिस राज कुमारीके सहित तहां अपने वैकुंठ ।

धाममें ही विराजमान रहते भये नाभादास
जी कहते हैं कि हे गुरदेव स्वामीजी इसप्रका
र अंबरीषका सुंदर चरित्र जोहै सो जैसा कि
मेरी बुद्धीके अनुसार हो सका गायन कर।
दियाहै इह कैसा भी चरित्रहै कि कलेशोंके
हरने वाला और भगवान की भक्ती और प्रेम
के देने वाला सर्वसुखोंका साधनहै जो कोई
इसको प्रीती पूर्वक पढ़ सुनेगा तिसकी म



९
भ.
६३

नवांछित कामना सब सिद्ध होवेगी और स
र्व दोष दारिद्र और कष्टोंसे मुक्त होकर भग
वानकी सुंदर भक्ती को प्रापत करेगा । ९ ॥
इतिश्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ती महात
मे भाषा टीकायां अंबरीष चरित्र वर्णनंना
म   सप्तमः ।

मिहांसिंहकृत

अथ विदुर त्रिये चरित्रं। सोरठा। श्रीगुरदेव कृ
पाल। चारु भक्ति वर विदुर त्रीये। जहि विधि
की नसि ग्याल। सोवरणन प्रभुपें करहु। चौपा
ई। अवसर एक विदुर गृह त्यागी। गयो वहि
र कारज हित लागी। रही सदन एकल त्रि
य तासा। परम प्रवीन शील गुणरासा। एक
दिवस उठि प्रातहिं काला। सो मंजुल निज
अजर रसाला। प्रमदित करन मारजन ला

गी। करि हान सकल सदन अनुरागी। वहुरि
निजगण निज अंग न सोई। मजन लगीन गान
तन होई। ताही समय हास हन हावन। हरि
प्रसिद्ध त्रैलोक विभूषण। आये नदन छाडि न
हि द्वारा। विदुर विदुर रव वदन उचारा। आव
हु वहिर भवन नव भाई। वार वार बोलत ज
डुराई। नव नहि पतनि सुनत हरिबानी। प्रेम
प्रीति करुणा रस मानी। ततक्षण वहिर भव

न चलि आई। नगन सरीर चीर बिसराई। भ
गवन रूप देखि अनुरागी। बचन बनीत भ
नन लागलागी। गद गद गिरा प्रीति नहीथो
री। मनभाव ठाढि जुगल कर जोरी। करहु
कृपाल सदन मम पावन। धारि चाह निज
चरन सुहावन। आवहिं नाथ सोइं पतिमेरा
जहिपर कृपा दृष्टि प्रभु नेरो। सोरठा। कवि।
बिनंति मृदुबानि। भक्ति प्रीति मनमान जुत

९
भ०
२

गहि प्रभ कर निज पानि। लैआई भीतर भव न।।१।। टीका। नाभा दास जी कहते हैं कि हे दीनदयाल गुरदेव स्वामी जी अवभै विडर। की स्त्रीकी भक्ती जैसीक तिसने करीहै आप के आगे प्रीती पूर्वक कथन करताहूं एक दिन विडर जी जोहैं सो घरसे निकल कर किसी कारज के वास्ते कहीं बाहर ग्रामांतरको। चले जातेभये तव पीछे तिनकी परम प्रवीन

शील और गुणोंकी रासी पतनी जोषी घरमें
अकेली रहजाती भई सो एकदिन प्रातःकाल
हीं उठकर अपने सुंदर अंङ्गनमें वडे आनंद
पूर्वक झाडू मार्जन आदि घरका सब कारज
करके फिर वस्त्र उतार कर और नगन होकर
स्नान जो करने लगी तो इतने मे सर्व दूषणों
के हरने वाले तीन लोकके भूषण हरि अव
तार हंसरूपमानसमा आय करके तिसके द्वारे

१
भ
२

के बाहर स्यन हो जाते भये और हरषसे बार बा
र पुकारने लगे कि हो विदुर घरसे बाहर आवो
ऐसे भगवानको बारबार बुलावते सुनकर औ
र पतीपर अतसे प्रीती और सनेह देखकर प्रे
मसे उनमत्तभई हुई वस्त्रोंकी सुधी विसारक
र नगनहीं धावती हुई घरसे बाहर चली आई
तब भगवानका रूपदेखकेआनंदमै मगन हो
गई और दोनो हाथजोडकर गद गद बानी से

३

कर प्रेमसे कहने लगी कि कृपानिधान चलि
ये और चरन कमलोंसे मेरे घरको पवित्र क
रिये आपकी आनु गहवाला मेरा पतीभी
इतनेमें आय जाताहै ऐसे कहिकर वडे म
नमानसे भगवानका हाथ अपने हाथमें
लेकर घरके भीतर ले आवती भई ॥ १ ॥ चौ
पाई । हरि आगमन देखि गृहमाहीं । भई उ
नमन प्रेम सधी नाहीं । पुनि पुनि छबि बिलो

१ मं. ४

4

कि चन वरना। परत दंडवत चरनन धरना।
प्रेम मगन नहि कुसल निहारी। पीतांवर नि
ज रुचिर उतारी। नाह नवन प्रभदीन उठा
ई। वोले वहुरि वचन जदुराई। सुनहु स
शील भक्ति रतनेहा। जेकछु वसन भोज नव
गेहा। औहीं तो प्रवीन वड भागी। लायदेहु
छुधा मोहि लागी। सुनि अस वचन वदन
भगवाना। हरषी विदुर पतनि सुखमाना।

५

उठि लखन्त निज भवन सिधाई । अमिय सरस क
दली फल ल्याई । सनमुख बैठि हुलसभगवाना ।
भक्ति प्रीति संजुत निज पाना । मूल पदारथ देत
नयागी । लकहिं लेत मानस अनुरागी । सादि
व प्रभुहिं जिमावत सोई । प्रेम मगन सुधिसार
नकोई । प्रीति अलौकिक नाथ विलोकी । तेभग
वान नाथ त्रैलोकी । खोवत तिनहिं अमिय स
मजानी । विविध प्रसंसि वदन मृदु वानी । ताहि

ऐ॰ भं॰ ५

समय रटत जदुराई। विदुर आगमन भवन कि
य आई। निज अंदर न नव देखि विराजे। कृष्णको
टि छवि मन मथलाजे। पुनि देखी सनमुख नि
ज भामा। ओढे पीत वसन घनस्यामा। छाल
रसाल कदलि फल जोई। हरिहिं अहार कर
वत सोई। ऐसे देखि विदुर गति नासा। हृदय
अनसे उदवेग प्रकासा। सोरठा। लागयो वद
न वखान। करिबहु विधि सिसकार नहीं। का

णीय सूक्ष्महान। मति तोरी भोरीभई।२। टीका।
इस प्रकार जब भगवानको अपने चरणमैं विरा
जमान हूये देखा तबप्रेम करकै ऐसी उनमत्त हो
गई कि शरीरकी भी कछु सुधी नहीं रही और
भगवान की सुंदर छबीको बार बार देखकर
चरनो पर दंडवत प्रणाम करतीभई। तब तिस
को प्रेममैं मगन और उनमत्तभई जानकर कृपा
निधान भगवान जोहैं सो ततकाल अपनापीतां

भा० द०

वर उतार कर तिसके ऊपर वडी प्रीतीसे उछा
य देतेभये और फिर कहनेलगे किहे सुशील
वड भागन इस समय हमारे घरमे जो कुछ खा
नपान करने वाली वस्तु है सो मेरेको शीघ्र ला
य करके देवो मै क्षुधा करके पीडत हो रहा हूं
इस प्रकार भगवानका वचन सुनकर सो विदुर
की वाला वडे हरषसे सहित पूर्वक उठकर आप
ने घरके भीतर चली गई और तहांसे प्रसन्न के

६८

समान सुंदर और मधुर कदली फल जो थे।
से लेकरके ततकाल चली आवतीभई और
फिर भगवानके सनमुख बैठकर बडी प्रीती
और भक्तीसे तिनके मूलपदार्थ को फेंकती
और ऊपरकी छाल उतार कर भगवानको दे
तीजाती से कृपानिधान त्रिलोकी के नाथ ति
सकी अलौकिक प्रीती और भक्ती देख कर
बडे आनंदसे खावते जाते और अनेक प्रका

भै. ८

र तिनकी शालाचा करते तिसी समय विदुर
भी तहां आय जाता भया क्या देखता है कि कृ
ष्ण परमात्मा आसन मे विराजमान हैं और मन
माव तिसकी स्त्री तिनका पीतांवर ओढे हुये
बैठी है और कदली फलकी छाल उतार उतार
भगवान को भक्ती प्रीती से अहार कराय रही है
ऐसे तिसकी दशा देखकर विदुरजो है सो अ
पने हृदय मे अतसे गिलानी मान कर क्रोध

८

से तिसका तिरसकार करके कहने लगा कि
हे मंद स्वभाव वाली मूढजाती स्त्री क्या तेरी
बुद्धी मलेछ होगई ओर क्या तं बाउलीहोगईहैं
इह तेरा क्या कर्म है।२॥ चौपाई। कदली साक
अहार करावहु। मंद मूढ नहिं हृदय लजाव
हु। अरु पट पीत रुचिर भगवाना। लीन ओ।
ढि नव कुमति महाना। कामरूव आपन ल
खुताई। है उनमत दीन विसराई। जोगीस्वर।

१०
भं०
८

ऋषि राज गयानी। संत देव उज तपस अमा
नी। जां कर वचन रेख खचि जोई। जा चित रह
हिं दीन गति होई। तव तिन कर जड लीनसि
धारा। पीतांवर नहिं कीन विचारा। पतिभाव
स्नेह वचन अस जवहीं। भई चेत जुत भामति
तवहीं। आपन दशा देखि अकुलाई। उठि ला
जित निज भवन सिधाई। कीन विविध आप
न धिरकारा। भीतर जाय वसन निजधारा।

८

पीतांबर भगवान उतारी। राख्यो करि प्रणाम
संभारी। तब इत विदुर मोद जुत होई। लेन रु
चिर रंभा फल सोई। त्वक उतारि संजुत सनका
रा। प्रभुहिं करावन अमिय अहारा। मन प्र
सन्न पावन भगवाना। देखि रुचिर रुचि प्री
ति महाना। पूछत विदुर नाथ फल एहू। श्रे
हिं मधुर कछु दीन सनेहू। विहसे कृपाल
कृस्न सुनि बानी। बोले बचन मधुर हितसानी

१
मं
५

सुनहु विदुर तुम यद्यपि दीना। अमिय सरस फल रुचिर नवीना। सोरठा। तद्यपि नहि मम नाहिं। तव त्रिय दीनसि साकजे। भूरि प्रेम मन माहिं। सो मोरे विसरत कहां।३। टीका। विदुर कहते हैं कि हे मूढ भगवानको कदली अर्थात् केलेके फलोंके छिलके अहार कराय रहीहैं अरे महा मंद तेरे कोलज्जा नहीं आवती और हमरा तेने हे कुमती रहु भगवान

५

का महां पवित्र पीतांवर जो ओढ लियाहै ।
तोक्या मूरख तैंने उनमत होकरके अपनी
लघुताई जोहै तिसको को विसार दियाहै रे
गवार देख कि जिस प्रमात्माके चरनो की
रज अर्थात् धूडीको योगीस्वर और राज ऋ
षी संत महात्मा महां तपसी और ज्ञानी देव
ता और ब्रह्मण इत्यादि सब जाचना करते
रहतेहैं तूं तिसके पीतांवरको निरसंक हो

१०
भं०
१०

करके अपने ऊपर धारन कर लियाहै तेरी ये
सी बुद्धीकोधिगहै इस प्रकार पतीके मावसे
तिरस कारके वचन सुन करके सो बाला जो
है ततकाल चैतन्य होकर स्मरनमें आय जा
तीभई। और अपनी दशा देखकर बडे संकुच
और लज्जाको प्रापत भई हूई उठकर अनेक
प्रकार अपना तिरसकार करके सो भगवा
नका पावन पीतांबर जोथा तिसको उतार

१०

कर प्रणाम किया और सनमानसे राखकर
अपनेहीं वस्त्र धारन करलेतीभई और ईन्हो
विदुर जोहै सो सुंदर कदली फलोंकी छा
ल उतारकर वीचका अमृतके समान जो
पदार्थहै भगवानको अहार करावता भया
तव कृपानिधान तिसकी भक्ती और प्रीती
देखकर वडे आनंद पूर्वक खावने लगे औ
से भगवानको प्रसन्न देखकर विदुर कहने

१८ भ.

लगा कि हे दीनानाथ इह्न फल कुछमीठे हैं
कि नहीं इह्न वचन सुनकर भगवान मुस
कावते हुये बडी मधुर और हिनकी भीगी
हुई वानीसे कहने लगे कि हे विदुर तुमने
मेरेको यद्यपि अत्यंत मधुर और अमृत के
समान सुंदर नवीन फल खवाये हैं तद्यपि
तिनके समान नहीं हैं कि जो तेरी पतनीने
प्रेम पूर्वक मेरेको कदलीके छिलके अहार

॥

करायेहैं हे भक्त सो मेरे हृदेमे क्यों कर विस
रते हैं ।१। चौपाई । अस कहि कृपा सिंधु मम
कावहीं । हरषितास्स वहुवार बुलावहीं । ते
उर सकुच लाज वस होई । हरहिं हर युक्त
कर दोई । विनय प्रणाम करत गति दीना ।
प्रेम अलौकिक जायन चीना । अस प्रकार
तहि प्रीति सुहाई । मै संतपन वदन कछु ।
गाई । अव आगे हमर इतिहासा । करहुं यथा

१०
भं.
१२

मति वदन प्रकासा। अवसर एक कहत सुर
नाहीं। मंगल इंद्रप्रस्थ पुर माहीं। दुरजो धन
कर भवन सुहाये। पांडव हत विदन वनिआ
ये। तहां कृपाल विविध विधि नीती। कीन
कथन सव मंजन प्रीती। कहत उरु जोई विवि
ध प्रकारा। कीन नएक तिनहूं सुईकारा। त
व मथ्यान काल तहं आवा। करत रुचिर सं
वाद सुहावा। ताही समय पाक गृह राई। भो

१२

जन वनो विविध विधि आई। तब आये कै
रव मिलिसारी। कहि सवदन तिन विनय
उचारी। हमरे वचन चारु निज धरहो। चल
हु नाथ कछु भोजन करहो। दुरजोधन पुनि
विनय वखानी। धृतराष्ट्र न्रप विविध प्रका
रा। यद्यपि दीन वचन उच्चारा। तद्यपि हरि
देव नहिं माने। तब कौरव निज हृदय लजा
ने। सोरठा। जव भोजन नहीं कीन। भगवन

वहुविधिवर
नहिविरमत्तु
वानी

१° भ° १३

13

दुख शब्द स्रवन । नव नंम्रत मुख दीन । विनय
कीन धृतराष्ट्र नृप ।४। टीका। इसप्रकार भग
वान विदुरके साथ वचन करके मुखमै मुस
कावते हैं और विदुरकी स्त्रीको बार बार बुला
वते हैं और सो बडभागन भगवानकी आनु
गृह देखकर लज्जाकरके बडे संकोचको प्रा
पत होती और हरसेही हाथ जोड कर विन
ती और प्रणाम करतीहुई भगवानके प्रेममै

मगन होरहीथी इसप्रकार जिसकी प्रीती और
भक्तीजोहै सोहे गुरुदेव स्वामीजी इहां कुछ
संक्षेप करके कथन की गईहै अब आगे और
दूसरी गाथा जैसीक बुद्धीके अनुसार होसक
तीहै गायन करताहूं एक समय इंद्रप्रस्थना
मा नगरमै कि जिसको दिल्ली कहते हैं कृस्न
परमात्मा पांडवोंके दूत बनकर समाचार ले
नेको दुरयोधनके घरमे आवते भये तहां बडी

प्रे॰
भं॰
१४

प्रीती और सनमानसे कृपासिंधु भगवानने नीती
युक्त अनेक प्रकारके वचनजोहैं सो कथनकि
ये परंतु भगवानके ऐसे नीती संबंधी वचनो
को तिन्होंने स्वईकारनहीं किया नवचरचा वार
ता होनीको मध्यान समय होगया तिसी का
ल विषे राजाके घरमै भोजनके प्रकारभी सब
वन चुकेथे तब कौरव जोहैं सो मिल करके
आये और दीन होकर नंम्रवानीसे भगवान।

१४

के आगे बिनती करने लगे कि कृपानिधान ह
मारे घरमै चरन धारिये और चलकरके भोजन
पाईये दुरजोधनने भी अनेक प्रकार करके वि
नती करी और धृतराष्ट्रने भी नम्र बानीसे ब
हुत बार कहा परंतु भगवान नही मानतेभये
तब कौरव हृदयमै बडी लज्जाको प्राप्तहूये।
जब इस प्रकार बिनती करनेसे कृपानिधानमा
ने भोजन नही किया। तब जिस प्रकार बडी नं

भं॰ १५

म्र वानीसे दीन होकर राजा धृतराष्ट्र प्रार्थनाक
रैने लगा सो आगे कथन किया जाताहै।४॥
चौपाई। हेहरि महा बाहु जन घाला। दलन दोष
दारद सुख शाला। कृपासिंधु पूरन सवकामा
विनवहुं नाथ जोरि जगपाना। यद्यपि प्रभु सुद
शा हमनाहीं। तदपि प्रभ लालस मन माहीं।
विनु भोजन कीने सुख सिंधु। जाहु नाहिं तवजा
दवरेह। इह हम कहं प्रभ देहु वडाई। सवविधि

15

१५

जानि नाथ अपनाई। जब अस भूप कथन मख
कीना। तब हरि उत्र वदन नहिंदीना। सुनहु
नृपति तव सत्य वखाना। कय हम कय तुम
नाहिं समाना। पैतोरे मख वचन वनीती। हो
त जोनि संवंध प्रतीती। प्रीति धरम चरचा क
छुनाहीं। करत प्रकट कछु अन हित काहीं
होत सरस भोजन नृप ताहो। प्रीतिभाव पू
रण मन जाहो। प्रेम प्रीति विन अरथनण्का।

१० भ० १६

16

यद्यपि व्यंजन होहिं अनेका। इहिते मै भोजन
नहिं करहो। तुम यद्यपि मान सरिस भरहो।
कछु अपदा आप्पो नहिं मोरे। जोमै करहुं पा
कगृह तोरे। सदा स्वतंत्र अमल गत त्रासा।
अस कृपाल भखे वचन प्रकासा। सोरठा। नव
कौरव समुदाय। धृतराष्ट्र नृप सहिततहं।
मौनन हृदय लजाय। करि चिंतन निज निज क
रम।५। टीका। राजा धृतराष्ट्र कहतेहैं किहे

भारी भजों वाले दीनोंके पाल भगवान नम।
कैसेहो कि जगतमें सर्व कामनाके सिद्ध क
रने वाले और दोष दारिद्रों को हरने वाले स
र्वोंके धामहो मै हाथ जोड़कर विनती कर
ताहूं कि हम यद्यपि आपके समान नहींहैं
तद्यपि कृपानिधान हृदयमें अनसे करके इ
ह लालसा रखतेहैं कि आप भोजन किये
विना हमारे घरसे नाजाईये आनंद पूर्वक।

भे॰ ८

ईहां भोजन कीजिये और हमको बडाई दीजि
ये इसमें हे नाथ सर्व प्रकार करके अपनाई
प्रतीत होवेगी जब राजाने ऐसे कहा तब ह
स प्रमानमा उत्तर देतेभये कि हेराजन तैंने
सत्य कहाहै क्याजाने कि हम तुमारे समान न
हींहै कि तुम हमारे समा नहींहो परंतु राजन
तुमारे मुखके वचन जोहैं सो निश्चय करके
उपहास अर्थात मसकरी संबंधी प्रतीत होवे

८

17

होतेहैं इनमें प्रीती औेर धर्मकी कुछ चरचा
नहींहै इसके सहित आनंद दायक भोजन
नहीं होताहै कि जहां मनमें प्रीती भाव नि
श्चय होताहै प्रीती औेर प्रेमकेविना यद्यपि
अनेक व्यंजन भी होवें तद्यपि किसेहीं अर्थ
नहीं हैं हेराजन् इस कारनतें मे तमारे भोज
न नहीं पावताहूं इसमें चाहे तमारे चित्तमें
क्रोध भी होजावे मेरे को कोई आपदानहीं बा

१० भी० १८

पीछे जो मै ऐसा अन्न हीन देख कर तुमारे घर मै भोजन करूं क्यों कि मैतो सदा स्वतंत्र और निरमल अभय रूपहूं इस प्रकार भगवानके मुखसे वचन सुनकर धृतराष्ट्र के सहित से पूर्ण कौरव जोहैं सो अपना अपना कर्म चिंतन अर्थात स्मरण करके हृदय मै लज्जाको प्राप्त होकर मौन हो जाते भये। ५। चौपाई।

अरु भगवान सभाहित त्यागी। आये भवन

विदुर बड़भागी। बोले बदन मधुर मृदु बानी।
परम प्रेम प्रीती रसमानी। सुनहु विदुर तुम्ह
छुधा मोहि लागी। देहु बेग कछु बिलम नयागी
जो नव भवन जोग आहारा। सो अब करहु।
मोर सतकारा। सुनि प्रभु बचन बदन भरा
बाना। परम आनंद विदुर मनमाना। रहा ति
नहुं निज हेतु बनावा। शाक मात्र कछु पाक
सुहावा। संजुत भक्ति प्रीति सुखमानी। देत

लखिन उपलेपन पानी। सादर आसन दीनबि
छाई। राखिस काष्ट पीठ हरषाई। प्रभुमन म
ख जग जीवन पाना। विदुर दीन गति विनय
बखाना। कृपा निधान आज मम गेहा। शाक
मात्र कछु भोजन देहा। सोमोहि देत लाज जी
य परहीं। जो विलंब करुणा निधि करहीं। तो
नवीन भोजन कछु आना। वनहिं वेग पावहु
भगवाना। सुनि शुभ वचन विदुर मुखपंकज।

बिहसि बोले अस दीन सनेहू। सुनहु बिदुर न

व नाहिंन जाना। मोहिन प्रिये कछु शाकसमा

ना। तोते देहु भक्त नम सोई। पावहुं मै प्रसन्न

मन होई। प्रीती भक्ति जुत शाक तुम्हारा। अ

मिय सरस मोहि मानस प्यारा। बिरचे जबहिं

बिदुर हुज घरना। अन्नकूट व्यंजन बहु बरना

तबमै तहां शाक सब राखा। प्रीये प्रधान ब

दन निज भाखा। जब अस भने बचन भगवा

१० भा० २

ना। उठे विदुर संजुत मनमाना। लेन सलिल कव चरन पखारेउ। प्रभुहिं रुचिर आसन बैठारेउ।

सोरठा। नव सपननि दुरनाम। राखि प्राक पावन परम। मनभाव कृपा प्रकास। भई निवेदन करनसे। ६। टीका। और ईहां भगवान तिनकी सभा त्याग करके बडे भागों वाला विदुर जोहै तिसके घरमें चले आवते भये तहां अनसे प्रीती पूर्वक मधुर वानीसे तिसको कहने लगे।

२०

किहे विडर मेरेको अत्यंत तृष्णा लगीहै इस स
मय जो कुछ तुमारे घरमै खान पान करने
की वसतहै सो मेरेको शीघ्र देवो मैपायकर
तृष्णाको निवारण करूं ऐसे भगवानका व
चन सुनकर विडर परम हरष को प्रापत हो
ताभया और तिस समय तिसके घरमै कुछ
शाक कि जिसको साग कहते हैं बनाय कर र
खा हुआथा ततकाल सुंदर लेपन देकर और

१०
भ०
२१

चौकी उसाय कर वडी प्रीती भक्तीसे नेत्र होक
र और हाथ जोड कर कहने लगा कि हे कृपा
निधान आज मेरे घरमै कुछ शाक मात्र ही भो
जन वनाहुआहै सो आपको देनेमै लज्जा आ
वती है जो कदाचित आनुग्रह करके एक छि
नभर विलंव करो तो भगवन ततकालही कु
छ संदर नवीन भोजन वन जाताहै सो आप
आनंद पूर्वक पाईये इस प्रकार विदुरका वच

२१

न स्तन कर कृपाके समुद्र भगवान जोहैं सो
इसकरके कहने लगे कि हेविदुर तुमने
नहीं जाना इह सागजोहै सो मेरेको अत्यंत
प्याराहै तोते तूं इह सागहीं मेरेकोद मै इ
सको वडे आनंद पूर्वक पाऊंगा इह प्रेम औ
र भक्तीसे दियाहुआ तुम्हारा साग जोहै सो
मेरेको अमृतके समान अनसे प्याराहै हे
विदुर जानतेहो कि जव तुजमैं अन्न छूटका

प्र० भ० २२

प्रारंभ भयाथा तहां अनेक प्रकारके व्यंजन
जोहैं सोरचे गयेथे हेभक्त मैने तिन व्यंजनो
विषे तहां इह सागही मात्र राखाथा और
अत्यंत सबसे प्रधान कहाथा जब इसप्रका
र हमने प्रमानमाने कथन किया तब विड
र उठ खडे हूये और जलका गंगासागर ले
कर बडे सनमानसे भगवानके हाथ और
चरन प्रक्षालन करवाये फिर भक्तोश्रीतीसे

२२

सुंदर आसन पर बैठाये तब तिसकी स्त्रीने । अतिसे कोमल और पवित्र पत्रों पर तिस सा गको परोसन करके भक्ती पूर्वक भगवान के आगे नवेदन करदिया।६। चौपाई । सजल नयन कल पुलक सरीरा । प्रेम मगन ठा ढ़ी गत धीरा। वत्सल भक्त दीन जन पा ला। करत शाक भोजन सुख शाला। कस्यो कृपाल प्रेम जत खाई । आज विदुर त्रिपती

१८ भ० २२

ह्रम पाई। सो प्रणाम करि पानन जोरी। कह
न वदन उर प्रीति नयोरी। भयोमि आज कृतार्थ
दीना। अस भवन भोजन प्रभ कीना। शाक
मात्र मै पाक वनावा। अमिय जानि करुणा
निधिपावा। केवल दीन दीन कहं स्वामी।
वडे वडाई भक्त अन गामी। दरजोध कर विवि
ध प्रकारा। भोजन रुचिर अमिय आहारा।
परिहरि सो कृपाल मम गेहू। पाव शाक

२२

कछु दीन सनेहू। धन्यन आज मोर सम आना।
जेहि असदीन सुजस भगवाना। भाषि विदुर
अस संजुत प्रीती। लेत सलिल सुंदर सुभरीती
प्रभु कर चरन भक्ति सनमाना। करन पखा
रि पुंगि फल पाना। वदन शुद्धि कारन अच
वाये। देखि भक्ति भगव हरषाये। पुनि प्रमुदि
त प्रभु कीन पयाना। जीय समेत नव विदुर
सजाना। चले अग्र पहुं चावन हेतू। हरषि।

बिदाय कीन भव सेतू । करि प्रणाम नव भव
न पराये । उत कृपाल निजधाम सिधाये । वहा
उच्छिष्ट पाक प्रभु जोई । तासु मुदित मन दंपति
दोई । पावन लगे परम हित मानी । पावन
सुधा सरस जीय जानी । इह देखहु जग भक्ति
प्रभावा । अति अदभुत मन हरन सुहावा । कहे
रमीस लोक त्रै नाहीं । शाक अहार विदुर गृह
कांहीं । इहितें भक्ति सरव सुख साधन । करहिं

निरंतर जवन आराधन। सब जीवन कहं अति

सुखदाई। उदय भाग जहि संसृति पाई। दोहा

सुजस वधा वन भय हरन देन शरण श्रीक

न्त। भक्ति महानम इमत जग कहिनसक

हिं श्रुतिसन्त।८। टीका। तब सो विदुर की

स्त्री नेत्रोंमें प्रेमजल भर कर आनंदमें मग

न भई हुई मनमाव स्थित होकर दरसन क

र रही है और वतसल भक्त भगवान जोहैं

सो प्रेम पूर्वक तिस सागको खावते जातेहैं
और कहतेहैं किहे विदुर मैने आजहि त्पनी
पाईहै तब विदुर प्रणाम करके दोनो हाथ ।
जोड कर कहने लगा किहे दीना नाथ इह
दीन आज कृतार्थ और धन्य धन्य हो गयाहै
कि जिसके घरमै आप अनकूल हो करके
भोजन पाया मैने वडी फीकाई करीथी जो इ
ह साग मात्र कुछ पाक वनायाथा परंतु आ

पकी आनगृह्हके वलि ह्वारे जाताहूं जो इस
मेरे दिये हूये सागको आपने प्रसन्नता पूर्व
क अमृत जान कर पायलियाहै इससे मैजा
नताहूं कि भक्तपाल आपने मेरेको केवल इ
ह्वडाई और महजसही दियाहै देखिये कि
दरजोधन के घरमे अनेक प्रकारके वनेहूये
व्यंजन त्याग कर मेरे घरमै एक साग मा
त्र अनकूल होय करके पाय लियाहै ताते

भ॰
२६

संसारमें आज मैं ही धन्यहूं और मैंही सुजस
का भाजनहूं ऐसे कहि करके विदुरने बड़ी
प्रीती और सनमानसे जल लेकर अपनेहा
थोंसे भगवानके हाथ और चरन प्रछाल
न करवाये और पुंगीफल अर्थात् सुपारी
और पान आदि सबकी छाड़ीके वासे वड़ी
भक्ती प्रीतीसे अचवाये इस प्रकार विदुरकी
भक्ती और प्रेम देखकर कृपासिंधु भगवान

२६

जोहैं सो बडे हरष को प्रापत भये तिसनें उप
रांत हुलसमानमा तिनकी प्रसन्नता लेकर
जब अपने भवनको चलने लागे तब स्त्रीके
सहित विडर जोहैं सो आगे पहुचावने के
वासते साथहीं चलपडे परंत मारगसे भग
वानने अनेक प्रकार समझाय कर तिनको
विदाय करदिया तब सो दोनो बार बार प्रणा
म करके हुलस हुलस रटते हुये अपने घरको

भ॰ प॰ २८

चले आवतेभये उहां भगवान अपने धामको चलेगये तव ईहां भगवानका उछिष्ट अर्थात् जूठा भोजन जो वचाहूआथा तिसको दोनो स्त्री भरता अमृत जानकर वडे हरषसे खाय लेतभये हे संतजनो इह देखिये भक्तोका कैसा अदभूत प्रभावहै कि कहां लछमीके नाथ तीन लोकके स्वामी भगवान और कहां विदरके घरमे सागका आहार इसीतें हमें

२८

27

न जनो इह भक्तीजोहै सो संसारमें एक वडा
कारणहै और सर्व सुखोंका साधन है इस
के आराधन सें सर्व जीव वडे आनंद को प्रा
पत होतेहैं इह प्रेमके सहित भगवानकी
भक्ती कैसीहै कि सर्व कलेश और भयके
हरने वाली और सुजसके सहित भगवान
की शरणको प्रापत करने वालीहै और
इसके महातमका कुछ परिमाण नहीहै।

अनंतहै स्रुति और संत तिस के कथन कर
ने को सामर्थ नही हैं ॥७॥ इतिस्री भक्त
विनोद ग्रंथे भगवद भक्ती महात्मे भाषाटीका
यां विडर चरित्र वरणनं नाम स
गीः ॥

मिहांसिंह कृत

॥ भ॰ १

ॐ अथ रामानुज चरितं । दोहा कथा सुधारस पाव
नी सुनहु श्रवण दै सैन । हरन भूरि भ्रम भीत भव
करन शरण श्रीकंत । जासु सुनत हरि विमुख जन
होहिं सुमन सुखदाय । सो अनुपम सुख सुजस प्र
ट करहुं प्रकट कछु गाय । चौपाई । अग्रवाणि रामा
नुज केरे भये विदित विद्वान घनेरे । और हुं प्रकट
अचारज जेते । करहिं वदन गायन सब तेते । सुधा
सिंधु तिन चरित अथाहा । को सामर्थ्य कथन कर

१

राहा। ईहां कछु कलछु मनि अनुसारा। करउं एक
धन संक्षेप प्रकारा। सेष सेज भगवन इक काला।
राजे निज विकुंठ कल आला। बाहु चतुर्भुज श्याम
ल गाता। निंदरत नलिन नील अवदाता। उरविसा
ल बन माल बिराज्यो। नयन नवल नीरज छविला
ज्यो। मौलि कीटकल मणिगण मंडित। रवि द्युति
जोति कोटि सत खंडित। करन मकर कुंडल
बाहू। चत्र चक्रादि चिन्ह मन हारू। भ्रकुटि लोल

कल वेकवि हारी। वसन पीत लावन्यत न्यारी। ला
जित मदन कोटि छवि अंगा। दीननाथ भव भीजवि
भंगा। लखि प्रवेश कलि घोर महाना। उरविचार
कीन्यो भगवाना। दोहा। मम मनभाव जन होहिं
कस कीजै कवन उपाय। भये नरक गामी सकल
कलि प्रभाव जगपाय। ८। टीका। नाभादास जी
कहते हैं कि हे संतो इह गाथा जो श्रवन रस कर
के भी गी हुईहै सो इसको अब कान देकर सुनिये

१

इहकैसी भी गाथा है कि संसारका महा भय
और भ्रम के नास करने वाली और श्रीपती जो
भगवानहैं तिनके चरनो की शरणको प्रापत
करने वाली है फिर कैसीहै कि जिसके श्रवण
करने ते भगवानमें जो पुरष बिमुख भये हूये
हैं सो ततकाली ही भक्तीप्रीती वाले होकर भ
गवान के सनमुख होजाते हैं रामानुज और ति
नके सिष्यसेवक बडे बिद्वान पुरुष और भी जो

जो आचार्य प्रसिद्ध भयेहैं तिनकी गाथा एक
अमृतके अथाह समुद्र वत है जिसके कथन
करने को ऐसा कौन सामर्थ्यहै परंतु हे गुरुदेव
स्वामी जी समयके अनुसार और लछुमनजीके अ
नुमानसे ईहां कुछ गायन की जातीहै कहतेहैं
कि एक समय भगवान कृपानिधान अपने वै
कुंठधाममै शेषनाग की सिज्जापर कैसे ध्यान
से विराजमान थे कि चार तो भुजें और नीले क

मल को लज्जादेने वाला सुंदर स्यामल सरीर ब
डा विशाल हृदय और तिस पर शोभादेतीहै नल
लीकी माला और नवीन कमल की छबी को हर
ने वाले मनोहर नेत्र सिर पर कंचन का दिव्य मणि
यों करके खचित भया हुआ सूरजकी कोटि आभा
वाला मोर मुकट और कानोमें मकराकार कुंडल
संख चक्र गदा पदम इनो करके शोभायमान औ
र कुटिल भवें वडी शोभावाले पीतवस्त्र और को।

२१ भं० ४

टि कामदेवकी छबी को लज्जादेने वाले सुन्दम श्रं
ग ऐसी शोभावाले और संसार का भय हर करने
हारे भगवान जोहैं सो कलीकाल अर्थात कलयु
गका घोर प्रवेश देखकर हृदय मे विचार करने
लगे कि ऐसा कौन उपाय किया जावे जिससें वि
मुख भये हूये लोगमेरे सनमुख हो जावें देखो
कि कलीकाल का प्रभाव पाय करके सब जीवन
रक के अधिकारी होगये हैं ।२। चौपई। प्रभु जी

य सोच गुनन अहिराई । बोले वचन चवन सिवन सि
रनाई । कवन सोच वारन भवनावन । कमनकरहु
अव प्रकट उचारन । तव वोले अस त्रिभुवन नाथा ।
सुनहु भुजगनायक मम गाथा । धरम सुकरम
परन नहीं हेरी । कलिमति ह्वयो लीन सवकेरी ।
सव व्रत दान दयादि विसारी । देभाचार निरत न
रनारी । एरहिं अवसि नरक सव जाई । मोरे सोऊ
सोच अहि राई । अमन काल कलि लोग सवाही ।

रा॰
भ॰
५

किमिश्रावहिं मोरे पुरमांही । तुमहूं सेष समरथ वि
धनांही । करहिं जे मम सनमुख इनकां हीं । तोते
तुमहूं परम उपकारी । इन जीवन उद्धार विचारी ।
भवनरहो पृथवी तलमांही । करहु जाय सनमुख
सबकांही । सेष सुनत भगवन अनुसासा । नाय सी
स सुख विनय प्रकासा । मैजाव हूं भगवन महिमा
हीं । देहु विभूति जुगल जनकांही । दोहा । होहिंका
ज सबसिद्ध तव प्रभुतव कृपा प्रसाद । परमसत्त भ

गवन भन्यो पाय परम प्रह्लाद । २ । टीका । इस प्रकार भगवान के हृदयका सोच देख कर फणप ती जोहैं सो चरनो पर सीस नाय कर कहने लगे किहे गजका त्रास हरने वाले और भवरूपी समुद्र के तारने वाले अब मेरेको प्रकट करके कहि ये कि आपने हृदयमैं सोच किस नमित्त कियाहै सै से शेषका वचन सुनकर तीन लोकके नायक भ गवान कहने लगे किहे भुयंग नाथ मेरा वचन

गण जो संसार मै इस कली कालने सब की बुद्धी
हर लईहै धर्म और सुकर्म कहीं देख नहीं पडताहै
यज्ञ व्रतदान दया इत्यादि सब बिसार कर सब
नारीनर दुराचार मै लीन होरहे हैं इह अवश्य क
रके नरक को परिपूरण करदेवेंगे तोने मेरे हृद
यमे यही बडा सोचहै कि इह कलीकाल के ग्रसे
हुये लोग मेरे पुरमै किस प्रकार आवेंगे अब हे
सेषदवमहिं सामर्थ हो और तो कोई नहीं देख पड

९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ता जो इन जीवों को मेरे सनमुख करेगा ताते हे
फणनायक तुमही परम उपकारकी नथीहो इ
न जीवोंका उद्धार विचार कर पृथवी तलपर जा
यकर अवतार धारो और इन विमुख जीवोंको मे
रे सनमुख करो तब शेष जी भगवानकी आज्ञा
मानकर और चरनो पर सीस नाय कर विनती
करने लगे कि हे कृपानिधान मै पृथवी तलपर
जाताहूं परन्तु कृपा करके अपनी दोनो विभूती

ऋद्धीसिद्धी जोहैं सो मेरेको दान करिये नव आप
की अनुग्रहसे सब कारज भली प्रकार सिद्ध हो
जावेंगे ऐसे शेषके मुखसे वचन सुन कर भगवा
न एवमस्तु कहते हुये कि ऐसेंही होगा हृदयमें
परम हरष और आनंद मानते भये । २। चौपाई।
नवग्रहीस उर आनंदछाये । अवनि गवन हित हो
न बिदाये । चतुर खेहशान सीस सुहावन । धरयो
नाथपद पंकज पावन । बार बार अस प्रभुहिं ज

ह्लारी। लीन्यो वङ्गरि प्रदत्तण ह्लारी। नवभाष्यो
श्रमत्रिभुवन राज्ञ। नम्हरे ह्लाथ भक्त श्रवकाज्ञ।
जस वनि परहिं करह्नुनस जाई। नम सामर्थ्य मर
व ह्लावदाई। नम नाहिन उपदे मनजोग्य। शुण
निधान जानन मवलोग्य। संव चक्र श्रादिक प्र
नि जोई। पठे दीन दयानिधि मोई। मनुज रूप
निजधारि सुहाये। हरि प्रेरन श्रवनी नल श्राये।
फणि नायक करहू वारंवारो। दीन नाथ श्रीवद

२१ मं० ८

न उचारो । रहइ कबहुं जनि भूलल जाई । मान मौनधरि आशु डुराई । सकल लोक हित हृदय विचारी । करि उपदेस जनन सुखकारी । प्रथरम कुमति कपट इरचारा । रहु सकल करि धरम प्रचारा । दोहा । पवमस भनि भुजग पति प्रभुसा मन धरि सीस । मानलोकक हेगवन किये जिय सुमरत जगधीस । ३ । टीका । नव शेष नागजी वडे आनंदमे मगन भये हुये पृथवी नल पर जा

नेको विदाय होनेके वास्तने भगवान के पास आ
य कर और हजार सीस ही चरनो पर् धर् कर् फि
र् वार वार दंड प्रणाम करके चार प्रदक्षणा लेने भ
ये तब कृपासिंधु भगवान कहने लगे किहे भक्त
अब हमारा कार्ज तमारे हाथही है जैसे होसके तैसे
ही करो तम सर्व प्रकार् करके सबके सुखदायक
और सामर्थ्य हो मै तमको क्या उपदेश करूं और
क्यासिखाऊं तम तो आगेही सर्वगुणों की निधी

श्री
भ॰
५

और नीती विचारमैं परम चतुर सब लोगोंमे प्रसिद्ध
हो जद्यपि बारं बार मै हे भुजग नाथ यही कहताहूं
कि पृथवी तल पर जाय करके मत कहीं मौन धार
कर और अपना आप छिपाय कर बैठरहो जहां जा
नेंही सरब जीवोंका हित विचार कर बडा सावेदा
यक उपदेश करके अधर्मि कठुडी कपट इछाचा
र इह सब हर करके सेद्र धरम और सुकरम जो
हैं सोई जहां तहां प्रचलित करदेवो इस ने विमुख

प्रत्य जोहैं सो आपही मेरे मनमुख होजावेंगे इस
प्रकार भगवान की आज्ञा सीस पर धारन करके
शेषजी कहने लगे कि महाराज ऐसेही होगा इत
ना कहिकर और भगवानके चरन कमल हृदय
मे धार कर जे हो दीनाथकी ऐसा कहने हुये फण
पती जो हैं सो तुरनही मानलोक को चले आवने भ
ये तिनके पीछे ही भगवान कृपा निधान सेख व
क्रादियोंको भी आज्ञा देते भये कि तुम भी पृथवी

॥ भ० १०

तलपर जाय करके और मानुष्य रूपधार करके
जीवोंको धरम और सु करम मै लगायकर तिन
का उद्धार करो इस प्रकार भगवानके प्रेरे हुये सो
भी पृथवी तलपर चले आवने भये ।३। चौपाई ।
दक्षण देस विदर्भ सुखदाई । कावेरी पुरि सुन्दर सु
हाई । तहि महं सुमति सुजस सुख गेहा । द्विज वर
एक निपुण गुण रेहा । केसवजन्वा नाम सुहावा ।
भवन भरि सुख संपति छावा । प्रमुदा नाम शील

गुणधामा। कांति मती प्रभ नाम ललामा। मन

हू हरन छवि मन मथ नारी। पति व्रत धरम नि

रत सुभ चारी। जद्यपि दुज सब सें पति जानै। त

द्यपि सुत विहीन दुख मानै। पुत्र कामना हेतु मन मा

ही। सुमरत रहत रमापति काही। दंपति तजि

भरोस जग आना। एक आधार कृष्ण जीय जाना।

दोहा। प्रभु तिन भक्ति अनन्य लखि भेउ समझ फणि

राय। कांतिमती के गर्भ प्रभु प्रवसे कौतक आय।

२१
भ॰
११

। ४ । टीका । तब दक्षिण देशमैं एक वडी रमणीक और मनोहर कावेरी नाम करके पुरी प्रसिद्ध थी तिसमैं एक बुद्धीमान सुजन और सबका धाम ब्राह्मण निवास करता था सो धन संपती करके परिपूरण केशव जज्वा नाम करके प्रसिद्ध था और कोति मती नामा तिसकी स्त्री परम सुशील और गुण की निधी अत्यंत रूप वाली और पती ब्रत धरम मैं वडी प्रवीन थी यद्यपी तिस ब्राह्मण को सुशील

११

स्त्री और धन संपती करके सरब प्रकार सुखेही
आपन्न था तथपी संतान सें जो रहित था इस कर
के हृदय मै बडाही दुख और कले शमानता था ए
कीदिन पुत्रकी प्रापतीके निमित्त लछमीके नाथ
भगवान जो हैं तिनकाही स्मरण कर तारहता था
तैसेही तिसकी स्त्री भी और सबका भरोसा त्याग
करके एक नारायण के चरनकमलों को सुमर
ती थी इस प्रकार तिनकी दृढ भक्ती और प्रीती

देखकर फण पती जोहैं सो हृदय मैं अत्यंत प्रसन्न होकर कौतकसे कांतिमती के गरभमैं आय कर प्रवेश करने भये । ४ । चौपाई । नव तैं होन लगयो पुरि नाना । नित नव मंगल मोद महाना । द्वादमास जब गयो बिताई । चैत सुकल पंचमि तिथि पाई । अभिनमार गुरु वार सुहायो । कांति मती सुंदर सुतजायो । सुनिके सब जन्म सुतभयऔ । हरष्यो परम मोद वपु छयऔ । कहत आज निवरन डुख

दीना । हमरो सफल मनोरथ कीना । अनन्त सत्य
श्रुतिसि श्रुतिटेरे । सुमरत सुलभ नाथ सब केरे । सु
सकाहि के सब जन्त्रानाना । दिये दान विप्रन मनमा
ना । निज गुरु वहुरि लिये बुलवाये । नाम सैलछ
रण जग गाये । संसकार सुत कर जस राहा । कर
वायो संजुत उतसाहा । दिन दिन बढत भयो नव
बाला । देखि सुदिन सुभ नाम रसाला । रामानुज
राख्यो मन भावा । विप्र भवन सनु भाव सुहावा ।

बढत बाल जब भयो सयाना। तबहि याहि पढन
रुचि माना। रूप तेज गुण सील उदारा। जान्यो सब
न शेष अवतारा। चारि वेद षट शास्त्र पुराना। कौन
क पढे शेष भगवाना। दोहा। वरष ग्रह दसकर भ
ये ते जबदीन सनेह। प्रमुदित तपिता कराय तब दि
यो दारपरि गेह।५। टीका जब ते शेष भगवान ने
तहां प्रवेश किया तब ते तिस पुरी विषे नित्य नवी
न मंगल और उत्सव है जो हैं सो होने लगे जब तेम

होने वतीन होगये तब चैत्रके सुकला पक्ष की पं
चमी तिथी को प्रातकालही गुरुवारके दिन कोतिम
नी महेन्द्र पुत्र जोहे सो जनमती भई ऐसे पुत्रका जनम
सुनकर के राव जन्नाभी अपने हृदय मै परम आ
नंदको प्रापत भया कहने लगा किआज सरब दुख
और कलेशों के निवारने वाले भगवान कृपानिधा
नने हमारे मनोरथ सफल कियेहैं सुनोभाई मुनी
और मित्रनी सभ करके पुकारनीहै कि जो कोई

११ भ० १४

भगवानका स्मरण करेगा तिसको दीना नाथ सह
जेही फलके देने हारे हैं इसमै कछु संशय नहीं है इ
स प्रकार कहि करके के शवजन्वाने ब्रह्मणों को बु
लायकर वडे सनमान से अनेक प्रकारके दान जो हैं
सो दिये तिस नें उपरांत अपने गुरू शैलहरण नामा
जी को बुलाय कर जिस प्रकार पुत्रका संसकार हो
ना है सो विधी पूर्वक सव कर वाया अैसे दिन दिन
पाय करके वालक जो है सो वढना भया तव पि

ताने सुंदर और शुभ दिन विचार कर तिस बाल
कका नाम रामानुज रखदिया सो ब्रह्मणके घरमे
वडी शोभा पावता भया और जब वे बढ़ कर सया
ना हुआ तब रूप तेज गुण शील और उदार ता क
रके वडा चतुर होता भया फिर विद्या पढनेमे रुची
और प्रीती जो लगी तो थोरेही कालमे चारो वेद
षट शास्त्र अठारो पुराण एक कौतकमे ही पढक
र प्रवीन होयगया तब लोगोने जाना कि इह सा

॥ भ० १५

ज्ञान शेष भगवान का अवतार है और जब फणी
नायक जी अठारां वर्ष के होगाये तब पिता ने बड़े
हरष और उतसाह से दार परिग्रह अर्थात विवाह
कर वाय दिया । ५ । चौपाई । असप्रकार कछु काल
सराना । शेष जनक किय हरिपुर पाना । पितकर
प्रेतकरम जसबरना । कियो सकल तसधारन य
रना । बहुरि राखि रुचिमानस मांही । करहूं येन
सभ शास्त्र सवाही । रहे गुसाईं विदन पढ़ भारी ।

जादवगिरि नामिक सुभ चारी । सुर गुरु सम वि
द्वान महाना । तिन कर चरन सरन हितमाना ।
लै पुलक मानस गुरु रागे । रामानुज निजम दनन
पागे । पढ़िन हेत कांची पुरिमांही । चलिआये स
सरन प्रभु कांही । भलहिं न्याय व्याकरण विचारा ।
श्रुति सांगादि किये निरधारा । बहुरि कियो वेदां
त आरंभा । सुमरन हृदय भक्त अवलंभा । पठन
पठन कछु समय बिताबा । तहिपुर रह्यो जवन

रूपभावा। सकलवि सील निधी नाम कुमारी। रूप प्रधान मान रति हारी। वस्त्र पिसाच लग्यो इक तामा। नहि निवर्ण हिन भूप प्रजामा। किये अनेक जद्यपि धन खोई। तद्यपि नजतन भयो नहिं सोई। तब जाद व छिन पति सुनि पाये। मंत्र शास्त्र संपन्न सहाये। सुना हेत मारिरन रहाई। शिष्यन सहित गरहलिये बुलाई। विनय प्रणाम विविध सुख भाखी। सुता लाय मन सुख रूप राखी। जगकर जोरि वहुरि

अस वाचा। लग्यो नाथ इहि व्रह्मपिसाचा। मैहा
हो करि जतन सबाही। अब उपाय कछु प्रभुवि
नु नाही। दोहा। सहासेन परहित करन वारन पी
र पराऊ। इहि कलेस अब हरिय प्रभु करि निज
मंत्र प्रभाऊ। ३। टीका। जब इस प्रकार कछुका
ल वतीत होगया तब शेष जी के पिता शरीर को
त्याग कर पर लोक को चले जाते भये तिनका प्रे
तकरम जिस प्रकार जोग्य था सो फणी नायक

जीने विधी पूर्वक सव किया तिसतें उपरांत तिन
को शास्त्र विचारने की फिर रुची उपजती भई तव
एक वडे प्रसिद्ध गुसांई परम विद्वान और वडेभारी
पंडित धरम सुकरम मै प्रवीन जादव गिरी नाम
करके लोगोंमें गाये हूये मानो वृहस्पती के समा
न विद्याकी एक निधीथे तिनके चरनोकी शरण
विचारकर रामानुज जी अपने सव पुस्तक लेक
र और घरको त्यागकर भगवान को सुमरने हू

ये पढने के निमित्त तिनके पास कांची पुरीमें चले
आवते भये तब तहां न्याय व्याकर्ण और सांख्यादि
भली प्रकार विचार करके तिसके उपरान्त भक्त
पाल भगवान को हृदयमें स्मर कर वेदान्त शा
स्त्रजोहै तिसका प्रारंभ करदिया इस प्रकार जब
पढते पढते कुछ काल वतीत होगया तब तिस
पुरीका जो राजाथा तिसकी रूप गुण शील स्वभाव
वाली और छवीकी खानी एक सुतसे मनोहर क

न्या थी तिसको करमकी गतीसे एक बहल पिसाव
लगा हुआ था सो राजाने तिसके निवारने के वास
ते यद्यपी अनेक जतन भी किये और धन भी बहुत
खरच किया तद्यपी सो दुष्ट तिस कन्या को नहीं
छोडता भया तब राजाने जादव जी को सुणपाया
कि मंत्र शास्त्रमे अत्यंत प्रवीनहैं ततकालही पुत्री
का कलेश निवारने के वासते तिनको शिष्यों के
सहित सनमान पूर्वक घरमें बुलाय लिया और

अनेक प्रकार विनती प्रणाम करके फिर पुत्री को
लाय कर तिनके मन सुखे बिठाय दिया और हाथ
जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि हे दीना नाथ इस क
न्याको ब्रह्म पिसाच लगा हुआ है मै अनेक उपाय
कर करके हार गया हूं अब इसकी गती आपके वि
ना और किसीके हाथ नहीं है हे भगवन तुम संत
सदैव पर हितकारी और पर पीड़ाके निवारन क
रने वाले हो संसार मे तुमारा शरीर केवल पर उप

सु॰
मं॰
१५

19

कारके बामने ही है तांते अब कृपा करके अपने
मंत्रके प्रभावसे इस कन्याका कलेश जोहै सो निवा
रण करिये । ८ । चौपाई । सुनि अस दीन वचन नर
राया । जादव भये नवन वस दाया । पढि पढि मंत्रल
गे वड़ झारन । भयो नवल प्रेत कछुवा रन । प्रव
ल जानि मानस विसमाये । अबकी जै इहि कवन उ
पाये । तव मनसुख इज वचन पसारी । हमको प्रेत
दै दै कर नारी । जा इ जा इ बामन निज गेहा । देखे

मेत्र जेत्रन वपहा। इनतें मोहि नत्रास कछु भाई।
जेत्र मेत्र श्रम श्रनकनिकाई। हम उडाय डुजवान
न दीने। मेत्री जे त्रिहनन वड कीने। पूर्व जनम
हमरो डुजजाती। हमरे हृदय विदन सवभाती।
पूर्व जनम हवका ननभीरा। वसन रहे इक सर
वर तीरा। नहि थल मेन स्रह इकश्राये। तिरन भ
क्ति भगावंन महाये। देखि विमल जल किये मना
ना। करि नित करम पाकविरवाना। हरिहिं लाय

रा॰
भ॰
२१

नै वेद सु हावा। आपु संग पुनि भोजन पावा। जे उ
छिष्ट सब सिष्ट रहाना। ते पनवारी सर दिये वहाना।
बहुरि संतमारग निज लीना। पाछे तुम हूं गवन न
हें कीना। दोहा। ते उच्छिष्ट पनवारी लिये जलतें तुर
त निकार। विकल क्षुधा वस वैठि नट सो तुम कि
ये अहार। ७। टीका। तव श्रीमे राजाके दीनवचन
सुन कर जादव जोहैं सो तुरत दयाके वश होकर
और मंत्र पढ पढ कर कन्याको फाडने लगे यथ

२१

पी मंत्रोंका बहुत ही प्रभाव दिखाया तद्यपी सो

ब्रह्म पिसाच कछुभी निवर्त नहीं भया तब जादव

तिसको प्रबल जानकर हृदय मै आचर्ज होकर वि

चार करने लगे कि इसका क्या उपाय करिये इह

तो बडा असाध्यहै इतने मै सो पिसाच तिनके मन

मुख चरन पसार कर और हाथोंकी नाडी देदे कर

बडा हसने लगा और फिर कहता भया कि हे ब्रह्म

ण अब उठो और अपने घरका रसताले वो मैने त

मारे इह जेत्र मेत्र सब देख लिये हैं इननें मेरे को

कुछ डरनही है ऐसे कई जेत्र मेत्र हम्रा कर नेहैं ह

मनेतो अनेक बातोंमे ही उड़ायदिये हैं और अनेक

जेत्री मेत्री मार कर प्राणों से ही मुकायदिये हैं हे

ईलणा तुम किस गिनतीमे हो तुमारे तो पूर्व ले

जनम को भी हम भली प्रकार जानते हैं सो श्रव

ण करो कि पूर्व जनममे तुम बडे घोर वणमे एक

सरोवरके किनारेपर वास करते थे जिस अस्थान

पर एक भगवानके भक्त संतरूप बडे महात्मा आ
य आपन भये तिन्होने सरोवर कानिरमल जल दे
खकर तहां सनान किया फिर अपना सब नित्यक
रम करके बडी प्रीतीसे भोजन बनाया और भक्ती
पूर्वक प्रथम भगवान को नैवेद लगायकर पीछे
आप भोजन पाया तब तिनका जूठा जो कुछ भोज
न बचाथा सो संत महात्माने पत्तल के समेत सरो
वर मे फेंकदिया तिस नें उपरान्त संत अपने मार

२१ भ० २२

ग को चलेगये और पीछे तहां तम आय आपन भये तब तमको तथाने जो व्याकुल किया हुआथा सो पत्र ल सरोवर से निकाल कर संत भक्त का जूठा भोजन जो उसमै कुछ रहा हुआथा सो तमने तहां बैठकर आहार करलिया । ३ । चौपाई । संत उछिष्ट प्रसाद प्रभाऊ । भये तमहूं जादव कुल राऊ । तहितें भक्ति सुमति सवदाई । तमहूं विपुल विद्यादिक पाई । अरु मै बस प्रेत जिमि भयऊं । ईहां प्रवेस भवन त

प लय औ। सो कारन सुन हौ ड्डजनाथा। तुमरे कर
इ्रे कथन सव गाथा। मै ज्ञीय जन संपत्ति परि वारा॰
वसतरहो निज सहित अगारा। समय एक जन वे
द विधाना। मैलाग्यो करन करन महाना। भूलि ग
यो मोहि मंत्र प्रकारा। भयो सिक्रिया हीन ड्डरवारा॰
तास पाप वस मै इन आई। भयो व्रह्म राक्षस ड्डजरा
ई। जरन लग्यो नि सवासर काया। भ्रमत भ्रमत
कहुं ठौर नपाया। तव आयोको वीग्रारि माहीं। ईहा

रा॰
भ॰
२३

देखि नृप नंदनि काही। मैं सचयो निज कुल कर भो
ती। तव तें कछुक भयो मोहि शांती। जेंडी मेटि को
टि किना होई। मोहि बावन करि सकहिं नकोई। दो
हा। नृप तन्याकर तजन मम पै इक ऐहिं उपाय। हो
हिं सफ़र संसय नहीं इज तोहिदे हुं वनाय। ८। टी
का। तव संत भक्त के झूठे भोजन खानेके प्रभावसे
हे ब्रह्मण हम जादवागिरी करके प्रसिद्ध भये हो औ
र तिससें ही सब सर्वोंके देनेवाली भक्ती और हम

ती ओर सुंदर स्त्रिया जोहै सो पाई है ओर मै भी जिस

प्रकार प्रेत भया हूं ओर ईहां राजाके भवनमे प्रवेश

पाया है सो मै सब कारण कथन करता हूं हे हंस प्र

धान तुम श्रवण करो क्या कि मै अपनी स्त्री संपत्ती

ओर परिवार के सहित बडे सुख पूर्वक घरमे वास

करताथा। एक समय मै वेदकी विधी के अनुसार

वडाभारी यज्ञ जोहै सो करने लगा तब मेरेको तहां

मंत्रका प्रकार भूल गया ओर मै क्रियासे हीन हुआ

२१
भ०
२४

वार होगया तिस पापके वश होकर हे इन्द्रराज मै ई
हांश्राय करके ब्रह्म पिशाचवन गया तब मेरा शरीर
जैसे अगनी करके जलता है तैसे जलने लगा भ्रमते
भ्रमते को कहीं भी ठोर नहीं मिला तब मै व्याकुल
भया हुआ कांची पुरी को चला आया ईहो इन्द्र राजा
की पुत्री देख कर मै इसको मव गया तब तैं मेरेको
कुछक शांती प्राप्त भई है अब जंत्री मंत्री यद्यपी
ईहां कोटि भी आवें तद्यपी मेरेको कोई निवारण

नहीं करसकेगा परन्तु इसमैं एक उपाय है कि जि
सनें मैं राजाकी पुत्री को त्याग सकता हुं और वेसय
करके है जिसमैं कुछ संशय नहीं है बल कुलमैं स
ह लक्षण है श्रवण कर सो आगे कथन किया जा
ताहै । ८ । चौपाई । हमरे शिषन मा हिं गणधामा ।
विदुन जास रामानुज नामा । सोमेरे कवहुंकि हुज
राई । निज चरणोदिक पान कराई । बहुरि करहिं
मोहि आपन चेला । तो मैं तज हुं सजा त्रप मेला ।

२१ भ० २५

स निजादव मान सबि समाना। तब इहिना निज भू
प स जाना। रामानुज पद मन सुख ल्याई। विनय वि
विध करि दीन विठाई। इह किंकरि प्रभु बचन नमारी
लग्यो पिसाच बल इहि भारी। दीन नाथ तब पद स
रनाई। ज्ञानि इ बिन कछु करहु भलाई। सुनि अस
नम्र बचन महिपाला। अरु कन्या डुख देखिवि सा
ला। रामानुज निज चरन पखारी। दीन्यो सुता व
दन मो ऊवारी। धरि निज पद कन्या कर सीता।

जाइजाइ ग्रस भन्यो वगीसा। ग्रह वरन ग्रनि वदन
उचारी। दिये सनाय भक्त व्रत धारी। नसो प्रेत तन
काल उडाना। मानि दुरलभ सव प्रव किय ध्याना।
देखिचरित जादव विसमान्यो। ग्रथो वदन मानस
विलखान्यो। निज ग्रपमान गनत जीय भारी। पि
यतजान मन क्रोध दिवारी। सता ग्ररोग देखि नि
जराई। रामानुज चरनन सिरनाई। जादव ज्ञान स
नकार महाना। कियोनरेस विविध सव माना।

कौन वड़ाई भ्रम विनय महा हीं। मोहितें सखो ना य कछु नाहीं। तव उपकार सेज भगवाना। मोपें कौन दीन पद जाना। श्रम प्रकार करि विनय वडा ई। किये विदाय सेन नर राई। आये तव जादव नि जधामा। रामानुज मानस निसकामा। दोहा। भू पति दान महानविन जादव कहे सब दीन। पैन हि सोवन नभ्यो कछु कियो कपट मन लीन। ए टीका। प्रेन कहताहै कि हे द्रुजराज नमारे शिष्यों

के बीच एक गुणोंकी निधी भगवानका भक्त रामा
नुज नाम करके जो प्रसिद्ध है सो मेरेको कही अपने
चरनोका जल पान कराय देवे और फिर पीछेसे मेरे
को अपना शिष बनाय लेवे तब मै अवश्य करकेराजा
कीकन्याको त्यागदेऊंगा इस प्रकार सुनकरके जादव
अपने हृदयमै परम आश्चर्ज को प्राप्त भया तब
राजाने सुखसे अनेक बिनती और बडाई करके क
न्याको ल्याय करके रामानुज जीके चरनो के आगे

विदाय दिया और कहाकि महाराज इह कुमारी आ
पके चरनो की चेरी है इस को महां दुखदायक अल
पिसाच लगा हुआ है अब हे दीनानाथ इह आपके च
रनोकी शरण गत भई है इस को दुखित जानकर
और उपकार करो कि जिसने इसका भला होजावे
ऐसे राजाके दीन वचन सुनकर और कन्या का पर
म कले शदेख कर रामानुज जी करुन दयाके वश
होयगये तब ततकाल अपने चरन धोयकर सोई

चरनो का जल लै करके तिस राज कन्या को पिला
य दिया और फिर अपना चरन कन्याके सीस पर
धर कर तीन बार जाउ जाउ जाउ कहि कर अष्टाक्ष
र मंत्रजोहै सो तिसके कानो मे सुनाय दिया तब
तिस मंत्रके प्रभावसे सो प्रेत ततकाल उडकर मु
नी जनों को दुर्लभ जो देव पुर है तिसको चला जा
ता भया इस अद्भुत चरित्रको देखकर जादवने
बडा आचर्जमान कर लज्जासे मुखनीचे को कर

श्री
भं॰
२८

लिया और अपना अपमान विचार कर मानो क्रोध
की अगनी को पीता जाताहै तब राजा अपनी कन्या
को आरोग्य जान कर रामानुज जी के चरनो पर बार
बार सीस नावता भया तिसके उपरान्त राजाने अनेक
प्रकार का धनदेकर जादवके सहित रामानुज जी
का बडा सतकार किया और फिर हाथ जोडकर
बिनती करने लगा कि भगवन मेरेतें कुछ नहीं
सराहै तमने ही अपने चरनो का सेवक जान कर

मेरे पर अनंत उपकार कियाहै कि जिसका कुछ
अंत नहीं इस प्रकार राजाने बार बार विनती और
बडाई करके संतमहात्मा विदा करदिये तब जाद
व शिष्योंके सहित अपने घरको चले आये रामानुज
जी परमत्यागी और निसकाम जोथे तिनोने राजाका
दिया हुआ सब धन जादवजी को ही देदिया परन्तु
तिसने अपने मनसे सोच नहीं त्यागा और हृदयमें
कपट धारन करलिया । ९ । चौपाई । रामानुज सों

वैर वंधावा। ऊपरहित मानस दिस छावा। एक दि
वस रामानुज के रा। मौसी कर सुत आन जटेरा। आ
यो भेट करन निज धामा। गोविंद चारज अस नामा।
परमसुशील संतहित कारी। ज्ञान निरत पंडित व्र
तधारी। जादव मनमिलि हरष उमंगा। बहुरि मि
ल्यो रामानुज संगा। पुछि परस्पर कुसल सुहाई।
बैठिगये सुमरत जदुराई। आनहिं देखि पढ़त वे
दोना। लाग्यो पढ़न आपु हतिधाना। श्रुति को म

रण समय इकमांही। जादव किये विरुद्ध तहां ही।
तव रामानुज विनय उचारा। इहन सुद्ध प्रभु ग्रंथ
तमारा। तव जादव करि कोपमहाना। रामानुज
सन वचन वखाना। अरे मंद मति अधम अपा व
न। भये तुम हु गुरु लगे पढावन। अस कहि अरु
न नयन त्रिसकारी। रामानुज कहं दियो निकारी॰
दोहा। तव आये आपन सदन रामानुज मतिधीर।
वैठि सा स चिन्तन चतुर उर सुमरत जदुवीर। ९।

रा भ ३

३०

टीका। ऐसे जादव जो है सो रामानुज जी सों वैर बां
ध लेताभया बाहर से तो हित करता और भीतर से
क्रोध राखताथा तब एकदिन रामानुजकी मासी
का पुत्र बडा भाई गोविंदा चार्ज नामा बडा सुशील औ
र संतों का हितकारी ज्ञान की निधी महा प्रवीन पं
डित जोथा सो अपना घर त्याग करके तिनके मिल
ने के वास्ते तहां आवता भया और हरष पूर्वक पहि
ले जादव को मिल कर फिर अपने भ्राता रामानुज

३

जी को मिलाकर परस्पर भली प्रकार कुसल पूछ
कर और गले लागकर फिर कुसल भगवानका स्म
रण करते हुये आनंदसे बैठगये सो गोविंदाचार्ज आ
पने भ्राता रामानुज को वेदान्त पढ़ते देख कर आ
प भी रुची पूर्वक सोई शास्त्र पढ़ने लगा तब एक
दिन श्रुतिका अर्थ जो है सो यादव जीने कुछ विप
रीत किया रामानुज सुन कर कहने लगे कि म
हाराज इस कप्यका अर्थ यथार्थ नहीं है अशुद्ध है

रा० भ० ३१

तब जादवने कोपकरके रामानुज को कहा कि अ
रे मूरख मंदमतीका तू गुरू बनकर मेरेको पढाव
ने लगा है इस प्रकार जिसने क्रोधसे लालनेत्र कि
ये हुये और बडे दुर्वचन बोलकर रामानुजजी को अप
नेपाससे निकालदिया तब सो धीरजके धाम और
शांती स्वरूप रामानुज जी तहांसे उठकर अपने घ
रको चले आये और घरमे एकान्त बैठकर रात्रीदि
न भगवान का स्मरण करने और शास्त्रके विचा

र करनेमै लगे रहनेथे । १९ । चौपाई । गये नपवन
हेत गुरु धामा । कियेपरम विस जादव बामा । नि
जशिष बोलि भन्यो श्रस बाना । रामानुज मम रि
पु दुखदाना । मै सुन मम जदुपालि पठायो । भलो
श्राज तोकर फल पायो । मनश्रहैन एवंड गन मेरो ।
वहन एवंड किय कुमति घनेरो । तांते सबमिलि क
रहु प्रनामा । जहिविधि मरहिं प्रथम श्रगरामा ।
मोरे जीय श्रस फुरो उपाई । सो तुमकहे सुनहे

॥ भ० ३२

३२ (pencil: 32)

इ समनाई। मकर प्रयाग अनावन हेतू। चलहु सक
ल मिलि प्रथम समेतू। तहां प्रवाह बेनि मध भाई।
मटहिं देहु नवसगम बुडाई। काहुसोच प्रभु शिष
न उचारा। लाविली जै रामानुज मारा। अस कहिग
यो एक शिष ताहो। दसो भवन रामानुज जाहो। रा
वन्यो करि मनुहार लिवाई। आवागुरु समीप हर
षाई। लखिजादव रामानुज काही। लग्यो प्रसंस
न वदन महाही। मकर प्रयाग अनावन हेतू। वो

सो नमहिं मजमदन मेनु। मम वचन रामानुज गाई। गयो मान पैंलेनविदाई। मान मुदित मन आयम दीना। गुरुमन हरषि गवन नवकीना। उगर विंध परवत ढिगजाई। दीन्यो गोविंद मरम जणाई।
दोहा। रामानुज मोहि हनन हित जादव जनन विचारि। मज्जन मकर प्रयाग मिस ल्याये विम वस भारि।।१।। टीका। नव रामानुज गुरुके घरमे पढने के वास्ते गो नहीं गये तिमनें मो हृदयमे बडा को

प मानकर अपने शिष्योंको कहने लगा कि देखो
इह रामानुज मेरा परम दुख दायक शत्रु है मैने पु
त्रके समान जिसको पाला था तिसका अथमने मेरे
को आज भला फल दिया है जो मेरे अद्वैत और अवे
द मनको इस इरबुद्धी खंडिन करने को सामर्थ हो
गया है तोते हे शिष्यो तुम सब मिलकर कोई जतन
न विचारो कि जिससे सो अधम पापोंकी राशी म
त्युको प्राप्त होवे इसमे तिसके मरनेका मेरे हृद

यमें एक उपाय फुरया है सोमें तुमको सुनाय दे
ताहूं क्योंकि प्रयाग राज परम करके न्हावनेके वा
स्ते तिस दुष्टके सहित सबमिल करके चलो ओर
तहां वेनीके प्रवाहमें जब प्रथम तुमारे साथ सना
न करने लगेगा तब तुमने पकडने ही ततकाल
जलमें डुबाय देना ऐसे गुरूका वचन सुनकर शि
ष्य कहने लगे कि महाराज इस वारनाका क्या सो
चकरतेहो अपने रामानुजको मरा हुआ देखलेना

इसप्रकार कहिकर एकशिष्य जहां रामानुजके घर
मै चला गया तब तिसके साथ अनेक प्रकार हित
के वचन कर कर और मनाय कर जबरनहीं साथले
करके गुरूके पास चला आया ऐसे रामानुज को जा
दव देखकर अन्तर मै कपट और बाहिरसे अत्यंत
प्रसन्न होकर बार बार शलाघा और बडाई करके
कहने लगा कि हे सजन और गुणके सागर रामा
नुज मैने तुमको प्रयाग राजके मकरन्हावने कै

के वास्ते बुलाया है तब सरल स्वभाववाले भगवा
नके भक्त रामानुजजी गुरुका सत्य वचन मानकर
और अपने पर हित जानकर तरनही विदायलेने
के वास्ते माताके पास चले गये तहां जानेही गुरु
की आज्ञा जोथी सो सबसुनाय दई तब माता आसी
स देकर कहने लगी कि पुत्र आनंद पूर्वक जावो
और गुरु के साथ सफर न्हाय कर फिर तिनके
साथही घरको चले आवो इस प्रकार माताकी आ

॥ भ॰ ३५

३५

ना पाय कर और चरनोपर सीस नायकर ततकाल ही लौटकरके गुरू के पास चले आये तब जादव गुरू जो हैं सो वडे हरषसे सुभदिन विचारकर रामानुज को साथलिये हूये सवशिष्यों के सहित प्रयाग राज को चल पड़ नेभये तो जब चलते चलते मारग काट ते हूये विंध्या चल परवत के पास आय पहूंचे तब गोविंदाचारी जो तिनकी मासीका पुत्र भ्राता जाद व गुरूके साथ था तिसने कहिदिया कि रामानुज

इह जादव नेरेको मारना चहताहै इसी कारननेंम
कर न्हावनेके वहानेसे नेरेको परम कोप करके
प्रयागराज को लेचलाहै । ११ । चौपाई । रहियो सा
वधान अव भाई । मै तोरे सव दीन जणाई । गोविं
द वचन सुनत हितकारी । रामानुज निज हृदय
वि चारी । वैठिरह्यो तरूतर धुनि मागे । जादव
जान रह्यो कछु आगे । तव गोविंद मिल्यो नहि जा
ई । नाम लग्यो एछन सुनगाई । रामानुज छा ग्री

कहिठामा । तब बो ल्यो गोविंद मतिधामा । मैजान्यो
मानस निजस्वामी । भयो संग तब आगल गामी ।
तब जादव निजशिषनहेकारी । दीन्यो सासन वदन
उचारी । खोजहु रामानुज कहे जाई । नदन सकल
शिष सासन पाई । शिथिलविघ्रन पथा पथ सा
री । मिल्यो न खोजि फिरे सब हारी । तबनिश्चय जा
दव जीय आवा । प्रथम श्रव सिंपे बानन खावा ॥
नाम सरन श्रम हृदय विचारी । गुणी सनान फल

सब सरि वारी । शिष्यन नृपजन सहित प्रयागा ।
कीन गवन जादव अनुरागा । दोहा । इननिर जन
वन विकल मन रामानुज वस ग्राम । वैठे नह नर
सोच पर परन नवनन श्याम । १२ । टीका । फिर
गोविंदा चारी कहताहै कि भाई तुम सावधान रह
ना मैने तेरेको सब भेद जणाय दियाहै इस प्रका
र गोविंदका वड़ा सुखदायक वचन सुन कर रामा
नुज धीरज मे रहिन और हृदयमे विचार करने

श्री
भ॰
३७

हुये एक वृक्षके नीचे बैठ गये औौर जादव कुछ दूरी
पर आगे आगे चला जाताथा इतने मै गोविंदाचार्य्य
धाय करके तिसको जायमिला तब जादव पूछने
लगा कि गोविंद तुमने रामानुज को कहां छोडा है
सो बुद्धी और विचारमै वडा प्रवीन जोथा कहने ल
गा कि महाराज मैने जाना जो रामानुज आपके सा
थ आगे चला आयाहै ऐसे सुनकर जादवने तुरत
अपने शिष्योंको बुलायकर कहा किभाई शीघ्रता

से धाय कर जावो और रामानुजको खोजकर मेरे
पास ल्यावोवे कहां चला गया है तब गुरुकी आज्ञा
पायकर सेहगों शिष्य जहां तहां परवत कंदरा वण
मारग कुमारग इत्यादि देखने हार गये तिन्हों ने
रामानुज कंही नही पाये फिरतो निरास होकर स
व चले आये और गुरु को आयकर कहने लगे कि
महाराज हम बहुत खोज थके हैं क्या जाने रामानु
ज कहां लोप होय गया है तब तो जादव को निश्च

य होयगया कि तिस प्रथम को अवश्य करके सिंह
ने खाय लियाहै ऐसे रामानुजका मरना हृदय मै
विचार कर जादवने जाना कि आज हमको गंगा के
स्नानका फल प्राप्त भयाहै तिसके उपरान्त सब
शिष्योंके सहित बडे आनंद पूर्वक जादव जो हैं सो
प्रयाग राजको चले आये और ईहां बडे गोहिवर नि
र जन वन मै उरके वश व्याकुल भये हूये रामानुज
एक वृक्ष के नीचे बैठे हूये हृदयमै विचार करते हैं

परन्तु तहां से जानेका कोइ उपाय नहीं बन पडता
है । १२ । चौपाई । काह करब जाउब कहि ओरे । ई
हां न ग्राम पास कोउ मोरे । अति घोर भयावन बन
एहू । अब आधार हरि दीन सनेहू । अस विचारि उ
र भक्त प्रवीना । बैठि ध्यान जदुनंदन कीना । प्रभु
आधार निरधारन केरे । संकट हरन बिरद स्रुति
टेरे । निज जन कर कलेश दुखभारी । सहि न सके
प्रभु भक्त उवारी । रमा सहित भगवान सहाये ।

रा॰
भ॰
३९

आपनि आप रूपधरि आये। रामानुज जहि तह नर
नीके। रहे करन समरन सीय पीके। नहि मग कहुं
हरन डुरवदीने। तुण धनुष सर धारन कीने। तव
रामानुज देखिविवाना। जीय जन आप किये किन
धाना। तव कह आयरूप भगवाना। हम हे मत्य
वन तीरथ जाना। तव इकोन इनकारन केही। वै
ठिरहे भावन वन पही। जानि परन भ्रम दशा न
म्हारी। मानहु मगण शोक निधि वारी। दोहा। ३

वधकरूप भगवनवचन सुनि रामानुज कानि। बो
ले वदन उठाय निज कछुकधीर उरआनि। १३।
टीका। फिर रामानुज अपने मनमें विचार कर क
हतेहैं कि क्या करूं और कहां जाऊं ईहां तो मेरे
आस पास कोई जीव जंतु भी नहीं है इह वन जोहै
सो महा घोर और भयके देने वालाहै अब मेरेको
एक दीन हितकारी मुरारी भगवान जोहैं तिनका
ही आधारहै और किसीका भरोसा नहीं है इस

२१
भ॰
धं॰
40

प्रकार विचार कर भक्त प्रधान रामानुज जी हृदय
मै ह्रस्म परमात्माका ध्यान धार कर विनती करने ल
गे किहे भगवन तुमही निरधारों के आधार हो और
तुमही निरमानो के मानहो तुमही कृपानिधान
हीन जनोके दुख और कलेश हरने को सामर्थ सु
नी पुराणों ने प्रकट गायन किये हूये हो जब इस
प्रकार भक्त प्रधान ने प्रार्थना करी तब दीन बंधु
और कृपा के सिंधु भगवान अपने जनका कलेश

सहार नहीं सके तब लक्ष्मी के सहित व्याध औ
र व्याधनीका रूप धारकर तहां वनमें प्रकट हो
कर जिस वृक्षके नीचे भक्त स्त्र बैठे हुये भगवान
का स्मरण कर रहेथे तिसी समनेसे धनुषबान धा
रन किये हुये निकल चलने भये तब तिनको दे
ख कर रामानुज कहने लगे किहे व्याध भाई तुम
स्त्रीके सहित ईहां वनमें कैसे फिर तेहो और कहां
को जाते हो ऐसे तिसका वचन सुनकर व्याध स्त्र

ए भगवान जो हैं सो बोलते भये कि भाई हम तो
सत्य ब्रत तीर्थ को जाने वाले हैं अब तुम अपनी क
हो कि ईहां महा भय के देने वाले वनमें अकेले क्यों
कर बैठ रहे हो तुमारी दशा तो ऐसी देख पडती है
कि मानो शोकरूपी समुद्र मै डूबे हुये हो ऐसे वचन
हुए भगवानका वचन सुनकर रामानुज मुख
उठाय कर और धीरजको धार कर जिस प्रकार उत्तर
देते हैं सो आगे कथन किया जाता है । ३ । चौपाई ।

मैवसहौं कांची पुरि मांही । मकर प्रयाग सनावन
कांही । आवा मारग गयो भुलाना । नवबैद्य इन
वि कलमहाना । देखेन रह्यो च कन च इहांही ।
मिल्यो न संगि विपन मोहिकांही । नम्यो आस स
व मकर सनाना । जो मोहिमिलहिं सहायक आना ।
तोनकेन निज जाइ भिषारी । नामवचन सुनि व
धकमुरारी । बोले वदन मंद मुसकाई । कांची
निकट मत्र बनभाई । तीवघ्य विदन लघ्यो कस

[illegible]
भ·
५२

नाहीं । चलहु विप्र सबमै नवकाहीं । कोंची पुरिन
व धाम पुवाई । बहुरि मन्पवन तीरथ जाई । दुजस
नि व्याथ वचन हितकारी । चलो संग लागि सुदि
त सिधारी । कोस पुजन्न गये जब दोई । सुषेत्रकन
नब जामनि होई । तह तर एक किये विश्रामा । वी
ती जब जामनि जग जामा । उठी सु न्दषन व्याथनव
नारी । लागी पतिनैं मांगनवारी । मोरेजोन मिल
हिं पतिपानी । तोनिश्चय सब प्राणन हानी । कुसम

य जानि व्याध अस कीन्हा। ईहां नकूप निकट थीय

राहा। तब रामानुज वचन उचारे। प्रातइदिक मै

देहु नमारे। अस प्रकार जब भयो बिहाना। रामा

नुजकहे वधक वखाना। तब जल देन कह्यो नि

सिभाई। भोर् भई अब देहु लयाई। तब रामानुज

जलहिन पाई। कियो प्रवेश कूप मध जाई। देप

ति है पाछिल नहि आये। व्याध वचन अस बदन

अलाये। इजवर देहु वेग तब पानी। ततरहोत

२१
भ०
५३

जीय प्राणन हानी। दोहा। नव ल्यायो भरि अंजली रा
मानुज मतिधीर। मानकुल उन दइन करें पान क
रायो नीर्। ४। टीका। रामानुज कहने लगे कि हे
नाथ मै कांची पुरीमै वास करताहूं। और प्रयाग रा
जके मकर न्हावने के वास्ते संत समाजके साथचला
जाताथा ईहां दैवयोग करके मारग मे भूल गया
तो परम व्याकुल होकर इस दृक्षके नीचे बैठ गयाहे
नवनें चारो ओर देखने देखने मेरे नेत्र थकत होग

येहैं परन्तु वनमै कोई संगी नहीं मिला अब मैने म
कर न्हावने की आशा जो थी सो त्याग दई है चहता
हूं जो मेरेको कोई सहायकमिल जावे तो इस घोर
वनसे निकल कर अपने घर को चला जाऊं इस प्र
कार तिसका वचन सुनकर वधक रूप भगवान
मुखसे मुसकाय कर कहने लगे किहे भाई सत्य
व्रत तीरथ जो बड़ा प्रसिद्ध है सोतो कांची पुरीके पा
सही है तुम तिसको कैसे नहीं जानतेहो चलो अस

ण मै तुमको कांची पुरीमै तुमारे घर पहुंचायकर
फिर मम्म बन तीरथको चला जाऊंगा तब वयकरू
प भगवान के परम हित कारी वचन सुनकर रामा
नुज जोहैं सो आनंद पूर्वक तिनके साथ चल पडते
भये जब चलते चलते एक कोसतक गये तब सूर
ज भगवान अस्त होयगया और रात्री पडगई त
हां एक चणामा हत्तदेखकर तिसके नीचे व्याध
नी व्याध और रामानुज जीनो विश्राम करते भये

५५

जब दो पहर रात बतीत होगई तब व्याधकी स्त्री त्रि
षित भई हुई उठ कर अपने पतीसे जल मांगने लगी
और कहने लगी कि हे प्राण पती जो मेरे को अब ज
ल नहीं मिलेगा तो मै प्राणों को त्याग देऊंगी इसमें
कुछ संशय नहीं है ऐसे स्त्रीका वचन सुनकर और
कुसमय जानकर व्याध कहने लगा कि हे प्यारी ई
हां तो कोई कूप अथवा सरोवर निकट नहीं है कि
जिससे मै जल लाय कर तेरेको पिलाऊं इतने मै

रामानुज बोल उठे कि हे वधक भाई अब तोराच्री है
कुछ वस नहीं चलता परन्त प्रातःकाल होतेही मै त
मको जल ल्याय देऊंगा इस प्रकार जब प्रभात सम
य होय गया तब व्याध बोला कि भाई तमने जो जल
ल्याय देनेको कहाथा सो अब प्रातःकाल होगया है
ता वो शीघ्र जल ल्याय देवो तब रामानुज सनते ही
ततकाल धाय चले और वनमै कहीं एक कूआ दे
ख कर तिसके भीतर जल लेनेके वास्ते उतर जाते

भये और ईहां तिनके पीछे ही व्याध और व्याधनी रूप लक्ष्मी नारायण भी धावने हूये चले आये तब व्याध जोहै सो तहां आयकर रामानुजको कहने लगा कि हे ब्राह्मण अब तुम शीघ्रही जलदेवो ना।ही तो इह भामनी अपने प्राणों को त्यागतीहै ऐसे सुनकर धीरजके धाम रामानुज तुरतंही अंजली भर करके जल लै आये और व्याध व्याधनी दोनो को आनंद पूर्वक पान कराय दिया। १४। चौपाई।

पुनि हमहि अंजलि भरि लावा । दंपति कहं सो कृपा
न करावा । त्रितिये वार वहुरि जलदीना । जानि त्रिव
न जीय व्याय प्रवीना । भरन नीर अंजलि चतुवारी ।
गये जव हिं द्विज सह सिधारी । अंत ध्यान नव दंपति
भयऊ । करि वचित्र कौतुक निज नयऊ । द्विज ज
व कूप वहिर कढि आये । मोन जुगल दंपति हग
पाये । पै निज देस विलोकि स नयना । कहि न सक
न सम्भ्रम कछु वैना । करन विचार मनहिं विसमा

ई। हियो कवन मोहि दे समुझाई। अस प्रकार सो
चत मनमांही। दुजवर किये गवन पुर कांही। दे
खि पथिक मग पूछन बाता। कौन नाम इहि पुर
कर ताता। नव कोंची तिन कियो बखाना। रामा
नुज निज मानस जाना। रमा नाथ देख्यो मोहि कां
हीं। धरि निज ब्याध रूप बनमांही। कपट भेष दे
पति कहे रागा। बार बार दुज देखन लागा। दीन
नाथ डर दीन निहारी। कौन मोर कानन रखवा

री। प्रभुमम आन कवन संसारा। जन उवरन हित कवन उदारा। लखि झुखाउ मोहि विपन अकेला। कीन्यो व्याधरूप छल मेला। हरिहैमने कौतक ल्याई। दीन नाथ दियै भवन पठाई। दोहा। हरि उपकार विचार अस वार वार उर ल्याय। चलि आये नव सदन निज मन हि सीस प्रभु नाय। ८५। टीका। नव दूसरी वार फिर अंजलीभर करके जल ले आया सो भी तिनोने पान कर लिया तब तीसरी वार भी

ल्याया और व्याधकी स्त्रीको त्रिषत जानकर पिला
या जब चौथीबार जल ल्यावने के वास्ते जायकर कु
येमे प्रवेश किया तब ईहो लक्ष्मी के सहित भगवा
न व्याध व्याधनीका रूप जो धारे हुये थे सो अपना
अदभुतकौतक करके अन्तर्ध्यान होय गये जब रा
मानुज कुये से बाहर आय कर देखने लगा तब सो
व्याध व्याधनी तहां देख नहीं पडे परन्तु अपना दे।
श जो है सो नेत्रोंमें देखकर आश्चर्ज के वश भया हु

श्री
भ०
४८

आ कुछ कहि नहीं सकता हृदयमें ही सोच करता है
कि मेरे को ईहां अपने देशमें किसने पहुंचाय दिया है
इस प्रकार सोच करता हुआ रामानुज अपने पुरको
चल पड़ा और भ्रमके वशभया हुआ मारग चलने वा
लेलोगोंमे पूछता है कि भाई इस पुरका क्या नाम है
तब तिनोने कहा कि इह कांची पुरी है ऐसे तिनके
मुखसे कांची का नाम सुन कर रामानुज अपने हृ
दयमें विचार कर कहता है कि अहो मेरेको दीन वं

ध भगवान ने बाघ बाघनी का रूप धार कर छल
लिया है ऐसे कपटभेषी दोनो स्त्री भरता को प्रेममे
मगण भयाहूआ भक्त श्रेष्ठ रामानुज बार बार प्र
णाम करने लगा कि देखो दीना नाथ भगवान ने
मेरे को दीन जान कर और मेरा दुःख विचारकर इ
स महा घोर वनमे मेरी कैसी रक्षा करी है मोने दी
न बंधुके समान संसारमे जनके दुःख और कलेश
हरने को और कोई सामर्थ नही है ऐसे उपकार

२१
भ०
५९

करनेको सोई कृपा निधान सामर्थ्यहैं कि जिनोने
मेरेको वनमैं महां डरवान और अकेला जानकर
एक कौनकसे ही हरदे सतें ल्यायकर सहजे ही घ
रमैं पहुंचायदियाहै इस प्रकार भगवानका उपका
र जोहै सो वार वार हृदयमै ल्याय कर और मनहीं
मन सीस नाय कर फिर भगवान का स्मर्ण कर
ने हुये रामानुज अपने घरको चले आये । ५। चौ
पाई । मिलेमात्र कहे चरनन लागी । दीन जननि

49

आसिष सुभ बानी। भेटे पुर परिजन नरबेंता। जा
दव कर सब भयो छिनेता। सुनत सकल मानस
बिसमान्यो। पुनर जनम रामानुज जान्यो। सुनहु
तात जननी नवभाषा। गिरधर देव लीन तोहि रा
खा। अब न करहु मन सदय संदेहू। भजहु कुस
प्रभु दीन सनेहू। जाइ सत्य बन नीरध रामा। तहं
कोटी एरन अस नामा। विदत अनन्य दास जइरा
ई। तासों निज वृतान्त समुझाई। जसकी न्योजादव

११ भ. ५.
50

व अपकारा। देहुस नाय प्रकट सुनसारा। पायनदे
स जननि सावदाई। रामानुज गवन्यो सिरनाई। कों
वी परनके छिग जाई। वेदिचरन सव विद्या सुनाई।
तव कोंची परन अस भावा। तोहि भगवन करुणा
करि रावा। आयनि आय रूप सुभ धारी। तोरे जन
लखि लियो उवारी। दोहा। तोने अव तमजाइ इज
कुस्म रूपा लखि भूरि। ल्यावहु तोने रूपतें कनक
केभजन हरि। ।२८। टीका। तव घरमे आय करत

मानुज मानामे वार वार चरन वंदना करके मिलने
भये फिर मानाने मुख्चुम कर और प्रसन्न होकर
वडी मुभवानी से प्रसीसा देई किपुत्र तुम चिरंजीव
रहो तिसके उपरान्त नानी नाना के लोगोंमे और पु
र् वासियोंमे वडे आनंद पूर्वक मिलकर फिर जाद
व का वृतान्त जोथा सो सव सुनाया तव सुन कर
के सव लोग आचर्जके वश होगये और रामानुज
का हमरा जनम जानते भये फिर माता कहने लगी

भा॰
भं॰
५१

कि हे पुत्र तेरेको गिरधर भगवान ने राख लियाहै
अब हृदयमें सोच संकोच मत करो दीन जनोंके हि
तकारी कृष्ण भगवान जो हैं तिनका स्मरण करो औ
र मन्य हत तीर्थ पर चले जावो तहां कांची छरन ना
म करके संत महानमा भगवानके बडे हढ भगत
जोहैं तिनके पास जाय कर जादवने जिस प्रकार
तुम्हारे साथ अपकार कियाहै सो सब सुनाय देवो
ऐसे माताकी आज्ञा पायकर और सीस नायकर रा

५१

51

मानुज जहां को चल पड़ते भये तब कांची पूरन

के पास जायकर और चरनो पर सिरधर कर जा

हवका सब वृत्तान्त सुनाय दिया तब सुनकरके

कांची पूरन कहने लगे कि रामानुज तेरेको ही

नवेदृ भगवान ने कृपा करके राख लियाहै देखो

दीना नाथ कैसे दीनहित कारीहैं कि अपना जन

जान कर और व्याध व्याधनी का रूप धार कर ते

रे तहां चोर बनमें रखवारे होयगयेहैं तोते हे आ

रा
भ॰
५२

52

लगा सब तम कृपा सिंधू भगवान की अत्यंत हो
कृपा जान कर जा वो और तिसी कूपका जल सब
नै के कुंभ मै भर कर शीघ्रही लेआवो। २९। चौपाई।
वरदराज कहे देन मनाना। सविधि करहु पूजन स
नमाना। गति अनन्य प्रभु पद मन लाई। श्रीजुत
हो हु विप्र सावपाई। रामानुज अस सासन पाई।
तरन नकेत माल ढिग आई। कहि वृतान्त लिय
सासन पाई। श्री गोविंद चरन मनलाई। कनक

कुंभले चल्यो भिषारी। भ्रम करिल्याय क्षपनैं वारी॥
प्रेमभक्ति जनदेन सनाना। छजे वरद राज भगवाना॥
भ्रम डुज निवसि कोंचि पुरिसेवा। भयो निरन निन
त्रिभुवन देवा। उन जादव प्रयाग जवगयउै। नरहो
रोग वस शरन भयउै। गोविंदाचारज शिषनासा॥
नेमभमो रन रमानिवासा। एक दिवस संदर साव
देनी। लग्यो सनान करन कल वेनी। नरहो नाम
पावन मन भावा। मिल्यो एक शिव लिंग सहावा॥

स्व॰
भ॰
५३

हरख्यो नाम्ह विलोकि अचारी। करि सनान इत्त च
ल्यो सिधारी। गुरुपैं जाय चवनसिर नाई। सिला ल
भट सिव दीन दिखाई। नवगुरु भन्यो धन्य नवनाता।
जहिपायो अस प्रभु स्रव दाता। अस प्रकार नहें म
कर प्रजन्ता। बसत रहे थावन श्री कन्ता। बहुरि
शिषन जन हरष अचाये। कोबीकहे जादव बलि
आये। दोहा। नव गुरु सासन पाय मग गोविंद स
दन सिधाय। सोसिव मूरति कहे भवनकीन स्था

पन स्नाय । २१ । टीका । कोची पूरन कहतेहैं कि हे
रामानुज फिर तिसी जलमें वरदराज भगवान् को
स्नान दे कर विधि अनुसार पूजन जोहै सो करो
और एक चित होकर भगवान के चरन कमलों ।
मे मनको लगाय कर बडे आनंदके सहित सेंदर
कल्यान को प्रापत हो जावो तव रामानुज कोची
पूरनकी ऐसी आज्ञा सी सपर धारन करके और
भगवान के चरन कमलों मे मनको लगाये हुये

रुवनेका घटा जो है सो लेकर धाय चले श्रोर वडे श्र
मसे तिस कूये का जललाय कर अतमे प्रेम श्रोर भ
क्तीसे वरदराज भगवान को स्नान देकर तिसनें ड
परान्त सनमान से पूजन किया इस प्रकार रामानुज
कांची पुरीमे निवास करके नित्य रात्री दिन भगवा
नके पूजन श्रोर सेवन करनेमे ही लगे रहतेथे श्रो
र ऊहां जादव जब प्रयाग राज पर पहूंचा तब तहां
रोग केवश परम दुःखी श्रोर दीन होयगया गोविं

दा चारी जो तिसका शिष्य था सो रात्री दिन भगवा
न कृपानिधान के भजन और समरण मै लीन रहता
था तब एकदिन सो गोविंद त्रिवेनी मै स्नान जो
करने लगा तहां तिसको एक परम पवित्र और सु
नसे मनोहर शिव लिंग जो है सो मिलगया तिस सु
न्दर शिलाको देखकर सो आचारी बडे हरष औ
र आनंद को प्रापत भया तब स्नान करके तत
कालही गुरुके पास आयकर और चरनोपर सी

श्री
भं॰
५५

स नायकर सो मनोहर शिव सिला जो वेनीसे प्रा
पत भई थी गुरू जीको दिखावने लगा तब गुरू दे
खिकर कहने लगा कि हे पुत्र तू धन्य हैं कि जिसको
ऐसे सुखदायक प्रभू प्रापत भये हैं इस प्रकार तहां
सकर प्रसन्न भगवान का स्मरण करने हुये निवा
स करने रहे फिर शिष्योंके साहित प्रस्थान करके
जादव गोहैं सो कांची पुरीको चले आये तब मारग
मे गोविंद दासी गुरुकी आज्ञा लेकर अपने घरको

55

चला आया तहां आय कर सो शिवलिंग जो वेनी
से स्थापन भया था वडे सनमानसे विधी पूर्वक अ
पने घरमे स्थापन करदिया। ७। चौपाई। दिन
दिन हर पद पंकज चाहू। वाढ्यो प्रेम भक्तवन था
हू। इनकोची वासिन सव आई। जादव कहे अस
दियो वुकाई। तव पूरव कोची पुरि आवा। रामा
नुज पूरन सावढावा। तव डरप्यो जादव अभिमा
ना। जहिरवेवार आप भगवाना। हमरो कियो

होत नवकाहा। अस गुनिलजित मौन धरि राहा। पढ्यो बहुरि सिष बदन बुझाई। रामानुज कहे लेहु बुलाई। आये सिष नदेस गुरु पाई। रामानुज कहे चले लिवाई। संत सुभाव सरल सब भांती। राख्यो हृदय न बैर अराती। सहज सीलबिन कपट बही ना। आय प्रणाम बदन गुरु कीना। निबसन लगे पूर्ववत नाहीं। निरत पठित बिद्यादिक मांही। ना हि समय इक बिदन महाना। प्रकट्यो रंग नगर

विहाना । जामुन बारज नाम सुहावा । विदन विड
ख सिर मोर कहावा । दोहा । भये पंच शिष नाम
श्रुति प्रकट महा गुन धाम । पृथक पृथक तिनक
र बदन मन इं विमट सुभ नाम । छपै । गोष्टीपूर
न कों विहृतं मह्रं धरनभाये । श्री गिरधरन विद
न विहुरिमाला यवगाये । इह पांचोनिथ मील स
ह सिष जामुनकेरे । निगुण निगम धीमान निर
न गुण ज्ञान धनेरे । सुविकरन जजन सेवन स

तिन रंगनाथ भगवंत कर । लियबिभो भूरि सबे
सजस सुत जामुन जगत सहंनवर ।।८।। टीका ।
तब तें गोविंदाचारीका दिन दिन लेकर भगवान
के चरन कमलों मे प्रेम अधिक ही होतागया औ
र ईहां कांची वासियोंने जादवके साथ सब हवाल
सुनाय दिया कि रामानुज तो हमारे से पहिले ही
बडे आनंद पूर्वक ईहां कांची पुरीमे आय गयाहै
तब जादव सुनकर हृदयमे बडा भय मानता भ

या और कहने लगा कि जिसके जहां आप भगवा
न सहायक और रखवारे हों तहां हमारा किया का
होताहै ऐसे विचार कर मनमें परम लज्जा को प्रा
प्त भया हुआ मौन होयरहा दो एक दिनके पीछे शिष्यको
समझायकर कहने लगा कि जावो रामानुजको लेआ
वो तब शिष्य जोहैं सो गुरू की आज्ञा पाय कर रा
मानुज के पास चले आये और तिसको अनेक प्रका
र हितके वचन सुनाय कर तुरत ही साथ लिवा

॥ भ. ५८

58

य कर आयगाये संत जन सदैव सरल और शील स
भाववाले होतेहैं शत्रुका वैर जो है सो हृदय में कुछ
भी नहीं राखा सहज शील और निसकपट रामानुज
जी आयकर गुरू जीके चरनो पर प्रणाम करके औ
र तिनकी आज्ञा सीस पर धारन करके हरख समा
न नहीं फिर निवास करने लगे और तैसेंही रुची
पूर्वक शास्त्र विद्याके पढने मे भीननपर होय ग
ये तिसी समय एक परम [illegible] चतुर और बडा

भारी विद्वान रंगपुरमै प्रकट हुआ विद्यामै प्रवीन
जो महान पंडित थे तिन सबका सिरोमणी और जो
मुना चारज नाम करके प्रसिद्ध होता भया तिसके
परम चतुर विद्या और गुणोंके धाम पांच शिष्य हो
ने भये तिनके भिन्न भिन्न नाम जो हैं सो कथन क
रताहूं प्रथम गोष्टी पूरन और कोंची पूरन महा पू
रन श्री गिरपूरन मालाधर इह पांचो शीलकी नि
धी और बड़े सूक्ष्म बुद्धी विचार और ज्ञान ध्यान मै

॥ भ० ५५

59

प्रवीन वेदके तत्वको भली प्रकार जानने वाले थे
इस प्रकार शिष्योंके सहित नित्य रात्री दिन रंगना
थ भगवान का पवित्र पूजन और सेवन करने कर
ने जामुनाचारज जो हैं सो जगतमै सव और सजनस
के सहित होकर वडे विभू और वडाई को प्रापत
होने भये । ५८ । चौपाई । समय एक जामुन वन था
हू । वैठिसदन मनकिये विचारू । कौ वालक वर
समति नियाना । मिलहिं मोहि सेवक भगवाना ।

रंग नाथ प्रभु सजन मांही । करहुं नप्रक भवन न
हिकांही । जोकछु मिलहिं मोहि सब कामा । प्रस
प्रकार शुनि मानस नामा । बोलि निकट शिष दि
सन पठाये । जे बालक खोजन पुर धाये । आये जब
कोची पुरिमांही । तहं देख्यो रामानुज कांही । गुण
प्रवीन विद्या मति नागर । सरल सीलचित लोग
उजागर । देखि नयन शिष जामुन पासा । आयहु
तान्ह कह्यो सब नासा । रामानुज कर मनन बडा

॥ मं. ८ ॥

है। हरषि चले जामुन ग्रव राई। देखन हगन वाल कल शोभा। मुनि जामुन मानस मत्र लोभा। आये जव कांची पुरि चारू। तव मंदर प्रभु भक्त उवाहू। वरदराज कर देखि सुहावा। जामुन हृदय परम सुखपावा। दोहा। जोरि जुगल कर नेत्र गनि आय भवन भगवान। करि प्रणाम लागे वदन प्रेम न ति वहुविधिगान। ५। टीका। तव एक समय व डे व्रतधारी जामुना वारज जी अपने घरमै वैठे हू

ये विचार करने लगे कि मेरेको कोई सुशील और सुमती का धाम बालक भगवान का सेवक जो मि ल जावे तोमै तिसको रंगनाथ परमात्मा के भजन करने मे स्थापन करदेऊं तिससे मेरेको भी वि श्राम प्रापत होगा और सहायता मिलजावेगी इस प्र कार हृदयमै विचार करके जामुनाचारज जी ने अपने शिष्यों को बुलाय कर बालकके ल्यावने के वास्ते देसदिसांत्रों मे पठाय दिया तब सो शिष्य

बालक को खोजते खोजते कांची पुरीमें आय प्राप
त भये तहां तिनोंने रामानुजको जो देखा तो गुण
शील सम्पती और विद्यामें परम प्रवीन सहज साधु
और सरल स्वभाव पाया तब रंगपुरमें जामुना चार
जके पास आयकर तिसका सब वृत्तान्त सुनाय दि
या इस प्रकार रामानुज की बडाई सुन कर जामुना
चारी बडे हरष मै मगन भये हुये तहां कोंतरन च
ल पडते भये तब कांची पुरी मै आय कर और रामा

नकी शोभा देख कर सो आचारी मोहित होयगये
फिर कांची पुरीमें वरदराज भगवानका मंदर देख
कर और वडे प्रसन्न होकर भीतर चले आये तव
प्रणाम करके दोनो हाथ जोड कर और दीन होकर
नेत्र वानीसे भगवानकी प्रसन्नता जो है सो अनेक
प्रकार मुखसे गायन करने लगे। ९९। चौपाई। आ
यगाये जादव नहिठामा। परिवारन शिषनिकर लि
लामा। गहेहाथ रामानुजकेरा। नवकांची पुरन

श्री
भ०
८३

दुन हेरा । जामुन सों प्रभु मरम जणावा । जासु हाथ
गहि जादव आवा । सो रामानुज भक्त प्रवीना । तासु
कथा प्रभु सुनहु नवीना । लै प्रयाग इहि जादव गय
ऊ । विंधविपुन जब आवत भयऊ । तहां हननहित
जनन विचार्यो । व्याधरूप धरि कृष्ण उवार्यो । नि
जकौ तक प्रभु भक्तसु हेया । कांचीपुरि दुन दीन प
ठैया । तब जामुन रामानुज काहीं । हरषे देखि वि
पुल मनमांहीं । चहत किये कछु वचन विलासा ।

पैन मिल्यो अवसर अवकासा। नवला गे सुमरन भगवाना। दीना द्याल भक्त वरदाना। वेद पुराण निपुण व्रत धारी। इह बालक मोहि मिलहिं मुरारी। करि नास्तिक मन भेदनि खेडा। वैस्नव मन सुभ करहिं डढेडा। वादविवाद जीति समुदाई। करहिं विमुख मन सुख जड़ाई। सब विधि देहिं सुजस सब मोही। हरहिं कुमति वैस्नव मन द्रोही। दोहा।
अस कहि जामुन धिषन जन रंगनगर निज आय॰

रामानुज विस सो तपै प्राण धीये राखे दाय ।२०। टी
का। इतनेमै तहां वरदराज भगवान के मंदरमै जा
दव भी शिष्यौं का समूह साथ लिये हूये और रामा
नुजका हाथ पकडे हूये आय गये तव कांची पूरन
ने देखकर तुरत जामुना चारज जी से जणाय दिया
कि जादवने जिसका हाथ पकडा हूआहै सो परी
भक्त प्रवीन रामानुज है अव तिसका वृतान्त मै
आपको सुनाताहूं कि इह जादव जो है सो रामानु

ज को साथ लेकर प्रयाग राज को चलागया जब
विंध परबत के पास आये तब हृदयमे जो कोई दे
ष था तिस करके भक्त स्हके मारनेका उपाय क
रने लगा तहां कृष्ण भगवान ने रामानुज को अ
पना जन जानकर और व्याध रूप धार करके राख
लिया फिर भक्त पाल भगवान ने अपने कौतक
से ततकाल कांची पुरीमे पहुंचाय दिया इस प्रका
र जामुनाचारी जी सुनकर और रामानुजकी औ

र देखकर हृदयमैं बड़े प्रसन्न भये तिसके साथ ब
चन विलास करनेकी कुछ रुची भी हुई परन्तु सम
य नहीं मिला तब हृदयमैं भगवान का स्मरण कर
के कहतेहैं किहे भक्त पाल हे दीन दयाल हे मुरारी
भगवान इह जो वेदविद्यामैं प्रवीन और परम व्रत
धारी बालकहै सो मेरेको ज्ञापन होवे क्यों कि इह
पृथ्वी तल पर नास्तिक मतको खंडन करके वै
दक वैस्नव मत को प्रचलित करेगा और मेरेभी वा

द विवाद को जीतकर विमुख पुरुषों को भगवान
के सनमुख कर देवेगा। और वैस्नव मतके द्रोही
कुमती और दुष्ट जनोंका नाशकरके मेरेको सरव
प्रकार करके सुख और आनंदको प्रापत करेगा ऐ
से वार वार प्रार्थना करके रामानुजचारीजी शिष्यों के
सहित अपने रंग नगरको चले आये परन्तु सो प्रा
ण प्यारा और सुख सुजस के देने वाला रामानुज
हृदयसे पल नहीं विसरता भया। २५। चौपाई। रं

२१
भ॰
८५

गनाथ मंदिर सभजाई। विमल नवल निन अमनति
गाई। विरचि लोउ आलमे दारू। पढहिं सवदन वेद
जनुसारू। कहिविधि इहवालक मन भावन। श्रीवै
सव मन जगत चलावन। मिलहिं मोहि हरन सव
दाता। दीननाथ डुखदीन निपाना। उन रामानुज
जादव पासा। पढे शास्त्रवे दान्त अजासा। समय ए
क निज गुरु वरकाही। संजन भक्ति हरषिमन मा
ही। करन पीठ कल तैल लगावन। गुरु सप्रीति

कछुरहे पढावन। तब जादव श्रुति अर्थ विरुद्धा।
किये सुनत रामानुज क्रुद्धा। दिग बस निकसि दृग
न हुत वारी। पर्यो जेच जादव ततकारी। देखि तब
न भन्यो भ्रमवागी। रामानुज रोवन कहि लागी।
छरत नयन जल हगन तमारे। कहहु सपदि सुन
हेत हमारे। तब रामानुज बदन मलाना। प्रभु श्रु
ति अर्थ विरुद्ध बखाना। सोअजोग जनसकों नेमे
ही। हेत छरत जल नैनन एही। हरिलोचन उपमा

न म्हावा। पुंडरीक कविकोविद गावा। कपि निर्जेव सम प्रभु उच्चारा। सो अनेक कम सकइ म्हारा। नव जादव दिस कियेमहोना। रामानुज कहे वचन वखाना। दोहा। ग्रेद निसरग इतानमन विविध यठायो मोहि। अब उनमन उलटो अथम लग्यो पठावन मोहि। ११। टीका। नव जामुनाचारी जी रंगनाथ भगवान के मंदिरमै आयकर नित नवीन ही असनाति गायन करने लगे और वेदकामार आल मेदाहू लो

त जो है सो देख कर बड़ी प्रीती और भक्ती से पढ़ प
ढकर प्रार्थना करते हैं कि हे दीना नाथ और हे दी
नोके दुख हरने वाले भगवान इह अनमे मनोह
र और जगत मै वैस्नव मतके प्रकाश करने वा
ला परम सुखदायक बालक जो है सो मेरे को कि
स प्रकार प्रापत होवेगा ईहांकी तो इह कथा है
और उहां रामानुज ने जादवके पास रहिकर वे
दान्त शास्त्रके पढने मै असंतही श्रम और यतन

११
भ०

किया तब एक दिन रामानुज भक्ती प्रीतीसे गुरू
जी की पीठको तैलकी मरदन कर रहेथे और गु
रू जी तिनको प्रीती पूर्वक कुछ पढाय रहेथे त
ब जादवने तहां श्रुतीका अर्थ कुछ विरुद्ध जो कि
या तो श्रवन करके रामानुज जी को हृदयमे बडाको
ध उतपन्न भया तिससे तिनके नेत्रोंमे जल निक
ल कर जादवकी जंघा पर जाय पडा तिसको देख
कर जादव कहने लगा कि हो रामानुज तू क्यों रो

बनाहै देखो हमारे नेत्रोंसे बडानयन जलनिकस
लकर बहा जाताहै हे पुत्र इसका कारण मेरेको
शीघ्रकहो तब रामानुज कहने लगे कि महाराज
आपने श्रुतीका अर्थ विरुद्ध कियाहै सो अजोग जा
नकर मै सहार नही सका नेत्रोंसे जलके निकस
ने का केवल यही कारनहै और कुछ नही है हे
नाथ भगवान के नेत्रोंका उपमान पंडित और
कवी जनोने संदर कमल जोहै सो वरणन किया

रा॰
भ॰
६८

68

है और आपने वानर के निर्बल अधीन हनुओं के
समान कथन कियाहै सो ऐसी अयोग्य उपमाको
मै कैसे सहार सकताहूं इस प्रकार रामानुजके दु
र्वचन सुनकर जादव जोहै सो महा कोप क
रके कहने लगा कि अरे दुष्ट स्वभाव वाले बुद्धीके
हीन मैने तेरेको बहुत ही पढायाहै तिसने तू अ
धर्म उन्मत्त होकर अब उलटा मेरेको ही पढाव
ने लगाहै । २१। चौपाई। जाइ जाइ सठ सन सुख

त्यागी । अवनपठा उव मोहि अभागी । लेहु भवन
मारग जळजानी । वन्यो नशिष सठ जन्यो अज्ञानी ॰
सुनि अस कुपन वचन गुरु अवना । रामानुज गव
ने निज भवना । कांची एरनपें उन जाई । गुरु हु
तान सवदीन सुनाई । तासभन्यो अवनें नजि आने ॰
सेवइ वरदराज भगवाने । नहि सासन वस भगव
न सेवा । लग्यो करन जन भक्ति अभेवा । उन श्री
रंग नगर इह आई । विद्या सकल जासुन सुनिपा

भ॰ ६५

रामानुज कर कियो महाना। कुमति कुटिल जाद
व अपमाना। नहिंनें कोची हरन पामा। निवसन
अव सोऊ समति विकासा। माल कुपनें प्रतिदिन
नाई। मे जल कनक कुंभ भरि लाई। वरदराज प्र
भु देवन देवा। करन भक्ति जन पूजन सेवा। दोहा
। असरामानुज कर कविर सुनि हमान समुदाय॰
हरषे जामुन हृदय निज मनहुं मनोरथ पाय। २२
टीका। फिर जादव कहने लगा कि उठो अयम श्री

६५

र मेरे सनमुख से चले जावो अब अभागी तेरेको
कबी नहीं पछाऊंगा जावो अपने घरका रसना
लेवो तेरेको मैने शिष्य नहीं बनाया कि कोई श
त्रू उतपन्न कर लिया है ऐसे को एके भरे हूये गु
रूके वचन सुनकर रामानुज अपने घरको चले
आये और कांची पूरनके पास आय कर गुरूका
सब हवाल सुनायदिया तब कांची पूरन ने क
हा कि अबतें और सबका भरोसा त्यागकर कैव

भ॰
मा॰
७०

ल वरदराज भगवानका ही सेवन किया करो इस
प्रकार तिनकी आज्ञा पायकर रामानुज जोहै सो रा
त्री दिन भक्ती प्रीतीके सहित वरदराज भगवानके
भजन सेवन करने मै लीन होजाता भया तब ऊहें
रंग नगरमै जामुना चारी जीने सुना कि कपटी औ
र कुमती जादवने रामानुजका अत्यंतही अपमान
कियाहै तिससे सो प्रधान बुद्धी वाला भक्त प्रवीन
अव कोंकी सरन के पास निवास करताहै और सा

ल कूपसे अर्थात निस जंगलके कूयेसे कि जिस मे
व्याध व्याधनीरूप लक्ष्मी नारायण को जलपिला
याथा दिन दिन सबरन के घडे मै जल भरल्याव
ता और वरदराज भगवान को स्नान देकर भक्ती
प्रीतीसे पूजन करताहै इस प्रकार रामानुजका
सब हत्तांत सुनकर जामुनाचारी जो हैं सो मानो
अपने मनोरथोंको पाय कर हृदय मे परम हरष
को प्राप्त होनेभये । २२ । चौपाई । एकना वारज

रा॰
भ॰
७१

वेग बुलायो। तासु वदन आसुन समुझायो। जाइ
वेग कांची पुरी माहीं। ल्यावहु तुरत रामानुजकाहीं॰
ते सासन निज गुरु वर पाई। कांची नगरि हरष जु
त आई। वरदराज मंदिर सुभ द्वारू। करत प्रणाम
भाल मंदारू। लग्यो स्तोत्र पठन मन भावा। सुनत
भवन वासिन सुख पावा। तहि अवसर रामानुज
आये। कनक कुंभ जल सीस धराये। सुनत स्तोत्र
भाल मंदारू। रह्ह ठनत कहत करत मन हारू।

तम कहिवें आये उत साहा । तब एती चारज अस
काहा । मैनोरंग नगरनैं आवा । तमहिं लेन गुरु
देव पठावा । जामुन चारि नाम गुरु मेरो । पठ्यो
लोउ उकन तिन केरो । सुनि श्रवन कर वचन सु
हाये । रामानुज मानस हरषाये । रंग नगर सभ
हरमन काहीं । उपजी रुची रुचिर मन माहीं ।
तब श्रवन अनसे अनुराई । कांची श्रवन के छिग
जाई । रामानुज बोलन गुरु देवा । बरन्यो सक

भ० २२

ल अंगसे अभेवा। दोहा। कांची पुरन मनन अस गु
रु सासन सुभदानि। रामानुज कहै पढ़ो उत देस
नगर सुख मानि। २३। टीका। तब जामुना चारी जी
ने इनो चारजको शीघ्र बुलाय कर भली प्रकार स
मुझाय दिया कि तुम कांची पुरीमे जावो और जि
स प्रकार जानो रामानुजको ले आवो सो इस प्रका
र अपने गुरुकी आज्ञा पाय कर और तहांसे चल
कर कांची पुरीमे आय पहुचा और वरदराज भग

वानके मंदरके द्वारमें आयकर वार वार प्रणाम
करके आलमंदारु स्तोत्र जोहै सो वडी मधुर स्वर
से प्रीती पूर्वक पढने लगा ऐसे तिस स्तोत्रको सु
नकर भवन वासी लोग परम सुख और हरषको
प्रापतभये तिसी समय रामानुज भी जलसे भरा
हुआ सवनेका वडा सीस पर धारे हुये नदी आय
गये और मंदर आल मंदारु स्तोत्रको सुन कर क
हने लगे कि इह ऐसी मनोहर और ललित कवि

श्री
भ०
७३

नाकिसकी है फिर पूर्नी चारज को कहने लगे कि
भाई तुम कहांसे आये हो तब पूर्नीचारजने कहा कि
हे भक्त मै तो रंगनगर से आया हूं और गुरु देव स्वा
मी यामुना चारज नाम करके जो प्रसिद्ध हैं तिनोने
तुमारे ही लेनेके वास्ते भेजाहै और इह स्तोत्र जो
मैने वरदराज भगवान के मंदर मै सबको गाय
न करके सुनाया है सो तिनोका ही बनाया हुआ
है इस प्रकार पूर्नी चारजके मुखसे वचन सुनकर

73

रामानुज परम हरष को प्रापत भये और रंग न
गर के दरसन करनेकी हृदयमै रुची और लाल
साउतपन्न होजातीभई तब तो समाचारी ततका
ल कांचीपूरन के पास जाय कर रामानुजके ल्या
वने के वास्ते जो गुरुकी आज्ञा थी सो सब सुनाय
दई ऐसे सुनते ही कांची पूरन गुरुकी आज्ञा सी
स पर धारन करके बडे हरषसे रामानुज को पू
रन के साथ दे कर ततकाल ही रंग नगर को

गुरुजीके पास भेज देते भये । २३ । चौपाई । नव
रूवन उवश्राने दल्लाये । रामानुज कहै चल्यो लिवा
ये । रंगनगर उत भक्त उवारा । रंगनाथ प्रभु कियो
विचारा । निश्चय जानि परो मोहि नीके । अब नहि
हैं सगरो जग नीके । मिलि रामानुज जामुन चारी ।
नरक मूल सब देहिं उपारी । तोते अब कछु जतन
न करीजे । इनकर भेट होन नहिं दीजे । अस विचा
र भगवान निमिठाना । भोरहिं भयो उदय जबभा

ना। रंगनाथ सुचि सजनकोंही। जामुन आय भव
न प्रभु माहीं। तब भगवान भने असवाणी। मम
सासन बस तुम बडभागी। अष्ट दिवस महं तजिसं
सारा। जाइ मोर वैकुंठ अगारा। सुनिजामुन भग
वन असवानी। भयो निमगण मोद हिनमानी। अ
ष्टयदिवस उर सुमिरि मुरारी। गयेवैकुंठ जामुना
चारी। गुरुकर देखि सकल शिष ध्याना। हरषे
सेत्र वाक उरमाना। दोहा। संसकार हिन बहु

रा॰
भ॰
७५

रि ड्डज कावेरी तटल्याय। राख्यो वपु यामुन शिष
न विकल शोक समुदाय।२५। टीका। तब छवन
जो है सो अत्यन्त हरषके वश हो कर रामानुज को
अपने साथ लेकर रंग नगर को चल पडता भया
तब ईहां रंग नगर मै भक्तों की रक्षा करने वाले
रंगनाथ भगवान अपने मन मै विचार कर कह
ते हैं कि मैने जान लिया है जो अब निश्चय करके
जगतके सब जीवोंका उद्धार होजावेगा क्यों कि

इह रामानुज और जामुनाचारी दोनो मिलकर नर
क गोरेह तिसको मूलसे उखाडडालेंगे तोते अब कु
छ ऐसा उपाय करिये कि जिससे इह दोनोमिलने
नापावें इस प्रकार भगवान ने रात्रीको विचार कि
या और जब प्रातःकालभया तबरंग महाराजके द
र्शन करने के वास्ते जामुना चारी भवनमे जो आये
तो तिनको भगवान कहने लगे कि वड भागी मेरे
भक्त अबतुम मेरी आज्ञापाय कर आठदिन के

१८८

भीतर संसारको त्यागकर मेरे वैकुंठ धामको चले
जावो ऐसे भगवान की आज्ञा सुनकर जामुनाचारी
बड़ा हित मानकर मानो आनंद सरोवर मे मगन हो
जाते भये और जब सात दिन बीत गये तब आठमे
दिनको जामुना चारी जी भगवान का स्मर्ण कर
ते हुये वैकुंठ धामको चलेगये इस प्रकार गुरू।
का जाना देखकर सम्पूर्ण शिष्यजो हैं सो भीतरसे
तो परम आनंद और बाहिरमें शोक करके दुःखी

भये हूये जामुनके शरीर को उठाय कर संसकार के वास्ते कावेरी नदीके किनारे पर ल्याय राखतेभ ये । २४ । चौपाई । रामानुज छरन संग माही । आ यगये नहि दिवस नहोंही । देखि महान जनन क र भीरा । छुछन लगे ज्ञगल मतिधीरा । कावेरीत ट सन इसनेहू । जस्यो समाज कवन हित एहू । भन्यो शिष्यन नवसन्यो नथ्यारे । गुरु जामुन बैकुं ठ सिधारे । छुरन सुनन गावन गुरु काना । विक

श्री
भ॰
११

77

ल मीमयुनि यवनि गिराना । रामानुज मंजन इव
मानी । लगे करन शोकारन बानी । आये बहुरि
निकट गुरु काया । रुदन करन चरनन सिरनाया॰
नवदेख्यो प्रचरज इह भारी । श्रेगुरीनीन जामुना
वारी । सकुविरही कछु जानि नपरहीं । लोकपर
स्पर चिंतनकरहीं । नव रामानुज भुजा उठाई । भा
षा सनहु लोग समुदाई । मे प्रसाद भगवंत कृपा
ला । श्रीवैस्नव मत जगत रसाला । करि प्रचलित

सब जीवनकाहीं। ताहिं अवसिधरनि तलमांहीं॰
दोहा। धरम परायण ललित सुभ सुनि रामानुज
बानि। उठि जामुन देखत सबन अंजलि एक सकु
चानि।२५। टीका। तब रामानुज भी इनी वारीके
साथ तहां आयगये और लोगोंकी बहां भीर भार
देखकर पूछने लगे कि भाई ईहां कावेरी के कि
नारे पर इह इतना लोग समाज किसकारन जु
डाहुआहै तब शिष्य कहने लगे कि तुम नहीं सु

श्री
भं॰
२८

78

ना गुरु महाराज जामुना चारीजी वैकुंठ धामको
चले गये हैं ऐसे गुरुजीका परम धामको जानासु
नकर शरनाचारी फिर् फेरता हुआ व्याकुल होकर
पृथ्वीपर गिर् पडा और रामानुज भी हृदयमे पर
म शोक और कलेश मानते भये तिसके उपरान्त
शरना चारी और रामानुज बडे डाखित भये हुये गु
रु जीकी कायाके पास आय कर और् चरनो पर
सीस नाय कर खिन होयगये तब तहा एक बडा

आचर्ज देखने मे आया कि जामुना चारी जीकी नी
न अंगुली सकुच रही हुईथी इस बातका सब को
ई सो चविचार करताथा परन्तु कुछ कारन जान
नहीं पडताथा कि यह अंगुली क्यों सकुचरही हैं त
ब रामानुज ने दोनो भुजा उठाय कर ऊंची स्वरसे क
हा कि भाई सबलोग सुनो जोमै भगवान कृपा
निधानके प्रसादसे श्रीवैष्णव मत जोहै सो जगत
मै भली प्रकार चलाय कर पृथ्वी तलपर सब

रा
भ.
५५

79

जीवोंको अवश्य करके तारूंगा तब इस प्रकार रा
मानुजकी परम परायण और शुभ बानी सुनकर
तत्कालहीं सब के देखते जामुनाचारी जीकी सकु
ची हुई अंगुलियोंमे से एक अंगुली उठखडी होती भ
ई। ५५। चौपाई। बहुरि भन्यो रामानुज बैना। रवि
हौं भाष सैन सखवैना। तदन सुनत अस वचन सु
हावा। अनत अंगुलि जामुन उठिआवा। तदपश्चा
त निपुण गुण धामा। भन्यो वदन अस वचन लि

लामा। विश्व प्रगाण विदन संसारा। रच्यो प्रगम

र समति उदारा। सो पदै ड्डे सब वैस्नव कांही। प्री

ति प्रतीति राखिमन मांही। नहि प्रभाव साधन

सब दाई। संजन भक्ति प्रीति सुख गाई। उधरहिं

लोक मोक्षपद पैंही। ब्रह्मानंद सगम सब लैही।

श्रम जब जगत जीवहित कारी। श्री रामानुज ति

रा उदारी। दोहा। फैलिगई जामुन नवै नरत श्रे

शलि निसरीय। भये लोक लखि चकत मन त

११
भ.
८.
४०

कि नन परम पवीय । २८ । टीका । नब हमरी बार
रामानुजने फिर कहा कि हरन प्रमानमा की आ
तुरहसे ऐसा भास रहेगा किजिसको विचार कर मे
हाणि संत महानमा परम आनंदको प्रापत होवेंगे
ऐसा वचन सुननेही जामुना चारी जी की हमरी ओ
रली भी उठखडी भई तिसतें उपरान्त परम चतु
र और गुणोंके धाम रामानुज जी फिर कोमल वा
नी से कहने लगे कि सुनो भाई विष्ट प्राण जो मे

सारमें प्रसिद्ध परम विद्वान प्रवासर जीका रचा हुआहै सो मैं प्रीती और विश्वास पूर्वक संपूर्ण वैष्णव जनोंको पढा उगा नव तिसके प्रभाव और साधन से और भक्ती प्रीती करके मुखमें गायन करनेसें संपूर्ण लोगोंका उद्धार होगा और मोक्षपद को प्राप्त होवेंगे ब्रह्मानंद सुख जोहै सो सहजेंही पाय लेवेंगे इस प्रकार रामानुजने नव जगतके जीवों के लिये परम हितकारी और सुखदायक वाणी

श्री
भ०
द।
81

उच्चारन करी नव जामुनाचारी की तीसरी अंगुली
जोथी सो भी ततकाल सबके देखते फैल जाती भ
ई इस अदभुत को देखकर सबलोग आश्चर्यके व
शभये हुये परस्पर एक दूसरे की ओर देखते हैं औ
र मुखसे कुछ कहि नहीं सकते कि इह क्या कौतु
कबना है । २८ । चौपाई । पुनि जामुन कहे शिष्यन
उठायो । विधि जुत कावेरी पधरायो । नव वैष्णव
सब मानस रागे । रामानुज कहे भाषन लागे । रंग

नगर की जै ग्रवध्याना। इहमिथे रंग नाथ भगवा
ना। नवरिस वस रामानुज काहा। किया नाथ मोहि
गत उन माहा। मैंजामन ह्रमन हिन ग्रावा। दीन
घालक हृ सोऊ नभावा। तांते रंग नगर करि ध्याना।
हृमन करव हरमन भगवाना। हम उन जहि दर
स नहिन ग्राये। मोविंकु हृदिय नाथ पठाये। ग्रव
करिहों कोवी निज ध्याना। भावन मोहि नदरस
भगवाना। जोमोपैं दाया नहिं कीन्यो ग्राजहृ काल

रहन नहिं होत्यो। निरदय रंगनाथहैं सोचे। भक्त मनोरथ पूरन कोचे। इस प्रकार प्रभुपें तिस स्याई॰ वैस्नव जनकहं प्रकट सुनाई। चलिश्राये कोवी प्रिकाहीं। सरिताक्षीरनीर सचि माहीं। दोहा। करि सनान दरसन किये वरदराज भगवाना। जाय व इरि निज भवन सभ निवसे भक्त प्रधान। २२।
टीका। तिसनें उपरान्त जामुनाचारी जीके शरीको तिनके शिष्योंने विधी अनुसार कावेरी नदी के ज

लमें पधरायदिया फिर सब वैष्णव मिलकर रामा
नुजको बडी प्रीती और प्रेममें कहने लगे किहे भ
क्त प्रधान सब तुम रंगनगरको चलो और तहां रं
गनाथ भगवान का दिव्य दरसन जोहै सो करो ऐ
से तिनका वचन सुनकर रामानुज क्रोधके वशभ
ये हुये कहने लगे कि भाई रंग नाथ भगवानने
मेरेको उनर्स हू से रहित कर दियाहै देखोमें जा
मुनाचारी जीके दरसनके वास्ते ईहांआयाथा सो

११
भ॰
८३

दीना नाथको मेरा तिनके साथ मिलाप होना हट
यसै नहीं आया सोने अबमैं रंग नगरमैं नहीं जाऊं
गा और ना भगवान का दरसन पाऊंगा क्यौं कि मै
जिनके दरसन मेलेके वास्ते आयाथा सो मेरेसे प
हिले ही वैकुंठ धामको पधारदिये हैं अबमैं फिर
करके कोनसी पुरीको चलाजाता हे रंग नाथ भग
वान का दरसन जोहै सो मेरेको नहीं भावता देखो
इननीभी दया नहीं करी जो एक दिन मेरे आनेत

क तिनको रहने देने अब मैने जानलियेहैं जो रंगना
थभगवान मन्य करके निरदय हैं और भक्तजनों
के मनोरथ हरण करनेमै तिनकी श्रद्धा और रुची
नही है इस प्रकार रंगनाथ भगवान पर क्रोधला
यकर और वैष्णव जनोको प्रकट मनायकर फि
र भक्त पाल भगवानका स्मरण करने हुये कांची
पुरी को चले आये और नहा नदीके अंदर निरम
ल जलमै स्नान करके फिर आनेर पूर्वक आय

कर वरदराज भगवानका दरसन किया तिस
नैं उपरान्त भगवान के चरन कमल ह्रिदयमै धा
रकर वार वार प्रणाम करके अपने घरको चले
आये। २२। चौपाई। रात्रमें सोय मदन निसिचारी।
जागे प्रात भक्त व्रतधारी। कांची परनके गृहजाई।
किये प्रणाम चरनसिरनाई। जामुन गवन परम
पद भावा। दियोबड़ाई सब परणक सुनावा। गुरु
आज्ञा मानि हरिपुर कारी। कांची भये उचित मन

माहीं। नव रामानुज मानस रागे। निसिवासर
गुरु सेवन लागे। एक दिवस उर आनंद छाये।
गुरु सनमुख अस वचन अलाये। विनय मोर क
रुणाय निधाना। कीजै भवन दास निज प्याना।
करि भोजन पावन मोहि करहू। दीन नाथ सेव
क अनुसरहू। नव कांची अस भन्यो सनेहा। मैं
भोजन करिहौं तव गेहा। जव कीन्यो गुरु वर स्व
ईकारा। नव रामानुज भवन सिधारा। विविध भो

॥ भ॰ ८५

नि ब्यंजनवनवाये। खट रस चारु अमिय सममाये॰ पुनिगुरु कहे त्यावन हित गयऊ। सोइ अनंत प थ आवत भयऊ। दोहा। तव रामानुज के सदन गुरु कृपाल इतआय। कृपारत नहीं पीया मन भयो वचन अकुलाय। २८। टीका। नव भक्त प्र धान रामानुज जीने नहां चरमें बडे भाव पूर्वक रात्रीको विश्राम किया और प्रातकाल होनेही उठकर भगवान कृपानिधानका समरण करने

हुये कांची पूरनजीके पास आय कर और चरनो प
र सीस नाय कर जामुनाचार्य जीके परमधाम को
जानेका सब प्रसंग सुनायदिया इस प्रकार गुरुजी
का परमपद को जाना सुनकर कांची पूरन हृदय
मै परम शोक मानने भये तब रामानुज जी अनेक प्र
कार समुझाय कर फिर भक्ती प्रीतीसे तहां तिनके
पासही निवास करने लगे एक दिन बड़े आनंद पू
र्वक तिनको कहने लगे कि हे गुरू महाराज मेरी

रा° भ° ८९

इह प्रार्थना और विनतीहै कि आप मेरे घर मै चलि
ये और भोजन पाईये क्यों कि मै सरब प्रकार करके
आपका सेवक हूं इसमै आपके चरनोके प्रसादसे मे
राघर पवित्र होजावेगा और मैभी सनाथ होजाऊंगा
तब कांची पूरन जीने कहा कि रामानुज बहुत शुभ
वारताहै मै अवश्य तेरे घरमे चलूंगा और भोजनपा
ऊंगा इस प्रकार जब गुरु जीने स्वीकार कर लिया
तब रामानुज अपने घरको चलेआये और बडी प्री

नी भक्तीसे अनेक प्रकारके सुंदर व्यंजन जोहैं सो ब
न वाये तिसनें उपरान्त तिनके ल्यावने वास्ते जो ग
या तोवे तिसके आनेसे पहिले ही किसी और रसने
द्वारा होकर रामानुज के घरमे आय प्रापत भये नव
तृथा करके व्याकुल भये हूये रामानुजकी स्त्रीको
जिस प्रकार वचन कहतेहैं सो आगे कथन किया
जाँहै । ३८ । चौपाई । मोहिभोजन अवदेहु सभागी ।
सहिनजाय तृष्णा अतिलागी । रामानुज स्त्रीय भोज

ता

न होगयो । कोची पाय परम सुख भीन्यो । मातुकुल
पुनि हरष बढ़ायो । वरदराज प्रभु भवन सिधायो । उ
न रामानुज कांची गेहू । गवने भेट भयो नहीं नेहू ।
आयनिवास सदन उरमाना । कीय विरच्यो भोजन
नव नाना । गुरू अगमन लख्यो निजनारी । ताममन्यो
सुखसकल उचारी । नवरामानुज भोजन पाई । च
लेवेग हरि भवन सिधाई । कांची सवन के ढिगजा
ई । जोरि जुगल करविनय सुनाई । की जैमोहि समा

८४

त्य याल्। होइं सुचिनभव इरगम जाल्। नव को
वी कह वचन सनेहू। होहिन प्रभु सासन विन्न पहू।
बिनुपछे हरि भक्तसहैया। तोरेमे नकराइं शिषमे
या। अस कहि गवन भवन हरिकीना। चरन सरो
जसरन चितदीना। दोहा। गहिन चाक वोमरवि ज
न होत जजनरननसेव। विनय नम्र लागयोकरन स
नमाव देवन देव। ३९। टीका। कोची सरन जी क
हते हैं किहे वड भागन मे त्रथा करके व्याकुल हो

रा॰
भ॰
८८

रहाहूं तू मेरेको अब शीघ्र भोजन जिमा तब रामानु
जकी स्त्रीने तरतही भोजन देदिया और कांची पूरन
जी पायकर बडे आनंद को प्रापत भये तिसते उप
रांत उठ करके वरदराज भगवान के दरसन करने
के वास्ते मंदरको चलेगये और उहां रामानुज कां।
ची पूरन जीके घरमे जोगये तो तिनसे भेट नहीं भ
ई फिर निरास होय करके घरको चले आये तब स्त्री
ने तिनके वासते और भोजन बनाया रामानुज ए

छूनेलगे कि गुरूजी घरमै आयेथे तिन्होनेकहा कि भो
जन पायकर वरदराज भगवान के भवन को चले
गयेहैं तब तो रामानुज ततकाल ही भोजन पाय क
र तिनके पीछेहीं भगवान के भवनको चले आये औ
र कांची पूरन जीके पास आयकर दोनो हाथ जोड़ क
र बिनती करने लगे कि हेदीन दयाल अब कृपाकर
के मेरेको अपना शिष्य की जिये तोमै आपके प्रसा
दसे इस संसार के घोर कलेश और बंधनसे छूट

श्री
भ०
८४

कर मोक्ष पदको प्राप्त होजाऊंगा तब कांची पूरन
कहने लगे कि हे महाराज इह भगवानकी आज्ञाके
बिना नहीं हो सकता तिस भक्त पालके पूछे बिना
मै तेरेको उपदेस नहीं कर सकता हूं ऐसे कहिकर
कांची पूरनजी वरदराज भगवान के भवन मै चले
गये और तहां भगवान के चरन कमलों मै चित ल
गायकर चामर और पंखा जोहै सो हाथ मै लेकर ब
डी प्रीती भक्तीसे झुलावने लगे ऐसे भगवान कृपा

ज

निधानकी सेवामें लीन होकर रामानुजके निमित्त जि
स प्रकार विनती और प्रार्थना करने लगे सो आगे
कथन किया जाताहै । २५ । चौपाई । हीन नाथ रा
मानुज एहू । बहनहीन शिष मोर सनेहू । यामें ज
स नदेश प्रभु होई । सेवन करहु सीस धरि सोई । स
निकोंची करविनय सहाई । बोले वरदराज सम
काई । नवकोंची रामानुज संगा । करहु कथन
इहमोर प्रसंगा । जोअस उपजि सुमति जीय तोरे ।

लगी सुभक्त परम प्रीयमोरे । गुरुवर शरण मोर
शरनाई । ऐसेहिं अग्र जन मोक्ष उपाई । जेअनन्य मम
दास सुहावा । तोकेदेहुं परम पद भावा । तोते जो
तमरे मन कामा । वनहु जाय हरन शिष रामा ।
तव कांची प्रभु चरन जुहारी । रामानुजपैं चल्यो सि
धारी । वरदराज उपदेस सुहावा । नामसरीन सव
षट्क सुनावा । रामानुज हरिमासन पाई । रंग
नगर उन चल्यो सिधाई । दोहा । ताहि नगर तहि

काल सब वैष्णव विपुल डुलावोरि । विरहे विकल नाथुन सकल शोकिन सवति विसारि । ३ । टीका॰ कोंचीपूरनजी विनती करते हैं कि हे भक्तजनोंकी रक्षाकरने वाले भगवान इह व्रतधारी आपका दा स रामानुज जोहे सो मेराशिष्य बनावहताहै इसमें आपकी जैसी आज्ञा होवे सो भगवान नैसी ही सी सपर धारन करले ऐसा इस प्रकार कोंचीपूरनकी विनती सुनकर वरदराज भगवान शुभकाय क

र कहने लगे कि हे कोंची पवन तुम मेरी ओरसे रा
मातुजनको कहो कि इह जो तुमारे हृदयमै हमती
और रुची उपजी है सो भक्त प्रवीन वहुतनेही शुभहै
और मेरेको भी परम प्यारी लगी है जो पुरुष संसार
मै गुरु की शरणागत भयाहै सो निश्चय करके मे
रीही शरणको प्रापत भया जानो और विशेष कर
के जगतमै एही मोक्षका उपायहै जो कोई मेरा नि
श्चय वाला भक्तहै इह पद मै तिसको देताहै तोते

जो तुमारे मनमें कामना है सो रंगनगरमें जाय कर
के हरनाचारी के शिष्यवनो ऐसे भगवान की आज्ञा
सुनकर कांचीपूरन चरनो पर प्रणाम करके तुरत
रामानुज के पास चले आये और वरदराज भगवान
का संदर उपदेश जोथा सो सनमान से सब सुनाय
दिया तब रामानुज भगवान की आज्ञा पायकर
तुरत रंगनगर को चले आये तिस समय तिस रंग
नगर के सब वैस्नव जन जोथे सो जामुना चारी

जीकी विरहके वश भये हुये अपने अपने हृदय मे परम दुखी होरहेथे तिनको कोई आधार देख नही पडताथा । ३ । चौपाई । भनहिं परस्पर मानि कलेसू कोउव करहिं ज्ञान उपदेसू । मेहं एरन लोमेनचने रे नाथुनविरहं शोक मनि घेरे । नव सव सेनन सेमति कीना । होय अचारज कौन प्रवीना । वैस्नव मत मे डिन कहिवाहू । करहिं खेड पाखेड प्रचारू । सवि सु यर मर्मे हानि विमनरई । हरिवि मुखन करे मनम

एव करई। मिलिविचार ठान्यौं सवकेही। हैं रामानु
ज लाइक एही। आवहिं रंगनगर ते जवहीं। उदय
होहिं वैस्नव मन तवहीं। तव सेवन कह हरन काही।
नमइंजायकाबी पुरि माही। आनहु रामानुजैं लिवा
ई। सादिर संसकार करवाई। लेहु वनाय सिबिर शि
ष आपन। तव वैस्नव मन होहिं ध्यापन। गिरा सु
नत श्रम सेवन साची। हरन किये गवन उनकोची।
अग्रहार इक ग्राम सुहावा। तहां परस्पर भयोमि

लावा। दोहा। तब रामानुज देखि हग परे चरन अ
तुराई। सरन हू लखि सुख परो मन इ मनोरथ्यपा
ई। ३१। टीका। तब सो वैस्नव परस्पर विचार कर
ते हैं और कहते हैं कि अब हमको कोन ज्ञान उप
देश किया करेगा इस प्रकार महा दुखन से लेकर
सेहणी वैस्नव गुरू जामुनाचारी जीके विजोग से
शोक करके व्याकुल और दुखी होरहेथे तब सब
वैस्नवोंने मिलकर समती करी कि अब आचार्जको

न स्थापन होवे कि जो वैस्नव मतको उदय करके
पाखंड मतियों को भली प्रकार खंडिन करे और
सुधरमका संसार मै विसतार करके विमुख पुर
षोंको भगवान के सनमुख करदेवे ऐसे सबने मि
लकरके अंतको इही विचार निश्चय किया कि श्री
इस अधिकारके लायक रामानुज है जिसके विना
और हमरा कोई नही है सो प्रवीन जवरंग नगरमै
आवे तब वैस्नव मत भली प्रकार उदय होताहै औ

र शोभा भी पावनाहै इस प्रकार संमती करके सब
वैस्नवोंने पूरना चारीजीको कहा कि तुम कांची पु
रीमे जावो और रामानुजको लेआवो फिर ईहां सन
मानसे विधी अनुसार सब संसकार करवाय कर तु
म तिसको अपना चेला बनाय लेवो तब सुंदर वै
स्नव मत जोहै सो भली प्रकार जगत मे स्थापन हो
वेगा ऐसे सरव जीवों के हितके देनेवाली संतों की
शुभ वानी सुन करके पूरना चारी जी रामानुज के

ल्यावने के वास्ते तरन कांची पुरको चले जाते भये
तब मध्य द्वार नाम करके एक ग्रामथा तिसमें तिन
का परस्पर मिलाप होय गया तब रामानुज ने पूर
ना चारी जी को देखकर और दोनो हाथ जोडकर च
रनोपर सीसधर के प्रणाम किया और पूरना चारी
भी असीसा देकर और अपने मनोर्थ को सिद्ध जान
कर हृदयमें परम हरष को प्रापत होते भये । ३१
चौपाई । रामानुज तब विनय बखाना । प्रभु कहि

श्री
भ॰
५५

95

ओर किये निजध्याना। नव आगम प्रसंग जस राहा।
एवन प्रकट वदनसव काहा। रामानुज नव विनय उ
चारी। मोहिशिष करहु दीन हितकारी। नवएवन प्र
म कह्यो बुझाई। चलहु सम्य वन नीरथ भाई। विधि
जनकरहु समाश्रय नाही। देहु उचित दीक्षानवका
ही। नव रामानुज गिरा सुलाई। नाथकाल किकर क
वन वसाई। हम नम जामुन दरसन हेन्। आये रंग
नगर मनि सेन्। ने नहिंदिन हरि लोकसिधाये। द

रस श्याम उर रह्यो हमारे । तोते ग्रव कीजे जनि वे
री । नाथ ग्रनीति न ग्रवसर केरि । जहं ग्रह मिलहिं
नहो शिघ होना । देखिये देस काल कल कोना । मै
इह हीन नाथ जोई गावा । सकल शास्त्र सिद्धान्त स
हावा । प्रेम ग्रलोकिक नाम निहारी । मनसिरो मणि
हृदय विचारी । दोहा । देव भवन इक ललित लखि
नाम धरा योलिवाई । ग्रह दीक्षा माहि रविमल विधि
वनहीन कराई । ३१ । टीका । नव रामानुज कहने

भ॰ ५८

लगे कि भगवन् आप कहांको चले हो रामानुज का व
चन सुनकर सठनाचारी जी ने अपने आवने का सब
प्रसंग सुनायदिया तब रामानुज हाथ जोड़कर विन
ती करने लगे कि हे दीनदयाल अब मेरेको अपना
शिष्य कर लीजिये सठना चारी कहने लगे कि भाई स
त्य व्रत नीर्थ जो है तिसपर चलो नहो विधीके अनु
सार तुमको निरमल दीक्षा कराय कर अपना शि
ष्य बिनाय लेना है तब रामानुज कहने लगे किना

96

५८

ष मस्य ब्रन तीर्थ पर क्या है आपने जो कुछ करना
है सोई सोही करिये समयका कुछ बसाय नहीं है कि
नमे श्रोर का श्रौर होजाताहै देखिये हम तम गुरु
गामुनाचारी जी के दरसन के वास्ते रंगनगर मे आ
ये थे सोवे तिसी दिन परमधाम को चले गये दरस
न की आशा हृदय मे ही रेह गई तोते अब देरकर
नेका समय नहीं है गुरु जी जहांमिलें तहांही शि
घ्रहोना योग्यहै इस मे देसकालका विचार कुछ न

रा॰
भ॰
९७

ही करना चाहिये हे नाथ मैने जो इह कथन किया
है सो संपूर्ण शास्त्रोंका सिद्धांतहै इस प्रकार रामानु
जका अलौकिक प्रेम कि जो लोकों मे नहीं है देख
कर संतसिरोमणी ब्रह्मचारी ने हृदयमे विचार
करके एक देव मंदर देख करके तिसके भीतर ले
गये तहां निरमल गुरूदीक्षा जोहै सो विधि अनुसार
वडी प्रीती मनकारसे कराय दई । ३२ । चौपाई । रा
मानुज कर वहुरि प्रवीना । संखचक्र चिन्हत भुज

कीना। ऊर्ध पुंड्र दै तिलक लिलारा। श्रष्ट वचन पुनि

श्रवण उचारा। विधीवत वहुरि होम कल कीन्यो।

लछमनार्ज नहिनाम रखीन्यो। वरदराज पूजन म

न भावा। नाम हीन अधिकार सुहावा। हरिन पर

म हरष मनमांही। पुनि आये कांची पुरि कांही।

नव पूरन अभागिरा अलाई। नवपाछे नामुन गुरु

भाई। हावि वैष्णव मत थापन करही। सेत जनन

उर आनंद भरही। तम वैष्णव सिर मोर कहावा।

॥ भं० ५८

चक्रवरति नवनाम सुहावा। रामानुज गुरु आसिख पाई। बार बार चरनन सिर नाई। धन्य जनम निज जगत विचारी। मानत भयो मोद सुख भारी। पुनि गुरुनैं दिया अभिरामा। रति जनपठन रहे मतिधामा॥ मनमति पावेंडिन मनछीने। सविवैस्नव मनमे ड़िनकीने। कांची पुरिकल जवन निवासी। विप्र सेन वैस्नव गुण रासी। रामानुज सवकर हित भीने। करन रहे मनमान नवीने। इस प्रकार षटमास विहा

५८

ये। गृहपैं करत वास सुखछाये। एकदिवस अपने
गृहआते। अंगन तेल लगावन राते। तहां एकअन
थी दुजआवा। नहि लखि डर कहण समझावा। र
घ सन भन्यो वेग तब रामा। स्याय अमानत देहु इहि
धामा। तब भामनि अस कह्यो दिसाई। इहि दिन अ
न्न लेन किन जाई। निजन केन कछु नाहिन पाऊं।
अनन अन्न कहि खो जन जाऊं। सुनि त्रीय वचन
परम दुखदाई। दिसवस उठे आप अतुराई। दोहा।

निजनकेतनतें अन्नकढि जीय मनभाव इन ल्याय ।
कहिसमिल्यो इह हमहिं कम डरमति इह सभाय ।
। ३३ । टीका । तिसके उपरांत रामानुजकी भुजों को
संखचक्रादि चिन्हों करके चिन्हत करदिया फिर म
स्तकमें उर्ध पुंड अर्थात रामानंदी तिलक लगाय
कर अष्टाक्षर मंत्र जोहै सो कान मै सुनायदिया औ
र फिर विधी पूर्वक होम करके लक्षमना चार्ज ति
सका नाम रख दिया और वरदराज भगवान के स

जन सेवन करनेका अधिकार देदिया जिसनें उप
देस ग्रहन करके पवित्र भये हुये रामानुज गुरु जी
के सहित कांची पुरी को चले आये तब गुरु यमुना
चारीजी मधुर बानीसे कहने लगे कि सुनो रामानु
ज हम गुरु जामुना चारी जीके पीछे परम पवित्र
वैस्नव मत जो है सो स्थापन करो और संतजनोंके
हृदयको परम सुख और आनंद देवो अब प्रवीन
हम सब वैस्नवों के सिरोमणी अर्थात सरदार

भ॰ ११

100

बनेहो और बक्ता बनी तुमारा नाम प्रसिद्ध हूआ इ
स प्रकार रामानुज गुरूजीकी आसीसा पायकर वा
र बार चरनोपर सीस नावने भये और जगतमे अ
पना धन्य जनम जानकर परम सुख को प्रापत हू
ये फिर गुरू जीसे बड़ी सुंदर सुखदायक विद्या जो
है सो बुद्धीके धाम रामानुज प्रीती और भक्तीसे प
ढनेरहे और मनमती जो पाखंडीथे तिनके मन
को खंडन करके दिन दिन वैस्नव मतका प्रभाव

वळानेगये कांची पुरीमे वास करने वाले वैष्णव ब्रा
ह्मण संतमहात्मा जिननेथे सो रामानुज सवका
परम हित पयार मेनित नवीन ही आदर सतकार
करने रहे इस प्रकार जव भाव पूर्वक गुरूजी के पा
स वास करते करते छेमहीने वतीत होय गये त
व एक दिन अपने घरमे शरीरके सव अंगोंको ते
लकी मरदन कर रहेथे तिसी समय तहां एक को
ई अनाथ ब्राह्मण आय आपत भया तिसको दीन

वन देखकर हृदयमें दया जो उत्पन्न भई तो स्त्री
से कहने लगे कि हे भामनी इस अनथी ब्राह्मण को
कुछ खाने अन्न घरसे शीघ्र ल्यायदे तब सुनक
र स्त्री क्रोधसे कहने लगी कि इसके वास्ते मैं अन्न
लेनेको कहां जाऊं अपने घरमें तो कुछ नहीं है अ
व औरोंके कहां खोजती फिरूं ऐसे स्त्रीका परम उ
ख दायक वचन सुनकर क्रोधके वश भये हुये उ
अवल दुख दायक वचन सुनकर क्रोधके वश भये

हये उन्नायल से आप ही उठे और घरसे अन्न निका
ल कर स्त्रीके मनमुख ल्यायकर कहने लगे कि अ
रे मंदमती और दुष्ट स्वभाव वाली इह देखतो हम
को घरसे कैसे अन्नमिल गया है । ३३ । चौपाई ।
लछमन अनाथि आवमम हारा । लखनहिकीन अथ
म अपकारा । देषापनि जङ जानि अबुद्धी । निपट
गवारनि मनविरुद्धी । जाइ जाइ मम मनमुखत्या
गी । अब न कढइ कछु दुरमति वागी । पतिहिं

देखिअ सरावे वस भामा। वैठी जाय लजित निजधा
मा। डनैअसमान अनघि कहं दीने। रामानुजैं विसवज
न कीने। एकसमय पुनि नहि पुरमांही। जहं जल
भरन सकलतिय जांहीं। नाहि कूप मेंजल छुटली
ने। छवन पतनि गवनि सरवभीने। आई नहो मोपि
हिनवारी। कल हकरनि रामानुज नारी। गुरु त्री
य जनदोहन गहिपाना। डारो गगरि कूप मध्या
ना। रामानुज त्रीय छुटपें फेरी। परो गगरि छवन

नीय केरी। नमकि उठी दिम मानि महाना। नजन प्रथम मनगुरु नीय काना। नवघटपर सिमोरघ ट मेगा। भयो अपावन जोगविभेगा। दोहा। देनीच ति कुल कुमति अति नहिं जानति नव बात। हम रोकुल उत्तमविमद सकल जगत विरव्यात। ३४। टीका। फिर रामानुज कहने लगेकि अरे अभा ग न अनथी र्लक्षण त्यथा करके दुखी भया हूआ मे रे द्वारे पर चलाआया प्रथम तैं ने तिसका ऐसा

रा.
म.

निरादर किया अब मैने जान लिया कि इह है बडी
पापनी और कुबुद्धी जड जाती सेत जनों की वैरन
है उठ दुरमती मेरे मन मुख से चली जा अब कुछ
और अयोग्य वचन मत कहना ऐसे पती को कोप
के वश हूये देखकर लज्जा की मारी उठकर अपने
घर मै मौन होयकर जाय बैठी और ईहा तिस अत
थी को अमान्न अर्थात सुखो अन्न दे कर रामानुज
जीने विदाय कर दिया तब एक समय तिसी नगर

103

मे कि जहां सब स्त्री मिलकर जलभरने को आती
थी तहां घरना वारी जी की स्त्रीभी जल लेनेको आ-
यगाई इनमे सो कलह कारनी अर्थात लडाईका मू-
ल रामानुजकी स्त्री भी तिसी कूये पर जल लेनेको
चली आई तब गुरूकी स्त्री और रामानुजकी स्त्रीने
कूयेमे एक साथही घडे बहाय दिये सो देवयोगसे
गुरूकी स्त्रीका घडा तिसके घडेके साथ टकर पडा
तबतो सो दुष्ट बुद्धी रामानुजकी स्त्री घडेका सपर्श

104

देखकर तत्काल तमकउठी और क्रोधके वश भई
हुई और लज्जाको त्यागकर बडी तीक्षण बानीसे क
हने लगी कि अरे मंद तेरे घडे के स्पर्श होने से मेरा
घडा तो भ्रष्ट होगयाहै अब मै इस कोक्या करूंगी हे
नीच कुलकी जनी हुई तू नहीं जानती थी कि हमा
री कुल कैसी उत्तमहै और जिसको सब जगत जान
तीहै । २४ । चौपाई । हमनपीव तव परसत वारी ।
अस गरुपतनि विविध रसकारी । तव छरन तीय

कोपि वखान्यो । हम वडवादि मोर सव जान्यो । स्व
सदऊहन कर भयो विवारा । छूटिगई गुरु सिष म
र जारा । तव हरनजीय धाम सिधारी । पतिसन म
कल हृतान्त उचारी । हरन मानि परम उरहानी ।
गवन्यो रंगनगर रिसमानी । उन सेवनहिन सोक
सनेहू । रामानुज गवने गुरु गेहू । सो पाये आश्रम
निजमांही । पूछन लगे परोसिन कांही । तव तिन
तीयन परस्पर केरा । वरन्यो वदन विवाद घनेरा ।

कहि न गये हम कहं कछु सोही । रंगनगार गवने
गृह होंही । रामानुज मुनि फिरे नगाई । रिसवस प्रेज
र भवन निज आई । भामनि सों पूछन अस लागे । रे
उर मति जड़ जाति अभागे । गुरुद्रोय कस कीन सि अ
प माना । कलह करनि नव वचन वखाना । दोहा ।
कुवन कियो कत अस विमम कछन हूप चटवा वि॰
मै आई हि न नाम नहि कहि रिसवस वहु गारि । ३५
टीका । फिर रामानुजकी स्त्री कहती है कि हम तुमा

रे परसे हुये जल कोकबी नहीं पियेंगे इस प्रकार
गुरू की स्त्री का निमजड जानीने बहुत ही निरादर
किया तब क्रोधसे भरी हुई गुरू की स्त्रीभी कहती है
कि इष बुडी हम तुमारी कुलवडाई सब जानी हुई
है ऐसे दोनोके विवाद करने मे गुरू शिष्यकी मर्जा
दा जोहै सो छूट गई तब ब्रह्मचारी जी की स्त्री तहां
से जललेकर अपने घरको चली गई और जानी ने
ही पती के साथ सब हवाल सुनाय दिया इस निरा

106

दर को हरना चाहे सुनते ही हृदय मै अत्यंत हानी
मानकर क्रोधसे ततकाल स्त्री के सहित रंग नगर को
चले जाते भये और ईहां सांझके समय रामानुज गुरु
जी के सेवन के वास्ते तिनके घरमे जो आये सो गुरु
कृपाल घरमै नहीं पाये पडोसियोंसे पूछने लगे तब
तिनोने परस्पर स्त्रीयोंका विवाद जो हूआथा सो सब
सुनायदिया और कहा कि गुरुजी हमको कुछ कहि
तो नहीं गयेहैं परन्तु जान पडताहै कि अवश्य कर

के रंगनगरको गये होंगे नव रामानुज सनने ही क्रो
धके वश भये हूये बडी उतायलसे अपने घरमें चले
आये और स्त्रीसे पूछने लगे कि अरे जड दुष्टबुद्धी औ
र अभागनी तैंने गुरुजी की स्त्रीका क्यों अपमान कि
याहै नव सुन करके सो मंदमती कहने लगी कि नि
सने कूये पर मे राजलसे भरा हूआ घडा परस करके
अपवित्र कर दियाथा मै इसीकारनसे तिसको
गारी देकर और सोई अपवित्र घडा ले करके घर

श्री
मं०
१०७

मै चली आईहूं ।३५। चौपाई। रामानुज कहि कोपित
बानी । देखहु कीन धरम कर हानी । जहि उछिष्ट हम
खायउ भागी । पावन होत अपावन त्यागी । नाम श्री
ये परमन जल कीने । मरखे अन्हवि कवन मति दी
ने । गुरु तीय कीये पान पट बारा। होहि सकल म
वि वंस हमारा । भानेहिनै अनरण जढ भारी । जो
अपमान कीन गुरु नारी । अब नमरहन नव रावन
जोगर। करहिं मोर अपजस किन लोगर । नव उरपन

रामानुज नारी। बैठी जाय भवन निज न्यारी। इत
रामानुज पूजन हेतू। वरदराज किय गवन नके
तू। लगे विचार करन मनमांही। किमि इहि नत
है प्रथम तीय काहीं। विप्र एक नहि अवसर आयो।
परम क्षुधित मुख वचन सुनायो। दातादेहु अन्न
मोहि दाना। तब रामानुज वचन बखाना। मोरम
रन इत जाहु सिधारी। करहिं प्रबोध तोर मम ना
री। रामानुज तीय पै इत जाई। कहिस देहु भोज

न मोहिमाई। आवा अनघ्यि विप्र नव हारा। करइ दा
न भोजन उपकारा। दोहा। सो बोली अनखाय नव
कामरव नवहेन। मै राष्यो भोजन विरचि जो नव
सामन लेन। ३८। टीका। नव रामानुज ने परम को
प करके कहा कि अरे पापनी जढ बुद्धी तैने तो यह
म कानाम कर दिया मूरखनी जिसका उछिष्ठ अर्थी
न जूठा खाय कर हम जगत मै पवित्र होनेहैं तिस
की स्त्रीके सपरश होनेसे जल अपवित्र होगया हो

डर भागी इह किस मंदमतीने तेरेको नरक मे जा
नेका मारग बताया है ग्रहकी स्त्रीके वरनोका जल
पान करनेसे हमारा संपूर्ण वंस पवित्र हो जाता है
अरे जड इहतो तेरेसे मह्रो अनर्थ भयाहै जो तेने
ग्रह पतनीका ऐसा अपमान किया अव यद्यपी लो
ग मेरा अपजस भी करें तथपी मै तेरेको घरमे न
ही राहुंगा ऐसे पतीके मुखसे तिंकारके वचन स
नकर भय के वश भई हुई सो भामनी मौन होय

स

रा०
भ०
१८

करके घरमै जाय बैठी और ईहां रामानुज वरदराज भगवानके भजन सेवन के वास्ते भवन मै चले आये और ह्रदय मै विचार करने लगे कि अब इस प्रथम स्त्रीका किस प्रकार त्यागकरूं तिसी समय एक ब ड़ ब्राह्मण क्षुधा करके व्याकुल भया हुआ आय कर के रामानुज जी से कहने लगा कि दाता मै क्षुधा क रके पीडतहूं मेरे साथ अन्न दानका उपकार करो तब रामानुज कहने लगे कि ब्राह्मण मेरे घरमै जा

109

वो नहीं मेरी स्त्री जो है सो तुमारा परितोष कर देवे
गी ऐसे मन करके सो ब्राह्मण तरन रामानुज जीके
घरमें आय कर तिनकी स्त्रीको कहने लगा कि मा
ई मैं अनर्थी ब्राह्मण तेरे द्वारे पर आया हूं और क्षुधा
करके व्याकुल हूं अब तूं उपकार कर और मेरेको
भोजन दान दे तब सो क्रोधकी भरी हुई कहने लगी
कि चल लिबाड क्या तेरे वास्ते कि मैंने भोजन ब
नाय के रक्खा हुआ है । ३८ । चौपाई । जाहु जाहु तजि

मदन भिखारी । काढिहैं ननर देन इन गारी । विप्र
हनन नन काल पराई । रामानुजपै इन गनी आई ।
किये कथन जीय गुन अपकारा । नव रामानुज हृद
य विचारा । मेरो जनन लागि अब गय डौ । वधु अप
राय वार द्वै भय डौ । मैनपनीन पननि इह मेरो । या
मै श्रोगन सब जगकेरो । अस गुनि इनहिं कह्यो स
मुफाई । अवनम वह्रिस इन मम जाई । नीय मन
भनहु वचन सविदाये । हम नेरे मैके नैं आये । नोर

बीर कर रुचिर बिबाहू। सदन सुभग मंगल उतसा
हू। जनक जननि नव पत्रिक दीना। बलइ द्वावि डु
न सुमति प्रवीना। अलि गण भगनि अनन सुरनारी॰
नव स गमन अभिलाषित सारी। अस कहि पत्रिक
दीन बनाई। छिरकत कुंकुम मलय सुहाई। बिप्र ले
न गवन्यो अनुराता। हृदय बिचार करत मग जाता॰
मैइन कवन काज बस आवा। आवागमन करत
स्रम पावा। अस सो चित उज पंथ निवारी। आयसि

रा।
भ॰
।।।

कट रामानुज नारी । दोहा । सोपत्रिक करदीन नही
लीनसि श्रुति ह्यवमानि । पिछ पठवन यन शुनत म
न वचन प्रमोद सरसानि । ३२ । टीका । फिर कलह का
रनी तिस ब्राह्मण को कहने लगी किमेट ईहांसे नि
कलकर चलाजा नही तो अबी डुरदशासे मारी देक
र निकाल देऊंगी तब ब्राह्मण तिस दुरमती के वचन
सुन कर ततकाल रामानुज जीके पास फिर आया
और तिनको तिस दुर वचनीका अपकार और कथ

।।।

न जोधा सो सब सुनाय दिया रामानुज सुनकर अ
पने मनमै कहते हैं किमै इस जड़जानी का अपराध
तीन बार सहार कर सोचा हो चुकाहै अब इह नामेरी
पत्नी और नामै इसका पती इस अधमनी मैनो स
ब जगत के औगन भरे हुयेहै असे विचार कर तिस
ब्रह्मण को भली प्रकार समझाय कर कहने लगे
कि भाई अब तुम फिर ऊहां ही हमारे घरमै जावो
और तिस दुरमनी को जाय कर कहो कि मै तेरे मा

श्री
भ०
११२

112

यके अर्थात माइयों के घरमे आयाहै मेरे भ्राता का
विवाहहै तहां बडे मंगल और उनसव होरहे हैं और
तुमारी भैनसखी सहेली और पुरकी नारी सब तुमा
रे आगमनको देखरही हैं कि हमारी हितकारनी क
ब आती है और इह पत्रिका जो है सो तुमारे मात पि
ताने दई है अब इस को बाचकर तुम तहां को शी
घ्रही चलो इस प्रकार रामानुज जीने तिस ब्राह्मणको
समुझाय कर और पत्रिका बनाय करकेफिर चेदन

इत्यादिसे भली प्रकार छिडक करके तिस ब्राह्मण के
हाथ मै देदई तब सो विप्र तिस पत्रिका कोले करके
तहांको फिर चलपडता भया और रस्तेमै जाता जा
ता कहताहै किमै इहां आने जानेके श्रममै कहां आ
य फसा हं ऐसे विचार कर ताहुआ ब्राह्मण वेगसे च
लकर रामानुज जीके घरमै आय पहुंचा तहां सो प
त्रिका तिनकी स्त्रीको देदेता भया सो पिताकी भेजी
हुई पत्रिका लेकर हृदयमै परम हरषको प्रापत

रा॰
भ॰
११३

होती भई । ३७ । चौपाई । कीन विप्रसन कार सहाया॰ दैप्रहार प्रतिदीन विदाया । आये जब रामानुज गेहा । कहिम वचन सीय परम सनेहा । मैके नाथ वीर मम केरा । हटि विवाह उतसाह घनेरा । जो पावहु साम न तव सामी । तोमै करहुं गवन सुखमानी । जननि जनक मोहि पठ्यो बुलाई । इह पतिकाप्राण पति आई । तब रामानुज आनंद मानी । जाहु अवसि भाखि स सुखवानी । पट आभरन लेत सजुदाई । मड समा

113

११३

जरेहु नव जाई । हमहिं पांच गये उन अैहैं । नेम
करहू प्रनि लिवाय इन लैहैं । नव नीय भूषण वस
न सजाई । पियरे गवनि हरष सरसाई । रामानुज
लहि आनेदासी । जान्योकटी श्रीवनें पासी । भाष
न मन संमति अनुसरई । अव त्रिदंड कल धारनक
रई । पनि हरि शरणा श्रम जेजाला । भजिय वेहि
अव कृष्ण कृपाला । असविचारि निजमानस माहीं ।
पटिनमाइके निज सति काहीं । त्रिणवन नोरि ज

रा.
सं.
११४

गतजिय आसा । देतविदाय प्रवास निरासा । दोहा॰
नारायण पद प्रेमकिये वलकल पट पहिराई । थरे
कर्म डलदंडकल चले चपल गति धाई । ३८ । टीका॰
फिर रामानुज की स्त्रीने निज ब्राह्मणका वडा सत्त
कार करके और अन्न अहार दे करके फिर विदाय
कर दिया जब रामानुज घरमे आये तव स्त्री जो है
सो वडासनेह जणाय करके कहने लगी कि हे ना
थ मे कैसे मेरे भ्राता का विवाह है तहां वडे मेरा

114

ल और उनमव होवेंगे जो स्वामी आपकी आज्ञा हो
वे तोमे आनंद पूर्वक तहां जाऊं क्योंकि माता पि
ताने मेरे को बुलाय भेजाहै यह पत्रिका तहांमे
आईहै ऐसे तिसका कथन सुनकर रामानुज जी
कहने लगे कि भामनी बडी शुभ वार्त्ताहै तहां तु
मको अवश्य जाना चाहिये और भूषण वस्त्र जो
कुछ तहां देना योग्य है सो साथ लेजावो और त
हां समाज के बीच जाय करके देवो हमभी चार पां

श्री
भ०
११५

बहिनके पीछे आय जाते हैं और जब वहांसे घर को आवेंगे तो तुमको भी साथ ही ले आवेंगे इस प्रकार पतीके मुखसे वचन सुनकर सो भामनी ततकाल भूषण वस्त्र सजाय कर जो कुछ लेनाथा सो साथ लेकर अपने मैकेको अर्थात माता पिता के घरको चली जाती भई तब पीछे रामानुज जी परम सुख और आनंदको पाय कर कहते हैं कि आज गले से फा

सी कटी है जोते अव हदिन और संमती वि

चार करके चिंदंड जो है सो धारन करूं इस

गृहस्त आश्रम के जंजाल को त्याग कर स

न्नेत्र हो करके कृस्न प्रमानमा के भजन और

स्मर्ण मै लीन हो जाऊं ऐसे मनमै विचार

कर और स्री को मै कैसै भेज कर जगत की

आशा जो है सो त्रिणवन तोड कर और घ

रको त्यागकर नारायण के चरन कमलों

मै चित्त जोड कर वल कल जो भुरज पत्र

के वस्त्र और दंड कमंडिल इह धारन करके

चल पडने भये ॥ ३८ ॥

116

चौपाई। वरद राज मंदिर मैजाई। आगेधरो साज समुदाई। सानुराग जगपानन जोरी। लाग कव न स्रव विनय वहोरी। हेउदार हे कमल विलोचन। कमलाकांत भक्तडख मोचन। हे अनन्त हे संतसहैया। धरनि धेनुसव त्रास हरैया। हेमुकं द हे त्रिभुवन राऊ। जोनमार अवसासन पाऊ। धारहुं नो त्रिदंड कलपही। जो निवाह नव दीन सनेही। जनकर गिरा सनत मन भाई। वोले

प्रभु अनन्त मुसकाई । भक्त प्रधान हरषि मन माही ॥ जाकु अनंत सरो
ही । मोर अनन्य दास समुदाये । निवसन नहां भक्ति
रतपाये । तिन सों मेज्जन प्रीति मिनाई । करहु त्रि
देहु स्नहृणा तुन जाई । रामानुज सुनि भगवन बानी ।
भयो आज प्रभु जन जीय जानी । सो समान उरत्रा
नंद नाही । गयो अनन्त सरोवर काही । तहं विलो
कि हरिदास सहाये । कियो प्रणाम धरनि सिर
नाये । बहरि नेम मन हरष प्रलीने । जामुना जैप

भवरका ११७

117

द वंदनकीने । सविधि ससेनन कृपा उदंडा ।
हरषि कीनकल गरहण त्रिदंडा । नवने रामानु
ज मति धामा । भने विदन जग जनिवर नामा ।
दोहा । रानुकुल अमराय नव गगन डुंदभी सधि
कीनसि नाना अमल कल समन हषि अतिभरि
। ३९ । टीका । नव रामानुज जीने वरद राज भग
वान के भवन मै जायकर दंड कमंडिलादि समा
न जोधा सो सवदीना नाथके आगे रखदिया

२१
भ.
११८
118

श्रौर श्राप दोनो हाथ जोडकरके विनती करने ल
गे कि हे कमल नैन हे लक्ष्मी कांत हे सरव क्ला
लेशोंके हरने वाले कृपानिधान हे अनन्त हे संत
सहायक हे गौब्राह्मण देवता ओंकी रक्षाकरने वा
ले हे मुकुंद हे तीनलोक के नायक हे भक्त हित
कारी भगवंन जो आपकी आज्ञापाऊं श्रौर जो कृ
पा करके आप निवाहो तो इह त्रिदंड मैं धारन
करूं इस प्रकार बडी मनको भावने वाली जन

की बानी सुनकर दीनबंधु भगवान प्रसन्न मुसका

यकर कहने लगे कि हे भक्त प्रधान तुम हरष पूर्व

क अनन्त सरोवरको चले जावो तहां मेरे अनन्य भ

क्त कि जिनको मेरे विना और दूसरेका भरोसा नहीं

है तिनसे जायकर हित और प्रीतीसे विधी अनुसार

सुंदर त्रिदंड जो है सो ग्रहणकरो ऐसे भगवान की

आज्ञा सुनकर रामानुज मनमै कहने लगे कि आज

मै निश्चय करके दीनबंधुके दासोंमै गिनागयाहूं

श्री भ॰ ११५

तिस समयका साहे हृदयमें समावता नहीं भया
तरत प्रणाम करके अनन्त सरोवर को चले गये
तहां जाय कर भगवान के दास भक्तोंको देख क
र पृथवी परमा ग्याथर करके प्रणाम करते भये
फिर तहां जामुनाचारी जीका दरसन पायकर
तिनके चरनो पर प्रणाम किया तिसने उपरान्त
सेष्णी संतोंकी कृपासे त्रिदंड जो है सो वधी अ
सार ग्रहण कर लिया तब नें रामानुज जी का ना

119

म जनीवर करके प्रसिद्ध होता भया तिस समय

देवता ऊंने बडे आनंदसे आकाशमै नाना प्रकार

दुंदभी का शब्द करके जती वरके सहित सब सं

त समाजपर सुंदर पुष्पों की वरषा जो है सो क

रदई । ३९ । चौपाई । संत समाज सकल हरषाई ।

जय जय जय सुरव सुरवद सलाई । महि मंडिल सु

भ मंगल छायो । कलि उतपन जनु विघन डरायो ।

इनतिमि कौवीहरन काही । दीनस्वपन प्रम त्रि

भुवन सोई। मोर चवन जलपाइक चारू। छत्र जटित
कंचन मणिभारू। चमर सुभग सिवका मन हरनी।
रतन मले कनकनि दरन तरनी। ता मध मम पाइ
का सुहाई। राविललित मुनिमानस भाई। सत्र
जाय रामानुज काहीं। ल्याव हु ईहां भवन मम मा
हीं। सुनि सासन सपने जगत्राता कोंची परन उठे
प्रभाता। प्रभु पाइका भक्त सुखदाई। सिवका रू
ढ कीन उन आई। छत्र चारु चामर छवि छाई।

१२३

कहि नजाय कछु लावन नाई रामानुजकहं आगल

जाई। चलेलेन सादर हरषाई। प्रभु पाडुका भक्त

प्रदकामा। धारन मौलि भक्त अभिरामा। दोहा।

लाये कांची नगर कल अति प्रमोद सावमान। स

मरन दीन दयानिधी वरदराज भगवान। ५०। त

व तहां सव संत भक्त जोथे सो भी वडे आनंदसे जै

जै शब्द को उच्चारण करने भये और पृथवी मंडि

ल पर जहां तहां शुभ मंगल छायन होगया क

रा॰
भ॰
१२१

लीजो कलजगाई सो मानो डरता हुआ कहीं वनमे
जाय छिपा नवईहां रात्रीमे कांचीपूरन जी को वर
दराज भगवान सपने मे कहने लगे किहे भक्त मे
री चरन पादुका अर्थात खडावो और कंचिन मणि
यों करके जडा हुआ छत्र चमर जोहै सो मेरी सूरज
की आभा को निदरने वाली मनमे प्रकाशमान सि
वका जो पालकी है तिसमै राखकर और आगे जा
यकर मेरे परम प्यारे भक्त रामानुजको वडे मन

मानसे ईहां मेरे भवनमैं लेआवो इस प्रकार स्वप
नेमैं भगवानकी आज्ञा पाय कर काचीपूरन जी
प्रात काल होतेंही उठे और भक्त जनोके मनको
सुखदेने वाली भगवान की चरन पादका लेकर
वडे प्रेम मनकारसे पवित्र पालकी मै स्थापन क
रके और छत्र चमर आदि सभ सजाय करके प्र
संन छवीसे रामानुज जीके स्थावनेके वासे व
ले गये तव तहां जाय करके भक्त जनोके मनो

रा०
भ०
१२२

थी सफल करने वाली भगवान की चरन पादुका रामानुज जी के सीस पर धारन करके वरदराज भगवान का स्मर्ण करते हुये वडे हर्ष और आनंद से कांची पुरी मै ले आवते भये । ४० । चौपाई । रही त्रिदंड ग्रहण कृत जोई । करवाई मन्दिर पुनि सोई । हरि मंदिर नव जानि वरजाई । वार वार नेमुन सिरनाई । करन लागकल अमलानि गाना । जय जय जैति भक्तवर दाना । जैति अनन्त शा

क्रिसहर राया । जैमुकंद जैजै पनि माया । जैसहर धर
नि धेनु रखवारे । जैजै भक्त संतहित कारे । जैमंडि
न हंदारक जाती । जैजैजै मधु कैटव घाती । जैबा
रन हारन भवपीरा । जैति प्रवरधन द्रोपदि चीरा ।
जैप्रल्हाद करन रखवारी । जैजैजैति नरन सुनि
नारी । जैजैमीन करानन शोभा । जैजैसहर सुनि मा
नसलोभा । जैजै कमल विलो वन वारू । जैजैजै ड
र वन सजधारू । जैति त्रिभंग अंग मड लोने ॥

भ॰
१२३

123

जैजै हृदय भक्त जनटोने। जैनिम फारि हरन कुंडि
ल करना। जैजै कैकि कीट कल धरना। दोहा। जै
जै पीनपुनीत पर जगपुपवीन मुरारि। जैनिसेव
वक्रादि प्रभु गदापद्म धुनवारि। श्रमप्रभु श्रम न
ति कीन कल रामानुज मतिधाम। कै प्रसन्न करु
णाय नन दीन्यो जति वरनाम। प्रभु प्रसाद जन
पायकै अभय अमल चितहोय। हरिस मीपनिव
सन लग्यो दुरन दोष दुख खोय। साधि संतन सत

कार निन होत निरत गुन गेह । लाग्योनि सिदिन भजन पद वरद राज जन नेह । रामानुज कर चरि न श्रम कछु किं चन मनिवार । सैगायो संतम इह हरन दोष संसार । ४२ । टीका । फिर त्रिदंड ग्रह ण करने की हन जो रही थी सो मनमान से विधी पूर्वक सब कर वायदई तिसनें उपरांत जनीवरजी भगवानके भवनमें जायकर वार वार प्रणाम क रकें वडीनम्र वानी से सुंदर प्रसन्नतनी जो है सो गाय

२१
भ:
१२४

124

न करने लगे कहने हैं किजैहो नमारी हे भक्त जनो
को वर देने वाले हे अनन्त शक्ती वाले हे मायाके
पती भगवान जै हो नमारी हे मुकंद हे देवता ड्के
स्वामी हे गौश्रलक्षण पृथवी की रक्षा करने वाले हे
भक्त संतोंके हितकारी जै हो नमारी हे देवता ड्
को आनंद देने वाले हे मधु कैटब आदि दैतों के
वध करने वाले जै हो नमारी हे भगवान नम कै
सेहो कि चंद्रमा के समान मुखकी शोभा वाले औ

प

र नेद्वे का ग्रसा हूआ गजराज मोख्या तिसकी प्र।
कार सगने वाले ओैर सभा मै द्रोपदीकी पैज राख
ने वाले प्रल्हाद आदी संत भक्तों की सहायता कर
ने वाले भी तुमही हो जै हो तुमारीहे गोतमकी स्त्री
को तारने हारे हे देवता ओैर मुनियों के मनको मो
हित करने वाले हे कमलों वत नेत्रों की शोभावा
ले जै हो तुमारी हे तुलसी की माला के धारने वाले
हे त्रिभंगी हे सुतम श्रंगोवाले हे मोर मुकट धारी

जैसेही तुमारी है कानोंमें मकरा कृत कुंडलों के धार
ने वाले हे पीत जग्युपवीत वाले हे मुरारी हे संख
चक्र गदा पद्म धारी इस प्रकार जब बुद्धीके धाम रा
मानुज जीने भगवान भक्त सुखदान की प्रस्तुती क
री तब दीन बंधूने प्रसन्न होय करके जनीवर नाम
जोहै सोई दानकर दिया ऐसे भगवान कृपा निधा
नका प्रसाद पाय करके तहां भगवान के पास ही
वास करने लगे और नित्य रात्रीदिन संत जनों के

आदर सत्कार मैं और वरदराज भगवान के पूज
न सेवन मैं ही लीन होकर कालवर्तीन करने भये
नाभादास जी कहते हैं किहे गुरू महाराज इस प्रका
र इह रामानुजका चरित्र जोहै सो मैने जैसा कि न
बुमतीके अनुसार होसका आपके आगे गायन क
र दियाहै जो इसको श्रद्धापूर्वक पढ़ै सुनेगे सो
भगवानकी कृपासे दुख दारिद्रोंसे छूटकर संसार
मै भगवानकी भक्ती को प्रापत करेंगे ॥ इति श्री

भक्तविनोद ग्रंथे भगवद्भक्ती महात्मे भाषाटीका
यो रामानुज चरित्र वर्णने नाम सरगः

अथ रामानुज अन्य चरित्रे

दोहा। अब आगल इतिहासकल रामानुज कर आन
कर हे कथन मादिर बदन हरन भीतभ्रमअज्ञान
चौपाई। कांची नगर निकट मनभावा। पूर्वदिसा इ
क ग्राम सुहावा। तहं अनन्त दीक्षत अभिरामा। र

हो एक दुजवर मति धामा । जनिवर भगति पुत्र
गुणगेहू । सबि सुधरम रत सील सनेहू । नाम सु
द्रविद्या गुण सागर । दास रघी प्रम नाम उजागर ॰
मनवच करम भक्त भगवाना । विगत विकार मा
र अभिमाना । सोहति मानल भक्त उदंडें । अमल
अचारज रहित त्रिदंडें । भावा भक्ति प्रीति सरसा
वे । लखि भैने मानल हरखावें किये समा स्वय स
न सम जाने । विपुलग्रंथ मत पंथपठाने । रहो

भ॰
१२७

सि नहीं एक इज आना। गुणागार थी मान सजाना॰
तोके एक आनम जभावा। जहि कुरेस नाम जग गा
वा। श्रीपति भक्ति निरत व्रत धारी। सेवक संत स
रव हित कारी। सो आयो कांची पुरि मांही। हर
षो लखि रामानुज कांही। दोहा। करि प्रणाम सि
ष सो भयो विधि जुत हरित प्रीति। पढे सास्त्र वि
द्या विमल विविध ग्रंथ गुण नीति। १। टीका। ना
भादास जी कहतेहैं कि हे संत जनो एक गाथा रामा

तुजको मै कथन कर चुकाहूं अब जिसकी हमरी
गाथा सरबभय और भ्रमोंके हर कर नेवाली जोहै
सो सनमान पूर्बक आपके आगे कथन कर ताहूं
कहतेहैं कि कांची पुरी के पास पूर्ब दिसाकी ओर
एक बड़ा रमणीक ग्राम था तहां अनसे विचार मा
न और बुडीका धाम एक ब्रह्मण होता भया सो ज
निवर की भगनी अर्थात भैनके पुत्रका पुत्र विद्या
और गुणों मे प्रवीन दामरथी नाम करके उजागर

रा
भ०
१२८

128

था और मनवचन काया करके भगवानका भक्त
संपूर्ण विषय विकारों से रहित था सो अपने पिता
के मामेका त्रिदंड ग्रहण करना और विद्या भक्तीका
प्रभाव सुनकर वडी प्रीती भक्ती वाला हो कर तहां
जतीवर जी के पास आवता भया तव तिसको देखकर
रामानुज जी वडे प्रसन्न भये और पुत्र समान जान
कर अपना शिष्य वनाय लिया फिर वडी प्रीती से
तमामनसे वडे वडे उत्तम ग्रंथ जो थे सो सव पढाय

हिये तव तहां एक और ब्रह्मण बडा गुणमान और
बुद्धी का धाम अते मे बतरथा तिसका पुत्र परम ब
नधारी और भगवान की भक्ती मै निरन्तर करके
लीन संत जनोका सेवक सरव जीवोंका हित का
री और हरेस नाम करके प्रसिद्ध जो था सो भी कां
ची नगरी मै चला आवता भया तहां रामानुज जी
को देख कर बडे हरषसे चरनों पर सीस नाय क
र फिर भक्ती प्रीतीसे तिनका शिष्य बन गया औ

र थोडे ही कालमै गुरुजी की कृपासे वडे महान ग्रं
थोंको पढकर विद्या गुणनीली मै भली प्रकार प्र
वीन होगया । २ । चौपाई । दासरथी कुरेस सु जाना ।
वैस्नव निरत ज्ञान वि ज्ञाना । अति सुशील सिष ज
गल उदारे । जति पति कहं प्राणन ते प्यारे । गुरु स
मीप निवसत दिनराती । सेवत भजन जञ्ज सब
भाती । समय एक जादव कर माना । जति वर क
हे देखो मरा जाना । उर्ध पुंड्र जहि लसनलि लारू ।

संख चक्र चिन्हत भुज चारू। भानु समान भास चहुं
घांहीं। घट क खोय सो हत ननमांहीं। गहित मेड
ग्रद पानि त्रिदंडा। रति सिय षिय पद पद्म अखंडा·
अस प्रकार लषि जादव माई। मनहिं प्रणाम कि
यो हरषाई। आई लौटि भवन निज मांहीं। कह्योम
रम सब जादव कांहीं। रामानुज संग वैर बढ़ायो·
निज नृप बाद विश्व विष्णुरायो। अब नासों नजिये
विप्रनाई। सब विधि नान बान सख दाई। इहि वि

११ भ॰ १३॰

कुंठतें हरि पठवायो जीवउधरन हेत जग आयो।

दोहा। सत्य शेष अवतार इह यामें संशय कछु नाहिं।
करिहैं अवसि प्रचलन जग साधि वैष्णव मत काहिं।

२। टीका। तब रामर थी और कुरेस दोनो परम ज्ञा
न वज्ञान मै प्रवीन और जति पति जी को प्राणों से
भी प्यारे थे सो राती दिन गुरु जीके पासही निवास
करने और तिनके पूजन सेवनमै भली प्रकार ली
न रहने तब एक समय जादव की माता रामानुज

१४

जी को कंही रमनेमे आवते हुये किस प्रकार देख
नी भई कि जिनके मसतक मे ऊर्ध पुंड कि जो रामा
नंदी तल क है सो सजा हुआ और भुजों मे संख च
क्र आदि वडे सुंदर चिन्ह जोहैं सो लगे हुये और क
खाय अर्थात गेरू केरंगे हुये निरमल वस्त्र और
परम आनंद दायक हाथमे ग्रहण किये हुये त्रिदं
ड मानो सूरज के समान नख सिख एक प्रकाश
के पुंजथे और भगवान के चरन कमलों मे अखंड

रा॰
भ॰
१३१

131

जिनकी स्त्री थी इस प्रकार भक्त प्रधान रामानुज
जी को जादव की जननी देख कर बडे हरष के वश
भई हुई मनमें ही प्रणाम करके अपने घरको चली
आई और घरमें आय कर जादोके साथ सब हृतांत
सुनाय दिया फिर कहने लगी कि हे पुत्र तेरी इह
क्या बुद्धि भई है जो रामानुज जी के साथ वैर बांधक
र सब जगतमें अपना अप जस करवाय लिया है
अब योगय है कि तिनसे वैर भाव त्याग करके आप

१५

नाई करो तोहे प्रभु इसमें तुमारी सरब प्रकार क

रके भलाई और कल्यान होवेगी तुम नहीं जानते

हो कि इनको भगवान ने बैकुंठ से ईहां पृथवी

तलपर जीवों के उद्धार करनेके वासतेभेजाहे इ

ह तो सत्य करके धरन धारी शेषजीका अवतार हैं

जगतमें अधर्म कानास करके सु धरम के सहित

वैसनव मत को भली प्रकार उदय करें गे । २। चौ

पाई। वैसनव मत मंदर मंमारा। श्री पति करें स

रा॰
भ॰
१३२

132

ति मानस प्यारा। कौन नविस्म भक्ति जग जेही॰
दीन्यो वृथा जनम विधि तेही। पढिन श्रवण गु
णविद्या चरना। विन हरि भक्ति वृथा श्रम कर
ना। शोभित जथा नम्रनक शरीरा। सुमन सुगं
धि आभरन चीरा। कोची सुवनलौं विहाना। निर
न तानावि ज्ञान महाना। ते रामानुज कर सुखदा
ई। नाना धन्य वाद सुख गाई। लखि आचार सार
सुखदाना। सजहिं भक्ति प्रीति मनमाना। तोते न

१५

महं हेष मन त्यागी । लेहु शरण जनिपति बडभा
गी । जाद्व मात वचन हनि नीके । बोल्यो अभय
मोद भरि जीके । कहिस मम जननी नव बानी ।
मोरे हृ डर भई गिलानी । अग्र गम्य आचार ज
भाये । शेष रूप रामानुज गाये । नाहि नल्प से
मार न हृजा । ग्रैहिं जोग जग वेंदन हजा । दो ।
हा । पै मोरेमानस रह्यो मानलाल मापहु । अ
प्रदला हथमदे पुनि गवन हृ ढिगने हु । ३ ।

टीका। फिर माता कहने लगी कि हे पुत्र इह ज
गत मै सुंदर वैस्नव मत जो है सो भगवान को
प्रति करके प्याप्त है जो ब्रहमण हो करके विस्न भ
क्ती मै लीन नही भया तिसको विधाताने जगत
मै विरथाही जनम दिया है पढना सुणना विद्या
श्रुण चतुराई इत्यादि जो है सो हरी भक्ती के विना
किसे अर्थ भी नही है केवल श्रम ही है जैसे मरे
हुये पुरषको भूषण वस्त्र पुष्प सुगंधी सजानेसे

कुछ शोभा नहीं होती है तैसेही भगवानकी भक्ती
के विना विद्या गुण चतुराई शोभा नहीं पावती है
देखो कांची पूरनसे लेकर वडे वडे विद्वान जो ज्ञान
विज्ञान के जानने वाले हैं सो सब रामानुज जीका
नाना प्रकार करके मुखसे धन्य वाद गायन करते
हैं तिनके आचारको सार जान कर परम प्रीती औ
र भक्ती से सब सेवन करते हैं तोते हे पुत्र तुम भी
द्वेषको त्याग करके महा उदार भगवान के प्यारे

भक्त जनोंवर रामानुज जी जो हैं तिनकी शरणको
प्राप्त होजावो इस प्रकार माताके मुखसे वचन
सुनकर जादव अभय होकर बडे आनंदसे कहने ल
गे कि हे माता तैने सब सत्य ही कहा है इसमैं कुछ
संशय नहीं है मेरे चित्तमैं भी इस वार्ताकी अत्यंत
गिलानी उपजी है क्यों कि संपूर्ण आचार्जों मै प्र
धान रामानुज जी साक्षात शेषनाग जीका अवता
र प्रसिद्ध हैं तिनके समान और दूसरा कोई नहीं है

सो सत्य करके जगतमैं वंदन योग्य ही हैं पसन्न हे जननी मेरे हृदयमैं एक इह लालसा है कि प्रथम जाय करके संपूर्ण पृथवी की प्रदक्षणा करूं और फिर आय करके रामानुज जी का दर्शन पाऊं । ३ ।
चौपाई । तव नंदेस जानि वर सुखदाई । राख्यो है ज ननि सीस हरखाई । सुनि जननी अस वचन सुला ई । सब लोकन नजान जड़नाई । भूप दक्षणा ने जग माहीं । जानि पतिन्ह न प्रदक्षणा नाहीं । पति ह

रा॰
भ॰
१३५

135

रि नान मनोरथ हूजे। रामानुज सरणागत हूजे।
जादव जननि बचन बस धाना। कीन्यो ह्रदय रा
खि अभिमाना। रामानुज कहंजाय नि हारा। जथा
इंडु उडगन परि वारा। सिष समाज सोभित बहुपा
सा। जनु सुरगण सुर गुरु जिमि भासा। तब जाद
व अस प्रकट उचारा। सुन रामानुज बचन हमारा॰
डर्थ पुंड जोई मास्तिकदीना। सेव बद्ध कम धारन
कीना। निरा कार निरगुण भगवाना। भयोस गुन

कम कर हु वखाना । जादव कथन स्तनत ग्रस का
ना । रामानुज प्रमोद स्तव माना । नवहूरेस कहं
सासन दीना । देहु उच नव प्रसन प्रवीना । गुरु प्र
नपत हूरेस सु जाना । लैसंमति स्तुति शास्त्र पुराना ।
दैदै वेद प्रमाण अनेका । हूतो सकल जादव जि
य शंका । दोहा । स्तनत कथन हूरेस ग्रस ग्रति
अचरज वस होय । जादव गवने भव नति न कर
न सोच निसि खोय । ४ । टीका । जादव कहता है

२१
भः
१३६
136

कि हे जननी जबमैं इस प्रकार पृथ्वी की प्रदक्षणा
करके तिनके पास आऊंगा तो फिर जिस प्रकार ग
णेश जी की आज्ञा होगी सोमैं सीस पर धारन क
रूंगा ऐसे जादव का कथन सुन कर माता कहने
लगी कि हे पुत्र भुवनके तुमारी जछना जोहै सो
नहीं जाती देखो जिस पृथ्वी की प्रदक्षणा नें इह
जगति वर जी की प्रदक्षणा करकेन्यून अर्थात वह
नहीं है मैं तुमको बार बार कहती हूं कि और सब

की आशाको छोड कर एक रामानुज जी की शर
णागतको प्राप्त होजावो है पुत्र इसीमें तुमारी भ
लाई है इस प्रकार माताके वचन सुनकर जादव जो
है सो हृदयमें अभिमान राखकर घरसे चल पड
ता भया और इहां आय करके रामानुज जीको कै
से देखता भया कि जैसे चंद्रमाकी चारो ओर तारों
का घेरापडा हुआ होताहै तैसेही शिष्यों करके प
रिवारत भये हुये भक्त प्रधान रामानुज जी बडी सं

२१
भ.
६३

दर शोभाको उदय कर रहे हैं फिर कैसेहैं कि मानो
जैसे देवताउंके समाज के बीच गुरु बृहस्पती जीवि
राजे हुये छबीपावते हैं तब जादव अभिमानी नहो
सेन सभाके बीच जाताही कहने लगा किहो रामा
नुज इह जोतैनें उर्ध पुंड मस्तिकमे तिलक दिया औ
र संख चक्रादि चन्हों करके भुजों को चिन्हतकिया
सो कौं किया भला इहतो कहो कि निराकार और
निरगुण भगवान जो था सो मगन होय करके ना

ना प्रकार कों कर भयाहै ऐसे जादवका कथन सुन
करके रामानुजजी हृदय मै वडा आनंद और भाव
मानकर कूरेसजीको आज्ञा देते भये कितुम इनके
प्रश्नका उत्तर देवो तव गुरुजीकी आज्ञा पायकर
के कूरेसजी जोहैं सो शास्त्र और स्मृति प्रमाणों के अ
नुसार वेदके प्रमाण देदे करके जादव के हृदयके
संदेह को भली प्रकार निवारण करदेते भये इसप्र
कार कूरेसके कथनको सुनकर जादव अभिमानी

रा॰
भ॰
१२८

138

बड़े आश्चर्ज को प्राप्त भया हूआ उठ करके अपने घ
र को चला गया तहां सारी रात सोचमे ही व्यतीत हो
ती भई । ४ । चौपाई । प्रातकाल निद्राकछु लागी । व
ईराज सपने कहि वागी । हो जादव अवलोकव कांही ।
सूक्तिपरयो मानस कछु नांही । बिनु लीने रामाव्रज
मवना । होहिं न अगम सिंधु भव तरना । देखि सप
न जादव असमाना । चौकि उठ्यो मम भ्रम अकुला
ना । मोरे हेत हरन डरव दीना । जो इह स्वपन अबोध

न कीना। अब उद्धार कवन विधि होई। करत वि
चार मनहिं मन सोई। उत प्रातहिं जादव महतारी।
गवनी कूप भरन हित वारी। नहिमग संज्जन शिष
न सुहाये। जति पति हरि सुजन हितआये। देखि
जननि जादव अनुरागी। हृदय विर्वर करन निज
लागी। रामानुज इति भानुसमाना। आगम निगम
निपुण गुण धामा। मनव वकरम भक्त जडु राई।
मम मन कुमति करन जडु नाई। रावन हेष भा

२१
भ०
१३५

139

व नहि संगा। नहि कल्यान कर कवन प्रसंगा। दो
हा। जो मन परि हरि द्वेष हट रामानुज शिष होय।
तोकल्यान न कक लप मम करहिं सुजस सबकोय।
५। टीका। तब जादव को प्रांतकाल होते कुछ नि
द्रा जो आय गई तो वरदराज भगवान सपनेमे कह
ने लगे कि हो जादव अब तक तेरेको सूझ नंही प
डा जो रामानुज की शरनलिये विना इस संसार रूपी
समुद्रका तरना बडा कठिन है इस प्रकार जादव

प्रातकाल मै स्वपन देख कर वडी धार्मिक हनीवा
ला होकर आश्चर्यके वश भया हूआ इधर उधर दे
खने लगा और मनमै कहताहै कि मेरेवास्ते जो दी
नो के दुख हरने वाले भगवान कृपानिधानने इह
स्वपन प्रबोधन कियाहै सो अब उद्धार किस प्रकार
होवे और कौन उपाय कियाजावे ईहां जादव इह
विचार करतेहैं और उहां प्रातकालही जादव की
माता जल भरने के वासते कूये को जो चली जाती

थी तो तिसी रमनेसे शिष्यों का समूह साथ लिये हू
ये जतीवर श्री भगवान के पूजन करने के वास्ते च
ले आये तब तिनको जादवकी जननी देख करके
हिरदय मे बड़े हरष और आनंद को प्रापत भई और
विचारकर नेलगी कि देखो इह रामानुज जी सूरज
के समान बड़े तेज धारी वेद पुराणों के ज्ञाता और
गुणो के धाम मन वचन करम करके भगवान के
इढभक्तहैं और मेरा पुत्र खोटी बुद्धी वाला कैसी ज

छता के वश भया है जो इनके साथ द्वेषभाव राखे
ताहै श्रौर इनकी प्रभुताई के प्रभाव को नहीं जान
ताहै तिसकी कल्यान मैंकोंसे बिगाड़ेगी श्रव
जो श्रह श्रपने हठ श्रौर द्वेष भाव को त्यागकर
रामानुज जीका शिष्य होजावे तो इह सुंदर कल
प हलको पायकर श्रौर कल्यान के सहित होय
कर जगतमैं स्नाव श्रौर स्नजस का पात्र होजाता
है । ५ । चौपाई । गनत जननि श्रम भवन सिधारी॰

२१ भ० १५१

(१५)

तवजादव करेलियो हंकारी । हिन ज्ञन भनन वचन
श्रममाना । हो इजाय सिष जनि पति माना । मोह
उपाय सगम सन पहू । लेहु शरण रामानुज नेहू॰
होहिं सहज जड चेतन भेदा । श्रावा गौन मिनहिं न
ववेदा । जादव सुनत मान हनवाना । हरि प्रबोध
हन सपन बखाना । पैनहिं मिटो नासमें देहू ।
कियो न रामानुज पदनेहू । संसय समन सम यउ
कनेहा । गवन्यो कांची छरन गेहा । करि प्रणाम

प्रभु वदन उचारा। दीननाथ संशय मोहि भारा ॥
सो पिसाच भ्रम भावन छाई। हरिय मंत्र उपदेस
सुनाई। तुम हूं जोगजग्य जनन सहाया। हरहु ना
थ संशय करि दाया। हरहु नाथ संशय कोटि सो
ग्रा। जौं प्रभु वरदराज छिगजाई। विनय मोर प्रभु
देहु सुनाई। जनक स्यान कवन विधि होई। देहिं दे
व सा मन जिमि सोई। दोहा। सोभै हित ज्ञन जानि
जिये लेहूं सीस निजपानि। कोंची सरन सनन प्रभु

२१
भ॰
१५२

142

चले नरेन सिधारि । ९ । टीका । इस प्रकार जादव की माता विचार करती हुई अपने घर को चली आई तहां आयकर और जादव को पास बुलाय कर के बडे हितप्यार से कहने लगी कि हे पुत्र मेरी आज्ञा मानकर और जायकर प्रीती भक्ती से रामानुज जी के शिष्य बनो तिनकी शर्णा जो है सो सहजे ही मोक्ष का उपाय है हे तात इसमें तुमारी सरब प्रकार करके भलाई होगी और जगत का आवा गौन

अर्थात जनम मरन छूट कर क्रम प्रमानमाके सा
य मिलाप होजावेगा इस प्रकार जादवने यद्यपी मा
ना के मुखसे परम सुखदायक ज्ञान भी सुना और
वरदराज भगवान का सुपने मै प्रबोध कर नाभी
जननी को सुनाय दिया नद्यपी तिसके हृदय का दे
ष नहीं छूटा और ना संदेह मिटा ना रामानुज जी
के चरनो मे भक्ती प्रीती भई तब एक समय हृदय
का संशय निवारणे के वास्ते सो जादव कांची स्थान

२१
भ०
१५३

143

जी के घरमैं चला गया तहां प्रणाम करके कांची पू
रन जी के आगे विनती करने लगा कि हे दीन दयाल
मेरे हृदय मैं बड़ा भारी संशय उतपन्न भया है सो आ
प अनुग्रह करके इस भ्रम रूपी पिशाच की छायाको
मंत्र रूपी उपदेश सुनाय कर मेरे हृदयमें निवारण
करिये हे भगवन ऐसे भ्रमभंजन के दूर करने को तु
मही सामर्थ हो अथवा वरदराज भगवान के आगे
जायकर इस भ्रमके निमित्त मेरी प्रार्थना करो कि हे

दीना नाथ अबमेरी कल्यान किस प्रकार होवेगी
इसमें जिस प्रकार कृपा सिंधु की आज्ञा हो मैं सोई
शिर मानकर सीस पर धारन करूंगा नव कांची
पुरन जी तिसका कथन सुनकरके तुरन वरद
राज भगवान के भवन को चले गये ।८। चौपाई।
वरदराज भगवनपें आई। जाद वकी सबविनय
सुनाई। नव प्रसन्न बोले भगवाना। कांची पुरन
सुनहु सुजाना। तुमहू वेग जादवाद्रिग जाई। सो

एक घन अस देहु सुनाई। विनु लीने रामानुज सर
ना। तोहि अगम भव वारद तरना। दीन सघन मै
कारन एही। तम हू भयो विस्वास सनेही। अब
हू भलो विगर्यो कछु नाही। गिरै जाय जनि पति
पद माहीं। जो दुरलभ मानुष वपु धरई। संसृति
मोच्छ उपाय न करई। तेहकर संकर मम मूढा।
दुरमति दुष्ट दुरनरन गूढा। कोबीहरन हरि अ
नुमासा। लिये ग्राय दुन जादव पासा। भन्यो ना

मनिज वाहन सोई। सोजनिपति सरणागत होई।
वरदराज प्रभु सासन पहू। हिनजन कीन कथन सो
ह्निनेहू। जादव सुनि सासन भगवाना। भयो विग
त संशय अभिमाना। दोहा। जनिपति सरण सिधा
रकै परयो चरन गतिदीन। त्राहि त्राहि नम्रतविनय
वहन दृगन जलकीन। ७। टीका। तब कांची पुर
न जी वरदराज भगवान के भवनमै आय कर जा
दवकी विनती सब सुनाय देते भये इस प्रकार स

श्री
भ०
१४५

145

न करके भगवान कृपानिधान प्रसन्न कहनेलगे कि
हे कांची पूरन अब तुम जादवके पास जायकर मेरा
इह कथन प्रकट करके सुनाय देवो कि रामानुज के
चरनोकी शरन लेनेके बिना तुमको इह संसार समु
द्र जोहै सो तरना बडा कठिनहै इसी नमित्त मैने पहि
ले ही स्वपनमै समुझाय दियाथा सो तिस को वि
श्वास नही आया अब भी सब भलाही है कुछ बिग
डा नही है जाय करके रामानुज जी के चरनो पर गि

र पडे क्यों कि जो पुरष बडे दुरलभ मानुख्य शरीर
को धार कर जगतमे मोक्ष का उपाय नाकरे सो हु
कर जो कुत्ता ग्रौर सूकर जो सूर है तिसके समान
पशु ही जानो ग्रौर भी महां मूढ दुष्ट दुरबुद्धी पा
पी ग्रौर ग्रभागी होता है ग्रैसे कांची सरन जी भग
वानकी ग्राज्ञा पाय कर ततकालही जादव के पा
स चले ग्रावते भये ग्रौर कहने लगे कि हो जादव
जो ग्रपना नाम नहीं चहता तो शीघर ही रामानु

श्री
भ॰
१५८

146

जू की शरणागत हो जा मैंने बड़े हित के सहित इ
ह वरदराज भगवान की आज्ञा जोहै सो तेरेको क
थनकरके सुनाय दईहै तव इस प्रकार जादव भग
वान की आज्ञा सुनकर सरव संशय ओर अभिमा
नसे रहत हो कर रामानुज जी के पास आय कर
के ओर दीन होय करके त्राहि त्राहि कहता हूआ
चरनो पर गिरपड़ा ओर नेत्रोंसे प्रेम रूपी जल व
हाय करके वडी कोमल वानी से विनती करने ल

गा। ७। चौपाई। नव उद्धार करन संसारा। नमहू ना
थ अपराध हमारा। महा उदार संतजग गाये। दुक
निवरण जनन सखदाये। अव उद्धार प्रभु नम बिन
नाहीं। मै जान्यो निश्चय मन माहीं। नमहूनाथ ज
न संसृति हेरे। करनधार भव सागर केरे। अमन
भवर भ्यावन डरमोऊ। नव अवलंब आन नहि
कोऊ। कीजैनाथ पारबिन बेरी। दशा देखि आर
न अमसमेरी। अमकहि परचो चरन अकुलाई। जति

पति जीय दायासर माई । भन्यो वचन सन जादवधी
रा । नवडाव हरहिं सवसि जडवीरा । उठहु सकल
मेदेहविहाई । भज हु हम दीनन सावदाई । उठि
जादव जग पानन जोरी । बोल्यो नाथविनय सम
मोरी । मोहिकीजे भगवन अपनाई । पाव हु संसका
र करवाई । हडनविकट उदधि संसारा । औंबिले हु
नवदीन उवारा । दोहा । नव रामानुज मुहिन शनि
मेन समाजजडाय । जादव को विधिजन सकल मे

सकार करवाय । ८ । टीका । जादव कहता है कि हे
नाथ तुम जो हो सो संसारी जीवोंका उद्धार करने ।
वाले होमेरेमे जो अपराध भयाहै सो क्षमा करिये
क्योंकि संतजन सदैव उदार चित और जनो की भू
ल चूक निवारने को सामर्थ सरब सुख दायक हो
तेहैं हे दीना नाथ अब मेरा उद्धार आपके हाथ ही
है मैने निश्चय करके जानलिया है कितुमही इस
संसार समुद्रके करनधार अर्थात मलाहहो जोने

मै इस महान समुद्रके बुम्मन घेरेमै फसा हूश्रा परम
डुःखी होरहाहूं और आपकेविना इसके तरनेको औ
र कोई आश्रय देखनहीं पडताहै सो आप कृपा कर
के शब विलंबना करिये मेरे को परम डुःखी जानक
र इस संसार समुद्रसे वेग पार उतारिये ऐसे कहि
करके और व्याकुल हो करके फिर चरनो मै लिपट
गया ऐसे तिसकी दशादेख कर जतिवरजी के हृद
यमै दया जो छायन होगई तो कहने लगे कि हे श्री

148

रजके धाम जादव ससमारा डाव जोहै सो कृस्न परमा
त्मा प्रवस्स करके हरेंगे प्रव उठो प्रौर विन्ना संदेह
को त्याग कर सरव सावोंके देने वाले कृस्न भगवा
न जोहैं तिनका सम्मर्ण करो तव जादव उठ करके
प्रौर दोनो हाथ जोडकरके कहने लगा कि भगव
न मेरी इह विनती है जो प्रव प्रपनी कृपासे मेरे
को पांचो संसकार करवाय करके प्रपना जनव
नाय लेवो प्रौर इस संसारके प्रवगाह समुद्रमे ड

वने हृदयेको हाथमे पकड करके उवारलेवो इस प्र
कार जादव की विनती मनकरके रामानुजजीने व
डा मंदर ग्रौर शुभ दिन विचार कर ग्रौर सव सेन स
माज जोडकर विधीके अनुसार संसकार जोहे सो
सव कर वाय दिया । ८ । चौपाई । यहलो नाम नहि
गोविंद दासा । वेद मरम सव कियो प्रकासा । ना
ना वैस्नव गेय्य पढाई । दीन्यो वैस्नव धरम जणाई
पुनि रामानुज आज्ञादीनी । नववैस्नव अपकीरति

149

कीनी । जे अपराध मिटावन हेतू । रचहु ग्रंथ वैस्न
व मति सेतू । नव जादव वंदित गुरु चरना । हृदय
सुमरि स्यामल घन वरना । करि करि विमल विवा
द सुजाना । लै प्रमाण श्रुति वेद पुराना । रच्यो ग्रंथ
सब ग्रंथन भूपा । नाम जास जति धरम निरूपा ।
न्यायवहारि गुरु मनमुष गावा । मातुकुल कछु
भूल सुधावा । विधि त्रिदंड धारन सन्यासा । नाम
धक्रिये वशेष प्रकासा । रामानुज मुनि मानसरा

भ॰ ११५॰

गे। नहिकहे विविध सरा हन लागे। नव जादव ज
निपनि सवनाई। कीन्यो ग्रनमे भक्ति सिवकाई। इ
स प्रकार कछु समय वनीने। गोविंद जन हू भक्ति
हावलीने। दोहा। समरन श्रीराधा रमन गुरु वर
कृपा प्रसाद। गवनाकिये हरि वास कहे पाय पर
म प्रहलाद। ५। टीका। नव जादव का नाम जो
है सो गोविंद दास करके रखदिया तिसने उपरा
न नाना प्रकार के वैस्नव ग्रंथ वडी प्रीती पूर्वक

पढाय दिये औार वेदके तत्वके सहित वैस्नव धरम
जोहै सो भी सब जणाय दिया फिर रामानुज जी आ
ज्ञा देते भये किहो गोविंद दास जी तुमने जगतमे
अपने सुख करके वैस्नव जनोकी निंदा अपकीर
तीकी हुईहै तांते तिस अपराध के मिटावने के वा
स्ते अब तुम सुंदर वैस्नव ग्रंथ जो है सो रचो ऐसे
सुन कर जादव गुरु जी के चरनो को प्रणाम कर
के औार हृदयमे कृस्न परमात्मा का सुमरण करके

रा॰
भा॰
१५१

151

वेडे निरमल विचारसे स्रुती पुराण और वेदके प्र
मान लेलेकर सरव ग्रंथोंका सिरोमणी ग्रंथ जो है
सोरचदेने भये और जतीधरम तिसका नाम प्रसि
द्ध करके फिर ल्याय कर और गुरूजी के सन सुख
बैठ कर वडी प्रीती भक्ती से गायन करके सब स
नाय दिया तिस ग्रंथमें त्रिदंड और सन्यास के धार
नेकी विधी जोहै सो वशेष करके कही रामानुज
जी सन करके हृदयमें अत्यंतही प्रसन्न भये और

१५१

बार बार श्लाघा करके जो कहीं कुछ भूल हकरे
ख पडी सो कृपा करके तुरनही सुधार दई तब जा
दव कि जो अब गोविंददास जी करके प्रसिद्ध हैं गुरु
जनी वर जी के चरनो मै निवास करके तिनकी भ
क्ती सेवन मै रात्री दिन लीन रहने भये इस प्रकार
जब गुरु महाराज की सिवकाई का सुख लेने लेने
कुछ समय वतीत होयगया तब जादव जो हैं सो
श्री राधा रमन भगवान को सुमरने हुये गुरु जी

भ॰
१५२

की कृपाके प्रसादसे मुनी जोगी जनो को दुरलभ जो विष्णु धामहै तिसको आनंद पूर्वक चलेजाते भये।

१।चौपाई।देवहू सेन महंत गयानी।हरि महिमा कछु जाय नजानी।कियेविचार पार नहिंपाई।२ द्विविधि जननिज लेन बचाई।सो जादवहै हमरना ही।पठनर हे रामानुज माही।हननचले कारे ज नन बसेरवे।सेहिंसोऊ जादव नमदेरवे।वैस्नव म न तिदरन जगमाही।जहि रामानुज देखि उराही।

सोऊविदन जादव गहि सरना । धारि सीस जतिप
ति रज चरना । गुरु प्रसाद जग कीरति पाई । गयो
विकुंठ निसान बजाई । नव रामानुज धरम प्रबीना ।
कृस्नभक्ति निसवा सरलीना । कांची पुरिवासि सा
नेदरागे । सिषगण रुचिर पढावन लागे । रंग नग
र उन सेन सबाही । जामुनविरहं दुखिन मन मा
ही । वियावेद पढावहिं जोई । देखि नपरहिं प्रबा
रजकोई । रंग नगर नव सेन महंता । रामानुज द

रु
भ०
१५२
153

रसन रनिवेंना। आये रेंग नाथ प्रभुहारा। बार बार
श्रम विनय उचारा। जो हमकहे नवदीन सनेहु। क
रन क्रनारथ सेस्तनिचेहु। दोहा। बोलिलेहु नव कु
पाजन रेंगनगर कलमाहिं। भक्तप्रधान सु ज्ञान घ
न जन रामानुजकाहिं। ९। टीका। नाभादास जी
कहतेहैं कि हे ज्ञान की निधी सबसेन महंतो देखि
ये इह भगवान की अगाध महिमा कुछजानी नहीं
जानीहै और विचार कियेसे कुछपार नहीं पायाजा

२८

नाहै इहहीन वंश अपने जनको कैसे वचाय लेनेहैं
देखो सोई जादव है कोई हमरा नहीं कि जिसके
पास रामानुजजी पढ़ते रहे हैं और सोई जादवहै
कि जो रामानुज जीके मारने के वास्ते अनेक जत
न करनारहा और वैस्नवों का परम द्रोही अर्थात
निंदक कि जिससे रामानुज जी डरते हुये भागते
थे अवसोई जादव गुरू रामानुज जीके चरनो की
धूडीको सीसपरधारन करके तिनकी कृपाके ७

मारमे जगतमें सभकोरनी और सावमजम का
पात्र हो करके निमान प्रधान वासेव जावता हुआ
वैकुंठधाम को चला गया मोने हे सेनो इह परमे
श्वरकी माया वडी वचित्रहै जिसके जानने को कोई
भी सामर्थ नहीं है तब भक्त प्रधान और सरव गुण
निधान परम प्रवीन रामानुज जी हस्त भगवान
की भक्ती मे रात्रीदिन लीन भये हुये कांचीपुरी मे
निवास करके शिष्य समूह जो हैं तिनको हवी औ

154

ती

र श्रीसर्वक पढावने लगे और जिस समय उहां रं
ग नगर मैं संपूर्ण वैस्नव जन जामुना चारीजी की
विरहे करके व्याकुल भये हुये कहतेहैं कि हमारा
कैसे निरवाह होगा जो ईहां वेद विद्या पढावनेके
वाले कोई आचारज नही देख पडताहै रंग नगर
के सव संत महंत जो हैं सो रामानुज जी के दरसन
की अभिलाखा वाले होरहेथे तव संपूर्ण मिल कर
के रंगनाथ भगवानके भवन मैं आयकर प्रार्थना

करने लगे कि हे दीन हितकारी मुरारी भगवान जो
तुम हमको अपनी कृपासे संसारमै कृतार्थ करना
चहते हो तो हे भगवन तिस अपने भक्त परम ब्रत
धारी और ज्ञान गुन प्रधान रामानुज जी को ईहां रं
ग नगरमै वेग बुलाय लेवो तिनके आनेसे आपकी
कृपा करके ईहां सरब जीवोंकी भलाई और कल्या
न हो जावेगी । ९ । चौपाई । विनय करत प्रभु संत
समाजू । बैठि हार मंदिर सुरराजू । रंगनाथ प्रभु

रण निमिलीनो। नव जगथीम खपन भ्रमहीनो।
मम मेघा मन निकट सुहानी। लिखीमोर कलक
रन समानी। कांची बरद राजपे सोई। पठहौं वे
गज्ञान द्रुज होई। भ्रम प्रकारनिमि खनानि हारी।
भोरहिं उठे मेन द्रुजकारी। देखो मेघासन ढिग
जाई। पटी हरी कर पत्रिक पाई। सासन खपन
जानि निमिमेघा वी। पठ ईने द्रुजकर डनकोंची।
वरदराज ढिग सो द्रुज आयो। कीर परणाम

॥ भ० १५८

निज नाम सुनायो । रंगनाथ पत्रिक प्रनिदीनी । हर घन वरदराज जबलीनी । रामानुज जाचना म हाई । वरदराज वाचित मुकलाई । जामानि लिख्यो उत्र प्रभुपही । रामानुज ममपरम सनेही । वनहिं देनजा वन सवप्राना । दियेन जाहिं नाथपै प्राना । कहि प्रकार रामानुज प्यारे । दीननाथमैं दे हुं न मारे । लिखि हनान्त भगवन प्रम रानी । यहलो निकट सेवाम न पानी । दोहा । आये पूजक प्रा

५९

न जब वरदराज मध मौन । परीधरी पानी करी
दगन विलोकन मौन । ११ । टीका । इस प्रकार स
ब सेनों का समाज रंगनाथ भगवान के भवन
के द्वारे मै स्थित होयकर वडी भक्ती प्रीती से भग
वानका स्मरण करने लगे तब दीनबंधू कृपासिं
धूने रात्री के समय सपने मै तिनको जणाय दि
या कि मेरे सेवा मनके पास मेरे ही हाथ की लि
खी हुई पाती जोहै सो तुमले करके प्रातकाल हो

श्री
भ०
१५०
157

तेंही कांचीपुरीमें वरदराज भगवान के पास भेजदेवो
इस प्रकार सब संतजन रात्रीको स्वपन देखकर प्रात
काल होतेंही आयकर भगवानके संघासन के पास
जो देखने लगे तोवे पत्रका भगवानके हाथकी लि
खी हुई मिलजाती भई तिसको सनमान पूर्वक लेक
र और रात्रीका स्वन सत्य जानकर एक उत्तम ब्रह्म
णके हाथ देकरके कांची नगरी मैं भेजदेते भये त
व सो ब्रह्मण वरदराज भगवानके पास आयकर

और प्रणाम करके अपना नामसनाय कर रंगना
थ भगवानकी पत्रका जोथी सो आगे रखदेता भ
या वरदराज भगवान जिसको बाचकर रामानुज
जी की जाचना करनी अर्थात मांगना जानकर हृ
दयमे व्याकुल होजाने भये नव रात्रीके समयही रं
गनाथ महाराज जी को उत्तर लिखने भये कि हे भ
गवन इह रामानुज जोहै सो मेरा परम सनेहीहै औ
र सब प्रकारका मांगना दिया जाताहै प्रत्त प्राण

८२

॥ भ॰ १५८

158

कि सीसे नहीं दियेजाते हैं तोते हे दीनानाथ मै आप
को इस परम प्यारे रामानुज को किस प्रकार देऊं ये
से वरदराज भगवान ने राजीको सव वृतान्त लिख
कर पत्रका जोहै सो सेंघासनके नीचे रखछोडी न
व प्रातकाल होते ही जब पूजिक जन भवन के भी
तर आये तोतिनो ने सो भगवानके हाथकी लि।
खी हुई पत्रका सिंघा सनके नीचे परी हुई पाई । ॥
चौपाई । लेत सो वहिर भवन डुत आई । रंगनाथ

करहन बुलाई । दीननाम्ह पुनि कीन विदाया । लेन
सोविप्र रंगपुर आया । वरदराज कर पत्रिक पाव
न । रंगनाथ कहं दीन सुहावन । भगवन बाचि मर
म जिय जाना । तब जामुन सनपक प्रधाना । नाम
जामुन वर रंग सुहावा । रंगनाथ नहि स्वपन बुझा
वा । गान शास्त्र तव परम प्रवीना । श्रुति संगीन
रीनसव बीना । कांची वरदराजपैं जाई । निज प्रभा
व गुण निपुणादिखाई । ते प्रसन्न तब होहिं उदारा ।

मणि केचिन चिनदेहिं अपारा। करिहौंसो ननमइं
कारेगी। लेइ एक रामानुज मांगी। देखि सपन अ
समान सभावा। हृदय प्रमोद रंग बर छावा। प्रात
काल उठि सुमरि मुरारी। कांचीपुरकहं चल्योसिधा
री। बरदराज प्रभु मंदिर आई। कियोप्रणाम नेत्रसि
रनाई। दोहा। सजसजाय पट आभरन मधुरनाद
मुखगाय। निरतत नेकन भाव किये प्रभु मन सु
ख सरसाय। ८। टीका। नव रुजक जन सो प

त्रिका ले करके भवनके बाहर चले आये और रंग
नाथ भगवान के हनको बुलायकर तिसके हाथदे
कर बडे सनमानसे विदाय करदिया सो हन ननका
ल तिस पत्रका को लेकर और रंगघरमे आय कर
रंग नाथ भगवान के आगे प्रणाम करके धरदे।
ता भया भगवान तिस पत्रका को वाचकर सब
तातपर्ज जानगये तब जामुनाचारी जीका एक पु
त्र रंगवर नाम करके प्रसिद्ध गायन विद्या मै पर

म वतुर श्रौर प्रधानध्या रंग नाथ भगवान तिसको
स्वपनेमै प्रवोध करने भये कि हे रंग वर् तुम गायन
विद्या के संगीन शास्त्र मै परम प्रवीन श्रौर् सरव ग
णानिर्धनहो तोने कांची पुरीमै जावो श्रौर तहां अपने
गायन गुण के प्रभाव से वरदराज भगवान को भ
ली प्रकार् रिझावो श्रैसे जव सो प्रमानतमा तुमारे प
र प्रसन्न होवैंगे तो तुम कं चिनमणी द्रव्य इत्यादि
कुछ नहीं लेना केवल एक रामानुज को ही माग

श्री
भ०
१८०

160

लेना इस प्रकार स्वपन देख करके रंगवर जोहैं सो
हृदय मे अत्यंत प्रसन्न होते भये और प्रातकाल हे
तेही उठकरके भगवान को समरते हूये कांची नग
री को चलपडे तब मारगको तहन्य करके तहा का
ची पुरी मे वरदराज भगवानके भवनमे आय कर
दंडवत प्रणाम किया तिसतें उपरान्त बडे सुंदर भू
षण और वस्त्र सजाय करके अनमे रसीली और
मधुर स्वरसे गायन कर कर और नृत्य मे बडे आने

रा॰
भं॰
१८१

इसे नाना प्रकार के भाव जणाय कर भगवान कृपा
निधानको रिझावने लगे ।१२। चौपाई । प्रम संगीन
रीन लखि नामा । बरदराज उरमोद प्रकामा । बोले
बचन जनन सुख दाता । मांगु रंगवर जिय वर भाता॰
हरिहिं देखि अनुकूल प्रवीना । करि प्रणाम कर जोर
न दीना । कहिस नाथ मोपें जोई छाहू । भये प्रसन्न
हरन भवताहू । तो जन वर जाचन अनुरागे । जोग्य
जोग कछु प्रभुहिं न लागे । भाख्यो कृपासिंधु मसका

१८१

ई। भक्तएक नम रमाविहारी। आनसकुच नजिमा
गि नलेहो। मैप्रसन्न मानस तोहिदेहों। कह्योरंगव
र जुग कर जोरे। रामानुजदीजे प्रभुमोरे। अब करि
ये निजवचन प्रमाना। नदिय नकपासिंधु भगवा
ना। कह्यो नाथ वेच्यो डुजमाही। जोमैदीन वचन
मानतोही। इनो बात इह डुरलभ भाई। पै एवव मो
हिलियो हराई। अब नराखो निज वचन करेना।
पत्तो अब सि रामानुज देना। दोहा। अस कहि प

रा०
भ०
१६२

162

ण स्वरन प्रभू रामानुजैं बुलाय। हरषि रंगवर हाथ
इन दीन्यो नाथधराय।१३। टीका। नव वरदराज भ
गवान ऐसे रंगवर के मुखसे संगीत रीत सुन करके
हृदयमे परम हरषको प्रापत होते भये और कह
ने लगे कि हे रंगवर मै तेरे पर बहुत प्रसन्न भया
हूं अब जो तेरे मनकी रुचीहै सो मेरे से वर मांग
ले मै तेरेको देता हूं इस प्रकार भगवान को प्रस
न्न भये जानकर रंगवरजी दोनो हाथ जोडकर व

८०

ड़ेदीन होकरके विनती करने लगे कि हे भक्त भ
य हारी भगवन जो आप मेरे पर प्रसन्न भये हो
तो मैं वर मांगता हूं परन्तु हृदयमें डरता हूं कि
आपको अयोग्य ना प्रतीत होवे ऐसे रंगवर का
कथन सुनकर भगवान मुस्कराय करके कह
ने लगे कि हे भक्त एक लक्ष्मी को छोड करके
और जो तुम्हारे चित्तकी भावना है सो वरमांग ले
वो मैं आनंद पूर्वक तेरे मनोरथको सफल करूं

ग० भा०
१६३

163

गा तब वेंग वर हाथ जोडकर कहने लगे कि हे भ
गवन मेरी प्रार्थना रामानुजकी है सो कृपा करके
मेरेको देदेवो और अपने वचन को प्रमाण करो
हे दीन याल अब टालना नहीं चाहिये इस प्रकार
सुन करके वरदराज भगवान कहने लगे कि हो
वैलिण नेने मेरेको वंचलिया अर्थात छललिया
है क्योंकि मै तेरेको वचन दे चुका हे इहवानीनो क
दाचित भी होने वाली नहीं थी परन्तु अब क्या क

है कि तैंने पहिलेही मेरेको हरलियाहै अब आप
का वचन नही टालाजाता रामानुज अवश्यही देना
पडा ऐसे कहि करके प्रणपालक भगवान जो हैं
सो रामानुज जी को तुरत बुलायकर वडे आनंद से
रंगवर जी को सौं पदेते भये । १३ । चौपाई । मान
कुल पुनि गिरा उचारी । रंग नगर जनजा हुमिथा
री । कबहु जाय दरसन मन भावा । रंगनाथ भग
वान सुहावा । रामानुज सासन प्रभु पाई । वार वा

२१
भं॰
१८४
164

र चरननसिर नाई। करि इन गवन भवन निज आयो। सविसेवक जन लीन बुलायो। शिष सम् ह संजुत इवसाना। भयो रंगपुर करन पयाना। पितु गृहतें पति गृह जिमिजाती। कन्या परम दुखि त विलपाती। तिमिमानस दुख मानि महाना। स मरन वरदराज भगवाना। कावेरी तट मारग आ ई। करि सनान श्रम सकलविहाई। हरिमंदिर लक अगे कलसीन्यो। समरत कृष्णगवन पुनि कीन्यो।

८४

नव प्रमोद मानस सरसाई। आये अय रंग वरथाई-
रंगनाथ प्रभु मंदिर आई। करि प्रणाम अस विनय
सलाई। आये कलि प्रभाव जग हेना। दीनदयाल रा
मानुज सेना। दोहा। सुनि संदेस वसेस अस वदन
रंगवर पड़। जन आगमन कल सुन नमन हरषे
हीन सनेह। ५। टीका। फिर वरदराज भगवान
प्रसन्न होय कर कहने लगे कि हे रामानुज अब न
म रंगनगर को चले जावो तहां जायकरके रंगना

श्री
भ०
१६५
165

ये भगवान का परम सुखदायक और मनोहर रूप
मन जो है सो आनंद पूर्वक पावो इस प्रकार रामानु
ज भगवान की आज्ञापायकर और चरनोपर बार
बार सीस नाय कर अपने घरको चलेआये और न
हां आयकर सब शिष्य सेवक जोथे सो बुलायलि
ये तब तिन सबके सहित दुखी भये हुये रंग पुर
को चल पडते भये जैसे पिताके घरसे पतीके घ
रको जाती हुई कन्या परमदुख से विलाप करती

५०१

है तैसे ही हृदयमैं डुबित भये हुये रामानुज जी वर
दराज भगवान को स्मरते हुये कावेरी नदीके कि
नारे पर मारगकोन हन्य करके आय पहुंचे तहां
स्नान करके मारगका श्रम जोथा सो निवारण कि
या फिर द्वादिस तिलक अंगों मै सजाय करके हनु
मान माका स्मरण करते हुये आगेको चलप
डते भये तब रंग वर जामुना चारी जी के पत्र जोथे
सो बडा आनंद मानकर और आगेही भवन मै आ

य कर रंगनाथ भगवानके चरनो पर प्रणाम कर
के विनती करने लगे किहे दीन धाल आपकी कृपा
से सब सो कली कालका प्रभाव हरकरने वाले भ
क्त प्रधान रामानुज जी आय गये हैं इस प्रकार रंग
वर के मुखसे अपने जनका भावना सुनकर दीनहि
त कारी रंगनाथ भगवान जोहैं सो हृदयमे पर
म हरस और सुख मानने भये। ४। चौपाई। भा
षो वरन रंगवरकाही पढिन वेद नाजि सेन सवाही।

रामानुज सुगवायन हेतू। मिलिसव चलइ सेन
मति सेतू। रंगनाथ सम सासन पाई। दुंनी बाजे
आदि समुदाई। चलेजात तुनल्पा वन आगे। लषि
रामानुज मानस रागे। धायपरे दुरन पद आई।
नामडठाय लिये उवलाई। वैस्नव आनदेषि हृद
राने। वंदि परस्पर हृदय ज्वडाने। आये जवस
मीप हरि भवना। नव आगल मूरति श्रीरमना।
आईलेन लग मंदिर द्वारा। सुहज सकल लषि व

सु°
भे°
१८७

167

रत अपारा। तबते अब रामानुज काहीं। ल्याये भ
वन भवन पतिमाहीं। तहां वचित्र विमल सुखदाई।
महां वेग प्रभु दरसन पाई। करि प्रणाम अस विन
य उचारा। मोरेहित तव दीन उबारा। आयलेन अगा
वायन दैया। काहकीन इह भक्त सहैया। कवन
दीन जडमें मति हीना। अस अम नाम हेत प्रभु
कीना। त्रिभुवन धनी अनन्त प्रभाऊ। मैसेवक कल
हु रंक कहाऊ। तवनासो अति दीन वडाई। की

न सेष सहस सकहि गाई। सुनत भक्त वर विनय सु
हाई। रंग नाथ मानस सचु पाई। बोले सुनहु सिरो
मणि दासा। इतनो मोहि नवदरसन आसा। याते बो
लिय द्रुत नवकाहीं। भक्त बात कछु अचरज नाहीं।
जो मैं संमति निज जनकेरा। करहुं न भ्रम सनका
र घनेरा। हीन वंश नव नाम हमारा। कौन करहिं
गायन संसारा। दोहा। नम लायक सब गुणन प
र रामानुज मति धाम। मैं तोरे नायक कियो मुक्ति

११
भ०
१६८

168

भुक्ति अभिराम । २५ । टीका । फिर भगवान रंग ब
र को कहने लगे कि सब सेन अब वेदके पढने को
छोड कर और मिलकर रामानुज के लेनेके वास्ते आ
गेही चले जावो ऐसे भगवान की आज्ञापाय करके
शरना चारीसे लेकर सब सेन भक्त रामानुज जी के
लावनेके वास्ते आगेही चले आये तब रामानुज
तिन सेनों को आवने हुये देख कर और शीघ्रसे
धाय कर शरनाचारी जी के चरनों पर गिर पडे ॥

तिनोने प्रीती पूर्वक उठाय कर अपने हृदयसे ल
गाय लिये तिसके उपरान्त और सब वैस जो थे सो
भी परस्पर वंदना करके बडे आनंदसे गले लाग
लाग कर कुसल पूछने भये इस प्रकार जब चल
ने चलने भगवान के भवनके सामीप आयगये न
व दीना नाथ की मूरती जोहै सो अपने भक्त रामा
नुजको लेनेके वास्ते आगेही चल कर भवनके द्वा
रेपर आयगई इस अद्भुत को देख कर सब लो

व

भ॰
१५५

ग मोहित होगये तब वैस्नव जन बडे मनमानसे रा
मानुज जीको भगवान के भवन मै लेआये तहां भ
क्त प्रधान रामानुज जी रंगनाथ महाराजका दिव्य
दर्शन पायकर दंडवत प्रणाम करके बिनती क
र नेलगे किहे सरब चरा चरके पालक हे सरब स
क्षीके अधार देव आप जो मेरे लेने के वास्ते आगे
चल कर भवनके द्वारे पर आये हो इह कृपानिधा
न आपको उचित नही था क्यों कि मै किस गिन

169

१५५

नो मै एक महा रंक वुद्धीका हीन दीन जड़ जानीथा
कि जिसके वास्ते हे कृपा सिंधू आपने इतना श्रम उ
ठाया तुम भगवान अनंत प्रभाव वाले तीनलोक
के नायक और मै तुच्छ सा रंकों का रंक आपके च
रनो का सेवक ताते मैने जाना है जो कृपानिधानने
सेवको अपना जन जानकर तारदिया और जगत
मै अनसे सज्जन और वडाई का पात्र करके गाईको
समेत परवत वनाय दियाहै ऐसे भक्त रूप रामा

ज्ञा°
भ°
१०°

नुज जीके मुखसे वचन सुनकर रंगनाथ भगवान
अत्यंत प्रसन्न होते भये और कहने लगे कि हे दास
शिरोमणी रामानुज मैरको तेरे दरसनकी बहुतही
अभिलाषी इसीतें मैने तेरे को अपने पास बुलाय लि
याहै हे भक्त प्रधान इह वारता कोई आचर्ज की न
हीं है जोमे संसारमै अपने जनका इस प्रकार सन
कार ताकरूं तोमेरा जगतमै दीनबंधुनाम जो है
सो कौन गायन करेगा और तुम तो हे बडीके पास

170

५५

रामानुज सखा लायक और सखा गुण सामर्थ्य हो मैंने तुमको अपनी कृपासे जगतमें सुखी और सु खीका नायक स्थापन करदिया है १५। चौपाई। सु नि असदीन याल कर बानी। रामानुज अमोद सु खमानी। देन प्रदच्छण मन अनुरागा। बार बार पद वंदन लागा। बहुरि भवन भक्तन सुखदाई। सहं मूरति कर दरसन पाई। लै अमोद सादिर सु खछाये। बैठेगरुड भवन इनआये। तहं आवत

॥ वैस्नव गण संगा। कथा प्रलाप करत अग भंगा।
भ॰ पुनि रामानुजगिरा प्रलाई। सुनहु संत वैस्नव स
१२१ मुदाई। जहिकहं जस सामर्थ रहाना। इह मनरंग
121 नाथ भगवाना। वैस्नव प्रवर सर्वसुखदाई। निज नि
ज करहु स्थापन भाई। इहि मे करहिं न साहस जोई।
पावहिं दंड वेद विधि सोई। गिरा सत्य सठ कोप ब
खानी। नव एनी चारज जिय जानी। हमरे वेस को
ऊडक होई। जनि वर भनहिं नाम सब कोई। सो

वैस्नव मत करन उदंडा । करहिं प्रीति कलिधरम घु
वेंडा । निज आज्ञा अवसर सुभवानी । पुनि आज्ञन
अस विदन वखानी । कछुक दिवस वीते इत आई ।
एक अनन्य भक्त जडराई । दोहा । कहि कहि तिन
जन वचन मृदु मधुर प्रबोध सुनाय । करहिं सुखी
सब जगन कहं वैस्नव मत प्रकटाय । १९ । कादी-
नव ऐसे दीनवंधु भगवान की वानी सुनकर ग
माउजजी परम हरष और सुख को प्रापत होने

श्री
भ०
१७२

172

भये और भक्ती प्रीतीसे प्रदक्षणा देकर वार वार
देइ प्रणाम करते भये तिसके उपरांत भवनमे भग
वानकी महा मूरती का दरसन पायकर और ना
हांसे सन मान पूर्वक प्रसाद लेकर फिर आनंद से
गरुड भवन मे आय बैठे तहां सब वैस्नव जनों के
बीच विराजे हूये सुंदर कथा अलाप जो है सो कर
तेरहे फिर रामानुज कहने लगे कि हे वैस्नव संत
जनो मेरा वचन सुनो कि जिसको जितनी सामर्थ

हो इह सरब सुखदायक रंगनाथ भगवानका इह
वैष्णव मत जो है सो अपने अपने सब कोई स्थापन
करे इसमैं जो कोई किसी प्रकारका विघन करेगा
सो वेदकी आज्ञा अनुसार महां डाव और दंडपावेगा
ऐसे मन करके सठकोप जो थे सो इस धरमके स्था
पित करने को सामर्थ रामानुजजी को ही जणाव
ते भये तब सरना चारी जी हृदयमै जान गये और
कहने लगे कि हमारे वंसमै कोई एक ऐसा होगा

श्री
भ०
१७३
173

कि जिसका जतीवर करके नाम प्रसिद्ध होगा सो
ई वैस्नव धरम को प्रकाश करके कली कालके अ
धरम का जगत मै नाश कर देवेगा और गुरू जामु
नाचारी जी भी परमधाम को जानेके समय प्रकट
करके कहि गयेहैं कि कछुकदिनोके बतीत होने
के पीछे एक हंस भगवानका इष्टभक्त ईहां आवे
गा सो वडे हितके कोमल और सुखदायक वचनो
से प्रबोधकर करके जगत के जीवों को आनंद देवे

गा और वैस्नव धरम को भली प्रकार उदय करेगा।
२९। चौपाई। सो रामानुज नाम ह्वे उदारे। उदय करन
वैस्नव मनवारे। जानि पति सुनन गूढ़ श्रम बानी।
परे चरन सुरन सुख मानी। भने नाथ महिमा बरनो
री। किमि कहि सकहिं अलप मति मोरी। श्रमकरि
उठे जनन सुखदाऊ। देखन लगे त्रिकाल प्रभाऊ।
तिन कहे विविध धर्म मन रागे। रंगनगर कलनि
वसन लागे। मानीस विरह बरद डाखे जेता। ३०

भ॰ २४

174

सन रंग मिश्रो सबनैना। जापैं साउहल करि दा
या। हगन हष्टि रामानुज पाया। होत कनार्थ मे
हानितेहू। निवसे जाय हम्स कल गेहू। रामानुज
प्रभाव गत पारा। को सामर्थ कथन संसारा। को
वीने जब भक्त प्रधाना। लागे करन रंग प्रस्थाना।
वेगबुलाय वैस्नव चारी। ले इकांत प्रसगिरा उचा
री। तमहूं सैल हरन ढिगजाई। नहा मोरझाफि
या सनभाई। गोविंदनाम भनत सबकोई। वैस्नव

मत निंदक जगसोई । नासु करत वैस्नव इहि का
ला । सैलपर्न पर बुद्धि बिसाला । आये काल हरि
पुरकाही । तातेँ नमइ जाय कुन नाही । पाय ह
रोत मरम सब नासा । आवहु रंगनगर मम पा
सा । तिनहिं बदन सुम सासन बरनी । आये आप
रंग प्रभु सरनी । कछुक काल महंते व्रतधारी ।
आय रंगपुर वैस्नव चारी । दोहा । रामानुज पर
वेदिकै जोरि करत गतिहीन । एष्यक एष्यक सा

रि वदन मरम कथन सवकीन । ९ । टीका ।
सनेचारीजी कहते हैं कि सो रामानुज नमसे ही उदा
र बडी हो श्रौर जगतमै वैस्नव मतके प्रकाश कर
ने वाले हो इस प्रकार रामानुज सरनाचारी जी की
वडी गूढ बानी सुनकर परम सुख मान करके स
रन जीके चरनो पर सीस नावते भये श्रौर कहने
लगे कि हे दीन याल श्रापकी महिमा जो है सो व
डी श्रगाध है तिसके जानवे को मेरी नछ बडी क

सु॰
सं॰
१२५
125

हो सामर्थहो सकती है ऐसे कहि करके रामानुज
जी उठे और त्रिकाल भक्त जीका प्रभाव जाय कर
के देखने लगे नहां तिनकी अनेक प्रकार शला
घा वडाई करके फिर भगवानको समरने हुये रं
गक्षरमै वासकरने लगे तिनके हृदयमै वरदराज
भगवानकी विरहका जितना दुखकले शथा सो
रंगनाथ महाराजजी का दरसन करने करने स
व मिट गया और परम उदार रामानुजजी तिन प

र प्रसन्न होकर अपने नेत्रोंकी कृपा दृष्टी पावने
सो जगतमैं कृतार्थ रूप होयकर भगवानके पर
मधाममैं जाय प्राप्त होते भये ऐसे रामानुज जी
का परम प्रभाव जोहै सो कथन नही किया जाता
और जबसो रामानुज जी कांची से रंग नगर को
चलने लगे थे तब चार वैस्नव जनोंको बुलाय क
रके इकांत समुझायदिया कि तुम सैल पूरन जी
के पास जावो और तहां मेरी मामीका पुत्र आता

170

गोविंदा चारी नामक वैस्नव मनका द्रोही और निंद
क जो है सो तिसको डुडीके धाममैसे छपन जो सब
वैस्नव बनाय कर काल हस्ती पुरको चले आये हैं
तम इस वारताका भली प्रकार सब भेद ले करके
फिर शीघ्र ही रंगपुरमैं मेरेपास चले आवो इस
प्रकार तिनको आज्ञा देकर फिर आप रंगनाथ
भगवान की शरणको चले आये तब कुछक का
ल वतीत होनेके पीछे सो चारो वैस्नव जो सैल स

श्री
भ०
१७७

रन जीके पास गये थे रंग पुरमै आय गये नव नि
नोने रामानुज जीके चरनो पर सीस नाय करके न
होका वृतांत जो था स प्रकट करके सव सुनाय दि
या । १९ । चौपाई । हम जब काल हस्तिपुर त्यागी ।
आये सैल पुर्न सेरा लागी । उगर नआगा देखि मन भा
वन । लगे वैठि नहे शिषन पढावन । आवानहो भ
रन जलहेतु । चटा गाहिन गोविंद मति सेतु । भरि घ
ट चलो भवन जब वारी । सैल पुर्नेनवगिरा उचारी ।

लैचट गवन हरि जल जोई। तोकर कहहु कवन
फल होई। गोविंद मनन उत्रनहिं दीना। सोविन
गवन भवन निजकीना। आवा वहुरि भरन जल
नाहीं। मैलहनै नव मारगमाहीं। हावि मलोक
कल कागद लेखी। यहो डगर हग गोविंद देखी॰
लीन उठाय चकिन वहुंचाहीं। चितवन जानिपर
न कछुनाहीं। देखे मैल हनि नहिंठामा। तिनकर
निकट जाय मतिधामा। हरषत वदन वचन अस

रा॰
भे॰
१८८

178

भाषा। को इह पद डारि मगराखो। याको अर्थ प्र
कट मोहि संगा। करइ कथन मानस भ्रम भंगा। दो
हा। भन्यो मैल हरन वदन अर्थ अनेक प्रकार। औ
र इहे शास्त्र पुराण वहु दिये प्रमाण अपार। ८८। टी
का। फिर वे चारो वैस्नव कहने लगे कि जव हमका
ल हली पुर त्याग करके मैल हरन जीके साथो
साथ चले आये तव रसने मे एक निरमल तलाउ
देखकर तहां मैलहरन जी वैठ गये और शिक्षो

६२

को पढावने लग पडे इतने मै नहो गोविंदाचारी
भी घडालिये हूये जल भरनेके वास्ते आयगये सो
जब तलाउ मे जलका घडाभर कर घरको चले त
ब सैल खरन जीने कहा किहो गोविंद तुम इह ज
लका घडा जोभर करके लेचलेहो कहो इसका क्या
फल होगा गोविंदने सुनकर उत्तर नहीं दिया पर
न्तु इसी वारताका सोचकरता हूआ घरको चला
गया थोडी देरके पीछे फिर जल भरने को नहो

२१
भं०
१८५

179

बला आया तब मैल मरनजीने एक शलोक काग
द परलि खकरके तिसके आवने वाले रसतेमे रख
दिया हूआर्थ सो गोविंद आवताही तिस शलोक को
देख कर उठाय लेताभया और आचर्ज के वशहो
कर इधर उधर चारो पासे देखने लगा कुछ भी स
मझमे नही आया तब कुछ हरीपर नहो मैल म
रन जी को देखकर और तिनके पास जाय कर ब
डे हरखसे कहने लगा कि नाथ इह पत्र अर्पणात

का गद रमने मै किसने गाखा हुग्रा था ग्रब ग्राप

कृपा करके हृदयके भ्रमको हर कर नेवाला इस

का ग्रर्थ जोहै सो मेरे को प्रकट करके कहिये ग्रैसे

गोविंदका वचन सुनकर मैल हरन जीने तिस श

लोकका ग्रर्थ शास्त्रके बहुत प्रमाण देदेकर ग्रनेक

प्रकार से कथनकिया । ८ । चौपाई । करन जान गो

विंद सब खेडा । छयो पर स्पर वाद प्रचंडा । भयो

ग्रत्त कठिन मनि सोई । गोविंद कथित चकितचि

रा० भं० १८०

नहोई। अनिअस कथन वैस्नव काना। सैल अनेक
हैं धन्य वखाना। रामानुज तहं संतन संगा। भने अ
माण अनेक प्रसंगा। तिन वैस्नव जनसों अनुरागे।
वहुरि वदन अस पुछन लागे। अव गोविंदकी कह
हु सुनाई। रंगोथिरकी गयो पलाई। गुरु मुखे स
नत वैस्नव वानी। वोले परम मोद सरवमानी। त
हितें जव न उत्र प्रभु भरयो। तव निज ध्यान ध्यान
कहुं करयो। सैल अनें विकट गिरि आये। दिवस

तीसरे बहुरि सिधाये। जोरि नृप शिष कानन वाह-
सहस गौन कलअर्थे उदाहू। लागे मंजन प्रीति पद-
वन। मेटति सकल अनर्थ मिटावन। नहो प्रसन्न ले
नहिन वनमहू। गोविंद आय मोद भरि मन महू। व
छिपा टलि नरवर अनुरागे। हूंदन सुमन सु गोविं
द लागे। नव वनरण्य कलगीन सुहावा। निकस्यो
रह प्रसंग मन भावा। दोहा। छीरसुता पति नाभि
निज कण्ठ्रा कमल कलपक। नाहिने विधि उपज

न विविध विरच्यो विस्व ववेक । ए । टीका । नव गो
विंद जो है सो तिनके कथन को खंडिन करना जाता
है इस प्रकार तिनका परस्पर वहुतही संवाद विवा
द भया औ तिनको गोविंद की वुद्धीय कतहोय गई औ
र आचर्ज होय करके वोलने से रहित होगया ऐसे आ
स्चार्य को स्रवन कर संपूर्ण वैस्नव सैल स्रवन जी को
धन्य धन्य कहने लगे नव रामानुज जी संत समाज
के वीच वैठे हूये जो अनेक ग्यान चरचा कर रहे थे

श्री
भ॰
१८८

(१४)

६६

तिन वैस्नवों को फिर पूछने लगे कि भाई गोविंद
की इह तो सुनावो तहां ही थिर रहा था कि भाग
गया था ऐसे गुरु के मुख से वचन सुनकर सो वै
स्नव बड़ा हरष और सुख मान कर कहने लगे कि
हे भगवन जब तिस से कुछ उत्तर नहीं सरा तब
तहां से लज्जित भया हुआ उठकर कहीं को चला
गया था और सैल पूरन जी विकट गिरी में आय
कर फिर तीसरे दिन के पीछे शिष्य समाज जोड

श्री
भा.
१८२

182

करके वनके बीच चले गये और तहां जगनके म
व अनर्थों को मिटावने वाला सहस्रगीतका अर्थ जो
है सो तिनको श्रीनी एवंक पढावने लगे तब एक
दिन तहां वनमें कोई गोविंद फूललेनेके वास्ते आ
चलाआया तो पाटली नामा वृक्षके ऊपर चढ कर
सुंदर पुष्प जोहैं सो चुगनेलगा तब सैल एवन जी
जो अपने शिष्यों को सहस्रगीत पढाय रहेथे त
हां चौथे गीत मै बडा सुंदर मनको भावने वाला

इह प्रसंग निकला कि क्षीर सागर जो लक्ष्मी तिस के पती जो भगवान सो अपनी सुंदर नाभी में एक मनोहर कमल उतपन्न करते भये तिसते ब्रह्मा उपज कर नाना प्रकारकी सृष्टी को रचदेता भया १९ । चौपाई । तोते सरबवि सुकर कारन । नारा यण दुख दीन निवारन । श्रुति पुराण सब विदत सुनाये । सरबे स्वर भगवान सु हाये । जेतर कार हि भक्तिसर साई । नारायण प्रसन्नसिव काई ।

रा॰
भ॰
१८३

183

हरिहिं शिव मनित पुष्प चढावै । सो अनन्त फल
सो सहज निपावै । अस प्रसंग जब श्रवणन लयऊ । सो
बखान जब गोविंद भयऊ । विश्वनाथ नारायण
देवा । शिव विधि चरन रेनु जाहि सेवा । सोजे सो ऊ
चरनर जनासा । सै इंद्रादिनि जगदीस हुलासा ।
सुमरि रिदीन डार सो चनका ही । हो इंद्रपार भवसि
धु अथाही । अस विचार निज मानस ल्याई । नहलै
उतरि चरन अन गाई । जाहि जाहि सावरटन नहो

ही। परो मैल हरन पदमा ही। बढ़ति वदन श्रम गिरा उचारी। दीननाथ मोहि शरण तिहारी। नि जजननाई कुमति वशफूली। अब लग रह्यो तृष्णा भ्रम भूली। दोहा। वेचरीक त्रुनरी नमे हरिपद प दम पराग। नजन नीच कुलकीट बन रह्यो अथम हन लाग। २। टीका। नानें दीन जनोके उख ह रनेवाले भगवान जो हैं सोई सरव हष्टी के कार न अर्थात मूलहैं श्रुति पुराण भी प्रकट करके क

श्री
भं:
१८४

184

श्यन करते हैं कि यही भगवान सब के ईश्वर स्वामी
और यही सबजगतके आधारहैं जो प्राणि भक्ती प्री
तीसे निसकपट होकरके भगवान कृपा निधानकी
प्रर्थना करके सिवकाई करेगा अर्थात निज भगवान
को प्रेम बढ़ावता रहेगा सो संसार मे अनन्त ही फ
लको प्राप्त करेगा कि जिसका कोई अन्त नहीं है ज
ब गोविंद ने इस प्रकार का प्रसंग कानो मे सुना
तो ततकाल सावधान होय कर अज्ञान निद्रासे जा

ग उदनाभया श्रोर हृदय मे विचार करने लगा
कि जिस विश्वके नाथ श्रमानमाके चरनकमलों
की धूडी को शिव ब्रह्मादि देवता जो हैं सो सेवन
करते हैं मेभी तिमदीनोके दुख हरकरने वाले भ
गवान भक्त सावधान के चरनो की धूडी को भक्ती
श्रीनीमे सीस पर धारन करके श्रद्धवित होकर ति
नका भजन श्रोर् समरण करूं तो मेरेको इस संसा
र के सरो समुद्रसे पार होनेको कोई विलंब नहीं

३१
भं॰
१८५

185

है अर्थात सहजे ही तर जाऊंगा अैसा विचारकरके
तिस हस्तसे कि जिसपर चढा हुआ था तब्त नीचे
उतर आया और त्राहि त्राहि कहता हुआ धाय करके
मैल हरन जीके चरनो परगिर पडता भया और फि
र उठकर और हाथ जोड कर बिनती करने लगा
कि हे दीना नाथ मै तमारे चरनो की शरन को प्रा
प्त भयाहूं अब मेरेको दीन जान कर राखली जि
ये क्यों कि मै अपनी जडता और कुमती के वश

भया हूआ अब लग हयाहीं भ्रम के महां जालमैं
फसा रहाहूं हेहीन याल मैं जनम भ्रमरेकी रीती मे
के
हूका हूआ भगवान चरन कमलों की परागा अर्था
न धूडीको त्यागकर नीच कुलके कीट अर्थात भं
डे वन अनमे अथम करम जो है तिसमैं लागरहा
हूं । २१ । चौपाई । प्रभुपद पदम प्रेमनहिं कीना ।
यानें अवलों होर नलीना । रहो भ्रमन भटकन ज
गमाहीं । बिनु हरि मरन सपन सुख नाहीं । बार

रा॰
सं॰
१८७

बार ग्रस मनन गोविंद । नजन नमैल छने पवहे
हू । हरिपद प्रेम पेखि ग्रस नासा । मैलछने मन
मोद प्रकासा । गहिन करन डन गोविंदकाही ।
लिये डठाय लाय डर माही । कारि प्रीति पूर्वक र
जग्रेगा । बोले वचन भीन भ्रम भेगा । बीनिगयो
ग्रवसर जोरे हाथा । ग्रव नकरिय नोकर कछुगा
था । ग्राग लसावधान चितहोई । कपट द्वेष डुर
मति सब खोई । करि हरि पद पंक जवि स्वामा॰

नवहू उदधिभव विगत अज्ञासा। गोविंद सिवा स
नन हितकारी। भयो निम गण मोदनिधवारी। सै
ल षर्नं कहे गुरु सम जानी। वार वार वंदिन पग
पानी। भयो भक्त वैस्नव ब्रत धारी। लियो सुजस
सुख संपति भारी। सुनत खबर पुर कर नर वेना।
गोविंद वैस्नव बन्यो महंता। सबै सु जाति नाति
सतुदाई। नहि पै आय सकल अनुराई। दोहा। सै
लषर्नं कहे प्रथम श्रम करहु कुमति सब जाय।

२१
भ॰
१८७

तमजानत नीके लख्यो जाइ तेउ वनाय । २१ । टीका॰
फिर गोविंद कहता है कि मैंने जो नारायण के चरनो
मे प्रेम नही किया ई सीतें अव तक कही ठौर नही
पाया संसार मै ह्यां ही भ्रमता और भटकता रहा है
भगवानकी शरण लेने के विना सव जो है सो सप
ने मै भी नही देख पडता इस प्रकार वार वार उ
चारण करके गोविंद सैल हरन जी के चरनो को
नही त्यागता भया तव सैल हरन जी जिसका भग

वान के चरनोमै प्रेमनेम देख करके हृदयमै बडा आनंद और सुख मानते भये तरन ही हाथोंमे पक डकर चरनोपर से उठाय करके हृदय मै लगाय लेते भये और प्रीती पूर्वक अंगोंकी सब धूडी का डकर भ्रम औ भयके हरकरने वाला वचन जो है सो कहने लगे कि हे भक्त अब जो समय हाथ से निकल गया तिसकी क्या चरचा चलावनी है आ गेको कपट छल और डरमनी को त्यागकरके

सावधान होजावो और भगवान कृपा निधान के च
रन कमलों मै दृढ विश्वास करो फिर तुमको इह
संसार समुद्र का तरना जोहै सो विना जतनके ही स
हज होजावेगा ऐसे सैलछबन जीके मुखसे वाणी
सुनकर गोविंद आनंद रूपी सरोवर मै मगन होजा
ता भया तब सैलछबन जी को गुरु समान जानक
र वार वार वंदना करने लगा और तिनकी कृपासे
परम व्रतधारी वैश्नव बनकर संसारमै सुख औ

र सजसका पात्र होजाता भया तब इह खबर नगा
र के सब लोगों मे फैलगई कि गोविंद ने वैस्नव ध
रम ग्रहण कर लियाहै जिसके सले संबंधी जाती
नाती जोथे सो सब मिलकरके मैल हरन जीके पा
स चले आये और कठोर बानीसे कहने लगे कि
हमने भली प्रकार जानलियाहै जो तुम कछ्जा
ह जंतर बनाय जानतेहो । १२। चौपाई । गोविंद
सीस का हतुम डारा । भयो तोर निज तोर बिसा

११
मं:
१८५

189

रा। कौनमंत्र तुमनाम पढायो। जहितें कुमतिनव
न बौरायो। मैलघुतें हमिवचन सुलावा। हम नाहि
न कछु नाम पढावा। इहिलेइ तव मनसुख दाहा।
हम इहि दीन सिखावन काहा। कुमति सुनत सम
वचन रिसाने। गोविंद पुकारि लीन इनजाने। सु
यम कठोर कहत मुखवानी। अरेनोर मतिभई बौ
रानी। यामन कवननोर संजोगा। चलइ भवननि
दरत सवलोगा। अपनो परम भलो जगभाई। की

२५

जै सोऊ कहविर सावेहाई । यह भाषन छलछंद बनाये । भूलिय नाकाहूके भुलाये । नव गोविंद अनघ हुगल्याई । खोलि वदन अमगिरा अलाई । जोलो तुमरे संग अगारा । रहन रह्यो संसर्ग हमारा । नवलो नव सासन नमहोई । धारनरहे सीसनिज सोई । दोहा । जवनै हम नमकेह न ज्यो सज्जन हिन चिन खोय । नवनै नम नम हमहि हम अव संवेय नकोय । २२ । टीका । फिर सो इहकहने ल

श्री
भा॰
१९॰

190

गे कि सत्य कहो तुमने गोविंद के सीस कया डार
दिया है इह तो अपने गौर को विसार कर बौरासा
होगया इसको तुमने कौन ऐसा मंत्र पढायाहै मंत्र
पढीवाला पढनेही बावला होकर तुमाराही बन
गयाहै ऐसे तिनका कथन सुनकर सेल सुवन जी
हस करके कहने लगे कि भाई हमने तो इस को
कछु नही पढायाहै अबी इह तुमारे मन भावै है
इसको पूछ लेवो कि हमने क्या सिखायाहै इस

प्रकार सुनकरके तिन दुष्ट बुद्धीवालों ने कोपसे
जायकर गोविंदको पकड लिया और कहने लगे
कि अरे तेरेको क्या भया है क्यों बावला बनगया
इसके साथ तेरा क्या संजोगहै मूरख अपने घरको
चल लोगनिंदा करतेहैं हे भाई जगतमें अपनाही
धरम भलोहै इह साधू जोहै सो छल छेद दिखाय
करके भरमायलेनाहै किसके भुलाये कबी नाभ्
लिये ऐसे तिन संबंधियोंके बचन सुनकर गोविं

२१
भे.
१५१

द नेत्रोंमें क्रोधभर कर कहने लगा कि सुनो भाई
जब लग घरमें तुमारे साथ हमारा हित संबंध बना
हुआथा तब लग तुमारी जो आज्ञा होती रही हमसी
स पर धारते रहे और जबतें चित सें तुमारा त्याग
करदिया है तब तें तुम तुम हो और हम हमहैं अब
संबंधका कुछ पयोजनहीं नहीं रहा । २२ । चौपाई॥
उग्र वचन सुनियादव सारे । बैठे लजित मौन मन
मारे । तब गोविंद सुमरत भगवाना । मैल छूटे छि

गकिये पयाना । भयोग्रनन्यदास हरिकेरा । कृष्ण
बरन उरकिये बसेरा । नव वैस्नवद्रोहिन कहे वा
नी । संकर स्वपन दीन इहिभानी । सुनहुमंद जड
जानि अबोधी । नास्तिक वैस्नव धरम बिरोधी । कृ
ष्ण दास गोविंद प्रवीना । प्रथम नाम नव नाउन
कीना । वैस्नव मन नैं प्रेरन लागे । कहि कहि नि
ज अज्ञान अभागे । जोचाहो अब भूरि भलाई । तो
नकर ह नहि मनबरयाई । वैस्नव निरन ज्ञानवि

ज्ञाना। इहप्रनन्य सेवक भगवाना। हरिद्रोही प्र
स स्वपन निहारी। सैलछ्नें कहे विपुल उचारी।
गोविंदनें सवहोन निरासा। कोन्योनि जनिज गवन
प्रवासा। सैल छ्नें वेंकट गिरि आये। गोविंदकहें
निज संगलिवाये। नहिथलमेंन समाज सजाई। पा
वड़ सेसकार करवाई। वैस्नव शास्त्रविमल मन
भाये। गोविंदकहें सव दीन पठाये। दोहा। सो प्र
व सेवन चरन गह सैल छ्नें सावटाई। तिवसन

स्व॰
स॰
११२

११२

गिरि बंकट रुचिर भक्ति प्रेम सर साई। २३। टीका॰
इस प्रकार गोविंद के वडे उग्र वचन सुन कर सव
बांधवजन लज्जा वाले और मौन हो करके मन
मारे हुये न्यारे जाय बैठे तव गोविंद तहांसे उठक
र भगवानका स्मरण करताहुआ सैलपवन जीके
पास चला आया और भक्ती श्रीनीवाला होय कर
के श्रुत भगवान के चरन कमलों को हृदयमै व
साय लेता भया तव तहां वैस्नव द्रोही लोग जोपे

११
भ·
१५३

193

तिन सबको रात्रीके समय शंकर भगवान ऐसा स्व
पन देते भये कि हो मेर जड मानी बुद्धीकेहीन ना
स्तिक और वैस्नव धरमके विरोधी दुष्ट जनो तुम कृ
स्न अभमानमाके प्यारे भक्त गोविंदको ताडना कर
के सरब सुखदायक वैस्नव धरम जो है तिससे नि
वारने लगे और प्रथम अपनी जडता और अज्ञान
सुनावने लगे अरे दुष्ट जनो तुमको धिगहै अब
मेर जो अपना भला चहनेहो तो हमनें आगे गोविं

५५

द को कछु बुराभला मत कहना क्यों कि इह भग
वान का हद्ध भक्त ज्ञान विज्ञानके जानने वाला
वैस्नव धरममैं प्रवीन है इस प्रकार सोहरी द्रोही
अर्थात भगवान से विमुख रात्रीके समय स्वपन
देख करके आचर्ज होयगये और सैल खरन जी
की धन्यधन्य शलाघा करके गोविंदसे विदाय भ
ये हूये अपने अपने घरोंको चले जाने भये तब मैं
लखन जीभी गोविंद को साथलिये हूये अंकटगि

श्री
स॰
१५४

री को चले आये तहां सब संत समाज जोडकर पांचो
नमसकार जोहें सो कर वायदिये तिसतें उपरांत वडे
उत्तम वैस्नव शाह जोहैं सो प्रीती पूर्वक गोविंदको
सब पठाय दिये सो सब गुरु सैलपने जी के चरनो
को सेवना हुआ और स्वरूपमै मगन भया हुआ भ
क्ती प्रेमको अधिक किये हुये बंकटगिरी मैनि
वास करता है । २३ । चौपाई । इह ब्रतान्त जनि नाथ
उदारा । हम तिन कर सबकियो उचारा । गोविंद

194

७५

कर श्रम सकल प्रसंगा। भे जनिपनि पुलकावलि
अंगा। पुनि सनमान बैस्रवन कीना। भलो सुजुप
म हरष मोहि दीना। पुनि रामानुज प्रीति समेता।
सब संगन कहं गवन न केता। सानु कूल कहि दी
न बिदाये। उठे आपु सुमरत नहुराये। गवने रंग
भवन हरषाई। प्रभुपद बार बार सिरनाई। जो
रि जुगल कर विनय उचारी। दीन नाथ प्रणतार
न हारी। नवस्रुपाद संनन रखवारे। जगत वि

७४

३१
भ॰
१९५

195

खोट बिनामनहारे। जोनहोत प्रभुसम मेमारा।
तोसेतन करहु कौन आधारा। केवल नमहु देवकी
छैया। संतन की सुधिमहारबैया। हरिहिं नम्र स
सविनय सुनायो। निजनकेत रामानुजआयो। स
मय एक मानस सुख छाये। ग्रह एनीचावज गरुड़
आये। करि दरसन एरिन अनुरागा। किये बेदिप
हविनय सुभागा। ग्रह जामुन दरसन सुखदैना।
भयो नदीन याल इननैना। तोनेमै पोकारन भा

री। शोक जनन भगवन उख भारी। मिटिगो न-
वटर मननैं मोरा। मै अनन्य सेवकपदनोरा। जा
नि कृपाल मोहि हृछदासा। करिय रुचिर उपदेस
प्रकासा। सुनि रामानुजगिरा सुहाई। बोलेमहे
सने हरषाई। जुगल वरन मेनर् विन वोरा। जा
न इ सकल मेउसिर्मोरा। इहजांके उरहोहिं प्र
कासा। कारक कोटि जनम अगनासा। दोहा।
भुक्तिमुक्ति प्रद सुखदजग वारि वरन महं कोय।

२१
भ॰
१९८

सेवत संसारारनव पारसगम लहिसोय ।२४।
टीका। वैस्नव कहनेलगे किहे गुरू महाराज जी
इह ब्रतांत तिनका हमने आपके आगे सब कथ
न करदियाहै तब ऐसे गोविंदका ब्रतान्त सुनक
र रामानुज जी सब्ब मानकर अंग अंग प्रफुलत
होजाते भये तिन वैस्नवों का बड़ा सतकार कर
के कहने लगे कि भाई तुमने तो मेरेको अनुपम
हरष उपजाया है कि जिसकी कोई उपमा ही न

196

हो तिसतैं उपरान्त रामानुज जी वडी प्रीती मनमा
नसे सब संतजनोंको अपने अपने आश्रम को जा
नेकी विदाय देकर आप जडुनाथ जीका स्मर्ण क
रते हूये आनंदसे रंगनाथ भगवान के भवन मैं
चले आये तहां भगवानके चरनो पर वार वार सी
सनाय कर और दोनो हाथजो डकर विनती कर
नेलगे कि हे भक्तजनोंका भय हर करने वाले
दीना नाथ तमकैसेहो कि संतभक्तों की मजादा

जो है तिनकी रक्षा करने वाले और जगत के उ
द्रव विवादों का नाश करने हारे हो हे भगवान
जो कभी कोई आपके समान संसार मे नाहोता तो
संत जनो का कौन आधार था इन संतो की मर्यादा
रखने को हे देवकी नंदन केवल तुमही सामर्थ हो
इस प्रकार भगवान के आगे नम्र अर्थात दीन व
नविनती करके रामानुज जी अपने घरको चले
आये तब एक समय हरष करके प्रवीन भये हुये

गुरु हस्तोचारी जी के घरमै चले आये तहां तिनका
दरसन करके और चरनोपर सीस धरके विनती
करने लगे कि हे भगवन गुरु यामुनाचारी जीका
परम सुखदायक दरसन जो मेरे इन नेत्रो मै नहीं
भया तिसतैं मै शोककरकें परम दुखी होरहाथा
सो तिस शोकसे उतपन्न भया हुआ मेरा दुख जो
था सो [illegible] आपके दरसन करने नैं सबमिट गया है
और मै दीनानाथ मन वचन काया करके आप

रा
भा०
१९८

198

का सेवक हूं हे कृपा निधान मेरे को अपना हढदास
जानकर अब सुंदर सुखके देने वाला कुछ उपदेश
करिये ऐसे रामानुज की कोमल बानी सुनकर महा
हरन जी आनंद मे मगन भये हूये कहने लगे कि
जुगल वरण अर्थात दो अक्षरा मंत्र जो है सो संपूर्ण
मंत्रों मे प्रधान है इह जिसके हृदयमे प्रकाशाकर
ताहै तिसके कोटि जनमके पाप जोहैं सो सबनष्ट
होजातेहैं फिर कैसाहै कि चारो वरनोमे जो कोई

सेवन करै तिन सबको भुक्ती मुक्तीके देने वाला
और संसार समुद्र से सहजे ही पार उतारनेवा ला
है। २४। चौपाई। वेद मूल मंगल मतु मारक। ज
नन दोख दुख हरन निवारक। तसैं देत हम जनि
वरलीजै। सावधान श्रवन रस पीजै। श्रम कहि श्र
मरमेव सुख दाई। दीन्यो जनि पनि श्रवण सुना
ई। व्यायनन गीतादि सुहा वन। ग्रंथ ग्रन्थ मानस
सुख छावन। बाम सत वेदांते चाहू। पंच रात्र

श्री
भ०
१५५

१९९

आदिक गुनि साहू । मंजन प्रीति रीति मन भावा ।
कियो विमल उपदेस सुहावा । बहुरि तनय निज क
र सिष कीन्यो । पुंडरि काख नाम जहि थीन्यो । पुनि
भाष्यो सरन हरषाई । श्रव जति पति गोष्ठी पुरजा
ई । तहां अनन्य भक्त जडुराये । गोष्ठी सरन स्वामि सु
हाये । महोदधि इरव तिनतैं भ्रम छेदा । शास्त्रार्थ सु
नि लेइ उदेसा । रामानुज गुरु सासन पाई । किये ग
वन गोष्ठी पुर आई । बैठे जहां सुखासन स्वामी । बा

५५

र वार करि नेत्र निमामी । दोहा । जगकर जीवन
दीनवन विनय वदन अमकीन । दीजै मोहि मंत्रा
थी प्रभु निज सेवक हृदचीन । २५ । टीका । फिर र
ह कैसा मंत्र है कि वेदका मूल है और सव डुखदा
रि है और पापोंके हर करने वाला तारक मंत्र शिउ
है हे जगीवर इह तुमको हमदेनेहैं तुम सावधा
न होय करके इस अमृतरसको पान करलेवो अ
थान इस मंत्रको ग्रहणाकर लेवो ऐसे कहि कर

२१
भ०
२०

200

के बडी प्रीती और हितसे सो अमर मंत्र जतीवरजी
के कान मे सुनायदिया फिर गीता न्याय व्यास सूत्र
वेदान्त पंचरात्र इत्यादि सब ग्रंथ अर्थके सहित भली
प्रकार पढाय दिये और जो उपदेश करना योग्य
था सो सब करदिया तिसके उपरांत हस्तनाचारी जी
ने अपने पुत्र पुंडरीकाक्ष नामाको साथ करके रा
मानुज जीका शिष्य बनाया और फिर प्रीति पूर्वं
क कहने लगे कि हे रामानुज अब तुम मेरा वचन

मान कर गोष्ठी पुरको चले जावो जहां कृष्ण भग
वान के इष्ट भक्त और सर्व गुणनिधान परम वि
द्वान गोष्ठी पूर्ण स्वामी जो हैं तिनका दरसन मेला
करो और तिनसे हृदयके संशय भ्रम हरकरने वा
ला शास्त्रार्थ स्रवन करके संसार मे अभय होजावो इ
स प्रकार गुरु जीकी आज्ञा पाय करके रामानुज
जी भगवानका स्मर्ण करते हुये गोष्ठ पुरमे चले
आवते भये और जहां अपने अस्थान पर गोष्ठी पू

रनजी बिराजे हुयेथे तहां आयकर और अपना नाम
सुनाय कर बार बार दंड प्रणाम करने भये फिर दो
नो हाथ जोडकर बडेदीन होय करके बिनती करने
लगे किहे दीना नाथमै आपके घरका सेवक अब
आपके चरनो की शरन आय पडाहूं मेरेको कृपा
करके मेत्रार्थ जोहे सोदीजिये और शास्त्रार्थका बो
ध भीकी जिये। ४५। चौपाई। मुनिगोष्ठी श्रवन अम
बानी। लग्योबिचार करनबिज्ञानी। याको अब अ

२१ भ० २०१

20

८६

षिकार नकोऊ। प्रस गुनि रहो मौनवन होऊ। न
व रामानुज करन विचारा। फिरिआये निजहविर
प्रगारा। वीनेकछुक दिवस तर वरनहं। भाउन स
व भ्रति रंग नगर महं। नव गोष्ठी हरन सुख छाये॰
इनसव लखन रंग पुरआये। दरसन हित मानस प्र
नुरागे। आयेरंग भवन वडभागे। नव प्रसन्न हरव
क प्रसवानी। भने वदन हजक हित सानी। रंगना
थ प्रभु सासन पहू। रामानुज कहे सावद सनेहू।

श्री
भ०
२०२

७०२

उपदेसिये मंत्रार्थ प्रकारू। जानिभक्त सज्जन हित
कारू। नव गोष्ठी धरन प्रसभाष्यो। पृथमहिं रंग
नाथक हिराख्यो। अधिकारी याको है जोई। विनश्री
लालईहैं लखि सोई। तातेजानि प्रेमभव अवहूं। की
जैइहि मंत्रार्थ नकवहूं। प्रभुमास नकै से करि कीजै।
विनकी जे कम प्रभुहिं पतीजै। नव षजक हरि साम
नपाये। गोष्ठि नाथ सों वचन प्रलाये। रामानुज सब
गणन प्रवीना। याममं संस्त्रति ज्ञान नवीना। नमसि

यको तजि सकल संदेह। देहु रुचिर मंत्रारथ एह।
दोहा। सुनत सुजकेन कथन अस गोष्टि परे रुचिमा
ति। प्रभुमासन यदि सीसनिज भन्यो वदन मृदुवा
नि। २५। टीका। इस प्रकार रामानुजकी कोमलवा
नी सुनकर गोष्ठी सुरनजी जो ज्ञान विज्ञान मे प्रवीन
थे ह्रदयमे विचार करनेलगे कि इसको अधिकार
नहीं है मैकैसे मंत्र उपदेश करूं ऐसे सोच कर मौ
नही होय रहे कुछ उत्तर नहीं दिया तब रामानुज

रा॰
भ॰
२०३

विचार करके ह्रदयमै निराश भये हूये फिर करके
अपने घरको चले आये जब कुछ दिन बतीत भये
तब रंगन गरमै एक बड़ाभारी उत्सव होना भया
तहां गोष्टी पूरन जी भी तिस उत्सव के देखने को
रंगनगरमै सब सैन समाजके सहित चले आये तब
दरसन करनेके वास्ते सो बड़ भागी गोष्टीनाथ रंग
नाथ भगवानके भवन मै आवते भये तिनको दे
खकर पूजक जनजोहैं सो बड़े प्रसन्न हो करके क

२०३

हने लगे कि हे गोष्टी पूरनजी तुमको भगवान कृपा
निधानकी इह आज्ञा है कि रामानुज को अपने पवि
त्र और सरब सुखदायक मंत्रार्थ जो है सो श्रीती पूर्व
क उपदेसन करो क्यों कि इह भगवानका परम अ
नुरागी भक्त है तब गोष्टी पूरन जी कहने लगे कि इ
समै मेरेको भगवान भक्त सुखदान की प्रथम ही
आज्ञा है कि जो पुरष इस उपदेशका अधिकारी हो
तिसको प्रीताके बिनाही लखकर उपदेश किया

रा॰
भ॰
२०४

जावे तोते इह इसका अधिकारी नहीं है मै इसको क
वी उपदेश नहीं कहूंगा परन्तु अब जो भगवान की
आज्ञाभई है सो कैसे कीजे और विना कीजे भगवा
न को कैसे पती जे तब एजक जन गोष्टीनाथ जीको
फिर कहने लगे कि इह रामानुज जो है सो सरब गु
ण प्रवीन भगवानका दृढ भक्त है इसके समान
और हमरा कोई नहीं है तुम अपने हृदयका संदे
ह त्याग करके इसको मंत्र उपदेसन करो इस प्रका

204

र सुनकौं काकथन सुनकर गोष्ठी सुवन जी वडी प्री तीरुचीमे प्रसन्न होकर और भगवान की आज्ञा सी स पर धार कर जिस प्रकार कहने हैं सो आगे कथ न किया जाताहै । २९ । चौपाई । आवहु रामानुज मम गेहू । मैमंत्रार्थ देहूंतोहि नेहू । अस कहिगोष्ठी सुवन गवने । रामानुज आये नहिभवने । पैमे त्रार्थ दियो नहि तासा । फिरे भवन जनि नाथ निरासा । अस दस अष्ट बार नहि पासा । कियेगव नजतिप

रा॰
भ॰
२०५

205

नि अभिरामा । उपदेसन कीनो कछुनाहीं । सेज्ञारथ
रामानुजकाहीं बारनबस दस पुनि अभिलाखे । गये
भरोसबिपुल जिय राखे । नव गोष्ठीपुरन अनखाई ।
जाइ जाइ कइ गिरा अलाई । सो सुनि जतिपति खाय
गिलानी । फिरे निरास रुदन सुखदानी । भवन जा
न इक सेन निहारी । रामानुज कर दसा उचारी । आ
वारेग नगर कहे सोई । ससभ्रम हृदय सोचबस हो
ई । गोष्ठी पुरन सो उन जाई । सो रामानुज दसा सुनाई

नि गोष्ठी पूरन इव नामा। भयेसि घल नन दया कामा। बोलि एक सेवक मनु भावा। रामानुज पहं वेग पठावा। नहिं इन जाय मोद प्रद बानी। रामानुज कहं वदन बखानी। दोहा। गुरु गोष्ठी पूरन तुमै बो लयो सुमति निधान। कर इच्छा गुनि मधिर हिन अब न धर इबिन आन। २२। गोष्ठी पूरन जी रामानुजको कहने लगे कि हे रामानुज अब तुम मेरे घर मे आवो मै हित पूर्वक तेरेको मंत्र उपदेश कहंगा

टीका

ऐसे कहते हुये गोष्ठी पूरनजी अपने घरको चले
गये और ईहां रामानुज भी अपने घरको चले आये
मंत्रार्थ जो नहीं प्राप्त हु आथा इसतें बडे निराश
चित होरहे थे तब इसी मंत्र की लालसासे अठारे
वार गोष्ठी पूरन जीके घरमें जाते भये परन्तु तिनो
ने मंत्र उपदेश नहीं किया पुन्नको उन्नी समी वार
बडी अभिला षासे और मनमें बडा भरोसा राखके
र फिर जोगये तो आगेसे गोष्ठी पूरन जी क्रोधसे

श्री
भा०
२०८

206

९८

भरे हुये बड़ी कड़ुवानीसे कहने लगे कि जा चला
जा ईहां कों बार बार आता हैं तब रामानुज सुन
करके हृदय मे अनसे गिलानी मानकर और नि
रास होकर रुदन करते हुये फिर करके घरको च
ले आये तहां मारग मै एक संत तिनको रुदन क
रते हुये परम दुखी देख कर सोच करना करना
रंगनगरको चला आया तहां पहुंच तांही ततका
ल गोष्टी पूरन जीके पास जायकर सो रामानुज

श्री
भ०
२०७

207

की दशा जो देखीथी सब सुनाय दई तब गोष्ठी पूरन
जी रामानुजका ऐसा दुख और कलेश सुनकर तुर
तही कोमल और सिथलतन होयगये दया जो है
सो रोम रोममे छाय गई तन कालही अपने एक से
वक को बुलाय कर और भली प्रकार समुझाय क
र रामानुजके ल्यावने के वास्ते भेजदिया सो शिष्य
तहां रामानुज जी के पास जाय कर परमचतुराई
और मीठी वानीसे कहने लगा कि हे बुद्धी के धाम

रामानुज जी तुमको गुरु गोष्ठी पूरन जीने प्रीती ए
वेक तहाँ अपने पास बुलाया है सो अब तुम चित्तमे
हित मानकर और श्रम गिलानी इत्यादि सब विसा
रकर् चलो तिनके चरनोकी शरण प्राप्त करो।
चौपाई। गुरु कृपाल दीनन हितकारे। अबमेंजाएँ
देहिं तुमारे। चलहु आशु पकल गुरु धामा। होहिं
अवसि पूरन सब कामा। सुनि रामानुज आनंद
छाये। गोष्ठी पूरन भवन सिधाये। तबकरेम दा

२१
भ॰
२०८

सरथि होई। चले संग रामानुज सोई। देषि गोहि

हवन जनभाषा। मोरे गुरु कृपाल करि राखा। च

ल इ अकेल हरि मनमेडा। लिये संग उपवीन चिंड

डा। सिछन संग जानिले इम जाना। धरहिं अवसि

हवेन गुरु साना। निश्चय करहिं कोप अधि काई।

तापर होहिं ननमहिं भलाई। रामानुजभाष्यो निन

काही। तव नकर इर्विना मनमाही। हम सह जरि

सव लेव बनाई। जहिनें गुरु नकरहिं रिस भाई। या

विध भनत पंथसुख बानी। आये गोहि नगर सुख
मानी। गुरु गोष्ठी सनसुख कर जोरी। किये दंड व
न प्रीति नथोरी। सिषन सहित रामानुज काही।
नव गोष्ठी हरन नकि माहीं। लखि सुजोग नयनन
रिस त्याये। उग्र वचन जतिपति हिं सुनाये। हमत्रि
दंड उपवीत समेतू। कहिपठयो श्रावन नव हेतू।
तो नम कनसिष मंगलिवाया। किये उले हनमोर
बजाया। दोहा। नवरामानुज नंम्र सुख विनय कीन

सु॰
भ॰
२०५

कर जोरि । नाथ उलछनदीननें भई न सामन मोरि ॥
२५ । टीका । फिर शिष्य कहता है कि हे रामानुज जी
गुरू कृपाल और दीनो के हितकारी जो हैं सब तुमारे
को अवश्य मेंज्ञार्थ देवेंगे परन्तु तुम आप अकेलेही च
लो अपना शिष्य कोई साथमत लेवो । तुमारा राम तो
थे सब सिद्ध हो जावेगा इस प्रकार सुन करके रामा
नुज वडे हरष मे मगन भये हूये गुरु गोष्ठी पूरन जी
के घरको चल पडने भये तब कुरेस और दासरथी

इह दोनो तिनके चेलेभी साथहीं चले तिनको देख
कर सो गोष्ठी पूरन जीका शिष्य कहने लगा कि मे
रे को गुरुमहाराज जी ने कहा हुआहै जो रामानुज
को अकेलेहीं लावना केवल उपवीत और त्रिदंडही
साथहो ना चाहिये और कुछ नाहो तो ने तुम इन शि
ष्यों को साथ मत लेवो गुरुजी तुमारे पर अवश्य दु
खपावेंगे और निश्चय करके कोपकरेंगे इसमै तु
मारी भलाई नाहोगी तब रामानुज जी कहने लगे

कि भाई इस मैं तुम कुछ चिन्ता नहीं करो हम इह स
व बनाय लेवेंगे गुरु महाराज कबी कोप ना करैं गे
इस प्रकार रसनेमे वार्ता प्रलाप करते हूये गोष्टी न
गरमै आय प्राप्त भये फिर गुरु गोष्टी हरन जी के
मन मुचजाय कर बड़ी दीन गतीमे बार बार दंड प्र
णाम करके हाथ जोड़कर ठाड़े होय गये तब गोष्टी
हरन जी तिनको शिष्यों के सहित देखकर और अ
जोग जान कर हृदय मे कोप ल्याय करके उग्र वच

तो मैं कहने लगे कि हमने त्रिदंड और मृगके सहि
त हमारे आवनेकी आज्ञा दई थी और तम अपने
शिष्योंको भी साथ ले आये हो मेरी आज्ञाको उलंघन
कर दियाहै ऐसे तिनके मुखसे वचन सुनकर रामा
नुज हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे कृपा
निधान मैने तो आपकी आज्ञा उलंघन नहीं करी
है इसमें जो प्रार्थना है सो आपके आगे कथन कर
ताहूं। २८। चौपाई। त्यागन मेरा दंड उपवीता। त्र

भुमामन भ्रमरलो पुनीता। इहमोरे शिष दीन द
याला। दोऊदंड उपवीन रसाला। नव गुरु भने व
दन गत माखा। को उपवीन दंड कहि भाखा। गुरु
कृपाल अनुकूलनि हारी। रामानुज भ्रम गिराउचा
री। रामरथी प्रभुदंड हमारा। प्रेम उपवीन क्लेस
उदारा। इहजगधरम सहायक होई। निजमन श्ले
ग सेग मम होई। गोहि पुने नव गिरा उचारे। जद
पि देंड उपवीन नमारे। तदपि आवहु इनै अकेले।

२१
भे०
२११

२११

८५

मंत्र राज सब लेइ सुहेले। इन कहं जथा जानि अ
धिकारी। तुम करिहौ उपदेस बिचारी। नव रामा
नुज जाय इकाकी। बैठे गुरुपेस मरि पिनाकी।
लखि सुपात्र गरु कृपा निधाना। दीन सुनाय मंत्र
कल काना। बार बार पुनि दीन सिखावन। मंत्र रा
ज इह पावन पावन। दोहा। याको प्रकट न करहु दु
जन राखहु जतन दुराय। भक्ति मुक्ति जग करन
कल नरन सरब सुखँय। २९। टीका। रामानुज

८

कहतेहैं कि भगवन इसदास को आपकी आज्ञा देउ और जग्योपवीनके त्यागने की थी ताते हेदीनदया ल इह मेरे दोनो शिष जो साथ हैं एक त्रिदंड और दू सरा जग्योपवीत है ऐसे रामानुज का वचन सुन कर गोष्ठी पूरनजी कोप से रहित होकर कहने ल गे कि इन हमारे शिष्योंमे कौन उपवीत और कौ नसा त्रिदंडहै तब गुरु जी को प्रसन्न मुख देख क र रामानुज कहते भये कि महाराज दासरथी जो

है सो मेरा त्रिदंडहै और हृदेमजो है सो उपवीत प्र
सिद्ध है इह दोनो धरमके सहायक होकर मेरे संग
संग ही रहते हैं तब गुरु गोष्टी नाथजी कहने लगे
कि रामानुज इह दोनो यद्यपी तुमारे त्रिदंड और उ
पवीत ही हैं तद्यपी ईहां तुम अकेले ही आवो और
जगतके जीवोंको तारने वाला परम पवित्र राज
मंत्र जो है सो सुनकरके ब्रह्म नेह मे लीन होजावो
फिर इनको जैसे अधिकारी देखोगे तैसे ही उपदे

श्री
भ०
२१३

श सुनाय कर कृतार्थ करियो ऐसे गुरु जीके मुख
से वचन सुनकर रामानुज जी अकेले होयकर हरि
इच्छा स्मरण कर ने हुये गुरु जीके पास आय बैठ
ने भये तब कृपानिधान गुरु जीने कृपा दृष्टीसे ति
नको सुपात्र जानकर सरब मंगलोंका मूल सो ना
रक मंत्र तरतही कानोंमे सुनायदिया और फिर
बार बार सिखाय कर भली प्रकार समझाय दिया
कि इह पवित्रमें पवित्र राज मंत्र जो है इस को छि०

213

पाय कर ही रावनाकंही प्रकट नंही करना । इह
कैसा मंत्र है कि जगतमै भुक्ती मुक्तिके सहित सब
व जीवों को आनंद और सब केदेने वाला है । ४५ ।
चौपाई । एव मलकहिजनि पति रानी । करि प्रणा
मपद परसन पानी । लेनविदाय रंगपुर आयो । जा
नि धन्य निज जनमसु हायो । नहेनर मारहल भया
वाना । रह्योललिन इक भवन महाना । माधव मा
स नरोजव आयो । नर हरि जनम महूनसव छायो ।

रा॰
भ॰
२१४

देस देसनते संतनिकाये। जैलीला दरसन हित आये॥
अतिसेदर्श भयो पुरमाही। जहंतहं साधु समाज दिखाही। तहं किन करन सेन परिवारा। जैहरि जैहरि बोलअपारा। तव जनि नाथ सुन्यो मनमेता। जरे आय इनसेन अनन्ता। अष्टवरननें पर कछु नाही। श्रवण परन अग कोटि नसाही। तोने अवशिकाज इह करहीं। वछि उतेग मेदिरस्वर भरहीं। अष्ट वरन अग हरन सनाई। करहे प्रथम उधरन समुदाई॥

214

करिविचार अस जानि पति जीके। सुमरत चरन कंज सिय पीके। दोहा। तहिदिन भई अथरात जब उठि अकेल सबबाय। अति उतंगप्रभु रंगके च पोश्रहार उतजाय। ३०। टीका। जब जानिवर जो रामानुज जीहैं तिस राज मंत्रको पायकर पत मस्त करने भये कि भगवन ऐसे ही होगा तिसने उप रोत गुरू जीके चरनोपर प्रणाम करके और आने द पूर्वक विदाय लेकर रंग पुरको चले आवने भ

श्री
भं:
२१५

215

ये और अपने भागोंको उदय जानकर तहां निवास
करने लगे तब रंगनगरमै नरसिंह भगवान का
एक बडा सुंदर भवनथा जब माधव मास अर्थात
विसाख महीना आया तो तहां नरसिंह भगवानके
जनमका वडाभारी उतसव होता भया देस दिसाओं
के संत महातमा नरसिंह जनमकी लीला देखने
के वास्ते तहां चलेआये नगरमै अत्यंतही भीर भार
होयगई जहां तहां साधुओं के समाजही देख पडतेहैं

चारो पासे मे जैहरी जैहरी पही शाह सचिन होरहा
है तब रामानुजजी ने अपने हृदय मे विचार कि
या कि ईहां सेज भक्त समहोके समहजड़े हुये हैं
जिनका कुछ यत्न नही आवता और अष्टाक्षर मंत्र
नेंपरे और कुछ नही है कि जिसके कानोंमे पड़ने
से कोटिपापोंका नाश होजाताहै तोतेमे अवश्य इ
ह कारज करूं सो ऊंचे चढ़कर और ऊंचीही स्वर
से सो तारक मंत्र जोहै सो सबको सुनाय देऊं इस

रा॰
मा॰
२१८

216

से एक बारही सबका उद्धार होजावेगा इस प्रका
र विचार करके सीताके पती रामचंद्र भगवान
जोहैं तिनका स्मरण करते हुये तिसी दिनकी श्रा
धीरातको आनंद पूर्वक अकेलेही उठकर रंगना
थ भगवान के भवनका बडा ऊंचा द्वार जोथा ति
सपर जाय चढने भये । ३० । चौपाई । जहां अनक
सिख सेवकसंगा । जहां समाज संतबहु रंगा ।
रामानुज मुख बारं बारा । सुष्ठ वरन नहंसेउ उचा

१५

रा। बौहत्तर जन श्रवण सुहावन। सोतहं पत्यो मे
व जगपावन। ते जो गीश्वर भये उदंडा। पाय मुक्ति
हवि सजस प्रचंडा। पीठ कहाय संत सभवेसा।
सबलौं विदन सोरहत्तण देसा। जब जति पति सुस
मेत प्रकासा। तहां गोहिहरन ड्डन दासा। जायम
रम निजग्रहहिं जगायो। प्रभुहम देखि हृगन स
बह्मायो। शपन मेंत भगवन नव नेहू। जनिवर क
हे दीन्यो लखि नेहू। बरजिदियो प्रभु बारहिं बारा॰

भ०
२१७

करिहौ कबहुं नप्रकट उदारा। तौन भेउ जनि पति
हुन जाई। बहुि उनेग प्रभु भंगि रजाई। ऊचेस्वर
सबे भलहि सलावा। दीन्यो सवकहे प्रकट सुना
वा। इह सतुचित हम नोकर पाई। दियोआय प्रभु
नमहि सुनाई। दोहा। गोष्टी हरन सनन प्रम भरे प
रसरिस नैन। रामानुज करे कहू मठे पढे सेन हु
न लैन। ३१। टीका। नव जहां अनेक सिष सेवकों
के सहित संतोंका समाज जहा हस्राप्या नहो रामा

217

नुज जीने बारं बार उची स्वरसे सो अष्टाक्षर मंत्र जो
था उच्चारण कर दिया तब सो जगत को पवित्र क
रने वाला मंत्र नहीं बुद्ध जन जनोके कानोमे प्राप
ड़ा सो सब सुननेहीं परम जोगीश्वर होय कर सु
जसके सहित सुकनीके अखंड सुखको प्राप्त हो
जाते भये और पीठ कहाय कर अब लगदक्षण दे
समे प्रसिद्ध हैं तब इस प्रकार रामानुज जीने मंत्र
प्रकाश किया तब गोष्ठी पूरन जीका एक सेवक

रा
भ०
२१८

218

रामानुज जीके इस उपकार और उदारता को देख
कर उनायलसे भागा और जाय करके गुरू गोष्ठी
नाथको सब हत्तांत सुनाय देताभया कि भगवन
तुमने जो रामानुज को अधिकारी जानकर उपदेश मे
त्र दियाथा और बार बार समझाय कर बरज दिया
था कि इस मंत्रको कवी प्रकट नहीं करना सोई मे
त्र तिस रामानुज ने आपकी आज्ञा भंगन करके
रंगनाथ के भवन पर चढ़ कर बड़ी ऊंची स्वर में

सबको प्रकट करके सुनाय दियाहै तैसे तिसका इष्ट
प्रयोग करम देखकर आय करके आपको जणाय
दियाहै नव गोष्ठी स्रवन जो तिसके सुनवेसे ऐसा क
थन सुनकरके महाकोपके वश होय गये तिनका
लेही रामानुजके ल्यावने के वास्ते वडे क्रूर स्वभाव
वाले साधू जोथे सो भेजदिये । ३१ । चौपाई । आयसे
न रामानुज पासा । गुरु सासन जस वरन प्रकासा ।
रामानुज कछु विलमन कीना । गुरुपें आय हरषम

न लीना। नव गोपी पवन नहि हेरे। भरे कोप करि
नैन नरेरे। भाष्यौरे मूरख मतिहीना। मै जोई मंत्र ता
ज तोहि दीना। सब शास्त्रन महं गोप महाना। कब
हूं न अधर वहिर निकसाना। मै तोहि जानिपात्र अ
धिकारी। तव दीन्यो नव श्रवण उचारी। वार अनेक
तुमै समुझावा। तापर तुर मति सपथ धरावा। ज
निका हू सों भूलि भुलाई। गोप मंत्र इह देहु सुनाई.
तोकव हूंकि तुमा कियहु प्रकासा। तो मति लखि

२१९

इ नरक निजवासा। सोनममेत राज मनु सारू।
बढि उनेग प्रभु रंग ढवारू। ऊचेस्वर बहु बार उ
वारा। स्नन भयो नहे मनुज अपारा। गुरुसा स्नन
भंगन नवकीना। दीषत हो कोऊ मनुज मलीना।
दोहा। नमहिं शास्त्र विधि देइ सब देन उचित गुरु
होहि। जोमिथ्या करि बचन नव वंच्यो उरमति मो
हि। ३२। टीका। नव सो साधू रामानुज जी के पास
आयकर गुरु गोष्ठी पूरन जी की आज्ञा सुनाय देने

२१
भं॰
२२॰

220

भये कि चलो गुरुजी तुमको श्रीचंद बुलावते हैं ऐ
से तिनके मुखसे गुरू जी की आज्ञा सुनकर रामाजु
न जी विलंबको त्याग कर ततकालही चल पड़ते
भये और गुरू जीके पास आवतेही प्रणाम करके
सनमुख स्थित होय गये तब गोष्टी पूरन जी तिन
को देखकर क्रोधसे लालनेत्र करके कहने लगे अ
रे म्लेछ बुढीके हीन मैने जो तेरे को राज भेज दिया
था सो संपूर्ण शास्त्रों मे गुपतही राखा हुआ है एक

ट नहीं है मैने तुमको अधिकारी और सुपात्र समु
झाथा तब गूढ तेरे कानों मे सुनाय दियाथा और
बार बार सिखाय समुझाय कर सुगंद भीकर वाई
थी कि कहीं प्रकट मतकरना जो कबी प्रकट क
रोगे तो मना करके अपना वास नरकमे ही जानले
ना सो तुमने तिस राज मंत्रको कि जो सरब मंत्रों
मे सार है रंगनाथ भगवान के भवनके ऊचे द्वारप
र चढ कर बडी ऊचीही सुरमे बहुत बार उचार क

रा॰
भ॰
२२१

रके सब लोगोंको सुनाय दियाहै और गुरू की आज्ञा
भंगान होनेका कुछ भी विचार नहीं कियाहै इसने जा
ना गया कि मूढ ने कोई मन मतिया अपनी इच्छाही
करने वालाहैं हे गुरू द्रोही तेरेको अब शास्त्रकी उक्त
अनुसार दंडदेना जोगहै क्यों कि तैने झूठ बोल कर
के मेरेको वंचन किया अर्थात छललियाहै । ३२ ।
चौपाई । तब जनिपति जगजो रनहाथा । कहिसुत
इवितनी मम नाथा । प्रभु प्रथमहिं उपदेस न की

221

नो। इह मुरति रूप हरि चीनो। तुमरे श्रवण हेथ
र हम भरडै। काहूसौं जनि भाषणकरडौ। पावन
राज मंत्र इहजोई। जास करन कल षवमन होई।
कोटि जनम अगनास विधंसे। करहिं गवन हरि
भवन असेसे। फलहिं नवद्रुदि जगत जंजाला।
हरि सेवन सुख लेहिं विसाला। विनु आसा प्रीता
विनुकोऊ। करहिं मंत्र उपदेसन सोऊ। होहिं सो
अवसि नरक कर भागी। वेद पुरान भनत अस

रा॰
भा॰
२२२

वागी। सोमै मनहु दीन दुखहारू। निजमानस कि
यवि मलविचारू। चढि ऊबेकहूं भवन दवारा। रा
जमेत्र इह कर इंडचारा। जोनर हरि उनमव घभि
लाखी। लाषनग्राय मेन हवि राखी। जिनजिन श्र
वण मेत्र इहपर हैं। तेहरि भवनगवन इतकरहीं॰
दोहा। मैत्राऊं जोजाऊंइक नरक वानक छुनाहिं॰
पहुंचाऊंइन जनन बिनु जननपरम पदकाहिं। ३२
टीका। नव रामानुज दोनो हाथ जो इकर कहने ल

२२२

गे कि भगवन मेरी विनती सुनिये जो आपने पहि
ले ही उपदेश कियाथा कि इह षडाक्षर मंत्र जो है
सो साक्षात भगवानका ही रूप है मैने तुमारे का
नोमे सुनाय दियाहै मत किसीके साथ प्रकट कर
ना इह परम पवित्र राज मंत्र जो है जिसके कानोमे
प्रवेश करेगा तिसके कोटि जनम के पाप नाशको
प्रापत होवैंगे और निर संदेह हो करके भगवान
के भवनको चला जावेगा सो फिर कबी इस जगत

२१
भं०
२२३

223

के जालमै नहीं फसेगा भगवानके सेवन करने का
परम सार जो है तिसको प्राप्त होवेगा और जो को
ई विना आसा और विना दीक्षाके इस राज मंत्रका उ
पदेश करेगा सो अवश्य करके नरक का भागी हो
वेगा सरब वेद शास्त्रका भी यही मत है कि श्रद्धा औ
र अधिकार के विना उपदेश नहीं करना सो हे दी
नोके दुख दूरकरनेवाले गुरु महाराज मै हृदय
मै विचार करके यही सो चाकि किसी ऊचे भवनके

द्वारपर चढकर इस राज मंत्र को ऊंची स्वरसे उच्चा
रन करे तो जो जो संत महात्मा बडी भक्ती प्रीती
से नरसिंह लीला के देखने को अनेक आये हूये
हैं इस परम पवित्र और तारक मंत्रको सुनकर स
वही भगवान कृपा निधान के परम धाम को जाय
प्राप्त होवें एक मै नर को तारूं तो तारूं कुछ बात
नहीं है परन्तु इन संपूर्ण लोगोंका तो जतनके वि
नाम सुने ही उद्धार होजावे। ३३। चौपाई। जो मम

अनुचित मंत्र प्रकारे। अरु मोरे अस नरक सिधारे।
हरिपुर लावन जीव सिधाहीं। तो कछु हानि नाथ
मोहि नाहीं। नरक गवन अस दीन दयाला। मोरे म
नस सावद सवकाला। यहि गनन मैं दीन उबारा। अ
स वरन वद्धिभवन उचारा। गिरा शुद्ध रामानुजजनी
की। पावन श्रवण सावदशीय जीकी। सति गोष्ठी
सरन अनुरागे। मानसविविध प्रेम मन लागे। या
के लिये अवध गन टाया। इह अवतार शोघ सति गा

या। संत भेष आयो जगमाहीं। केवल प्रथम उधा
रन काहीं। अहो परम जीवन हितकारी। देखहुनि
जदुरव दियोवि सारी। ब्रह्मविचारिनि ज मानस मा
हीं। गोपी सरन हरषि नहोंहीं। धन्य धन्य सुख मु
खर उचारी। मिले दौरि निज भुजा पसारी। गद गद
गिरा प्रेम रस पागी। भने वदन मनु वचन विरागी॰
मोहि सरब कछु रह्यो न भेवा। तुम साक्षात मोर
गुरु देवा। सकल सृष्टि आधार सहाये। तुम्हहु अ

नज नाम जग गावे। निज आधीन मोहु अब लेखो। देहहु सदा अन हलबसेखो। अस प्रकार मृदु वचन अलाई। रामानुज कहे निकट बिठाई। दोहा। अभग ज्ञान विज्ञान जनवि मल हितक उपदेश। दीन्होजह पति पावथे जिमि करि कृपावशेस। ३४। टीका। रामानुज फिर कहते हैं कि हे नाथ जो इस मंत्रके मेरे अजोग्य प्रकारनेसे और मेरे ऐसे नरक के जाने से जो लाखों जीव भगवान के परम धामको चले जा

वैं तो इसमैं मेरेको कुछ हानी नहीं है सो नरकका
जाना भी मेरा सरव प्रकार करके होवे और सजन
के देने वाला है हे कृपानिधान मैंने केवल यही ला
भ विचारकर भवन के ऊंचे द्वार पर चढ करके प
रम पवित्र अष्टाक्षर मंत्र जो है सो ऊंची स्वरसे सबको
सुनाय दियाहै इस प्रकार मनको बडी भावती और
कानों को सुखदेने वाली रामानुज की गूढ बानी
सुनकर गोष्ठी पूरन जी हृदयमैं परम आनंद और

सन्मान कर प्रेमके वश भये हुये जती वरजी की अ
नेक शलाघा और वडाई करने लगे और कहने लगे कि
अहो इसके हृदय मै तो इतनी दया है कि जिस की को
ई अवधी ही नही है इह तो साक्षात शेष भगवान का
अवतार है संत भेष धार करके पृथ्वी तल पर केव
ल अधम और पतित जनो के उद्धार करने के वास्ते
आया है मैने तो अब जाना है इह तो जगत के जीवों
का परम हितकारी है देखो जिसने औरों के हितके

वाले अपने नरकमै जानेका दुख सब बिसार दिया
है इस प्रकार विचार करके गोष्ठी पूरन जी हरषमे
प्रफुल्लित भये हुये सुखमे बहुत बार धन्य धन्य कहि
कर दोनोभुजा पसारे हुये धाय कर रामानुजजी को
हृदय मै लगाय लेते भये और प्रेम रसकी भीगी हुई
गद गदवानीसे विरागी चित भये हुये कहने लगे कि
अहो मैने तुमाराभेद कुछ जानाही नही तुमतो सा
क्षात मेरे गुरुदेव हो और सरव सृष्टी के आधार तु

श्री
भ०
२२३

स अनन्त नामो करके जगत मैं प्रसिद्ध हो अब कृपा
करके मेरेको अपने आधीन जानकर सदा अनुकूल
अर्थात प्रसन्नही रहने रहो इस प्रकार वड़े हितके को
मल वचन कहिकर प्रीती और सनमानपूर्वक रामानु
ज जीको अपने पास विठाय करके परम हित और
सुखके देने वाला ज्ञान विज्ञानके सहित सेंदर उप
देश जोहै सो इस प्रकार देने भये कि जैसे कृपा कर
के परम हित और प्यारसे श्री कृष्ण भगवान जीने

अरजुनको दियाहै । ३४ । चौपाई । बहुरि बुलाय सब
न निजलीन्यो । रामानुज करसेवक कीन्यो । श्रुति गो
पी हरन सुठबानी । भने बदन मानस सब मानी ।
अवतम रंगनगर हित कारी । शिषन सहित जुत जा
इ सिधारी । जामुनसुत वर रंग उजागर । समति प्र
बीन ज्ञान गुन सागर । तासों सबदह चिरमन भावा ।
करहु जाय सतसंग सुहावा । ग्रपनारथ संगर सब
हाई । राख्यो जामुन नाम पठाई । सोतम लेहु अवसि

रा०
भ०
२२८

सुरमानी। सरव प्रकार रुचिर हित जानी। मुनिगोष्ठी
सदन सुसभाघन। जनिपति चले लाष सुभिला घन।
दास रथी सुरेस उमेगा। औरउ चलेजात शिष सेगा।
मारग काटि रंग सुरझाये। बसे भवननिज आनंद छा
ये। सजन लोग दरसन अनुरागे। चारि ओरतें आवन
लागे। अष्टाक्षर करिवदन उचारन। लागे जनिवर
जीव उधारन। भरि भूमिमंडिल नल छावा। रामा
नज कर मजस सुहावा। देहै मंत्रदान सब काहीं।

किये कृतार्थ लोग सवाही। रामानुज प्रसाद सेसारा·
उधरे कोटि पतित परिवारा। आये रंग भवन सुख
भीने। रंगनाथ प्रभु दरस नकीने। वार वार नमन
कर जोरी। किये प्रणाम प्रीति नहिं थोरी। सानुकूल
तव कृपानि धाना। बोले रंग नाथ भगवाना। मैजान्यो
तव भक्त उद्धारे। अगनित अधम जीव जगतारे। ऐसेहि
नभयो नहोवन हारी। तव समान जीवन हितकारी·
भलो सुजस संसृति विस तरयो। कोटि [illegible] सुतजजी

बन उजरयो। बसहु भक्त अब भवन सुखैना। तुम
रेसरब काल कछु भयना। भनत वचन अस कृपा
निधाना। रंगनाथ भये अन्तर ध्याना। अस इह चरि
त चाह मन भावा। रामानुज कर मै कछु गावा। दो
हा। सरब अर्थ सायक सुगम सादर सुजस प्रद चारु
सेवत सह जहिं लेहिं सोहिं नर भक्ति मुक्ति संसारु।
रंगनाथ पदपदम दृढ करन भक्ति रति नेहु। जर
न रोग दुख नरन सब हरन सोक संदेहु। ३५। टीका

जिसनें उपरान्त गोष्ठी पूर्ण जीने अपने पुत्रको बु
लायकर रामानुज जीका शिष्य बनवाया और फि
र आनंद पूर्वकको मल वाणीसे कहने लगे कि रा
मानुजजी अबतुम सबसे अपने शिष्य सेवकों के
सहित रंग नगर को प्रस्थान करो तहां जामुना चा
री जीका पुत्र रंगवर नाम करके उजागर और स
र्व गुणनिधान ज्ञानविज्ञानमें प्रवीन जो है तिस
के साथ जाय कर सरव सांखोंके देनेवाला और

रा॰
भा॰
२३०

230

भ्रम अज्ञान के नाश करने वाले सुंदर मत संग
जो है सो करो और भी अपनाद्वार मंत्र जामुना
चार्य जीने तिसको पढाया हुआ है सो तिसतें न
म जिस प्रकार होसकैले लेवो ऐसे गोष्ठी पूर्ण
जी के मुख से वचन सुनकर रामानुज जी मानो
लाख अभिलाषा वाले होकर कृष्ण भगवान
का स्मरण करते हुये रंग पुरको चले आये दा
सरथी कुरेश इनतें लेकर सब शिष्य सेवक जो

114

हैं सो आनंद पूर्वक सबसाथ चले आवते हैं तब
मारग को तहस्य करके रंग नगर मैं आय आ
पन हूये और अनंद भाव मै मगन भये हूये अ
पने घरमै बास करते भये तब जिनका आवना
सुनकर सब लोक चारो ओर मैं दरसन करने
के वास्ते आवते भये और परम उदार रामानु
ज जी सो अष्टाक्षर मंत्र सुखसे उच्चारन करके
संपूर्ण जीवोंका उद्धार करते जाते हैं तब सो ज

२१
भ.
२३१

231

हो नहो सरब प्रथवी मंडिल पर रामानुज जीका
धन्यवाद अर्थात सुजस जो है सो छायन होगया
तिनोने मंत्र दान देदे कर सब लोगोंको कृतार्थ
करदिया रामानुज जीके प्रसाद से कोटी पापि
यों के परिवारका उद्धार होगया तब भक्त प्रथा
न रामानुज जी भक्ती श्रेनी मे लीं भये हुये रंग
भवन मे आय कर रंगनाथ भगवान का दर
सन करने भये और दीन गती से वार वार दंड

न

प्रणाम करके मनसुख स्थिर होय गये तब कृपा
निधान दीनहितकारी रंगनाथ भगवान अतिसे
प्रसन्न होयकर कहने लगे कि हे भक्त उदार रामा
नुज मैने जाना है जो तैने संसारमें अगनित अध
म जीवों और पापियोंका उद्धार किया है कि जिन
की कुछ गिनती ही नहीं होसकती तेरे समान
जीवों का हितकारी कोई दूसरा है नहुआ न होवे
गा तैने अपनतही भला समझ जोहै सो संसारमें

भ.
२३१

विसर्जन किया है जो कोट ही मानुष्य जीवोंको
तार दियाहै हे भक्त प्रधान अब तुम भाव पूर्वक अ
पने घरमै बास करो तुमारेको सरव काल अभय
ही होगा अर्थात कोई किसी प्रकार का भय नहीं
आयेगा सरवदा कल्यान रूपही रहोगे इस प्रकार
कहि करके भगवान कृपानिधान अन्तर ध्यान हो
गये नाभादासजी कहते हैं कि हे गुरु महाराज
जी इह इस प्रकार रामानुजजी की बडी आचर्ज गा

23^2

था जो है सो मैने कुछ गाय करी है इह कैसी है कि
सरब अर्थों के सिद्ध करने वाली और सहजे ही सु
खसनम के देने वाली है इसके सेवन करने से स
सारी जीव सुंदर मुक्ती और भुक्ती को प्रापत हो
ते हैं फिर कैसी है कि रंगनाथ भगवान के चरन
कमलों मे प्रीती और भक्ती के दृढ करने वाली
और सरब दुख दारिद्र और रोग सूलकलेस इत्या
दि के नास करने वाली है । ३५ । इति श्री भक्त

॥ भ॰ २३४

विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ती महात्मे भाषा टीका मितंसिंहकृत

यो रामानुज चरित वरणने नाम सरगः

233



१८५२

२३४

अथ अक्रूर चरित्रं । दोहा । दान पती कर अवक
रू कथन श्रवण सुविदान । कर्थमहातम ल
लित नर हृदय हरन मदमान । जासु सुनन
श्रुति रसिकजन मन प्रमोद सरसाहिं । उप
जहिं अविरल नवलनित प्रीति चरण हरिमा
हिं । चौपाई । भयो नास केसीकर जवहीं । भी
त्यो कंस सुनत अस नवहीं । लीन नरंन वो
लि पतिदाना । तासु मनोरथ सकल वखाना ।

१२ भं. १

गोकल जाहु दान पति प्यारे। तुमहुं मोर स
जन हितकारे। भाखि धनुख मख गाय सुधी
रा। ल्यावहु उभय कुसल बल वीरा। सुनत दा
न पति कंस उचरना। हरख शोक वश भयो
विवरना। प्रभु आवन इतमैं जिय जाना। चाहु
त हनन अधम अभिमाना। मैकस अभिमुखे
जाय अभागी। लावहुं तिनहिं जाय वधलागी
पैइक मोर भाग्य अधिकाई। देखहुं राम स्याम

नन जाई। इह अशक्त जिन कर वध माहीं। ख
ल दल दलन दलहिं इहि काहीं। हृदय गुन
न स्वफलक सुत एहू। चल्यो जान चढ़ि ह
ज पति गेहू। कृस कमल पद प्रीति बढ़ाई
कब देखहुं नैनन भरि जाई। भक्त प्रधान ज्ञा
न गुण नीके। करत विचार जात पथ जीके
सोरठा। को सुकृत जग मोर। कवन दान स
नमान। श्रम जाहि प्रभाव चित चोर। देखहुं।

भ
२

नंद कशोर हगा ।।१।। टीका। नाभा दास जी क
हते हैं कि हे भगवन सव दानपती जो अक्रू
रहै तिसकी भक्ती के महात्मको मनोहर ।
गायाजोहै सो कथन करताहूं इह कैसी भी
गायाहै कि मद आदि सर्व विकारों का हरनी
और रसिक जनोके मनमै आनंद भरनी भग
वानके चरन कमलों मे नित्य नवीनही प्रीती
के अधिक करने वालीहै कहतेहैं कि जव

केसीको भगवानने मारदिया तव सुनकर
के कंसजोहै सो चित्त मै वड़ा भय मानताभ
या ततकालही अक्रूरको पास वुलाय कर
और अपना मनोर्थ भली प्रकार समझाय
कर कहने लगा कि हे दानपती तुम मेरेवडे
हितकारीहो तातें अव गोकलमै जावो और
तहां धनुष यज्ञकी गाथा चलाय कर जैसे
जानो तैसे कृस्न और वलराम इन दोनोको

१२
भ०
३

साय करकेलेआवो ऐसे दानपती कंसका क
थन सुनकर हृदयमै हरष और शोकके व
श होकर कुछ व्याकुलसा होजाताभया और
मनमै विचारताहै किभगवानके ईहां आवने
मै इह अधम अभिमानी तिनका वध करना
चहताहै सोमै कैसे जायकर तिनको ऐसे
अनर्थके नमित्त लेआऊं परंतु तहां जानेमै
मेरेको एक अत्यंत लाभ होताहै और मेरे।

३

भाग्य भी उदय जाने जाते हैं सो क्या है कि नहीं
जायकर सुंदर स्याम और राम दोनो भ्राता जो
हैं तिनका दिव्य दरसन नेत्र भरकरके पाऊं
गा और इहभी मेरेको निश्चय है कि भगवा
नके शत्रुओंको वध करने मे इह प्रथम कदा
पि काल सामर्थ नहीं है उन्होंके दलन होने
सोई वलके धाम इसके वधकरने को सा
मर्थ हैं इसप्रकार हृदय मे विचार कर सु

१२ भ॰ ४

फलककापुत्र अक्रूर वेउतनमाहसें रथपर
चढ़ करके ब्रजपती जो भगवान हैं तिनके
घरको चल पड़ताभया कृस्न प्रभातमाके च
रन कमल जोहैं तिनके दरसन की प्रीती
ग्रौर लालसा वाला भया हूग्रा मारगमै विचा
र करताहै कि संसार मे सो मेरे कोन पुन्यहैं
कि जिनके प्रभाव करके सुंदर स्याम मूरती
वाले नंदकिशोर कोमै नेत्र भरकर देखुंगा। ए

४

चौपाई। मुनि जोगिन कहं दुरलभ जोई। परस
हुं चरन करनमैं सोई। पतित मौलिमणि व
षय विकारू। निरत अधम विख्यत संसारू।
अस मोसे दरस न भगवाना। अहोवान अस्त्र
जे महाना। आवा गमन जगत जंजाला। मिट
हिं मोर दरसन नंदलाला। हित मम काहु के
स सम नाही। पठो जासु लावन प्रभकाहीं
उन नयनन मुनि मन मुद भरना। देखिले

हूं प्रभु पंकज चरना। नख दुति देखि जासु भ
गवाना। अंबरीष आदिक सब माना। विदत चो
र भव भीत बिहाई। लीन्हा विमल कृस पदपा
ई। दोहा। मैहूं हगन अविलोकिते नख दुति
कृपा अगार।। जिनअजासु गोपद सरस न
रहुं अगम संसार।२। टीका। फिर अक्रूर क
हताहै कि जिन चरनोको मनी और योगीज
न डुरलभ जानकर जाचते रहते हैं सो चर।

नेमे आज जाय करके सहजेही दरसंगा परं
न मैजोहूं सो एक पतित भ्रष्टोंकासिरोम
णी अर्थात माखेहूं तो ऐसे मेरे जैसे पापी
को तिस भगवानका दरसन होना इह व
डा आचर्जहीं प्रतीत होताहै आज नंदलाल
महाराजका दरसन करतेही मेरा आवा ग
मन जगत जंजाल जोहै सो सबछूट जावे
गा अबमैने जानाहै कि कंसके समान मेरा

१३
भं०
६

हित कारी कोई नहीहै कि जिसने भगवान
के ल्यावने के वासते मेरेको भेजाहै मे इनने
ड़ों करके मुनियोंके मनको आनंद देनेवाले
चरन कमलोंका भलीप्रकार दरसन कर ले
ऊंगा जिस भगवान के चरन नख की आभा
को देख करके अंबरीष आदिकों ने अनंत सु
ख मानाहै और महांघोर संसारके भयसे
छूट कर निस प्रमातमाके निरमल पदको

६

प्रापत कियाहै तैसे अब मै भी तिन चरन न
खोंकी आभा को नेत्रोमे देख कर जनन के
विनाही गोपद समान संसार समुद्र से पा
र हो जाऊंगा ।३। चौपाई। जेपद चनुरा नन
सिवसेवा । अरु कमला मनि प्रीति अभेवा ।
भक्तमोद प्रद जेपद पावन । सुमरत जगत
जाल विन सावन । जेपद गैयन पाछलआई
विचरत ब्रजमेदनि सुखदाई । चिन्हत कुचके

१२
भं॰

ऊम व्रज वंता। परम हंसो पद आज अनंता। अ
मल कपोल जुगल दुति वरना। कुंडिल ललि
त लसित स्रव सदना। घ्राण सुभग सुक नि
दरत जासा। हसनि मंद मृदु मोद प्रकासा। अ
वुज अरुण चन्द छवि वरनी। चित वनि चारु
भक्त मन हरनी। कुटिल अलक जहि वदन
विराजी। मानहुं स्याम भुजग छविलाजी। आज
सो वसिल वदन गिरधारी। ग्वाल जूथ जनले

हुं निहारी। मेदनि भार हरन हित स्वामी। हूज

श्रवनहो जनन अनुगामी। तीन भवन कर

लावन ताई। देखि परत नन गोकल राई। श्र

स अनूप छवि दृगन निहारी। लेहुं धन्य नि

ज जनम विचारी। दोहा। निक सत मोरे यान

कहूं दैदै दक्षण अैन। सकुन होत निश्चय स

स्फुट सुभग सुमंगल दैन। ५। टीका। फिर

अक्रूर कहता है कि जिन चरनो को महादेव

११
भ.
८

ब्रह्मा लक्ष्मी और मुनी जनोने बडी प्रीती पूर्व
क सेवन कियाहै और जिन चरनोके स्मरण
करनेते भक्त जन परमानंद को प्राप्त होकर
जगत जंजालसे छुटते हैं जो चरन सुंदर।
गोधनके पीछे ब्रजभूमीमे वि चरते हूये शो
भादेते हैं और जो चरन ब्रजवनता अर्थात् ब्र
जकी स्त्रीयों के कुचोंके कुंकुम से चिन्हत हैं
सो ऐसे सर्वसुखों के देने वाले चरन कमलों

८

85

कौ आज ज्ञाय करमै वडे आनंद पूर्वक परम्
गा फिर [illegible] जिस नंदलाल महाराजके वडे
कोमल सुंदर आभावाले दोनो कपोल और
सुंदरही मुखके देनेवाले कानोमै कुंडल
वडी शोभायमान शुकवत मनोहर नासिका
और तैसाहीं मुखमै मंद मंद मधुर मुसकान
लालीकरकै युक्त कमल जोहै तिसके समा
न नेत्रोंकी शोभा और तैसीहीं भक्त जनोके

मनको हरने वाली नेत्रों की कृपा दृष्टी स्याम
नागके वालक को लज्जादेनेवाली मखपर छू
टी हुई मनोहर अलकें ऐसे वचित्र ध्यान कर
के पुरुष भगवानजोहैं सो आज तिनको जाय
कर सर्व ग्वाल वालों के सहित नेत्र भरकर
देखूंगा दीनानाथ कैसेहैं कि जिन्होंने पृथ्वी
काभार हरकरने के वास्ते व्रजमै अवतार
लियाहै और अपने रूपकी छवी करके के

सैहैं कि मानो तीन लोककी शोभा जिनके
शरीरमै सव देख पड़तीहै ऐसे छवीकेथा
म भगवनको मैदेखकर अपने जनम
को धन्य धन्य मानूंगा देखो आज इह कैसे
मंगलोंके देने वाले शुभ सगुन होतेहैं जो
मेरे रथके दहने से हरन निकस निकस च
लेजाते हैं।४। चौपाई। देवमनुजाद जगत
निजपाला। रमा रमन प्रभु दीन दयाला।

१२ भ० १०

भे अवतरण वंस जदु माहीं। हरन भार हरि मेदनि काहीं। करि करि इमन चरित मनहा रू। विस्तर करहिं सुजस संसारू। सो सुभज स प्रभु चरित सुहायन। सुर मुनि करहिं सो दज्जन गायन। अस कृपाय निज सज्जन तार न। तीन लोक कर त्राव निवारन। रमा मोह न छवि जासु बिलोकी। प्रभु सम ललित क वन त्रैलोकी। सो वचित्र छवि इन हगल्पाई

१०

10

होहूं धन्य जनम फल पाई। आज दिवस मै म
एवं विचारहूं। कुस चरन जलजात निहार
हूं। राम स्याम दरसन जब पावहूं। तजहूं न
वन सिंधन नव यावहूं। परहूं लकट इव च
रनन जाई। लेहूं हृगन पदरैनु लगाई। विधि
हर हृदय जवन पद धारी। लेहिं ललिन म
न वांछित सारी। सोऊ चरन पंकज गहि
पाना। होहूं धन्य संसार महाना। दोहा। दी

न घाल कर दरस हग सपने हूं देखन जोय ।
लागत तांकर नयन नित अति फीको त्रैलोय

टीका । फिर अक्रूर कहता है कि लक्षमीनाथ
दीनोके घाल भगवान कैसेहैं मर्यादा प्रधान
म संसारमै अपनी मर्यादाको पालने वाले
जिन्होंने गो ब्राह्मणकी रक्षा करने और पृथवी
का भार उतारने के निमित्त जादो वंसमैं अवता
रलियाहै सो भगवान अनेक जिनकी कुछ मि

नी नहीं है ऐसे अद्भुत और मनोहर चरित्रक
र कर संसारमें सुंदर सुजस जोहै सो विस्ता
रन करते हैं फिर तिस सुजस को देवता औ
र मुनी लोग गायन कर कर उनसे आनंद
और सुखको प्राप्त होतेहैं ऐसे सज्जन तार
क और सर्व दोष निवारक कृपा निधान भ
गवान कि जिनकी सौंदर्यता की छबीपर र
माजो लक्ष्मीहै सो सदैव हीं मोहित रहती

१२ भ॰ १२

है और जिनका तीन लोकमै कोई भी उपमान
नहीं है कि भगवान ऐसेहैं सोमै आज तिस
प्रमातमा की सुंदर छबीको इन नेत्रो मे ल्याय
कर धन्य धन्य होताहूं और आज मेरेको दि
नभी बडे लाभ और सुखके देने वाला भया
है जो मै जाय कर भगवान के चरन कमलों
का दरसन करूंगा फिर कहताहै कि जवमै
हरसे हीं स्याम और वलराम जीको देखूंगा १२

नव ततकाल रथको त्याग कर पैयोंसे धाय
करके दंड समान चरनो पर गिर पडूंगा
और तिनके चरनोकी धूरी जोहै सो लेकर
सिरपर धारूंगा और नेत्रों मे लगाऊंगा जि
न चरनो को शंकर और विधाता हृदय मे
धार कर मन वांछित फलको पावतेहैं मे
भी आज सोई चरन हाथोंसे परस कर सं
सार मे धन्य धन्य होताहूं दीनानाथ भग

१३ वानका जिस शत्रुघ्नके सपनेमैं भी दरसन था।
भ० याहै तिसके नेत्रोंमे तीन लोककी शोभा और
१३ सुंदरताई जोहै सो सब फीकीहीं भासतीहै ५
चौपाई। बंदि कुसल बल चरन सुहाये। प्रणव
ह्रं बहुरि सुघन समुदाये। धन्य धाम व्रज तरु
वर धन्या। धन्य धन्य मेदनि व्रज मन्या। ज्ञास
कुंतन हरन हरिजोई। शारणा गति विह्लन
उरवसोई। तीन भवन ईस्वर्य वराई। इंद्र पूजि
१३

जहिं कर वर पाई। वलिदै तीन लोक कर जा
सा। वस कीने प्रभु रमा निवासा। व्रज त्रीय
रास विलास मझारा। जहिं कर परसि लीन
सुखभारा। जहिं करकी जल जारन सोभा।
हरत सकल व्रज लोगन छोभा। सो कर सीस
मोर जन लेखी। धरहिं घाल निज कृपा वसे।
खी। यदपि जाहुं नृप कंस पठाका। वार वार
मन कर पछतावा। तदपि कवहुं जन कृपाउ

१२ भ० ५४

15

संगा। करहिं न वैर बुद्धि मोहि संगा। घट घट अंतर्जामि भगवाना। जगत प्रकासिक कृपा निधाना। दरसिन कोटि जनम अघ भारी। मोर प्रमाद मिटहिं गिरधारी। दोहा। देवकि नंदन पद्म पद मै गहिहौं जबजाय। राखहिं मोरे सीस नवकर निज कृपा बढाय। ६। टीका फिर अक्रूर कहता है कि कृस्नभगवान और बलराम जीके पहिले चरन वंदना करके।

५४

फिर तिन के संपूर्ण सावे ओंका प्रणाम करूंगा धन्यहैं ब्रजके सबधाम ग्रोर धन्यहैं ब्रजके सब हृदन धन्य धन्यहै ब्रजकी सुंदर भूमी कि जहां भगवान निवास करतेहैं क्रतन्न जो कालहै तिसका भय हर करने वाले ग्रोर शरणागत पुरषों के सब दोष दारिद हरने वाले तिस भगवानके कमलोंवत कोमल हाथ जोहैं तिनकी कैसी महिमाहै कि इंद्र

१३
भ°
१६

आदिकोने जिन कों पूज कर तीन लोकके
ईश्वर्य और बडाई को प्रापत कियाहै और
वली राजाने जिन हाथों मे तीन लोक देक
र रमा रमन भगवान जोहैं तिनको वशक
र लियाहै जिन हाथोंको परस करके ब्रज
की स्त्रीऊंने रास विलासमे अनेक सखपाये
हैं और जिन हाथों की कमलों कैसी शोभा
है और ब्रज वासी लोगोंको सर्वदा आनंद

१६

16

दायकहैं सो ऐसे कल्यानके देनेवाले हाथ आज
भगवान कृपाकरके मेरे सीस परधरैंगे यद्यपि
मै कंसका भेजा हुआ जाताहूं और वार वार्
मनमै पछ्तातामीहूं कि शत्रुका हूत वनक
र चलाहूं तद्यपि मै जानताहूं और मेरे को नि
श्चय है कि भगवान मेरे साथ वैर बुद्धी कदा
पि काल नहींकरैंगे क्यों कि दीनानाथ अन्तर
जामी घट घटकी जानन होरैहैं और सब

जगत के प्रकाशिक हैं तिनका दरसन करते हीं मेरे कोटि जनमके पाप सब मिट जावैंगे और जब मै देवकी नंदन भगवानके चरनक मलोंको जाय करके पकडूंगा तो दीनबंधु अनुगृह करके मेरे सिर पर अवश्य हाथ ध रैंगे ।६। चौपाई। तोमोहि मोद अवध गत नाना निज मम संसृति गिनहूं नआना। हमरे सोव जाति कुलदेवा। भजपसारि निज कृपा अभेवा।

मोहि कहं मिलहिं अनायस धाये। करहिं मोर
इह पावन काये। छूटहिं करम बंध सब मोरा।
कृत्य कृत्य जग होहुं नथोरा। मिलि ज्जुहारि प्रति
जोरित पाना। ह्वैहों ठाढ पाय सनमाना। तब
वसु देव कुंवर अस कैहीं। मोर अक्रूर कका
हित भैहीं। तब मै लेहुं जनम फल पाई। होहिं
काम पूरण सब दाई। हरि प्रीय भयो भक्त नहिं
जेह। दीनो वृथा जनम विधि तेह। जिमि को

काम विटप फिरा जाई। लेत ललित मनवांछि
त पाई। तिमि ठाडिहुं जग जोरित पाना। देखि रा
म मोहि दीन महाना। भेटहिं मंत्र मधुर मम
काने। गहिकर युगल मोर रतिराते। अति
सनमान प्रभु जगवीरा। लै जहिहैं मोहि सद
न सुधीरा। दोहा। होहुं चरन लगि जोरि कर ज
व समीप बैठाउ। तकिहैं तव मोहि तन नव
न प्रभु करुणा निजगाउ। मित्र सत्र प्रीय अप्री

ये प्रभुकरहं नाहिंन कोय। पै जस जहिकर भाव
ना तस तहि दरसन होय।८। टीका। प्रभुव
कहताहै कि जव इस प्रकार भगवान मेरेसि
वपर हाथधरेंगे तोमेरेको ऐसा आनंद प्राप्त
होवेगा कि जिसकी कोई अवधी नहीं है औ
र मे संसारमे अपने समान हमरे को नहीं
गिनूगा मेरे सांव सजानी और ऊलदेव जव
भुजाभरकर मेरेको कृपासे थायकर मिलेंगे

तब इह मेरा शरीर जो है सो ततकाल पवित्र।
हो जावेगा और मेरा करम बंधभी सब छूट
जावेगा मै कृतार्थ रूपहो जाऊंगा फिर मिल
करके और प्रणाम करके बड़ा सनमान पा
यकर सनमुख स्थित हो जाऊंगा तब बसुदे
वके ऊमार भगवान जो हैं सो मेरे को ऐसा
कहेंगे कि हे हमारे अक्रूर चचा राजी तोहो
इतने भगवानके कहिने सें मै अपने जनम

19

को सफल मानूंगा और जानूंगा कि मेरे मनके
मनोरथ सब पूरण भयेहैं फिर कहताहै कि
जिस पुरुषको भगवानके चरनो की प्रीती न
हीं और भगवानका प्यारा भक्त नहीं भयाहै
तिसको संसारमै विधाताने वृथाही जनम
दियाहै ताते जैसे कोई कलप वृक्षके सामी
प जाय कर अपने मन वाछित फलको प्रा
पत करताहै तैसे मै दोनो हाथ जोड कर

१२
भ.
२.

भगवान के सनमुख स्थित रहूंगा तव मेरे
को दीन जानकर कृपानिधान अवश्य मलेंगे
और राम श्याम दोनो भ्राता मुखसे मंद मंद
मुकावते हूये प्रीती पूर्वक मेरा हाथ पकड
कर सनमान से घरको लेजावेंगे तहां जव
मैं चरनोको वंदन करके हाथ जोडकर स
नमुख स्थित होऊंगा तव दीन वंधू अपनी ।
कृपादृष्टी से मेरी ओर देखेंगे भगवानको ।

२.

20

सत्र मित्र प्यारा अनप्यारा कोई नहींहै जैसी
जिसकी भावना होतीहै तैसाही भाव तिस
को दिखावतेहैं ।८। चौपाई। कंस करन अ
पकार जतनसन। पछहिं सो मोहि कुसल हि
पालन। देहु बनाय सकल मै सोई। नहिं वा
खेहु कछु पाछिल गोई। अस प्रकार उरसो
चित वाता। स्व फलकतने चल्यो मगजाता
अस्तन वाग जब दीनमि छाडे। चल्योवेग

१२
भं॰
२१

सिंधन आनि गाढे। थको प्रात मथुरातें सोई। ब्रजपंकं च्यो जामनि जव होई। गोकल निकट गयो जव धीरा। लखि छिन चरन चिन्ह जउ वीरा। वल समेत थल थल ब्रज धरना। दरस त चरन चिन्ह मन हरना। सुर अज ईश चरन रज जासा। धारत निज निज कीट हुलासा। सोपद भूषण भूतल केरे। सेवत जन कहहि खद घनेरे। पुण्डरीक अंकुश मन हरना। सु

चिरेखा जिन पावन चरना। ब्रज रजमाहिं सुहा

वनि चाहू। प्रभु पद अवलि भक्त मन हाहू॥

देखि दान पति नयन नसोई। हरष विवस प्रे

मा कुल होई। दोहा। जीय अभि लाखत हरि द

रस सुफलक सुवन प्रवीन। नरगन कर पथ

अपथ कछु हगन नपरत नवीन। तनमै रही

ननक सथी पुलका वलि सब काय। नैन न

सैं छिन छिन विपुल प्रेम वार झुतजाय।८॥

१२
भा०
२२

टीका। फिर अक्रूर कहताहै कि जदु वंसियों के साथ कंसका अपकार अर्थात् अनहित जोहै सो मेरेको कृपा निधान भगवान पूछैंगे तोमै सब बताय देऊंगा कुछ भी छिपाय कर नहीं राखूंगा ऐसे मारगमे सोचताहूआ स्वफलक का पुत्र जोहै सो चला जाताहै जब घोडयों की वाग भली प्रकार छोटी तब पवन के वेग स मान रथ चल पडता भया प्रातकालहीं मथु

गमे चलाया सूर्यके अस्त होते ब्रजमे आय पहुंचा जब गोकलके निकट गिया तहां ए थ्वी मे बलरामके सहित भगवान के चर नोके मनोहर चिन्ह जो हैं सो जहां तहां देख ताभया कैसे भी चरनहैं जिनकी सपर्शन धू डीको सुर इंद्र ब्रह्मादि बडे सनमानसे सिरप र धारन करते हैं फिर कैसे हैं कि पृथवी त लके एक भूषण हैं सेवन सें भक्तजनोंके ह

भ
२२

दय को बड़े सुख दायक होते हैं धजा अंकु
स कमल आदि इह मनोहर रेखा जो हैं ति
न्हों करके शोभित हैं तैसे ही ब्रजभूमी पर
भगवान के चरन चिन्हों की बनी हुई पंक
ती भक्त जनों के मन को मोहित करती है इ
स प्रकार देखकरके अक्रूर जो है सो हरष
मे मगन भगवान के दरसन की अभिला
षावाला प्रेम से वेग से रथ चलावता भया ।

कि पथ्य अपथ्य कछु नहीं देखपड़ता प्रेम क
रके व्याकुल हर्ष से शरीर प्रफुलित और
नेत्रों से नीर बहा चला जाता है। ८। चौपाई॥
नजिन वंत निज सिंधन काहीं। लागेण लोट
न ब्रजरज माहीं। कहत सुवचन प्रेम रसरा
ता। इह रज चरन मोर जन जाता। आज धन्य
संसार महाना। मोहि सम भाग्य वंत नहि आना। लोटन रजतें उठ्यो नजाई। नव सिंध

१२
भे
२४

न भत लीन कछाई। सदन नंद तकि सनमु
ख कोरी। देखो गोप वास चहुं ओरी। अति
प्रमोद वश ब्रजकर शोभा। चले जात देख
त मन लोभा। आगल चौक बीच नवजाई।
रामस्याम देख जगभाई। भये रूप तकि अ
नमिख नैना। बोलिन सकत प्रेम वशवैना
दोहा। अनसे माधुरी मन हर्षमगति जग
ल सहाई। को नहोत संहति लभत देखि।

हगन सुखदाई। सवैया। नील दकूल उती।
मकरा कृत कुण्डल कान सजे छवनीकी।
लोचन लाललसैं मनुखंजन ओकल कंज
न की धज फीकी। बीच सखानके राजित
हैं जदुराज छरी कर कंचिनहींकी। हथउ।
हावतहैं जगनाथ सो हाथ धरे हहनो श्री
य जीकी। सुभन सावित वावित सावनसे
ननस्याम भुजान अजाना। आनन इंदु लसैं

पटि सुरंग पंति खटंतकी कांती महूंता। व
क्ष विसाल बनौवन माल कटीकल किंकनि
जाल सजाना। दक्खिन प्रांत वदे वलराम ग्रौ
वाम खडे खेलाखेय भगावाना। जहिं धुज
ग्रंकुस लो पद चिन्ह सो ग्रंकित है ब्रजकी ध
रनी। निजदायासों घाल सची करिकै कीरि
है कल कौरनि महिं भरनी। जगनाथसों कौ
न उदार इतो अस दीन उवारन की करनी॥

२५

25

भव मेटिन वेर नलावत जेजन ग्रावत तेव
रनी मरनी। मवैमे मम्रकान मनोहर मं
जल दीह दया हग मजन जामा। वाल मंत
गज की कल कोमल मूरति मान मनोज
विनासा। हीरन ऊे मुकता हल जाल हृद
य वनमाल रसाल विकासा। मानो मूमी
कोभार उतारन कह्न ग्रवतार भये विष वि
लग्रकामा। दोहा। ग्रम प्रकार ग्रक्रूर हग।

१२
भ.
२६

हरि छवि देखि अपार। भयो विथकित गतथी
र कै मगन मोद निधवार। ९। तव अक्रूर । टीका
प्रेमाकुल भया हुआ तरतंही रथसे उतर ।
कर व्रज भूमीकी धूडीमे लोटने लगपडा औ
र प्रेम रस करके भीगा हुआ वचन जोहै सो
कहताहै कि इह व्रजजो धूडीहै सो मेरे दीनद
लके चरनोकी है मै आज संसारमे धन्य हूं
और धन्य मेरे भागहैं ऐसे कहि कर लोट। २६

26

ताहूग्रा तिस धूरीमे उठनहीं सकता तव मनजो
सारथीहै तिसने उठाय कर रथमै विठाय लि
या तहां जाते जाते नंदका घर ग्रौर चारो ग्रो
र गोपोंके वास गृह ग्रौर मनके मोहित कर
ने वाली ब्रजकी शोभाजोहै सो सव देखताभ
या फिर ग्रागे ग्रनेस मनोहर एक चोक जो
देख पड़ा तिसके वीच सुंदर रामस्याम दो
नो भ्राता दीन सखा दाता विराजमानथे ति

रा· नके रूपकी छवीको देखकर अक्रूरके नेत्र
भ· जोहैं सो इकटक लग जाते भये और प्रेमक
२८ रके ऐसा अचेतहो गया कि मुखमें बोलने
27 की भी सामर्थ्य नहीं रही राम और घनश्याम
की ऐसी माधुरी और मनोहर मूरती थी कि
जिसको देखकर कौन मोहित नहीं हो जाता
था फिर कैसी उपमाथी कि नील और पीत
बरणके वस्त्र जिनके और कानोंमें बड़ी आ २८

भावाले मकराकृत कुंडिल खेजन जो ममोला
कंज जो कमल तिनको लजादेने वाले लाली
मये चंचल नेत्र और सखा समूह के बीच
विराजमान हाथमै लीयेहुये कंचिनकी छिरी
हयडहावने की इछासें हाथमैही पकडी हुई है
जिनके हसनी और सावनके सरद बादर समा
न है जिनके शरीरका स्यामरंग और लंबिया
सुंदर भुजा हरण चंद्रमावत मुखकी मनोहर

१२
भ॰
२८

शोभा और वडी उज्जल आभावाली दांतोंकी पं
कती वडा विशाल हृदय कि जिसपर शोभा
देतीहै सुंदर तुलसीकी माला कटीजो कमरहै
तिसमें सजीहुईहै मनोहर किंकनी अर्थात
सुंदर तडागी दहनी ओर वलरामजी खडेहूये
हैं और वाम ओर खिलोंका खेय करेंने वाले भग
वान विराजमानहैं और जिन चरनोंकी अंकुस
धुजा कमल आदि रेखों करकें महिमाहै सोतिन।

न चरनोसे भगवान ब्रजकी भूमीको चिन्ह
न और पवित्र करके अपनी मायासे सुंदर
कीरती जोहै सो पृथवी पर जहां तहां बिस
तारण करतेहैं इह जगत नाथ धन्यहैं और
बडे दीन पालहैं इनके समान दीनोके उधा
रनेमे और कौन ऐसा उदारहै जो कोई इन
के चरनो की शरन लेताहै तिसको संसार
के भयसे ततकालही बचाय लेतेहैं फिर

१३
भ०
२५

29

कैसे भगवानहैं कि जिनके मुखमें वडा मंद
र मधुर मुसकानहै और अनसे दीर्घहै जि
नकी दया हष्टी और मातंग जो हसतीहै ति
सके समान जिनकी सुलभ गती अर्थात्
चलना कामदेवके मानको हरने वाली जि
नकी मनो हर मुरतीहै वडे अमोल कहीरे
और मुक्तामणीं जोहैं तिनको हृदय मे सुं
दर माला ऐसे सर्व अलंकारों करके भूषित

२५

सर्व विश्वके प्रकाशिक राम ग्रौर घन स्याम
मानो भूमीका भार उतारनेके वास्ते ग्रवतार
भयेहैं इस प्रकार ग्रक्रूर जोहै सो भगवानकी
ग्रपार छबीको देखकर धीरजसे रहित ग्रौर
थकत होकर ग्रानंद रूपी सरो वरमैं मग
न होजाता भया।९। चौपाई। पसो हृदि रथ
तें ननकाला। धावा मनमाव दीन दयाला।
चरन सरोज रूप वलवीरा। गिरो देउ वन

१२ भ. ३.

30

विकल अधीरा। आनंद बारधार दृगछाये। प्रे
म मगन तन दसा भुलाये। मन भाव देखि विज
गल निधिदाया। पुलकावली प्रकट भई का
या। गद गद गिरा भई अट पाटी। दसा प्रेम
कछु जाय न दाटी। अस प्रकारहिं जदुपति दे
खी। दाय लीन निज रूपा वेसखी। भरि भरि
भुजा मिले चैन पणामा। जाय न प्रेम प्रमोद
बखाना। बहुरि हरष वस प्रेम अघाये।।

३.

दीरिमिले वल राम सहाये। ठनि कलकर क
मलन सोगेही। लैगमने प्रभु सदन सनेही।
वहुरि जगल वीरन मनकासो। कनक प्रये
क दीन वैठासो। लागे विजन करन वल रा
मा। हेरहिं कृपा हृषि घन स्यामा। ठनिप्रभु
जानि पंथ श्रम भूरा। चापन लगे चरन प्रभु
रा। दोहा। वहुरि चरन नहिप्रेम जुत डारि
देव सरि नीर। लागे प्रक्षालन करन करन

१२
भ०
३१

कमल जडबीर।९।टीका।नव अक्षर जोहै सो
भगवानकी छबीमै मोहित भया हूआ तनका
ल रथको त्याग कर तिनके मनमत्व को था
वनाभया जाय करके राम और घन स्याम
के चरन कमलोंपर दंड वत गिर पडा और
आनंद रूपी जल जोहै सो नेत्रोंमै भराहूआ प्रे
मकरके आकुल तनसे अचेत दयाकीनिधी
दोनो भ्राता जोहैं तिनको मनमत्व देखकर।

३१

31

शरीरके रोमांच सब खड़ेहो जाते भये और ।
वानी भी गद गद अटपटी होगई कुछ नि
कलतीहै कुछ नहीं निकलती इसप्रकार
अक्रूरकी दशा देखकर भगवान अनुग्रह
से नरनहीं उठाय लेते भये और भुजा भरभर
के मिलने लगे तिस समयका प्रेम और सु
ख कहानहीं जाताहै तिससे उपरांत वल
रामजोहैं सो वडी प्रीती पूर्वक मिलते भये

१२
भ
३२

32

फिर दोनो भ्राता वडे सनमानसे तिसको घर
मै लेगये और तहां कंचिन के पलंघपर विठा
यकर वलराम जी पंखा करने लगे और भ
गवान कृष्ण हर्षी से तिसके मुखकी ओर
देख देख प्रसन्न होतेहैं फिर भगवान मारग
के आवनेका श्रम विचार करके अक्रूर के च
रनो को चापने लगे तिसतें उपरांत वडी प्री
तीसे दीनानाथ गंगाजल डारकर तिसके च

रनोंको अपने हाथोंसे धोवने लगे। ए। चौपाई।
पुनिप्रभु कहिंस वचन मनमाना। अंहै कुसल त
व कका सुजाना। नेइक टक चितवत प्रभुकाहीं।
प्रेम विकल कछु उचरत नाहीं। वहुरिकह्यो
प्रभु कका प्रवीना। हमरे दोभहुथा प्रति की
ना। तांते अपनो भवन सुहावा। जानि करहु
भोजिन मन भावा। अस कहि प्रभु निज क
रन लयाये। विंजन विविध रुचिर मन भाये

११ कहि कहि वदन नाम संहरा। दीन जिमाय मदिन
भ० ग्रहरा। पुनि कर वाय ग्राचमन नासा। रतन प्र
२२ यंक दीन कल वासा। नवदीन्यो बलराम सुधी
रा। तात तात कहि पानन वीरा। पुनि पहिराई
सुमन सुचिमाला। कह्यो हरष जुत वचन र
साला। कंस महीप दयागत ऐसे। जीवहू नास
निकट तुम कैसे। जिमि अज निकट अमल वि
विकेई। नहिन भरोस जीयन क॥

२२

छु नेई। हते स्रवन भगानी निज जासा। देवकि यद्यपि कौन अजासा। पै नहीं मिटो अथम अभिमानी। वार वार देव कि विलपानी। दोहा लागी दया ननानक तही उष्ट सभाव महान तम तांके घर वसत हो कका कवन कल्यान अस भाष्यो वलराम जव तव अक्रूर प्रवीन। भये पंथ श्रम विगत तव हरष मोद मन ली न॥ ११॥ टीका। फिर भगवान वडे सनमान

१२
भ.
२५

34

से कहते हैं कि हेप्रवीन चचा तुम प्रसन्न तोहो
जब दीनानाथने इस प्रकार कुसल पूछी न
व अक्रूरने कुछ उत्तर नहीं दिया नेत्रोंका इक
टक जोड़कर भगवानके रूपको देखरहाहै
तोफिर भगवान कहतेहैं किहे चचा तुमको
दुष्टाने कलेश दियाहोगा तोते अपना घर
जान कर अब भोजन पावो ऐसे कहि कर
के भगवान नानाप्रकारके विंजन जोहैं सो

अपने हाथों से लाय कर और सबका भिन्नभि
न्न नाम सुनाय कर अक्रूरको आनंद पूर्वक
जिमाय देते भये फिर आचमन कराय कर
बडे सतकारसे रतनोंसे जडे हुये पलंघ पर
बिठाय देते भये तब बलराम जीने माख सु
धीके वासते नान नान कहिकर पानका बीडा
जोहै सो लायदिया और पुष्पोंकी सुंदर माला
हृदय में पहिराय देई फिर बडे हरषसें कह।

१२
भ
३५

35

ने लगे किहे तात कंस राजा जोहै सोतो अतसे
निरदय और बड़ा कठोर है तुमतिसके पास।
कैसे जीवतेहो जैसे कसाई के पास बकरा हो
वे तिसके जीवनेका क्या भरोसाहै देखो देव
कीने यद्यपि अनेकही यतन कियेहैं तथापि
तिस दुष्टने भगनी अर्थात भैनकेनाते को भी
नही माना तिसके पुत्रोंको मारही दिया मै
जानता हूं सोतो अतसे दुष्ट स्वभाव वाला औ

र महानंदहै तब तिस प्रथम के पुरमै बस
तेहो तात हमारे को कैसे कल्यान होती ।
होगी जब इस प्रकार बल रामजीने कहा त
ब अक्रूर सुन कर मारग के श्रमसे रह
त होकर परम आनंदमै मगन हो जाताभ
या ॥११॥ चौपाई । राम स्यामसो प्रति पतिदाना
कह्यो कंसकर सकल बखाना । उदय प्रभा
त बोलि रथलीन्हा । बैठि चले तहि पर नव

१२
भ०
२६

36

नीन्यो। उमड्यो प्रेम सिंधु नहिकाला। रुदन लगी
सकल ब्रजबाला। हाहा कार पर्यो ब्रजमाहीं।
रही सरीर धीर कछु नाहीं। कर कर परत प्रे
म अरुझाना। बिरह बिबोद नजाय बखाना।
हो अक्रूर कहन का कीना। निरदय बिरह ह
म कन दीना। गोपि बिजोग सिंधु गन पारा॥
कोसामर्थ कथन संसारा। निज निज मति अ
न सार सुहावा। सूरदास कवि कोविद गावा।

२६

नेति नेति करि अन्त प्रकासो। तोसे कवन नख्यु मति वासो। रसिक जनन आधार र साला। गोपी विरह कठिन जग जाला। गो पिनस हश को संसारा। नाहिंन जड नेदन कहं प्यारा। तिन कहं पति पित्र सन तन जो ई। अहिंन जडपति सम प्रीय कोई। दोहा। सेस जीह सारद सुमती लेखक गाज सुख भेख। मसि समुद्र गोपी विरह तो नसक।

हिं कह्युलेख ।१२। टीका। तब अक्रूर जोहैं सो
राम और घन श्याम को कंसका कथन स
ब सुनाय देता भया तिस को सुनकर प्रात
काल होतेही संदर रथजोहै सो मंगवाय
लेते भये और तिसपर राम श्याम अक्रूर जी
ने बैठकर मथुराको चल पड़ते भये जब भ
गवानने प्रस्थान किया तब ब्रजमैं विरहका
समुद्र जोहै सो उमड़ता भया और ब्रजकीवा

३७

ला मानो सब डूबने लगी संपूर्ण ब्रजमें हाहा
कार पड़गया शरीरमें किसी का भी धीरजन
हीं रहा प्रेमके आंसू जोहैं सो नेत्रोंसे फड़फड़
कर पड़ने लगे विरहं विवाद कुछ कहान
हींजाता सब कोई ऐसे कहताहै किहो अक्रू
र तुम कैसे निरदयहो और तुमने इह क्या कि
याहै जो कृस्नप्रमात्माका विजोग हमको
दियाहै इस प्रकार गोपियोंका विरहं जोहै ।

सो समुद्र वत अपार है तिसके कथन करने
को कोई सामर्थ नहीं है अपनी अपनी बुद्धी
के अनुसार सूरदास आदि कवी और पंडि
त जनोंने गायन किया है तिसका अन्त ति
नको भी नहीं आया और कौन कहि सकता
है इह गोपियोंका विरह जो है सो रसिक ज
नोंका एक आधार है जडुनाथ को गोपियोंके
समान संसार मे और कोई प्यारा नहीं है ।

38

ऋौर गोपियों को जडनाथके समान पतीपि
ता ७३ ऋौर अपना शरीर भी प्यारा नहीहै
सेसरूपी जीभ ऋौर सारदा बुडी समद्रकी ।
मसी अर्थात सियाही ऋौर लिखने वाले
गणपती होवें तोभी इह गोपियों का वि
रह विजोग लिखानहीं जासकताहै । ए ॥
चौपाई । सुफलकसुत जग आतन काहीं ।
लेत चलो मथुरा रथमाहीं । राम स्याम छ

१२
भ.
३५

बिहगन निहारी। मगन मोद तन दसा बि
सारी। तंट नगरतें चले सिधाई। अैसे अस्थ
न पहुंचे तब आई। जमुना तट अवेर जीय
जानी। लगे करन मज्जन सुखमानी। तब
अस जीय विचार प्रभु कीना। इन लोगन
ब्रज मे दनि कीना। मन वच करम दास इ
ह मोरा। प्रेमनेम कछु हृदय न थोरा। तो
ते ब्रज रज प्रकट प्रभाऊ। देहूं आज निज

३५

39

जनहिं दिखाऊ। जब प्रकार जमना जलजाई मज्जन लगपो प्रेम सरसाई। तबतहि निज कौतक भगवाना। दीन नरत वैकुंठ पठाना। तहं निज सकल विभूति सुहाई। दीन दिखाय भागँत गाई। नव है पुलक गात पति दाना। कौन हुस कल प्रमनति नाना। जल तें वहिर बहुरि निकसायो। रमा रमन पद सीस निवायो। प्रभ कौतक अदभुत जीय

व

१२ भं॰ ५॰

जानी। बहुरि बहुरि बंदित पगपानी। दोहा। बार बार लागेण करन बिनय जुगल कर जोर। नाथ धन्य धरनी कियो मोहि प्रथम सिर मोर। टीका। नव स्वफलक का पुत्र अक्रूर जो है सो रामस्याम दोनो भ्राताको रथमें बिठाय कर मथुरा को लेजाता भया और तिन की छबी को देख देख बलिहार होता है नंद नगर से जो चले तो सूरजके अस्त होने का

५॰

तहां आय पहुंचे कुछ अबेर जान कर जम
नाके किनारे बैठ्हाल्दे पूर्वक सनान करने
लगे तब भगवानने हृदय मै विचार किया
कि इसने ब्रज भूमीमे लोटन कियाहै और
मन वचन काया करके मेरा हृढ भक्तहै इ
सके हृदय मै प्रेम नेम कुछ थोड़ा नहीहै ।
ताते ब्रजकी रज अर्थात ब्रजकी धूड़ी जोहै
तिसका प्रभाव आज इस अपने जन को ।

१२ दिखाताहूं इतने मै जब अक्रूर बडे आनंद से
भ जमनामै स्नान करने लगा तब तिसको भ
५१ गवान ने अपने कौतकसे तुरत वैकुंठ मै
पहुंचाय दिया तहां तिसको अपनी संपूर्ण
विभूती कि जो श्रीभागवत मै गायन की हु
ईहै भली प्रकार दिखाय देते भये ऐसे भग
वानकी महिमा देख कर अक्रूर जोहै सो ह
र्ष करके प्रफुल्लित भया हुआ नाना प्रका
५१

र भगवानकी अस्तुती करने लगा फिर जब
जमुनाके जलसे बाहिर निकला और सारस
न जो लक्षमी के पती नारायणहैं तिनके
चरनो पर सीस नावताभया भगवानके अद
भुत को तकको बिचार कर बार बार बंदना
करताहै फिर हाथ जोड कर बडी नम्र बा
नीसे बिनती करने लगा कि हे दीनानाथ
मैतो अधमो बिखें प्रथम गिना हुआथा प

१६
भ.
५३

43

वैन आपने ऐसी अनुग्रह करी कि पृथवी पर
धन्य धन्य करदिया ।१३। चौपाई । अस कहि जु
ग भ्रातन सहित गृहके । लावा पुर छवि यान स
हृदे । अति पुनीत सब गिरा उचारी । प्रभु नि
ज चरन सदन जनधारी । चरन वार सों कुल
परिवारा । आज करहु पावन प्रभु सारा । क
हिस हृदय जन प्रीति सनेहू । मैं ऐसे सजन
तव गेहू । ककामोर तव प्रानन प्यारे । सब

५३

विधि स्नावद रुचिर हितकारे । मन्य जानि प्र
भु वरणन काहीं । चल्यो दान पनि निज गृह
माहीं । तव मधु पुरी निकट सखदाई । वैठे प्र
भु विलो कि अमराई । हरि आगमन नेदादि
क पाये । दरसन करन हरष जन आये । तवप्रभु
ग्वाल बाल जनरामा । अपे अकन पुर देखन
कामा । कीन प्रवेस रुचिर पुरआई । जाहि म
नि जन मन लोचि लुभाई । नगर सोर चहुं ।

१२
भ.
५५

ओर वढैया । आये राम कुमल जग भैया । खान पान तन दसा विसारी । देखन आई नगर नर नारी । दोहा । धारि वमन वसीन वपु चलीदेवि गान धीर । सठ मूरति देखन हगन राम कुमल जगवीर । कवित । जित जित जात जग जीवन जगम आन तित तित तीये दरसात अन रान नैन । आली पनो स्यामल सिलोने यो गबंर गात मानस हरात निरखात छवि कोटि । ५५

सैन॥ चितवनि चारु सों जुरा वत हैं चित चोप लावत ललन आप आमि ललितात वैन। भूरी भाग आज ब्रज कर नर नारिनके जांके दृग गोचर प्रमोद सात मात दैन। मोहनने कीनो निज रूप को मोहन मानो मोही ब्रज वनता सतन मोरही नचैन। एक टक चित्र सी विलोकत सकल ठाढी वाढी गाढी प्रीति पल कल नवप्रभैन॥ एकके ऊपर एक

45

आकुल परत जात मारत अघात मार टिके
नटिकन देत । रीझी रीझ वारी सारी ब्रज
मेदनीकी नारी राम गिरधारी दोऊ देख कै
कृपान केन । दोहा । तहां रजक इक कंस
कर लिये वसन मग जात । नहि पूछ्यो ज
दुवीर अस वचन वदन मुसक्यात । ४ ॥
टीका । इस प्रकार अक्रूर विनती करके बड़े
सुख पूर्वक रथपर विठाये हुये दोनो भा

नाको अपने घरमै ले आवता भया फिर को
मल वानीसे प्रार्थना करने लगा किहे नाथ
अब अनगृह करके मेरेघरमै चरन धारिये।
और चरन कमलोंके जलसे मेरे घर और प
रि वारको पवित्र करिये तव भगवान कहने
लगे किहे सजन सनेही मै अवश्य तेरे घर
मै चलूंगा को कि तुम मेरे अनसे प्राण प्या
रे और सुख दायक हित कारीहो ऐसे भग

वानके कथन को सत्य जानकर अक्रूर जीके

से। चरनो पर वार वार प्रणाम करके अपने

घरको चला जाता भया तव मधुपुरी जो म

घराहै तिसके निकट वडी सुखदायक औ

र मनोहर अमराई अर्थात् आवोंका वाग देख

कर भगवान तहां वैठ जातेभये तव नंदला

ल महाराजका आगमन सुनकर नंद आदि

क सव गोप वडे आनंदसे दरसन करनेको

चले आये जब सूरजके अस्तन होनेका स
मय भया तब भगवान बलराम और ग्वा
लबालों के समूह सहित घरके देखने के
वास्ते चले आवते भये जब मुनि जनोंके म
नको मोहित करने वाले राम स्याम दोनो
भ्राताने घरमें प्रवेशकिया तब तिनके आग
मनका संपूर्ण नगरमें शोर पडजाता भया
नगर के नर और नारी जोहैं सो सब खान

१२
भ.
५८

पान और शरीरकी दशा बिसारे हूये दरसन
करने को धाय आवने भये उताय लके मारे
सिरका वस्त्र गले मे और गलेका सिरमै प
हिर कर राम स्याम की कोमल माधुरी मू
रती देखने को सबकोई चले आवता भया
तब जहां जहां जगतके जीवन दोनो आता
जातेहैं तहां तहां स्त्रीयों के नेत्र लोभी भये
हूये दरसन को ललचावते हैं और परस्पर

47

कहतीहैं किहे सखी इह स्यामल श्रौर गौरे शरीर अ्रनसे सलोने मनको हरनेवाले मानो कोटि काम देवकी छबीको लज्जा देते हैं फिर कैसे हैं कि नेत्रोंकी सुंदर दृष्टी से चित्तको चुरावतेहैं श्रौर अमृत के समान मधुर बैन बोल कर हमारे हृदयको चटक लगाय कर प्रेमके वश करते जातेहैं श्राज ब्रजकी स्त्रीयों के धन्य भागहैं कि जिनके

नैत्रोंके मनभावे इह चौदस भवनोंको आनंद
देने वाले मतलब हैं देखो मोहन भगवानने
कैसा मोहन मंत्र कियाहै कि ब्रजकी सहर
वाला मोहित होकर अचेत होगई हैं चित्रव
त एकटक नेत्रजोड़कर सबदेखतीहैं प्रीती
ऐसी गाढ़ी और सरस भईहै कि देखे बिना
चित्तको चैन नहीं आवता एकके ऊपर ए
क व्याकुल होकर पड़ती जातीहै मानोकाम

देख धकेलताहु श्रा टिकने नहीं देताहै इस
प्रकार ब्रजकी सब नारी जोहैं सो राम श्या
म दोनो भ्राताकी मनोहर मूर्ती को देख दे
ख मनमेंरी फकर मोहित हो जाती भई
तब तहां मारगमें कंसका एक रजक जो
धोबीहै सो वस्त्रोंका भार लिये जाताथा ति
सको देखकर भगवान जिस प्रकार पूछ
तेहैं सो श्रागे कथन होताहै । ५। चौपाई ।

१२
भे०
४९

49

कोतम रजक कवन कर ऐहौ। हमकहूं प
हु वसन कछु दैहौ। कहिस रजिक अस व
चन अधीरा। वेगवार मति अधम अहीरा।
मांगन पट निज वदन न देखी। भयो मोहि
अचर्ज विसेखी। इह काम छुद्र गोप कर ला
यक। वसन अमोल कंस नर नायक। सुनि
अस अधम वचन जदुनाथा। आसि प्रहारि
काट्यो तहि माथा। दीना घाल वसन सव ।

लीने। कछुकवि भक्त सावन कहं कीने। त
व इक रहो धरम मति नामा। वाइक भक्त
कुल चनस्यामा। जग वीरन कहं आवन
देवे। उठो जानि निज भाग वसेवे। नमत
परो चरन हरखाना। प्रेम वार नयनन छुटि
जाना। मोहि किंकर निज जानि अभेवा। क
हिये दीन घाल कछु सेवा। मांगि देहु तव
वसन हमारे। कृपा सिंधु अस वचन उचारे।

१२
भ
५०

वाइक मांगि दिये पट ताह्नो। अभय कीन त
हि सुर नर नाह्नो। निज करुणा ते विस्व प्र
कासा। सब विधि कीन कृतार्थ तासा। दोहा
संपति बलविद्या विमल सुमति सुजस सु
विचारु। तासुदेत करुणाय तन कीन स
क संसारु॥१५॥ टीका। भगवान कहते हैं
कि तू कौन और किसका पोथीहैं इह वह
हमकोभी कहदेवो तबसो महराव पोथी नि

५०

र मंक हो कर कहने लगा रेगवार अहीर
मेरेको वडा आचर्ज आवताहै कि तू अपने।
मालकी ओर देखकर वसतर नहीं मांगता
हैं इह तो अमोल वस्त्र राजा कंसके हैं क्या
मूर्फ कुछ लड गोपोंकी लायकके हैं इसप्र
कार तिस अधम धोवीके मुखसे वचन सुन
कर भगवान वडे कोपमैं हो जातभये और
ततकाल खडगका प्रहार देकर तिसका सी

१३
भ०
५१

51

स जोकुछ सो काटडाला और वस्त्र सब लेकरस
खा जनो को वांट देते भये तब एक धर्म मती
नामकरके बाइक अर्थात दरजी भगवान
का भक्तथा सो रामस्याम दोनो भ्राताको ।
आवते देखकर बडी प्रीती भक्तीसे उठकर
नेत्रोंमे प्रेमजल भरेहुये नम्र गतीसे चरनो
पर सीस धरदेता भया और कहने लगा
कि हे दीनदयाल मै आपके चरनोका दास

५१

है मेरे दीनके लायक जो सेवाहो सो कहि दी
जिये तव भगवान कहने लगे कि हे भक्त
और सेवा तोकुछ नहींहै परंतु इह हमारे व
स्र सजा य देवो तिसने भगवान की आज्ञा
पायकर ततकालही वस्त्रोंको स जायदिया
तव भगवान कृपा निधान अनसे प्रसन्न हो
कर तिसको संसारमै धन संपती वल विद्या
स्नाव और सजस इत्यादि सब देकर अभय ।

१२
भ
५२

और कृतार्थ रूप कर देते भये ।५। चौपाई । आ
गल चले बहुरि जग आता । सखन सहित पू
रण मदगाता । रहा एक मधुपुरी मझारा ।
मालाकार भक्त प्रभु प्यारा । नाम सुदामा वि
दित सुहावा । भवन तास कंचिन कृत भावा ।
ताकर सदन गवन प्रभु कीना । सो देखत मन
हरष प्रलीना । चरन परत अस वचन प्रका
सा । मै माली प्रभु तव पद दासा । पावन कर

५२

हू मोर प्रभ गेहू। चल्योलेन अस भाखि सने
हू। सादिर ल्यावि आसन वैठारे। धन्य भाग
निज नास विचारे। जांके सदन चराचर ग्या
ता। आये राम स्याम जग भाता। अरध्यादि
क आचमन कराये। धूप दीप नैवेद लगा
ये। कीन्या दीन घाल कर अंगा। चंदन ले
पन हृदय उमंगा। जस पूजन प्रभुकर न
हि कीना। तस सनमान सबन सबदीना

१२
भ
५२

विनय कीन कर जोरि वहोरी । आज कीन प्र
भु सचि जल मोरी । जीयन जनम धनधाम
हमारा । जान्या आज सफल संसारा । उधरे
पितर देव ऋषि मोरे । आज प्रसाद जगत
पति तोरे । दोहा । उदय भाग नहि इवषक
र धन्य जनम जगनाम । धरहु सदनजहि
चरन तव देव हरन भव त्रास । ९ । टीका ।
तव फिर सखोंके सहित रामस्याम दोनो

५२

भाता बडे आनंद पूर्वक आगे चलने भये न
हो मथुपुरी मे एक मालाकार कि जिस को
माली कहते हैं सो भगवानका अत्यंत प्या
राभक्तथा नामजिसका सुदामा और घर
जिसका केविन करके एक बडा सुंदर ब
ना हु आथा तिसके घरको भगवान चले
आये सो दीना नाथको आवते देखकर प
रम हरषसे चरनो पर दंड प्रणाम करके वि

नती करने लगा कि हे दीन बंधु मैं मालीग्रा
पके चरनोका सेवकहूं चलिये मेरा घर
पवित्र करिये ग्रैसे कहि कर भगवानको
वडी प्रीतीसे लेग्रायग्रा ग्रौर मनमानसे प
वित्र ग्रासनपर विठाय कर ग्रपने भागों
की वडाई मानता भया कि धन्यहैं मेरेभा
गजो जिसके घरमै सर्व चराचरके पालक
राम ग्रौर घन स्याम दोनो भ्राता ग्रायेहैं ।

ऐसे कहिकर अर्घ पाद आदि पूजनकिया और धूप दीप नैवेद लगायकर दीनानाथ के अंगोंको चंदनका लेपन देताभया जै सेतिसने भगवानका पूजन किया तैसेहीं सब सखा जनकाभी मनमान कर्ताभया फिर हाथ जोडकर विनती करनेलगाकि हे दीनानाथ आज आपने मेरा संपूर्ण प रिवार पवित्र कर दियाहै अब मैंने आप।

१२ ना जीवना और जनम जगतमै सफल जाना
भ है और मेरा धन धामभी सफल भयाहै हे
५५ जगतपती आज तुमारे प्रसाद करके मेरे
55
पितर देवता ऋषी जोहैं सो तिनकाभी उ
द्धार होगयाहै तिस पुरष के वडे उदय भा
गहैं और जगतमै धन्यहै तिसका जनम
कि जिसके घरमै संसारका भय दूर कर
ने वाले देव तुम चरन कमल अपने धारन ५५

करो। ९। चौपाई। माली कर सुनि वचन सु
हाये। रहेमोन संस्तनि सुखदाये। तव मा
ली प्रभु जिय कर पाई। लखत विपुल निज
भाग वडाई। कोमल सुमन सुगंधित ।
नीकी। विर चत माल ललित प्रीयजीकी
राम स्याम कल कंठ सजाई। औरह सुख
न दीन पहिराई। कुसल विलोकि प्रीत नि
ज जनकी। मागहु कहिस भक्त हरिवम

नकी। रूप पदकै प्रहृत पद चाहू। कैविधिप

ट ससिधर पद माहू। लेहू भक्त नहीं उरबंभ

तोरे। अवहिं देहं कछु वेरन मोरे। माली

जोरि जुगल कर माखा। इनकर मोहि नना

घ अभिलाखा। निजपद भक्ति संत सिव का

ई। इहमोहि देहु जनन सुखदाई। प्रभपद भ

क्ति सरस जग आना। सेव सेष पद नाहिंन

जाना। दीननाथ नहिदेखि अकामा। निजपद

भक्ति दीन अभिरामा। मानहुं सम्पति अचल
सहाई। दीनी नाम घाल जडवाई। लोक अलो
क सजम सविहता। दीन्यो नाम दया निधिस्
ता। हरिसम को दाता जग अहीं। एक देत श
त गुण प्रकटैहीं। दोहा। नव वल संज्ञत सख
न हरि मंदमंद मुसकाय। चले कलिन हुव
रि हगन परी हरषि प्रभु आय। ९। टीका। असे
वेरे प्रेम हरित मालीके वचन सुन कर जग

रा
भ
५८

नके सुखदाता भगवान मोनहींरहे कछु उत्त
र नहीं दिया तब मालीने भगवान के हृदय
की जानकर और अपने भागों को बडाई ल
खकर अतसे मनोहर सुगंधी वाले पुष्पों की
माला रचकर प्रीती पूर्वक रामस्याम दोनो
भ्राताके कंठोंमे सजाय देई और तैसेही भक्ती
पूर्वक सब सखा जन कोभी पहिराय देई त
ब भगवान निज अपने भक्तकी प्रीती देख

57

कर प्रसन्न हो जाते भये और कहने लगे
कि हे भक्त अब तेरे मनकी जो रुची है सो
मांग नृपपद की इंद्रपद की ब्रह्मापद की
शिवपद इत्यादि जो इच्छा है सो ले तेरेको कु
छ दुर्लभ नहीं है मेरे देनेमैं अब देर नहीं
ऐसे भगवानको प्रसन्न देखकर माली हा
थ जोड कर कहने लगा कि हे कृपा सिंधु
इह पद जो हैं सो इनको मेरेको कछु अभि

१२ भं ५८

58

लाखोनहींहै मैंतो केवल आपके चरन क
मलोंकी भक्ती और सिवकाई चाहताहूं सो
ई अनुग्रह करके मेरेको दीजिये हे दीना
नाथ तुमारे चरनोकी भक्तीके समान सं
सारमै और कोईभी वशेष पदनहींहै इस
प्रकार भगवान तिसको जगतके विषयों
से निरलोभ और निसकाम जान कर अ
पना सुंदर भक्ती पदजोहै सो कृपा करके

देते भये मानो दया सिंधुने तिसको एक अ
चल सम्पती देकर अभय करदिया और
लोक परलोकमें संदर सुख और सुजसका
पात्र वनाय दिया देखो प्रभुके समान ऐसा
कौन दाता है जो एकके दिये पर सौगुएणा
देते हैं अर्थात थोड़ेपर हीं रीझकर बहुत
लाभ दे देते हैं तिसतें उपरंत भगवान वल
राम और सव सखा जनके सहित तहांसे

मंद मंद गती फिर आगे को चले नव दीनाना
थको मार्गमै आवती हूई संदर कुवरी जोहै
सो देख परी। ८७। चोपाई। बैकशाव कर लिये
सुहावन। कलिन कटोरि कनक मन भाव
न। श्रीखंडिन कुंकुम सन पूरी। नकत जात
व हूं किन हगफरी। सुंदरि जब समीप कछु
आई। नव नंद लाल कहो मम काई। हमक
है अंग राग इह देहो। भामनि मन बांछित

निजलेहो। कुबरी कह्यो कंस नृपकेरी। दीना
नाथ मैहूं मैचेरी। इह चंदन प्रभुतें प्रीय ना
हीं। अस कहि प्रीय हरषि मनमाहीं। हरिब्र
ह्म मन हरन सुहाई। अंखि दृगन पथ मा
न सलाई। धन्य भाग निज संसृति जानी।
सादर अंगराग निजपानी। प्रभु कर अंग
लगावन लागी। अंग अंग पूरण अनुरा
गी। तव निज हृदय गुन्यो जडताई। इहिफल

२
भ
६.

60

उचित दरस सिव काई। अस कहि जगम
अंगुरि निज पाना। यशो चिवक नहि रूपा
निधाना। पगअंगूठ सन पग दविलीना।
सुखिउठाय ऊपर जब कीना। दोहा। नव
ह्रवर गात रूप घन हगमग वनस वनी
य। लषि लाजित्रिय मदन मनु मनुज
कवन रमनीय। ७। टीका। सो ह्रवरी के
सीधी कि किशोर अर्थात नवीन जवा य्र

वस्त्रा ओर हाथमेलिये हूये कंचिन की क
टोरी चंदनकेसर इत्यादि सुगंधी दर्वो करके
परिपूर्ण नेत्रोंको चंचलकिये हूये चारो ओ
र देखती चली आवती है इस प्रकार जब
निकट आयगई तब भगवान मुस्काय
कर कहते हैं कि हे भामनी इह अंगराग
जो तुटनाहै सो कुछ हमको भी देवो ओर
अपना मन वांछित फल लेवो तब कुवरी

१२ कहने लगी कि दीनानाथ मै कंस राजा की
भ बेरीहूं इह जिसके वासते लिये जातीहूं अब
६१ आपने मांगाहै तो इह मेरेको कुछ आपसे
प्यारा नहीं है ऐसे कहि करके हृदयमै ब
डा हरष मानती भई नंद लालकी मनोह
र मूर्ति जोहै तिसको नेत्रों के मार्गद्वारा खैं
चकर और हृदय मे लाय कर अपने भा
गों को धन्य मानती भई फिर अंग अंग
६१

प्रीती और प्रेम करके पति हर्षी भईहुई सो
अंगराग जोहै सो अपने हाथोंसे भगवान
के अंगों को लगावनेलगी तब जगन्नाथ
जी महाराजने हृदयमे विचार किया कि
इस कुबरी को हमारे दरसन और सेवाका
कुछ फल होना चाहिये ऐसे विचार कर
दीन बंधूने अपने हाथकी दो अंगुलियोंसे
तिस की ठोडी पकड कर और पाउं के अग्र

१२ ऐसे पाउं दवाय कर मुखको उठाय कर ऊप

भ॰ र जो किया नव ननकालहीं छुवनसे रहित

६२ सीधी होकर मृगके बालक समान नेत्रों

62

वाली अंगनहीं रूपवती होजाती भई मानो

जिसको देखकर कामदेवकी स्त्री भी लज्जा

को प्राप्त होतीहै और मानवी स्त्री की कौ

न गिनती रही। ९। चौपाई। हरि सरूप स

नि मानस लोभा। देखन कीन मदन नहि

६२

सोभा। अंचल छोर गहित निज पानी। बो
ली हसि कटाक्ष जुत बानी। प्रीतम चलहु
सदन सभ मोरे। निकसत प्राण तजत अब
तोरे। नाहिंन छिनक सकहुं तजि तोही।
मै मूरति मउ स्यामल मोही। कुबरी करस
ति विनय विसेखी। सकुचि गये प्रभु वल
तन देखी। भाखे मोर सदन नव भामन।
हैहैं देव काजकरि आवन। अस मउ वच

रा
मं०
६३
63

न सनत भगवाना। मह्हां प्रमोद कुवरि उर। माना। ग्रंविल तजत रावन निजकौना। जड़ नेदन सहि प्रीति प्रलीना। प्रभु पन भंग ते। ग महि कोने। राज मल्लादि प्रचएड हतीने। पठे वहुरि उडव व्रज काहीं। ग्राए गये कु वरी गृह्ह माहीं। मणिगण जटित भवन न हि सोभा। जाकर लखत इंद्र मन लोभा। कुवरी देखि हरष हग नीरा। गई लेन ग्रा

६३

गल धरिधीरा। दोहा। लपाई कर गहि सदन
निज रुचि प्रयंक बैठार। भूरिभाग निज जीय
गुनत किय विविध मनुहार। ८। टीका। त
व कुंवरी जो है सो मुनियों के मन को मोहि
त करने वाला भगवान का सुंदर रूप देख
कर कामदेव के वश हो जाती भई पीतांबर
का लड पकड कर मुसकावती हुई अंतसे
कटाक्ष जणाय कर वचन कहिने लगी कि

१२
भ
६४

64

हे प्रीतम अनुग्रह करके मेरे घरमे चलो मै
तमको अब त्याग नहीं सकतीहूं इह तमारी
मनोहर स्यामल मूर्ती जोहै सो मेरे हृदयमे
बसगईहै अब इसके विजोगको मेरे प्राण केसे
धार सकेंगे इसप्रकार कुबरी की विनती सु
नकर भगवान जोहैं सो बलराम की ओर
देखकर हृदयमे कुछ सकुचमान होय गा
ये और कहने लगे किहे भामनी तेरेघरमे

६४

मेरा आवना अवश्य होवेगा पवंत विलंव इ
हहै किमैने कुछ देव कार्ज करनाहै सो क
रके फिर तेरे घरमे आऊंगा ऐसे भगवान
का वचन सुनकर सो कुंवरी परम हरषको
प्रापत होतीभई। ओर पीतांवरका लउ जो
पकड़ा हुआथा सो छोड़ कर वार वार प्रणा
म करती हुई भगवान की प्रीती वाली हो
कर अपने मार्गको चलीगई तव कुसुभ

१२ भ. ६५

गवाननें रंग भूमीमें अर्थात अखाडेमें धनु
ष भंगन करके गजजो हस्ती और चाडूर आ
दिक मल्लजोहैं तिनको मारकर उद्धवजीको
व्रजकी ओर पठायदिया और आप भगवा
न आनंद पूर्व कुब्जाके घरको जातेभये
तिसके घरकी कैसी शोभाथी कि सुंदर म
णियों करकैं जटन और चित्रोंसे चित्रन कि
या हुआ मानो इंद्रके भगनको भी लज्जा

६५

देखाथा क्यों कि जहां तीनलोक के नायक
भगवानने चरनधारे तिस घरकी ऐसी उ
पमा होनी कुछ वडी वात नहींहै तब कु
वरी भगवानको आवते देख कर हरषनीर
से नेत्र भरेहूये प्रेमकरके अधीर भईहुई
उतावलसे आगे आयकर वडी प्रीती पूर्व
क भगवानका हाथ पकड कर घरमे ले
गई तहां अतसे सुंदर और पवित्र पलंघप

र विदाय कर और अपने भागोंकी वडी प्र
लाचा करके अनेक प्रकारके आदर सनका
र जोरैं सो करती भई। ८। चौपाई। रमा स
मत प्रभ नाह वडाई। दीनी विविध वदन
निज गाई। को कृपाल जडपति सम नाहीं
हरत दीन उर उमहु सवाही। कहां अ
नंत अजर जग पालिन। कहां कंस कर
कुवरि मालिन। जानि कपट गन चंदन

६६

सेवा। मिले जाय नहि आउ अभेवा। भगवन
कहं केवल संसारा। सरल कपट गत प्रेम
पयारा। ऊचनीच कुल जाति वडाई। इन कर
नहिं रीझत जडुराई। सदादीन बंधु कररीती
रीझहिं लखि अविरल जनप्रीती। अस प्र
कार कुवरी कर नांह्ने। करन कृतार्थ सर
नर नाह्ने। पुनि वलराम सहित भगवाना।
कीन भवन अक्रूर पयाना। सुनि आगमन

भमन जड़ताये। अति प्रमोद मानस निजकाये
चलेपाहार आगाल अकुलाई। प्रेम मगन तन
दसा भलाई। चरन परत अस गिरा अलाई।
नाथ सनाथ कीन मोहि आई। दोहा। चरन क
मल रजसीसधरि वंदिराम पदपानि। सखिन
जहारन सदन निज चल्या लेन सुख मानि।
टीका। जब कुवरीने इस प्रकार भगवानका
सनमान किया तब दीना नाथ प्रसन्न होक

भ·
९८

र तिसको लक्ष्मीके समान बडाई देकर आप
ने मुखसे अनेक शलाघा करनेभये देखो ज
ऊनाथ के समान कृपाल और दीन जनो का
आधार और कोई नहीं है कहां अनंत और
अमर अखंड सर्व जगतके पालक भगवान
और कहां कंसकी कुबरी मालिन तिस की
कपटसे रहित एक चंदनकी सेवा जान कर
दीनानाथ आप तिसको घरमै जायकर मिलने

भ॰ ६८

68

भये तातें भगवानको संसारमै सरल और क
पटसे रहित केवल प्रेमही प्याराहै ऊंच नीच
कुल जाती और बडाई जोहै सो इनकरके भग
वान नहीं रीझतेहैं दीन बंधुकी सदा पद्धी री
तीहै कि अपने जनकी अवविल कि जिसमै
कोई विरल नहीं है ऐसी प्रीती देख कर तत
कालही रीझ जातेहैं इस प्रकार भगवान न
ही कुवरीको कृतार्थ करके फिर बलराम ।

६८

जीके सहित बडे आनंद पूर्वक अक्रूरके घरको
चले आवतेभये तव अक्रूर जोहै सो कृपा नि
धान भगवान का आगमन सुनकर हर्षसे
गद गद होजाताभया और प्रेम करके ऐसा
व्याकुल होगया कि शरीरकी दशाभी भूल
गई तव उतावलसे द्वारपर आगेही धायक
र चरनोंपर गिर जाता भया और फिर हाथ
जोड कर कहने लगा किहे दयानिधी आज

१२
भ
६९

आपने कृपाकरके इस अनाथको सनाथ कि
याहै ऐसे कहि करके भगवानके चरन क
मलों की धूरीको सीस पर धारन करके।
फिर वलरामके सहित भगवानके सव स
वैं को प्रणाम करता भया तिसते उपरांत
वडे आनंद पूर्वक सवको अपने चरमै लेग
या।९।चौपाई।मंदिर भवन रतन संयाम
न। वैठारे जग भान कुलासन। गहित कर

६९

69

न केचिन अंगारो। रामस्याम पद पद्म पखा
रो। चरन वार सिंच्यो गृहमारी। कहत धन्य
भल आज हमारी। भूल्यो विधी करन कल
लागा। पूजन हृस देव मन रागा। करि जस
नस पूजन भगवाना। धारत अंक चरन सु
खमाना। चापन लग्यो हरष सरसाई। जानि
भाग निज विपुल वडाई। निकसत गिरा प्रेम
वस नाहीं। मन मिष लावन रूप प्रभकाहीं

१२ सुधि संभारि पुनि बचन बखाना। धन्य धन्य तव
भ॰ कृपा निधाना। मोहि सम पतित नाथ सम पा
७॰ वन। होहिंनको करुणा सर सावन। तव ब
70 जमेक मेरु रज करने। कृपा नकेन अधम
उद्धरने। जोन होत अस दीन सनेहू। तोमो
मे उधरत कस पहू। ससाकि मंद प्रभ बचन
बखाने। तव हमार कुल कका सयाने। दो
हा। हम बालक जग जनत नहिं बचन सुभा ७॰

सभ त्राल। छिमह सदा नव छोह निज दाऊ

दया नियान। २। टीका। नव अक्रुर वडे हु

लास श्रोर सनमानसे दोनो भ्रातोको सुंदर

पलंघपर विठाय कर श्रोर गंगासागर मे

जल भरकर रामस्यामके चरन कमलों को

प्रछालन करनाभया अर्थात धोवनाभया

नव चरनोका जलजोहै सो वडी प्रीती से

सेहरणी छरमे सिंचन करके कहताहै कि

आज हमारी जन्म पवित्र भईहै फिर प्रेमक
रके विधीसे भला हूआ और और प्रकारसे
हीं पूजन करताभया जिसके उपरान्त भग
वान के चरनोको अपने अंक [illegible] गोद
मे धार कर बडी प्रीती और भक्तीसे चापने
लगा और अपने भागोंकी वडाई मानने ल
गा परंतु प्रेम करके ऐसा उनमत्त होगया।
जो मुखसे कुछ वचन भी नहीं निकसता प

क टक नेत्र जोड़कर भगवान के रूपको देखे
ताहै कुछक देरके पीछे शरीरकी सुधी सं
भालकर कहनेलगा किहे कृपानिधान ध
न्यहो तुमधन्य हो क्योंकि मेरे समान कोइ
पतित अर्थात पापी नहींहै और तुमारे समा
न कोई पतित पावन अर्थात पापियों को प
वित्र करने वाला नहीं होगा तुम कैसे हो ।
कि मेरु जो सुमेरहै तिसको रज अर्थात धू

१२
भे
७२

ड़ी करदेते हो और रजको मेरू करदेनेहो हे
अधम उधारन भगवान जो तुम ऐसे ना हो
ते तो मेरेसे अधमो का कैसे उद्धार होता इ
स प्रकार अक्रूरके प्रेमरसके भीगे हूये व
चन सुनकर भगवान मंद मंद मुसकाते हू
ये कहने लगे कि हे चचा तुम हमारी कुलमें
बड़े सुचड़ और सुधा नेहो और हमजो हैं सो बा
लकहैं कुछ शुभा शुभ के ज्ञानको नहीं।

७२

ज्ञानते तुम दाऊ अधीन वडेहो हमारे पर
दया करके तमाहीं करते रहना। ४०। चौपा
ई। इहनव वात्सल भाव हमारा। रावेहु
सदा हृदय निज प्यारा। वात्सल रस सह
श नहि आना। हर विरिंचि कमला मनमा
ना। अस प्रभु वचन सखा पन देखो। माति
भक्ति सो हृदय वसेखो। कवन धन्य अ
क्रूर समाना। जहि व्रज रज प्रि य मानस।

माना। परसित जाहि प्रभाव सुहायो। हरि वै
कुंठ दृगन दरसायो। आय वहोरि सदन ज
उराई। व्रज रज को प्रभाव सुखदाई। करहिं
जतन हठ मुनि जन नाना। जे पद परम न
आवत ध्याना। अब अक्रूर अंक पदनेहू। र
हो नरन नहि कवन संदेहू। इवहिं दीन पर
दीन सनेही। जो विस्वास सदा दृढ़ तेही। ज
न विस्वास नाथकर छोहू। मेटत इमत वि

कट जग मोहू। अब विचार कछु आन नकी
जै। प्रभु कहं प्रीये प्रेम लखि लीजै। विना प्रे
म साधन सब नाना। म्रग त्रसना कर नीर
समाना। दोहा। रीफत केवल प्रेम पें संस्र
ति नेट कुमार। तांते तजि सवज तन हठ
करिये प्रेम आधार। विनाप्रेम जड वंस
मणि वरनहूं वारंवार। नहिं रीफत जप
तप जतन करहिं नकोटि प्रकार। ११। टी

भा॰ ११ भे॰ ७४

का। भगवान कहते हैं कि हे अक्रूर इह ह
मारा बालक भाव जो है सो तुम प्यारा जान
कर हृदय मै सदैवही बसाय राखो इस बा
त्सल रसके समान और कोईभी अधिक रस
नहींहै शिव सनकादि और ब्रह्मादियो ने
भी एही प्यारामाना हुआहै इस प्रकार भग
वानके कृपा मय वचन सुनकर और सखा
पन देखकर अक्रूरजोहै सो तैसीहीं भक्ती

को हृदयमै धारन कर लेना भया अक्रूर के

समान संसारमै कौन धन्यहै कि जिसने ब्र

जकी धूरीको हृदय मै प्यारी जाना श्रौर

जिसके परसने के प्रभावतें भगवान ने ति

सको वैकुंठ नेत्रोंमै दिखाय दिया फिर ति

सके प्रभावतेंहीं भगवान जिसके घरमै च

ले आये तातें ब्रज रजकी महिमा श्रौर प्र

भावको कौंन कथन कर सकताहै फिर

११
भ०
७५

देखो कि जिन चरन कमलोके हृदयमै धार
ने के लिये मुनी जोगी जन जोहैं सो अनेक
हठ और यतन करतेहैं परंतु तिनके ध्यान
मै नहीं आवतेहैं अब सोई चरन अक्रूरके
अंक अर्थात गोदमै धारेहुये हैं कहो तिस
के तरनेका कौन संदेहहै दीन बंधु भगवा
न कैसेहैं कि जहां अपने जनका हठ वि।
सास देखतेहैं तहां तुरतहीं कोमल हो जा

75

७५

नेहैं जनका विस्वास और नाथकी कृपा तिस
के आगे कोटि कठिन पाप और संसारके अ
नेक भ्रम जोहैं सो सबमिट जातेहैं अब और
विचार सब छोड देवो भगवानका केवल एक
प्रेमहीं प्यारा जान लेवो प्रेमके बिना सब सा
धन जोहैं सो मृग तृस्नाके जल बतेहैं वास
तव अर्थको सिद्ध नहीं करतेहैं नंदलाल म
हाराज को प्रेमहीं भावताहै तातें और सब

छोड़कर प्रेमहीं पधारे करना चाहिये प्रेमके
बिना यद्यपि अनेक जपतप आदि यत्नन [illegible] ।
भी होवें तद्यपि भगवान कबी नहीं रीफेंगे
जहां सरल और निसकपट प्रेम देखेंगे त
तकाल हीं कोमल हो जावैंगे ।२१। इति श्री
भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ती महात्मे भाषा
टीकायां अक्रूर चरित वरणने नामसप्त: । मिहांसिंहकृत

अथ ब्रह्मदत्त नृप महात्मिय वर्णिते ॥ दोहा ॥ कमल
वदन रति दायनी हरन सकल भ्रम भौन ॥ कर
न मोद मंगल महा वरनऊं कथा पुनीत ॥ विप्र
जनार्दन नाम इक निपुण भक्त भगवान ॥ नरि
हरि वंस पुराण मथ कथा श्रवण सावधान ॥
चौपाई ॥ ब्रह्म दत्त इक भूप सधीरा ॥ वसिहैं सा
ल नगर गुण धीरा ॥ परम निरत ईश्वर चित जा
नी ॥ धनक जज्ञ कारक जग मानी ॥ महिमा को व

८८
भं०
१

हीं नाम कल होई ॥ सुमति सुशील निपुन गु
न सोई ॥ भूप मित्र एक विप्र रहावा ॥ जहि सह
मित्र नाम जग गावा ॥ न्रप अरु विप्र मित्र सह
काहीं ॥ दीननदैव भवन रहहि माहीं ॥ न्रपति
कीन चिर राज अभंगा ॥ विप्र मित्र ज्ञुत हृदय
उमंगा ॥ अवसर एक पुत्र उर मानी ॥ न्रपति
यज्ञ वैस्नव हुविदानी ॥ हेत प्रसन्न पोष्य भग
वाना ॥ माव वैस्नव न्रप कीन महाना ॥ विप्र

मित्र सह तिमि जियजानी ॥ कुम्स प्रसन्न हेत सब
मानी ॥ वेद वहीन प्रनीन प्रचारा ॥ करि कीन्यो
वैस्नव मत भारा ॥ न्रप उज भक्ति प्रेम दृढ़ जाना
भे प्रसन्न हरिहर भगवाना ॥ गये नेरस यज्ञ समि
भाला ॥ आये कुम्स विप्र मत शाला ॥ दोहा ॥ न
र नायक हर पतान पर वर मागयो कर जोर ॥ देहु
प्रवेद प्रताप पर प्रभु मोहि जुगल कशोर ॥ २ ॥
टीका ॥ नाभा दासजी कहते हैं कि हे गुरु महाराज

१२
भ०
२

अब ह्रस्व भगवानके चरन कमलोंमें प्रीतीके दे-
ने वाली आनंद और मंगलोंके अधिक करने वाली
और मोह भ्रम आदि सब विकारोंके नास करने
वाली पवित्र गाथा जोहै सोमैं कथन करताहूं एक
जनार्दन नामा ब्राह्मण भगवान का प्यारा भक्त
होताभया जिसकी सुंदर गाथा हरि वंस पुराण
मैं भली प्रकार गायन की हूईहै कहतेहैं कि ए-
क ब्रह्म दत्त नाम करके राजा वडा धीजका धाम

२

और पश्चिम मैं परायण शाल्व नगरमैं निवास करता
था फिर कैसाथा कि सर्व गुणोंका समूह इन्द्रजी
त वश ज्ञानी और अनेक यज्ञोंके करने वाला अत्य
न्त मानीथा तिस राजाकी दो स्त्री होती भई सो कै
सी कि वडी सुशील और सुंदर सुमती सर्व गुणों
मैं चतुरथी तब राजाका एक ब्राह्मण सहमित्र ना
म करके उनसे सुहृद और हित कारी मित्र होता
भया दैव इच्छा करके राजा और ब्राह्मण इन दोनो

ए.
मै.
३

के घरमै कोई पुत्र नहीथा नव राजाने तिस ब्राह्मण
के सहित बहुत काल परयन्त राज किया कोई
किसी प्रकारका विघ्न नहीभया एकसमय हृद
यमै पुत्रका दुख मान कर राजाने वैस्नव यज्ञ कर
नेका मनोरथ किया नव महादेवके प्रसन्न करने
के वास्ते राजाजोहै सोतिस वैस्नव यज्ञको वडी
प्रीती पूर्वक कर्ताभया और तिस सहमित्र नामा
ब्राह्मणनेभी पुत्रकी अभिलाषासे हृस परमात्मा ३

की प्रसन्नता के वास्ते वेदकी विधी अनुसार् बडा उछावे
मानकर विस्नु यज्ञ जो है सो किया तब राजा और ब्राह्म
ण की भक्ती और प्रेम दृढ जानकर हरि हर जो विस्नु
और शंकर हैं सो प्रसन्न हो जाते भये ततकाल ही राजा
के यज्ञमै महादेव चले गये और ब्राह्मण के यज्ञमै कृ
स्न भगवान जाते भये तब राजाने महादेव के चरन प
कडकर और हाथ जोडकर इह वर मांगा कि भगवन
मेरे घरमै रोग उतपन्न होवै परंतु कैसे होवै कि वडे

२८
भे
४

प्रबल अौर प्रचंड महा प्रतापी जिनको कोईभी जीत
नसकै ॥ १ ॥ चौपई ॥ विप्र मित्र सह निमि हरिपा
ही । मांगो वर भावत जिय काही । निज प्रसन्न से
वक जस माना । देहु सबन महि कृपा निधाना ॥
अस हर नृपहिं दीन सुत दोई । अमर समर धीरज
रनसोई । निमि सुत उजहिं दीन भगवाना ॥ वि
षय विरक्त भक्त गत माना ॥ भे नृप सतजग प्र
बल अपारा ॥ नाम हेम डिंभक तिन यारा । राखो

नाम जनार्दन नामा ॥ विप्र सदन जोई सबन प्रकासा ॥ उजमान कर न्रप भजन सेगा ॥ वन्यो परस्पर नेह अभंगा ॥ शास्त्र शास्त्र पढि भये प्रवीना ॥ नव न प हेत गवन वन कीना ॥ कीन उग्र तप भूप कसा रन ॥ करि निज हृदय शंभु पद धारन ॥ जाचिन भक्ति भक्त हित कारी ॥ कीन उग्र तप विप्र सरारी ॥ कानन पंच वरष लग तीन्यो ॥ विधि पूर्वक हरि हर तप कीन्यो ॥ न्रप मन रहे करत तप जाहो आये हर

रा.
भ.
५

प्रसन्न मन माहीं ॥ दोहा ॥ मांगहु मांगहु भक्त वर मोहि प्रसन्न जियजान ॥ तुव कीन्यो तप कठिन मम नजि भरोस जग आन ॥ २ ॥ टीका ॥ और सह मित्र नामा ब्राह्मण ने भी ने सेंही विष्णु महाराज से अपने मनकी भावना वर मांगा कि हे दीनानाथ अपना अनन्य सेवक कि जिसको तुमारे बिना औ र कोई नहि भावता होवे और वड़ा जशमान और भक्तीमान ऐसा जो पुत्र है सो मेरेको देवो इसप्रकार

५

तहां महादेवने प्रसन्न होकर राजाको दो पुत्र ऐसे
दिये कि जो अमर अखेद और रणमैं बडी धीरजके
धारने वालेथे और तैसेही तिस ब्राह्मण को भी
विश्वमहाराजने विषों से विरक्त और अभिमानसे
रहित केवल अपना भक्तही पुत्र दिया तव राजाके
पुत्र जोथे सो जगतमैं बडे प्रबल और प्रतापी महा
शूरवीर हंस और डिंभक नाम करके प्रसिद्ध होते
भये और ब्राह्मणके घरमैं जो पुत्र जनमा तिसका

रा.
मं.
६

नाम जनार्दन राखा नव ब्राह्मणके पुत्र और रा
जाके पुत्रोंका परस्पर अत्यन्त प्रेम सनेह हो
जाता भया शास्त्र और शस्त्र विद्या पढकर भली
प्रकार प्रवीन होगये नवऋषीमे घरको त्यागक
र तप करनेके वास्ते वनको चले जातेभये नहो
राजाके पुत्रोंने जो पुत्रे होने [illegible] के निमित महा
देवके चरण हृदयमें धारकर तिनकाही अखंड
तपकिया और ब्राह्मणके पुत्रने भक्तीकी प्रापती ६

6

के वास्ते विश्व महाराजका उग्र तप धारन किया
तब वनमें पांच वरष तक तीनोने सुंदर विधी पूर्व
क हरि हरका तप जोहै सोकिया तो जहां राजाके
पुत्र तप कर रहेथे तहां विश्वनाथ महादेव प्रसन्न
होय कर आय प्रापत हूये और कहने लगे कि हो
भक्त तुमने और का भरोसा त्याग कर केवल मेरा
ही अखंड तप कियाहै तीनोंने तुमारी भक्ती देख
कर प्रसन्न भयाहूं अब तुमारे मनकी जो इच्छाहै

१२
भं०
८

सो मांगो मै तुमको वर देनाहूं ॥ २ ॥ चौपाई ॥
सुणि स्रवन सुनि संकर वाणी ॥ मानहुं तप निद्रा
तें जागी ॥ उठे हरष हरिजन जगभाई ॥ हर पद प
रे दंड वत जाई ॥ अस्तुति लगे करन वड़भागी ॥
जैति जैति हर त्रिपुर प्रराती ॥ जैप्रभु भाल चंद
सुख सारा ॥ जै हर हरन त्रास संसारा ॥ जैति जै
ति शंकर भगवाना ॥ जैति वृषभ पति सूलपानि
धाना ॥ जै उमीस गौरीस गरीसा ॥ जैति जैति श्री

7

८

भवन अधीसा । जै गंगाधर जैति पिनाकी । जैति
भीम भगवान इकाकी । जैजै नंदि नाथ वरदाता ।
जैति भस्म सित मंडित गाता । जैति जैति चरमंब
र धारी । जै जै मदन दहन उरवहारी । जैजै करत वि
ष संचारा । जैति जैति प्रभ भक्त उवारा । जैजै भूत
चराचर सेवा । जैति जैति मंडित उज देवा ॥ दोहा ।
प्रभ प्रकार अस्तुति करत तिन मांगयो वर एहु । ह
मकहं मेरहति अमर सर जीति सकै नहिं केहु ॥ ३ ॥

१२ भं० ८

8

टीका ॥ तब राजाके पुत्र संकर देवकी ऐसी बानी

सुन कर मानो नपकी जो निद्रा है तिससे जागतेभ

ये और हरष करके हरित भये हुये महादेवको सन

मुख देषकर दंडवत चरनो पर गिर पडे फिर उठक

र और दोनो हाथ जोडकर संदर प्रस्तुति जो है सो

अनेक प्रकारसे करने लगे कहते हैं कि जैहो जै

हो तुमारी हे त्रिपुरासुरको बध करने वाले शंभू

जैहो तुमारी हे हंसमानकमैबेदुमा पोवते वाते

८

जैहो नमारी हे संसारका भय हर करने वाले जैहो
नमारी हे शंकर भगवान जैहो नमारी हे वृषभ ध
नी कृपानिधान जैहो नमारी हे उमानाथ हे गौरीना
थ हे गिरी नाथ जैहो नमारी हे गंगाधर हे पिनाकी
हे भुयंग भूषण धारी जैहो नमारी हे भीम भगवान
हे नेत्री नाथ हे भस्मके रमने वाले हे भक्त वर दायक
जैहो नमारी हे बाघं बर धारी हे कामदेवके दगधक
रने वाले जैहो नमारी हे सर्व वरा वरके स्वामी हे विश्व

११
मं
२

9

का संचार करने वाले जैहो तमारी हे देव ब्राह्मण
गौ पृथवी की रक्षा करने वाले इस प्रकार शंकर
भगवान की अस्तुति करके तिन राजा के अयौने इह
वर मांगा कि हे भगवन संसार मे हमको मानुष्य व
र अमर कोई भी जीत नही सके ३ चौपाई ॥ दीजे
दिव्य अस्त्र हमकाही । आवहि मीच निकट रण ना
ही । एव मस्तु कहि शंभु कृपाला । दीने अस्त्र स
मर अरि गाला । बहुरि कृपा जन बचन उचारे ॥

४

सदा संग तुमरे रखवारे । रहिहैं सुभट जंगल गाण
मोरे । अरि कौ जीति सकैं नहि तोरे । इह तुमरे जन
सदा सहैया । रिपु कहं काल रूप दरसैया । केडोर
र विरूपाक्ष बखानौ । विदन नाम निज रक्षक जा
नौ । इम कहि श्वेत ध्यान शिव भयेऊ । हृदय हेम
डिंभक सुख क्येऊ । शंभु प्रसाद कवच करि धारन-
पाति परसु गहि शोक निवारन । दोहा ॥ जंगल बी
र गवने भवन भीम संग गाण दोऊ । सदन आय बे

११
में
१९

घो वरन जनक नम्र वन होऊ ॥ ५ ॥ टीका ॥
फिर राजाके पुत्र कहने लगे कि भगवन हमको
दिव्य अस्त्र जोहैं सो कृपा करके देवो सीव जो मौतहै
सोरणमें हमारे निकट नहीं आवे तब शंकर भग
वानने एवमस्तु कहि करकि ऐसेही होगा शत्रुके
नाश करने वाले दिव्य अस्त्र जोहैं सो दिये फिर कृपा
करके कहने लगे किहे भक्त जन मैंने तुमारी सदै
वकी सहायता और रक्षाके वास्ते अपने शूर वीर

दो बाण हमारे संग कर दिये हैं अब हमको कोई

शत्रु रणमें जीत नहीं सकेगा यह हमारे सहायक

हमारे शत्रुको कालरूप देख पड़ैंगे केउ दर और

विरूपाक्ष इन दोनो हमारे सहायको के नाम हैं ऐ

से कहिकर महादेव अन्तर्धान होय गये हेस और

डिंभक दोनो बड़ा सन्मान कर शिव शंकर के प्र

सादसे कवच जो संजो है सो धारन करके और शत्रु

के लय करने वाला परसु जो कुहाड़ा सो हाथमें लेक

१२
भ
११

र बडे आनंद पूर्वक निज गणो को साथ लिये हुये घ
र को चले आवते भये तहां आय कर पिता के चरनो
पर नम्र होकर बारंबार प्रणाम करते भये ॥ ४ ॥
चौपाई ॥ ललित लिलाट त्रिपुंड विराजत । अम
म स्वेत तन चांदनि लाजत ॥ रुद्राक्षन सज अंगन
थाहू ॥ पिंगुल सीस देवसरि वाहू ॥ अष्ट जाम
शिव शिव धुनि वाजे ॥ बागंबर अंबर तन साजे॥
अमन केत निजनि वमन लागे ॥ न्रप सुत प्रव

११

ल जगत मङ्गभागे ।। उत जनार्दन विप्रन निवस्या ।
हरिप्रसन्न हित कीन तपस्या । हरे राम रघुवर रघुरा
ई । केशव कृष्ण जनन सुखदाई । रटत रुचिर रसना
पुज पङ्क । प्रेम वारि दृग वारि न लेहू । सुचि शरीर म
गरी विसराना । भजत नवेन्द्र कृष्ण भगवाना । पंच
वरष इहि भांति विनासा । हरि हरि रटत दिवस
निसि नासा । प्रबल भक्ति प्रेम उजजाना । प्रक
टि प्रसन्न भये भगवाना । विप्र देखि प्रभु कहे प्र

२ मं. २२

ऊलाई ॥ परयो लकुट इव चरनन जाई ॥ अस्तुति
करयो अनेक प्रकारा ॥ जै जै रघुवर कृपा अगारा ।
तुमहिं दीन उद्धारन हारे ॥ तुमहिं शरण गत दुख
निवारे ॥ तुमहिं विप्र सुर मेदनि गैया ॥ दीनदयाल
दुख त्रास हरैया ॥ असरन शरण तुमहुं जगजाने ।
तुमहुं गरीब निवाज कहाने ॥ तुम आधार सकल
जग केरे ॥ तुमहुं भक्तजन सुखद घनेरे ॥ दोहा ॥
मुनितीय तारन तुमविदन वारन शोक निवार ॥

तुमहूं उधारन अजामिल तुम तारन वृषकार ॥ द्रुप
द सुता की लाज तहां तुम राखी जदुराय ॥ तुमहूं
भये प्रह्लाद कर धर नरसिंह सहाय ॥ ५ ॥ टीका
फिर हंस और डिंभक कैसे शोभाय मान थे कि त्रिपु
ड तिलक जो है सो मस्तक मे सजा हुआ है और श्वेत
भस्म शरीर मे रमाई हुई मानो चांदनी को लज्जा दे
ती है रुद्राक्षों की सुंदर माला धारी हुई सिर पर म
नोहर जटा और तिन के बीच गंगा उलझी हुई वागे

ए॰ मे॰ १३

वर वस्त्र और आठो पहर शिव शिव शिव धुनी जिन
के हृदयमें बाजती है ऐसे राजाके पुत्र महा प्रबल
और प्रतापी आनंद पूर्वक अपने घरमें निवास कर
नेलगे और उहां ब्राह्मणके पुत्र जनार्दन नामाने
विष्णु भगवानके प्रसन्न होनेके निमित्त तपस्या
जोकरी तोकैसी करी कि हरे राम रघुवर रघुराई
केशव कृष्ण इस प्रकार भगवानके नामोंको जिस
की रसना जो है सो रात्री दिन रटती भई और नेत्रोंमे

प्रेमजलका प्रवाह चला जाता वार नहीं लेना है
शरीरसे अचेतभया हूआ भगवानके भजनमैं ली
न होरहाहै ऐसे तिसको रात्रीदिन हरी हरी रटनेको
पांचवरष वतीत होजानेभये तब तिसकी अवरिल
कि जिसमैं कोई विरल नहींथी ऐसी भक्ती देखकर
भगवान प्रसन्न होकर ततकाल प्रकट होजानेभ
ये तब आसण भगवान क्रूपा निधानको सनमुख
देखकर प्रेमकरके व्याकुल भयाहूआ नरन हीवर

नोपर गिर पड़ा फिर उच्छक वेरके पीछे उठकर औ
र दोनो हाथ जोडकर अस्तुती जोहै सो करने लगा
कहताहै कि जैहो तुमारी हे जादवौंमे श्रेष्ठ हे कृष्ण
के धाम जैहो तुमारी हे भगवन तुम कैसेहो कि दीन
जनोका उद्धार करने वाले और तुमही शरण पडे
के दुख निवारने वाले हो तुमही ब्रह्मण देवता पृ
थवी गौओंकी रक्षा करने वालेहो अशरण दुःखीयों
की तुमही शरणहो और गरीब निवाज भी तुमही

कहावतेहो तुमहीहो सर्व जगतके आधारहो औरभ
क्त जनोके उधारने वालेभी तुमहींहो गौतमकी
स्त्रीके तारनेको तुमहीहो सामर्थ होकर जगतमें प्र
सिद्ध भयेहो औरवारन जो हस्ती है तिसको तंदवे
के फंधसे छुडाने वालेभी तुमहींहो अजामिल जो
महा पापीथा तिसको उधारने वाले औरगनका
केवनी को तारने वालेभी तुमहीहो द्रोपदीकी त
हे कौरवों की सभामें लज्जा रखने को तुमहीहो साम

११
मैं
१५

थे भये थे और प्रह्लाद की भी नरसिंह रूप होकर
तुमने ही सहायता करी जैसे हो तुमारी हे भगवान
तुम सर्व कला सामर्थ्य और सब घट घट के साक्षी
हो। ५। चौपाई ॥ इस प्रकार प्रस्तुति सबै गाई
भगण प्रेम दृग वारि बहाई ॥ तब प्रसन्न भग
वन अस काहा ॥ मागहु भक्त जो वन कहि चाहा
तब निस कपट कीन सिवाई ॥ मै प्रसन्न तुमपै
उजयाई ॥ तब उन जोरि जगल कर भाषा ॥ प्रव

१५

मोहि नाथ कवन अभिलाषा ॥ जोगि सिद्ध तापस मु
नि ज्ञानी ॥ करहिं जतन हठ अनक अमानी ॥ तव द
रशन हित भक्त उवारी ॥ नाना लेहिं वपुख उखभा
री ॥ तिन कहूं ध्यान मात्र भगवाना ॥ आवत कवहूं
न कृपा निधाना ॥ मोर भाग्य कर कवन वडाई ॥
जो अनन्त प्रभु मन मोहि आई ॥ मांग मांग वर देव
उचारा ॥ मोहि सम कवन धन्य संसारा ॥ जेहि गोच
र दृग त्रिभुवन राई ॥ कामागाऊं अव भक्त सहाई ॥

२९
मे
१६

16

पै मोपैं प्रभु जो अनुकूला ॥ तौ मोहि देहु सकल सु
ख मूला ॥ चरन कमल निज भक्ति सुहाई ॥ अवि
चल प्रेम संत सिव काई ॥ दोहा ॥ इहदाया निय
देहु मोहि नहिंन आन कछु काम । बोले सुनि तु
ज वचन अमरमार मन अभिराम ॥ ६ ॥ टीका
इस प्रकार भगवानकी अस्तुती गायन करनाभ
या और नेत्रोंसे प्रेम नीर जोहै सो वहा चला जाता
है तब प्रसन्न होकर भगवान कहने लगे कि हे

१९

भक्त ध्रुवजो तेरे मनकी रुचीहै सोवर मांग क्योंकि
तैंने निश्कपट होकर मेरी भक्ती सिवकाई करीहै
जिसतें मैं तेरे पर अत्यन्त प्रसन्न भयाहूं तब जनार्दन
ब्राह्मण हाथ जोड़कर विनती करने लगा किहे
भक्तपाल अवमेरेको कौन अभिलाषा रहीहै जोगी
तपी ऋषी मुनी साध सिद्ध ज्ञानी अभिमानी इह सब
तुम्हारे दर्शनके वास्ते जप तप हठ इत्यादि अनेक
कठिन साधना को धारन करतेहैं परंतु हे भगवन

५५
भं
८

तुम तिनके ध्यानमें नहीं आवतेहो देवि ये मेरे भागों
की बडाई कि तुम ऐसे इयाराध जो बडे कठिनसे प्रा
प्ते जातेहो आज मेरे नेत्रोंके सनमुख प्रसन्न होकर क
हतेहो कि वर मांगो हे दीनानाथ अब क्या मांगें तुमारे
दर्शनोंसे परे कौन वर है कि जिसके प्रसादसे मैं संसा
रमें धन्य धन्य होगयाहूं अब भगवन जो आप मेरे
पर प्रसन्न ही हो तो यही वर देवो जो सर्व सुखों
के देनेवाली तुमारे चरन कमलोकी अविरल

८

भक्ती और संत सिवकाई जो है सोई मेरे हृदय मै दृढ होवे और कोई अभिलाषा नहीं है ऐसे आप्त णोंका वचन सुनकर भगवान कृपानिधान जिस प्रकार उत्तर देते हैं सो आगे कथन किया जाता है

॥ चौपाई ॥ मै निज भक्ति संत सिवकाई । मोरे दी न विप्र सुखदाई ॥ अस कहि सजल नैन भगवाना । उज हि लीन निज हृदय जराना । बहुरि वदन नि ज त्रिभुवन राया ॥ कह्यो उजहिं अस पुनि दाया ।

१२
भं०
१८

कछुदिन भक्त प्रवर करि सेवा ॥ मोर धाम तव श्रेष्ठ अभेवा । अस कहि कृष्ण श्रेष्ठ हित भयेऊ । विप्र सादिन आश्रम निज गयेऊ । नवने पञ्च हवि र व्रत धारा । राष्यो कृष्ण चरन आधारा । उरध पु ड मस्तिक कल सोहित-द्वादश तिलक श्रेष्ठ मन मोहित । छवि वन माल कंठ कर लीला ॥ सरल सुभाव सनेह सुशीला ॥ दोहा ॥ अस डिभक श्रुह हेम जत विप्र जनार्दन जोय ॥

१८

18

साल नगर निवसन भये सदिन सजस रन होय

७ टीका भगवान कहते हैं कि हे भक्त मैने तेरे

को अपनी भक्ती और संत सिवकाई जो सर्व स

खों के देने वाली है सो दान करी है ऐसे कहि कर

के नेत्रों मे जल भरे हुये भगवान तिसको हृदय

मैं लगाय लेते भये फिर दया करके भरे हुये दी

ना नाथ तिसको कहने लगे कि हे मेरे प्यारे

भक्त तुम ईहो जब्बा दिन मेरी सिवकाई करके

११
भं०
१५

फिर सहजेही शरीर को त्याग कर मेरे धामको च
ले आउगे ऐसे कहि करके भगवान अंतर्धान हो
गये और ब्राह्मण हृदयमे आनन्द मानकर अपने
आश्रमको चला आवता भया तबते तिसने पहै
सुंदर व्रत धारन किया जो केवल एक हरि भ
गवानके चरन कमलोंका आधार राखलिया
मस्तक मे उर्ध्वपुंड जो रामा नंदी तिलक और अं
गों मै सुंदर द्वादश तिलक जोहैं सो धारन क

१५

रता भया और तैसेही कंठमैं मनोहर तुलसी की
माला सजाय कर बड़े सरल और साधु स्वभावसे
हंस और डिंभक जो राजाके पुत्रहैं तिनके सहित
साल्व नगरमैं निवास करता भया २ ॥ चौपई ।
एक समय नृप हंस जगवीरा ॥ सैन सजाय
सहित रणधीरा ॥ लिये जनार्दन डुज कर संगा
कानन गये करत मृग भंगा ॥ तहो वराह व्या
घ्र [illegible] मृग नाना ॥ हने कीन मृगआनन नाना ॥

५ भं ५

जुगल जाम विहरत बन माहीं। बीति गये उज
नृप सुत काहीं। श्रम समेत पियत भये भारी।
तब आये सुरसरि तट सारी। करि जल पान कियो
विश्रामा। तहाँ बसहिं तापस मुनि नाना। सुनत
वेद श्रुति सेवत पावे। नृप सुत उजन दरस सुखदा
ये। विश्वामित्र निज संग लिवाई। गवने जहँ मु
नि मंडलि छाई। मुनि दरसन करि नृप सुत ते
ही। वेद वरन सुभ आसिष लेहीं। बहुरि तप

वत करहत उचारी । मुनि कृपाल अस विनय ह
मारी । पित्र करि राज सुय मख कारी । विजय
करन सब मेदनि चाही । हम जब करिहै निमेत्र
ण तोरे । तब ऐहो तुम मुनि वर मोरे ॥ दोहा ।
अस प्रकार सब मुनिन सन विनय करत कर जो
र । आश्रम आश्रम मुनिनके फिरत नरेस कशोर ।
८ टीका । तब एक समय राजाके पुत्र हेस डिंभक
नामा दोनो अपनी सैना सजाय करके निस आल

२२ भ॰ २१

ण मित्रके सहित वनको शिकार खेलनेके वा
स्ते जाते भये तहां जायकर अनेक वराह औरभ्या
घ्र म्रग जोहैं सो बाणोंसे हनन किये इस प्रकार
म्रजानन जो शिकार है सो करते करते तिनराजा
के पुत्रोंको तिस ब्राह्मणके सहित वणमें दोपह
र विनीत हो जाते भये तहां वनमें फिरनेके श्रम
से सैना समेत सब लोग व्याकुल होगये तब पु
शकर तीर्थपर आयकरके विश्राम करते भये २१

सबने जलपान इत्यादि करके श्रम जो है सो निवार
ण किया तहां तीर्थोंपर अनेक मुनी ऋषी जो निवा
स करतेथे सो चारों ओरसे तिनकी वेद ध्वनी सुनक
र तिसमीत ब्राह्मणोंके सहित राजाके पुत्र सेनासे
निकलकर दर्शन करनेको मुनी मंडलीमें चले
जाते भये तब जहां तहां मुनियों के दर्शन करते हुये
और नम्र होकर चरनोंपर सीस नावते हुये सबको
सुंदर असीसा जो है सो लेते भये फिर मुनी मंडली

को हाथ जोड़ कर कहते हैं कि हे मुनीश्वर लोगो ह
मारा पिता राजसूय यज्ञ करके सर्व पृथ्वी को जी
तने चाहता है आप लोगों ने हमारे पर इह कृपा क
रनी कि जब हम तुमारे बुलावने को नेउता भेजें
तो तुम कृपा करके हमारे घर में चले आना इस प्र
कार राजा के पुत्र हाथ जोड़ कर सब मुनियों के आ
गे विनती करते हूये तिनके आश्रम आश्रम में फि
रते भये ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ करि दरसन परसन

२२

सुख पायो ॥ मुनि गण तिनसों वचन सुनायो ॥
करहिं जज्ञ जब जनक हमारा । तब आवन उत
होहि हमारा । इहि विधि सुनत कथन तिन का
ही । रावने उरवासा मुनि जांही । रुधिर सहस्र द
स सिखन मझारा । राजत अनल रूप जन धारा ।
जासको पदव भवन उदेशा । जरत सुरासुर सापप्र
चेंडा । अंबर प्रहत दंड कर धारी । जारत जगत प्र
वल कारी । लोचन लाल भसम वपुछाजे । सेत

ए
भ॰
२३

सीस जटजूट बिराजे । मनहुं काल मूरति मुनिरा
ई । देखत कोन विकल ह्वै जाई । डिंभक हंस नि
कट तहि आये । जोरि पानि चरनन सिर नाये ॥
दुर्वासा मानस हरषाई । मुनि समीप बैठे जु
ग भाई । विप्र जनार्दन पति पगलागे । हंस भक्त
लषि मुनि अनुरागे । मुनि नाथहिं विरक्त जोय
जानी ॥ नृप सुतन अनुचित चित मानी ॥ दोहा
कह्यो कठिन कटु वचन अस काल रूप मुनि काहिं

२३

चौर गृहस्त तजि कर वस्यो संन्यासी जग माहिं ।४।
टीका ॥ इस प्रकार राजा के पुत्र मुनी लोगों का द
रसन परसन करते हूये बडे सुखको प्रापत भये त
व मुनी जनोंने आनंद होकर तिनको कहा कि हे
राज कुमारो जब तुम्हारा पिता राजसू यज्ञ करने
लगेगा तब हम प्रवस्य तुमारे घरमें आवेंगे ऐसे मु
नियों का वचन सुन कर सो राजा के पुत्र प्रसन्न हो
कर आगे को जहां ऊरवासा मुनीश्वर ले जाते भये

ए
भं·
२४

2४

सो डरवासा मनी नहो दस हजार शिष्यके बीच
मानो अगनीका रूप धार कर बैठे हूयेथे फिरकै
सेथे कि जिनके कोपसे शापकी ज्वाला करके
तीन भवन और सरा सर जलने बेरनहीं लगाती
लालवस्त्र और लालही नेत्र जिनके शरीरमै भस
म रमीहूई और सिर पर सेन वालोंकी जटैं सरव
जगतकी अवज्ञाके नास करने वाला हाथमै धा
रन किया हूआदेंड सो मनियोंके नायक मानो सा

२४

ध्यान काल रूप धार कर बैठे हुये हैं तिनको दे
खकर कौन नहीं व्याकुल होजाता नव डिंभक
और हंस जो हैं सो तिनके पास आयकर चरनोपर
देंड प्रणाम करके और भली प्रकार कुसल पूछ
कर दोनो भ्राता मुनी के पास बैठजाते भये फिर
जनार्दन ब्राह्मण भी मुनी के चरनो पर देंड प्रणा
म करता भया नव मुनी तिसको भगवान का भ
क्त जानकर बड़ा सनमान देता भया तिसने उपरे

१२ भ० २५

न राजाके पुत्र अभिमानमैं गलित भयेहुये मुनीको जगनसे विरक्त जानकर हृदयमैं बड़ा प्रयोग देख जोहै सो ल्यावत भये और कोपसे ऐसा कठिन और कटु वचन जिस काल हुए मुनीको प्रकट कहने लगे किहे चोर तुं गृहस्तको त्याग कर क्यों सन्यासी बनाहै ४ ॥ चौपाई ॥ प्रथम धरहिं सन्यास न कोई ॥ गृहस्ताश्रम विधि जन हठ होई ॥ पहिरे रक्त वसन पाखंडी ॥ त्याग बन्यो सखा

२५

न्नव देखी ॥ कहहिं ते तीन वेद प्रति कूला ॥ लीनी श्र
धर्म ग्रहस्त पथ भूला ॥ जामें अनाथ्य संत द्विज देवा·
सब विधि होत रुचिर स्नविसेवा ॥ ग्रहस्त आश्रम श्रे
कर मन माना ॥ दायक नरन विद्य कल्याना ॥
न्नव कपटी कर देउ धराये ॥ तीनसि धर्म कर्म विस
राये ॥ भ्रमकर नट वक ध्यान लगाई ॥ वैस्यो जन
वंचन हित आई ॥ ऐसे विरूप उनमन मति हीने ॥
तैं जढ़ वृथा दाम हरि लीने ॥ गनाचार अज्ञान रता

रा० भा० प्र० २६

ना। भस्म रमत सठ लाज न माना। निपट अमेग ल रूप बनाये। इउ वासा जग नाम कहाये॥ अ स पाखंड निरत सठ कोरी। एकरत देन देउ ह म जोरी। बंधहु अबहि बेर नहीं काहू। गवनि भवन इहि करव बिवाहू। दोहा। रहहु आश्रमी बनाय इही करि विध बेर अजास। मेसकार क रवाय पुनि करइ निरत सन्यास १०॥ टीका॥ फिर इंभक और हेमस कहने लगे अरे अथम परि

२६

26

तेही सन्यस्त कोई नही धारनाहै प्रथम विधी श्र
नुसार ग्रहस्त आश्रम हढ होना चाहिये जैसा म
दव लाल वस्त्र पहिर कर जुटाही देशीवन वैठाहै
दे पावेही ग्रहस्त मारगसे भूल कर इह वेदके वि
रुद्ध रीती जैसे किसमे सीखीहै देख ग्रहस्त मारग
कैसाहै कि जिसमें साथ संत अतिथी जनोकी स
व प्रकारसे सेवा होतीहै और इह ग्रहस्त आश्रम
शंकर देवकोभी प्याराहै संसारमैं मानुष्योंको

कल्यानके देने वालाहै जैसे कपटी कैसे दंड धारन
कर लियाहै और सब धर्म कर्म को बिसार दियाहै
ईहां प्रशकार तीर्थके किनारे बक जो बगलाहै ति
सके समान ध्यान लगाय कर लोगोके छलने के
वास्ते आय बैठाहैं और भेद भेष वाले उन मत्त और
मत्तोमे हीन जैसे जो इन दासोंको वृथाही मोहि
त किया हुआहै सर्व प्रकारसे नेह आचार और ज्ञा
नसे रहितहैं तैसेको भस्म रमावने मै लज्जा न

हो गई तेनो केवल अंमेगल रूप वनाय करके ज
गतमे इक्ष्वाकु नाम रखाय लिया है पर जानकि
ऐसे पातिविरियों को पकडकर हम जोगावरी से भी
देड देने होते हैं ऐसे मनाय कर करने लगे कि प
कडो इसको इवी बांधलेवो न हो घरमे ले जायक
र इसका विवाह करावेंगे तव वेदकी विधीसे ग
हस्ती वनायकर औरसव संस्कार करवाय कर
फिर इसको सन्यासी वनावेंगे ॥ ९ ॥ चौपाई ॥

१२
भ
२८

सुमन मति जाय सुचि मुनि पासा । बैठे जगाल जनडू
वल नासा । तहाँ बहुरि कह बचन प्रकासा ॥ दे
सठ देख निरत उरवासा । नहिन मूढ कछु तात
नसावे । इथा सहस दस विप्र विगारे । म्रषघ श्रा
प्र विनासन श्रोरे । अब लग भयो न सा सन तोरे
को पापी देखो नहीं तोसो । तोहितें बसन धर्म स
न कोसो । उन हमार तब लेउ सिखावन । पैहौ
अवशि नाक सव्र भावन । करि पूँब गरह आश्रम

२८

१

कोरी । वान पस्य पद लेहु बहोरी । ब्रह्म बरज प
रिपुनि सन्यासू । लेहु विप्र वर धर्म प्रकासू । जो
हमार भ्रम कथन न करहीं । तोउ रवे पाय विपुल
वपु मरहीं । भनि नहि ममय मौन जप लीना ॥
सुमरत ध्यान कुसपद दीना । शाप वचन न
हिंसके उचारी ॥ भयो कोप मनि मानस भारी
घोर भ्रनर्थ जनार्दन जाना । भूप स्वतन सन व
चन वखाना ॥ दोहा ॥ नहिं सेवा बहुन किये

१९
भ०
२२

नामत मेरा उपास। मतिनिहि हृथा उरवचन कहि
करि लीन्यो जलनास ॥ १९ ॥ टीका ॥ तब ऐसे क
हिकर वडे वीर धीर राजाके पुत्र ऋषी मुनीके पास
जाय वैठे और नम्रतासे फिर कहने लगे अरे देखी उर
वासा तेरेको जक्त ज्ञान नहीहै मूढ तैनेतो हृथा
ही दस हजार ब्रह्मणाको गाला और विगाडाहै आ
पनो म्हाघ तेरा नामभया औरो कीभी सत्या गाली
हेजद अव लग किसीने तेरेको ताडना नही क

२९

री हम जानते हैं कि तेरे समान कोई दंभी और पा
पी नहीं होगा धर्म जो है सो तो तेरे निकट आया ही
नहीं है ब्राह्मण ने हमारी शिक्षा ले तेरे को अवश्य
स्वर्ग प्राप्त होवेगा ने पहिले ग्रहस्त आश्रम को पा
लन कर तिस ते उपरांत वान प्रस्थी हो और फिर ब्र
ह्मचारी बनकर तब फिर सन्यास पद को ग्रहण क
र तो तेरे को धर्म के सहित कल्यान प्राप्त होवेगी
जो ने ऐसे हमारे कहने को नहीं मानेगा तो शरीर

१२ भ॰ ३॰

मे बहुत दुख पाय करके मरैंगा तब मुनी दुरवा
सा जो हैं सो तिस समय जप मैं लीन भये हूये भी
नथे भगवान के स्मरण और ध्यान मैं जुडे हूये थे
तिसनैं आपके वचन जो हैं सो नहीं कहि सके यद्य
पि मुनी के हृदय मैं अत्यंत ही कोप छाय रहा था
तब सो जनार्दन नामा ब्राह्मण तिनका मीत ब
डा घोर अनर्थ जान कर राजा के पुत्रों को कहने ल
गा कि हे अभिमानी अबी तक तुमने नाना दुष्ट ज

30

३॰

नोकी सेवा करी और ना कहूँ संत समाज मे बैठे नामन मेरा किया एक मुनी को वृथा ही दुरवच न कहि कर अपनी कुल का नास कर लिया है ॥ ११ ॥ चौपई ॥ अब नब लेव महा दुरवदोई ॥ कियो कुवाद काल बस होई ॥ शिव अवतार प्रेउ तप छाये ॥ दुरवासा मुनि संसहनि गाये ॥ उर पन लोक कोप जहि घोरा ॥ मुनि समस्थ विद न सिर मोरा ॥ नमनिन कहे दुरवचन उचारे ॥

१२
भं
३१

31

अव न होहिं कल्यान हमारे ॥ वेग गहहु उनक
र पद जाई ॥ जो अपराध छिमहिं मुनिराई ॥ सि
ख पनतें हम संग सहाई ॥ रही परस्पर प्रीति
मिताई ॥ वाहिन देखि विनास हमारा ॥ उप
ज्यो मोहि सोक डरु भारा ॥ मरहु खाय विष
की न जिजाऊं ॥ गिरितें गिरहु कि वारि बुडा
ऊं ॥ सुनत विप्र सुभ गिरा उचारी ॥ बोले भूप
सबन हंकारी ॥ रेउज करहु कथन कत जास

३१

न ॥ कोकर शक्ति हमारे विनाशन ॥ तुमझे

पत्त उनकर जथ्र दाना ॥ लग्यो हमझे उपदेश

सिखाना ॥ असनिन कथन सुनत उरवासा

कोप अनल मन कीन प्रकासा ॥ दोहा ॥ नि

कसी रिस ज्वाला ज्वलन रोम रोम मनि आय ॥

वंक भ्रकुटि तिन नन विन्यो मदन भीम जिमि

भाय ॥ ९ ॥ टीका ॥ जनार्दन कहता है कि

हे राजकुमारो अब तुम दोनो परम दुख पाओगे

२
भं
३२

इह जवाब तुमने केवल कालके वश होकर कि
याहै क्योंकि दुर्वासा मुनी शिवका अवतार और
तपके एक पुंज संसारमें प्रसिद्ध हैं और जिनके
घोर कोपसे त्रैलोकी कांपती है सो मुनी सर्व सं
न्यासमें प्रधान गिने हुये हैं तुमने अभिमानके
वश होकर तिनका अपमान कियाहै अब तु
मारी कैसे कल्यान होवेगी अब यही उपायहै
जो तुव शीघ्र जाय कर तिनके चरन पकडलेवो ३२

इससे तुमारा अपराध क्षमा करदेवें तो अच्छा
आश्चर्ज नहीं है क्योंकि महा पुरुष कोमल भी
तुरत होजाते हैं मैं तुमको वारवार इसतें कह
ताहूं कि जो तुम्हारे साथ मेरी जन्म तें ही परस्प
र मिताई है अब तुमारी दुर्दशा होती जो देख प
ड़ी तो मेरेको बड़ा कलेश उत्पन्न भयाहै मैं क्या
कहूं विष खायकर मर जाऊं कि तुमको मार
कर कहीं चला जाऊं अथवा पर्वततें गिरमरूं

ए० म० ३३

३३

कि जलमें डूबकर प्राणोंका नाश करदेंके इसप्र
कार ब्राह्मणके मुखसे वचन सुनकर डिंभक श्रौ
र हंस महा हंकारी जोहैं सो बोलते भये हे ब्राह्म
ण तू भयके वश होकर इहक्या वचन कहता हैं
हमारा नाश करनेको कौन सामर्थ्य है श्रौर कि
सकी शक्ती है हे मूरष मैंनेभी उनका पल एक
ड लिया है श्रौर हमको शिक्षा देने लगा है इस
प्रकार तिनका कथन सुनकर डरवासामुनी ३३

जो है सो कोप रूपी अगनी को प्रचंड करते भये तब सो कोप की ज्वाल वडी ज्वलन हो कर मुनी के रोम रोम से निकलती भई और वडी वेक भृयी न टेढी भ्रकुटी करके जैसी रुषी से महादेव ने काम देव को जराया था तैसी ही रुषी से मुनी तिन राजा के अंगों की और देषते भये ॥ २२ ॥ चौपाई प्रबल कोप दव दृगन दिखाई ॥ मानहु प्रलै अ बहिं नियराई ॥ आय हेम डिंभक छिग ताहो ॥

१२
भं
३४

34

केपन कोप विवस मुनि नाहीं ॥ दीन्हो घोर शाप
अस वागी ॥ होइ भस्म तव जगल अभागी ॥
मन्नी ऊपन यद्यपि अस काहा ॥ पैनहिं शाप स
को करि दाहा ॥ दुरवासा तव अ चजे माने ॥
विलीव विप्रल अस वचन वखाने ॥ जाऊ जा
ऊ मोहि मन भाव त्यागी ॥ रावेन जोगन तुम
ऊं अभागी ॥ तमरो जानि पाप हेकारा ॥ कर
हि नाम भगवान तुमारा ॥ भगवन नाम सनन

३४

मुनवाई ॥ हृदय कोप कीन्यो अधिकाई ॥ कर
कोपीन दीन मुनि नाथा ॥ पहिरायो वरवस गा
हि हाथा ॥ अस मुनि वर कर दसा निहारी ॥ हा
हा करन भयो सिषकारी ॥ दुरवासा अपमान
कराये ॥ लगे चलन हसि हेस बिहाये ॥ तवडें
जनार्दन वडू मन जायो ॥ मन्यो न मूढ का
ल नियरायो ॥ दोहा ॥ तव प्रसन्न मन विप्र
पै दुरवासा मुनि होय ॥ कह्यो रहहिं जानन म

१२
भ·
३५

35

टहल देव शीघ तोहि ॥ थोरहि दिन मथ न
महिं ऊज मिलहिं मकेंद कपाल । इन प्रथम
न कर सेग नव तजहु जानि वस काल ॥ १२

टीका नव मनीने कोपकी ऐसी प्रबल अग
नी दिखाई कि मानो प्रलै निकट आय गई है·
और तिन राजाके अगें पास आयकर कोपसे
भरा हुआ मनी थर थर कोपने लगा और इह
शाप देता भया कि अरे अभागी नमदोनो भ

स्मरो यद्यपि मुनीने तिनको अत्यन्त कोपसे
शापभी दिया तद्यपि सौंदर्य नहीं होते भये त
व उरवासी अपने मनमें बड़ा आश्चर्ज मान कर
और लज्जित होकर तिनको कहने लगी कि अरे
दुष्ट उठो मेरी आखोंसे दूर होजाउ तुम अभागी
रा खेनेके योग्य नहीहो तुमारा पाप और हे
कार जानकर भगवान तुमारा नास करेंगे ज
व इस प्रकार मुनीने कहा तब भगवानका

ह॰ मे॰ ३६

36

नाम स्मरन कर तिनोंने हृदयमैं अत्यंत कोप किया
तत्कालही उठकर और कोपीन लेकर मुनी के
हाथ मै देनेही जोरावरीसे तिसको पहराय देने
भये तब ऐसे मुनी की दशा देखकर सेहणी शि
ष जो थे सो हाहाकार करते हुये भाग चले औ
र उरवासा भी जब अपना अपमान करवाय क
रके चलने लगे तब हैम डिंभकने हम करके वि
दाय लिये तब भी जनार्दनने बहुत समझाये ३६

परन्तु सो कालके प्रेरे हूये कब मानतेथे उत्तमा
सा मुनी जनार्दन की तुष्टी देखकर बड़े प्रसन्न
होकर तिसको कहने लगे कि हे पुत्र मेरे वचन
से कुल भगवान तेरेको सदैवही प्यारा जानते
रहैंगे और थोड़ेही दिनोके भीतर तेरेको सोही
ने वेष सहजही मिल पड़ैगे अब तुम इन दुष्टो
का कुसंग जोहै सो त्याग देवो इहतो अवश्य का
लके वशहो चुकेहैं ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ उजकर

रा॰
भं॰
३८

अरु मनि बरकर देखी ॥ हेम सिखला हृदय व
सेखी ॥ भाख्यो अरे दुष्ट द्विज जानी ॥ मनि कर
बन्यो मूढ अब नानी ॥ आयो मीच निकट अब
जानी ॥ जो अब निज नीकी कछु मानी ॥ त
जि हमकाहे कटु कहहु नवागी ॥ नतरु क
फिहे अब जीह अभागी ॥ सुनत जनार्दन हृ
दय डुखारी ॥ गयो मौन निज सदन सिधारी ॥
शन कोपि न्रप सुनत जगवीरा ॥ जारि दीन सब

३८

37

मुनिन कुटीरा ॥ दंड कमंडल भाजन भूरी ॥
तोरि फोरि सब कीन्ह हूरी ॥ पकरि पकरि ऋ
षि मुनि सिष सारे ॥ करि डर दसा विविध विधि
मारे ॥ डरवासा नकि चले पलाई ॥ मानन हद
य त्रास लुनराई ॥ कीन जग्य अपमान महाना-
विधि मति फेरि काल नियराना ॥ जारि जटा
पट जोगिन केरे ॥ कानन बहिरदीन सब भेरे ॥
इहि विधि जग्य अनर्थ प्रकासा ॥ मुनिन नि

१२
मं
३८

38

वास कीन सब नासा ॥ दोहा ॥ कबहुं नइन
कानन हूंतो मानहुं मुनिन निवास ॥ प्रमकरि
उतरे ताहि थल हरषि जगाल अघराम १४ ॥
टीका ॥ तब जनार्दन ब्राह्मणकी और मनो उ
खासाकी परस्पर मैत्री भाव देखकर हंस कहने
लगा कि अरे दुष्ट ब्राह्मण जानी अबने इमसुनी
का नानी बनवे दाहैं मैने जाना कि तेरी मोत नि
कट आई है जो प्रथम अपनी कुछ भलाई चाहता

३८

हैं तो ऐसे कटुवचन मत कहो और हमारे पाससे
चलाजा नहीं तो मंद अभी तेरी जीभ बाहिर निका
ल डालेगा ऐसे सुनकर जनार्दन बड़ा दुखी भ
या और तहांसे उठकर अपने घरको चलागया
और उहां हेम डिंभकजो हैं सो होनो वीर अन्यन
कोपसे मुनियोंकी कुटिया और झोंपड़ी सबज
लाय कर दंड कमंडल इत्यादि सब तोड फोड दे
ते भये फिर उरवासा के चेलयोंको पकड पकड

रा
मे
३९

वहुत उपद्रव करके मारा और आप मुनी दुर
वासा राजा के पुरीका महां कोप देख करके त्रा
स मानकर भाग चला तिन्हों ने मुनियों का बडा
ही अपमान किया विधाता ने तिनकी वुद्धी
फेर दई काल नेऊ आय गया सब जोगी मुनी ज
टाधारी जो थे तिन सब की जटा उपाय दई और
वन से बाहिर निकाल दिये ऐसे तिनो ने बडा
घोर अनर्थ किया मुनियों के जहां जहां वास

अस्यानथे सोसब नष्ट करदिये ऐसे अनीत होता
किमानो ईहो बनमैं कोई बसताही नहींथा इ
स प्रकार सब उजाड करके हेस और डिंभकअ
पने दलके सहित नहोंहीं विश्राम करते भये ॥
१४ चौपई ॥ नहोकरत असमखोदि अहारू ॥ च
ले हरिखित अति भवन सियाहू ॥ भागत गये हू
रि डुरवासा ॥ बदुरव बिपुल असम शोक प्रकासा-
वेवे जवन शिघ बिकल बिहालाँ मिले जाय क

रु॰ मं॰ ४॰

रि रदन बिसाला ॥ मुनि प्रबोध कीर विविध सि
खाये ॥ धीरज धरहु विप्र समुदाये ॥ दुष्ट बिदल
न दीन हितकारी ॥ बसत द्वारिका कृस्न मुरारी॰
सो हमार रखवार सुहावा ॥ असरन सरन बिद
न जहि गावा ॥ हने नास अस खल जरा जारी॰
भने बिदन नव नाम खरारी ॥ असकरि साव
धान सिष सारे ॥ लिये सेन द्वारिका सिधारे ॥
सरण वान पालिक जडनाथा ॥ कस हमार सि

४॰

र घरहिं न ह्वाया ॥ असथी रज खनि भिखन उचारी
बलेजात पथ असन डकारी ॥ सहस पंच सिष
सेग बहाने ॥ पंच सहस लप खनन हनाने ॥ दोहा
पहुंचे जस तसकै निकट डागावति मनि जारि ॥
फटे कटे पहिरान पट करि सनान खभवारि ॥ १५
टीका ॥ तब हंस और डिंभक जो हैं सो तहां आने
द पूर्वक म्रगों का मांस खाय कर फिर हरषसे स
व समाजके सहित अपने घर को चले जाते भये

दृ
भं
५१

और कहूं मुनी दुरवासाजी भागाने भागाने हर च
लेगये भ्रम और शोक इतना व्यापना भया जो क
हा नहीं जाता है और तिनके शिष्य जितने क बच
रहे थे सोभी बडी दुरदशा से व्याकुल और रुदनक
रते हूये आय मिले तब मुनीने तिनको भली प्र
कार प्रबोध करके सावधान किया और कहा कि
तुम धीरज धरो दुष्टोंका नाश करने वाले दीनज
नों कि हितकारी कृष्ण परमात्मा जो हैं सो हरि

कामें बसेहैं और हमारे रक्षकहैं आ शरणोंकी

सोई शरणहैं जिन्होंने ऐसे खेलजो दुष्ट सो अने

क मारे हुयेहैं नसीनें तिनका नाम जवानमें खे

लारीहै अर्थात दुष्टोंके शत्रुहैं ऐसे प्रबोधमें म

नको सावधान करके मनीजोहैं सो द्वारिका

को चले आवनेभये मारगमें फिर कहतेहैं ॥

कि भाई भगवान शरणागत पालकहैं क्योंकि

शरण पडेको पालना करतेहैं हमारे सिरपर

१२
भ॰
५२

क्योंना हाथ धरेंगे इस प्रकार शिष्यों को धीरज
देने हुये रस्तेमे श्रम करके दुखी भये हुये चले
जातेहैं तिस समय मुनीके साथ पांच हजार
शिष्यथा और पांच हजार हंस डिंभकने मारदि
याथा नव जैसे तैसे करके सब संत जोहैं सो
द्वारिकाके निकट आय पहुंचे तहां स्नान
करके फूटे फटे वस्त्र जोथे सोई पहिर कर पे
य के श्रम निवारणेको जब्लक विश्राम करैं

भये ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ कीन प्रवेस नगर प्रभि

रामा ॥ कुल देव दरसन मन कामा ॥ ठाढे

द्वार दहिर प्रभु जाई ॥ द्वार पाल सन कह्यो बुझा

ई ॥ देहु जगाय वेग प्रभु पासा ॥ आये मुनि द

रसन तव आसा ॥ द्वार पा[illegible] डरवासैं मुनि जा

नी ॥ हरि सन जाय कह्यो सु भवानी ॥ ठाढे

द्वार मुनी दुरवासा ॥ लावहुं जो पावहुं प्रभु

सासा ॥ कह्यो कुल लावहु दुरत जाई ॥ तव द्वा

१२
मे.
८३

रघ मुनि वरषै आई ॥ मांदिर गयो लेन गहि हाथा। देखि मुनिन नायउ जदु नाथा ॥ महावीर जदु वंसिन संगा ॥ राजमान मन मोद उमंगा ॥ उग्रसेन महाराज सुहाये ॥ कनकासन राजत छवि छाये ॥ मणिगण रचित संघासन चारू ॥ सोभित जदुवर कृपा अगारू ॥ तिन समीप वल राम विराजे ॥ मनहु कोटि छवि सुरपति लाजे ॥ दछिन वाम विराजत वीरा ॥ हरि के उद्धव सात्यकि धी

८३

A3

रा ॥ दोहा ॥ कुनवरमा अक्रूर जुत आन समेत ब
लधाम ॥ हरि आगमन गदलो सकल बैठे सभा लि
लाम ॥ २६ ॥ टीका फिर उत्तवामा मनी सब मुनि
यौंके सहित सुंदर नगरमै प्रवेश करते भये सबके
हृदयमै कुसु[illegible] भगवानके दर्शनकी अत्यंतका
मनाहै तब जाय करके जड नाथके द्वारपर स्थित
होगये और द्वारपालों में कहने लगे कि भैया तु
म भीतर जाय करके खबर जणावो कि भगवन

१२
भं
४४

तुमारे दर्शनके वास्ते मुनी लोग आयेहूयेहैं तब

द्वारप ततकालही जायकर भगवानसे कहते भ

ये कि महाराज आपके दर्शनकी आशासे मुनी

द्वार वासाजी द्वारे पर स्थित भयेहूयेहैं जो प्रभुको

आज्ञा हो तो लै आवै भगवान सुनतेही कहते ल

ये कि जावो मुनीको सनमानसे लै आवो तबद्वा

रपाल ततकालही मुनीके पास आयकर वडे स

नमानसे हाथ पकडकर भीतरको लेगये तहा

४४

मनीने बडे वीर धीर जदु वंसियोंके सहित विरा
जमान भये हूये भगवान कैसे देखे कि मनमे म
नोहर स्वर्णके सिंघासन पर राजा उग्रसेन बैठे
हूये बडी छवी को उदय करते हैं और सुंदर मणि
यों करके जटित संघासन पर आप भगवान कृ
पा निधान विराजे हूये हैं तिनके पास काम देव
की छवीको लज्जा देनेवाले बलरामजी बैठे हैं
और जदुवीरके दहने बायें उद्धव और सात्यकी शो

१२
भ
४५

भा देतेहैं कृतवर्मा अक्रूर इनते लेकर भगवान के
भ्राता गद आदि बडे बलके धाम जोहैं सो सब अप
नी अपनी सज धजसे सभामे बैठे हूये छबी देतेहैं

१६ ॥ चौपाई ॥ खेलन नरद सान्य [illegible] की संगा ॥
दीन घाल उरहरष उमंगा ॥ बालक जेवा ज
ठिर समदाये ॥ बहु देवादि सकल खवे छाये ०
वार वार छवि मानस मोहन ॥ चितवन कमल
नयन छवि सोहन ॥ असप्रकार प्रभ त्रिभवन रा

४५

ये ॥ बैठे सचिव निज सभा सजाये ॥ जिमि सुग्री
व संग रघुराई ॥ खेले विजय खेल सुखदाई ॥
तिमि सात्यकि संग कुल विलासे ॥ देखि देखि
सब लोग हुलासे ॥ आये सभा सुभ्र डरवासा ॥
डटे विलोकि सुभट वस त्रासा ॥ द्रोर्नथाल ल
खिन मनिकाही ॥ काढि वरन निज केलि न
होंही ॥ लिये करन कल गोलप खेला ॥ सहि
त वीरवल राम सहेला ॥ चलि आगाल सचिव

र पग लागे ॥ अति प्रसन्न मानस अनुरागे ॥ पु
नि आहुक नृप कीन प्रनामा ॥ पुरे वचन सब
जादव नामा ॥ पंच सहस्र सिष मुनि वर संगा ।
ते आसिष सब देत अभंगा ॥ दोहा ॥ राम कृस्न
वसुदेव कहे आहुक भूप समेत ॥ आसिष दीन
प्रसन्न मन मुनि वर कृपानकेत ५ ॥ टीका
तहां सभामैं भगवान वडे आनंदसैं सान्यकी
के सेरा नरद खेल रहेथे और वसुदेव जीसे ले

४६

कर बालक ऊवा हट्ट जितनेथे सो सब सुखवे पूर्व
क भगवानके चरन कमलों की छबीको देख
देख मोहित होरहेथे इस प्रकार तीन भवनोके
नायक भगवान सभा सजायकर बैठे हूयेथे उ
मे सुग्रीवके साथ रामचंद्र महाराजने अनेक
खेल विलास कियेहैं तैसेही सान्यकी के संग
हल भगवान नाना विलास करके आनंद ले
ने भये तब सखी उरवासा जोहैं सो सभाके बीच

द॰ स॰ ५८

47

चले आये तिनको सब लोग देखकर डरतेहुये उ
ठ खड़ेभये कृस्न परमानमा मुनीको देखतेही न
रत अपनी खेलको त्यागकर बलरामके सहित
आयेही जायकर मुनीके चरनोंपर प्रणाम कर
ने भये फिर आहुक राजानेभी नम्रहोकर प्रणा
म किया तिसके उपरांत सब जादव मुनीके चर
नोंपर सीस नावते भये तब पांच हजार शिष्य जो
मुनीके साथथे तिनोंने प्रसन्न होकर सबको

आसीस बाद दिया फिर राम कृस्न और वसुदेव को आऊक राजा के समेत उरवासी सनी ने आनंद हो कर बहुत बहुत आसीस दिया ॥ ८ ॥ चौपई ॥
शिषन सहित सुनिवर कर देखी । दीन थाल उ रदशा बसेखी । केते नन घायल विधनाने । के नन कर जट जूट जराने । टूटे फूटे देउ कमेडल विछुरे केस विथन सुनि मेडल । कोपीनादि वसन तन फाटे । हाय हाय अस सुनि सब राटे ।

१२
भे०
५८

फरकन अधर अरुन दृग नाहीं । कालहू काल म
नहू मनि नाहीं । जादव देखि सकल अस भावे ।
कवन हेत मनि नायक आवे । उरपत ठाढ स
कल कर जोरी । चिता कुल चितवन मनि ओरी ।
कनक सिंघासन वेग मंगाये । तापर मनि महा
राज बिठाये । पद पखारि पूजन मनि कीना । च
रन वारि प्रभ सिर धरि लीना । यथा उचित सब मु
निन कुलासन । दीनानाथ दीन स्रभ आसन ॥ ५८

48

पुनि कर जोरि कहत ग्रस काहा । को अपराधि ना

थ नव राहा । आये कवन हेतु मुनि नत्ता । कासो

हिं ते कछु भई अवज्ञा । दोहा । हम अनन्य सेव

क सकल मन वच करम तुम्हार । कस आये मुनि

नाथ फिरि थोरहिं काल मझार । २८ । टीका ॥

तब भगवान शिष्योंके सहित मुनी की उग्रदशा

भई कैसे देखने भये कि कितनयोंके तन चाय

ल और व्याकुल और कितनयोंके जटाजूट जले

हुये दंड कमंडल सब टूटे फूटे हुये सिरके केश
बिखरे हुये और कोपीन आदि वस्त्र जो हैं सोभी
सब फटे हुये हाय हाय शब्द को उच्चारन करते
हैं और डुरवासा के भी क्षोभ करके अधर जो ओ
ष्ठ हैं सो फरकने लगे तब ऐसे कालके भी का
ल डुरवासा जो हैं तिनको देखकर सब जादव
डरते हुये हाथ जोडकर प्रार्थना करने लगे
कि महाराज आपने कौन कारन इतना क्रोध

कियाहै ऐसे कहिकर विन्ताके वस भये हुये सब
मुनी की ओर देखते हैं तब भगवान ने तुरत ही
सुवर्णका सिंघासन मंगाय कर तिसपर बड़े सन
मानसे मुनी को बिठाया और चरन पखार कर श्री
मतीसे पूजन किया फिर सो चरनों का जल लेकर
दोन वे धूने अपने सीसपर धारन कर लिया ति
सतें उपरान्त सब मुनियोंको यथा योग्य आसनो
पर बिठाय कर सतकार किया फिर भगवान

२२
भं
५

हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे मुनीना
यक आप कहिये कि कैसे आना हुआ है मैं आप
को कल्पकोपसे भये हुये देखता हूं कहो कृपा
ल हमारा कौन अपराधी है कि कोई मेरे से ही
अवज्ञा होगई है परन्तु हे मुनी नाथ हमको स
ब हमारे चरनोके सर्व प्रकार करके सेवक हैं
कोई अवज्ञा करने वाले नहीं हैं आपको थोरे
ही दिन भये हैं जो यहांसे गये हो अब कैसे आना

५

50

हृद्याहै कृपा करके कहो ॥८॥ चौपाई नवग्रा
मन मोहि सजम बढ़ाई । पैकारण कछु ल
ख्यो नजाई । असकहि अग्ने पाद्य सनमाना ।
कौस्यो मुनिकर कृपानिधाना । प्रभुके सन
कारन मुनिकारी । उपज्यो कोप इगन मन
मांही । अरुन नयन केपन थरथरांही । चित
वत भस्म मनउं मुनि कराही । फेरत हथा व
ढ़ें किन रिसक्राये । लोक विलोकि सकल

रा॰ अ॰ ५१

अकुलाहे। निकसत बचन कोप बस नाहीं।
श्रुन मिरवे नयन नकत अभकारी। जस तस
कै धरि कोप सँभारी। विलाखे वदन मलिनी
ता उचारी। तव भरोस हम दीन उचारे। विच
रत यह नित जास जान साढे। जो हम कहें अवल
महें विसारयो। तो जग आन कवन आया
रयो। एकुत जनड अजान समाना। हम
कारन कछु नाहिन जाना। विपत हतेत

५१

विदत भ्रम कारी । इह कारन ज्ञानन कस ना
ही । हवान देखि उरदशा हमारी । हरखहु भारी
म हेत मरारी । करहु हासि मोहि उखिन विचा
री । भेतव विमु विवस हेकारी । विश्व पालनि
जे विरद महाका । उप जत मदड़े दीन विसराका
दोहा । हकहत मोहि अज्ञानते घटघट जानन हा
र । कहि न सकहे कछु लाज बस निज उरदशा
विचार ४९ टीका ॥ भगवान कहते हैं कि हे म

१९
भ
५२

52

नीलाय्य तुमारे आनेसे मेरेको बड़ा अजस और
बड़ाई है परन्त तुमारे दोषका कलंक कारन
नहीं लाया जाता है ऐसे कहिकर भगवानके अर्घ
पाद्य आदि मनमानसे भक्तोंका पूजन किया
तब भगवानके सतकार करने करने भक्तोंके दि
लमें कोप जो है सो दूर जाता होजाता भया और
नेत्रभी लाल भये हुये क्रोधसे थर थर कांपने
लगा मानो देखनेमेंही भस्म करजाता है क्रोध

के भये हुये नेत्र वारो ओर फेरता है कोप सब दे
ख करके व्याकुल होगये कोप ऐसा छाय रहा
था कि मुखसे वचन भी नहीं निकलता एक ट
क देख करके भगवान की ओर देखता है अंगको
जैसे तैसे करके कोपको संभाला ओर कहने
लगा कि हे भगवन दीनहितकारी हमारे भरोसे
पर हम सभी लोग अभय होकर पृथ्वी पर वि
चरते हैं जो हे दीनानाथ अब हमने ही विसराद

त

स॰
भ॰
५३

53

या तो हमको जगानतै किसका अधार बड़ा आप
मेरेको अजान होकर रखते हो कि हमने कारन
नहीं जानाहै हे कृपा निधान तुम सरब जगतके
अंतरजामी और घट घटकी खबर रखतेहो इस
कारन कैसे नहीं जानतेहो अब भगवान आपने
नेत्रोंसे हमारी दशा देखकर मेरे आवनेका का
रन रखतेहो और हमको दुखी जानकर हा
सी करतेहो हमको अपनी बड़ाई और प्रतापका

अभिमान होगया है ब्रह्माण पालजो अपना वि
रद है सो मदके वश होकर दे देहो क्योंकि चट व
टकी जानत हो तुम मेरेको अज्ञान बनकर पू
छते हो मैंने अपना अपमान विचार कर लज्जित
भया हूया कछु नहीं कहि सकता हूं । १९ । चौपा
ई । यद्यपि तुम जानत सब अहहीं । तदपि एक
पद अस कैहौं । डिंभक हेम भूप खल पापी । सा
ल्व नगर जहा बसहि प्रतापी । अहकर बसत ह

विसार

भै॰
५४

मार मराना । तिन जद्ध जाति कीन अपमाना ।
मनि आश्रम सब जारि उजारे । भये हनन शिव
त्रिशूल हमारे । तोरयो दंड कमंडल जारी ।
पटको पोन दीन सब फारी । इह अवरज तब
रह्यन अपारे । क्रैहैं अस ड्रर दशा हमारे । अ
व तम एक जगल अग यामा । जोनहिं किये
हनन संग्रामा । तो तुमार अर संज्ञन वेसा ॥
देत शाप सब करहुं विध्वंसा । अर्जन भीषम

54

सब भटि जोई । इन कहुं जीति सकै नहिं कोई ॥
तम बिन कवन तिनहुं जग हेता । जिनहुं कीन
तप शेष अनेना । इह प्रबल जग सुभट अराती-
मारहु वेग इनहुं परि ख्याती । तोन माधव वंस
वचैहीं । होहिं अवस्थ सकल नत खैहीं ॥ दोहा
उरवासा करकथन सुनि कस्यो क्रूम मसका
य । लखु कारज वश ताष्य अस कस मानस रि
स ख्याय ॥२०॥ टीका ॥ उरवासा सुनी कहते हैं

१२
भ.
५५

55

कि हे भगवन यद्यपि तुम सब कुछ जानते हो
तथापि पूछे पर कहता हूं कि डिंभक और हंस रा
जा के पुत्र बडे पापी और महा प्रतापी शाल्व नग
र मैं दोनो वसते हैं अशाकर तीर्थपर हम मुनी
लोग जो वास करते थे तहां तिन दुष्ट जातियों ने
हमारा अत्यंत अपमान किया है मुनियों के
आश्रम सब जलायकर उजार दिये और हमारा
पंचहजार शिष्य मार दिया है दंड कमंडुल तोड

नाडकर वस्त्रको पीन आदि सब फाड फूड दियेहैं
हे भगवन तुमारे होते इह आप्सजे और हमारी
इह दुरदशा भईहै अब जेकर तुम तिन पापकी
खातियोंको जडमै नासको प्रापत नहीं करो
गे तोमै तुमारे पुत्र और सब परिवार का श्राप दे
कर नास कर देऊंगा और इह अर्जुन और भीष
म जो तुमारे सूरवीर हैं सोतिन दुष्टोंको रणमै
नहीं जीत सकैंगे तुम्हारे बिना जगतमै इनको

११
भं०
५६

कौन मारने वाला है कि जिन्होंने महादेवका प्र
सन्न न किया है इह दुष्ट दोनो मह प्रबल सूर
वीर शत्रु हैं इनको तुम ही रणमें छाती परकर मा
रोगे दूसरे के मारने लायक नहीं हैं तव तो तुमारा
वेस भी खबर हैगा नहीं तो सबकुछ हो जावेगा इसप्र
कार ड रवासामुनी का कथन सुनकर भगवा
न नमसकार कर कहते हैं कि हे मुनी महाराज
इस छोटेसे कारजके वासते आपने को इतना

५६

56

बडा कोप कियाई ।२०। चौपई । कवन बात
इमि भक अरु हेसे । आप मरहिं उजडोहि असेसे ।
यद्यपि सुर बिरंचि किन आई । करहिं समर ति
न कोटि सहाई । बरुण कुबेर मेर जम काला ।
इनकर बनहिं सकल रखवाला । यद्यपि सुरा
सुर होहिं सहैया । तदपि हतउं नव चरन उठै
या । नजऊ मनीस शोक सब भांती । अब न
बचहिं नव उष्ट अरानी । सपन स्वर्ग अरु सपन

पताला। मगन सिंधु महि मेरुल शाला। एवम
हिं कुलस भवन किना जाई। कौन सकहिं मुनि
नाथ बचाई। सुनि शुभ वचन उर हरि भाती॥
भयो मुनीस कोप कछु शांती। लगयो वदन श्र
मतनी उचारन। दीनदयाल दीन दुख हारन। जै
जै चक्रपानि भगवंता। जै मुकुंद जै जै श्रीकंता।
जैति हरि जै भक्त उधारन। जै महि हरण भार
जग कारन। जैति विप्र सुर संत सहैया। जै जै

मान भक्त भव दैया ॥ जै अनन्त जै अजर अघारी ॥
जैति जैति दीनन दुखहारी । जैजै जैति चराचर ग्य
ता । जैजै दलन दुष्ट संघाता । अस प्रकार अस्तु
ति प्रभु गाई । मुनि वर लीन शांति सुख पाई । न
व प्रभु कह्यो छिमहु मुनि नायक । छमा परम
सन्यासन लायक । दोहा । अस कहि छमत कृपा
यतन वचन व्यंजन बनवाय । दुखवासै मुनि मुनि
न जन प्रभु दिन दीन जिमाय । कैसं नष्ट प्रसन्न

रा.
भं.
५८

मन झनि झनि आसिषदेत । मुनि नायक सब मु
नित ज्ञान गावने कविरन केत ।२१। टीका । भग
वान कहतेहैं कि हे मुनी मो हेस और इंमक क्या
कितनीक वानहैं ब्रह्मणोंके द्रोही आपही मर जा
वैंगे यद्यपि शिव ब्रह्मा भी आयकर इनको रणमें
सहायता करें और वरुण कुवेर इंद्र जम इत्यादि
और सब सुरा सुर भी रावणादि बने तद्यपि न मारे
वचनोंकी दुहाई कि मै इनको मारूंगा हे मुनीना

५८

58

य तुम शोककों त्याग देवो अब इह उग्र हमारे बा
ण कदापि कालना बचैंगे सातो स्वर्ग और सातो पा
ताल सातोंही समुद्र और सब पृथ्वी मंडल इनस्थ
स्थानोके बीच जाहो जावैं और यद्यपि वज्रका घर
बनायकर तिसमैं प्रवेश करैंगे तोभी मेरे कोप
के आगे इनकों कौन राखने वाला है इसप्रकार
भगवानके बडे उग्र वचन सुनकर मुनीके हृद
यमें कोपकी ऊष्म शांती होती भई तब दीन वेष

१२
भ
५५

57

भगवानकी अस्तुती जो है सो करने लगा कहता
है कि जैहो नमामी हे चक्रके धारने वाले भगवन
जैहो नमामी हे मकुंद हे लक्षमीके नाथ हे कमल
परमात्मा जैहो नमामी हे भक्तजनोके उधारने वा
ले हे पृथवीका भार उतारने वाले हे जगतके का
रन भगवान जैहो नमामी हे साथ ब्रह्मणकी र
छा करने वाले हे अनन्त हे अमर हे दीनोके दुख
दारिद्र हरने वाले जैहो नमामी हे सर्व चरा चरके

पालक हैं उह चालक हैं संत जनोंके आधार इस
प्रकार भगवानकी अस्तुती करके मुनी जो है सो
शांती और सबके पापन होता भया तब भग
वान कहने लगे कि हे मुनी नायक आप क्षमा
ही कीजिये इह क्षमा करनी हम संन्यासियोंको ही
योग्य है ऐसे कहिकर भगवान बडे पवित्र अंजन
बनवायकर मुनीको सब शिष्योंके सहित आनं
द पूर्वक जिमाय देते भये तब दुर्वासा मुनी सब

नियोंके सहित बार बार आसीसा देकर फिर ब
डी प्रसन्नतासे विदाय होयकर अपने आश्रमको
चले गये ११ चौपाई उत हेम इंभक जगा भाई। पि
तापै जाय चरन सिरनाई। बारं बार हरख जुत होई
बोले बदन बचन सम दोई। करि अब राजसूय
मख काहीं। लीजै जनक सुजस जग माहीं। ह
म जीतब महि मंडल सारा। होहिं जनक मख स
फल तमारा। समर सरा हर सुभट सबाही। हम

६०

जीतव संशय कछु नाहीं । विदित हमार हेतु रख
वारी । निजगण जगल दीन विद्रारी । मलिमही
प कर जीतन जेहू । हमकहं सहज सग्राम पितउ
हू । बल दल सहित सुतन बखाना । परम हरष
निज मानस माना । कह्यो तनय लायक सुत दो
ई । सकल संभार सजन सब होई । अस सुनि कथन न
श्रवण निज धारी । विप्र जनार्दन भक्त सुखारी ।
करब वचन भूपति मन कीना ॥ पापी उभे सुय
काहियरो तब भयो मलीना

२२
स
६१

61

म सुनत तोरे । भाषत बचन गरल जनु बोरे । मरिहैं
प्राण तोहि डीन मारहीं । सठ बोलेसि भाव बचन उचा
रही । जनि नृप करहु भजन इनकेरा । कैहैं नत
र नरक नव डेरा । अधम होत राज सम सखपहु ॥
भाखेहु सत्य भूप गुण गेहू । सुनि अस विप्र कथ
न सुनताई । बोले बचन रोष सरसाई । दोहा ॥ स
खेनि बणी कर कवन डुज देहु नवे गज ज्ञाय । अ
वहिं सीस कटि नास हम यराहु ग्रग्र पित्र ल्याय २२

६१

टीका ॥ उहां हंस और डिंभक दोनो जायकर पिता
के चरनोपर सीस नावते भये फिर दोनो भ्राता ह
र्षमे भरे हुये पिताको वार वार कहने लगे कि हे
महाराज अब आनंद पूर्वक राजसू यज्ञ करके ज
गतमे सुंदर कीरती और जस जोहै सो प्रापत करो
हम से रणी पृथ्वीके जीतनेको सामर्थ्य है आप
का यज्ञ सहजे ही सफल होगा हमारी कृपासे ह
मारे आगे रणमे सुर असुर कोई नही ठहरेगा सब

ए. भ. ६२

को जीत लेवैंगे महादेवने रक्षाके वास्ते अपने
दोयगण हमारे साथ दिये हुये हैं इससे पृथवी के
राउराजे हमको जीतने सग्राम और सहज ही हैं
तब अहलदन राजा जो है सो पत्रोंका कथन सुनक
र बड़े हर्ष को प्राप्त भया और कहने लगा कि
हे शत्रु तुम सब सामर्थी और लायक हो अब यज्ञ
का समाज सब शीघ्र तयार करो इसप्रकार राजा
का कथन सुनकर भगवानका भक्त जनार्दन

६२

62

ब्राह्मण जो हैं सो क्रोध को यजमान पर करके कहने
लगा कि हे राजन क्या तेरा हृदय कुछ मलीन
होगया है अथवा तू बौरा होगया है यह दोनो तेरे
पुत्र जो हैं सो मानो विष के भीरे हूये वचन कहते
हैं आपतो मरेंगे तेरे को भी मारना चहते हैं इह पा
पी और महा मंद केवल अनर्थ ही भावते हैं हे रा
जन इनके कहने पर मन चलना नहीं तो तुमा
रा नरक में निवास होवेगा और इह राजसू यज्ञ

जो कहते हैं सो तो होना बड़ा कठिन और दुर्लभ है
मैं सत्य सत्य कहता हूं ऐसे जनार्दन के वचन सुन
कर राजा के पुत्र जो हैं सो बड़े क्रोध में होय कर के
कहने लगे कि ग्ररे प्रथम ब्राह्मण ने इह क्या का
यवों कैसे वचन सुनावता हैं सो इस समय पृथ्
वी पर कौन पुरुष है जो हमारे यज्ञको निवारण क
रेगा । सत्य अबी उसका सिर काट कर पिता के च
रनो मैं लाय धरेंगे २२ चौपई ॥ विप्र जनार्दन त

वड़े उवारे । वृथा काम मावे हृदय नमारे । भीष
म देव जीयन जग माहे । जीनन समर सदा सर
काहे । जीवन जरासिंध ध्रुव धीरा । नहिसन क
वन समर थिर वीरा । जादव सकल प्रवल भरि
भारे । जिनहें इमन अरि समर वडारे । तिन मध
कुल खलन हैकारी । नामन कवन करन रण
धारी । सजन हार अखंड निकाया । अज अनंत
अन भव पति माया । जहि वलराम नाम गरुआ

सु॰
मं॰
६४

ना। हलधर सुभट सूर विख्याता। सरसुव सरसु य
रति सिरधारा। मनत वेद फनपति प्रवतारा। सु
मरत जासु नाम अग जाला। सकल लोक आधा
र कृपाला। महावीर सात्यकि अभिरामा। जीन
व नाक्षु कवन संग्रामा। प्रवल सुभट इन जीत
न काही। नव अभिमान हृष्यो मन माही॥
दोहा। सुनिन नाथ अपमाननैं नमझे भागा ग
न होय। जलयान सम पानकी भये विदत ज

६४

गरोय । इरवासा संजत शिषन झगिवत निर्दव

पाय । करनि कथन नव करनहि नगये शरण

नउपाय । २३ । टीका । जब राजाके पुत्रोंने कोप

मे अभिमानके ववनकहे तवभी जनार्दन कहता

भया किहे राज कुमारो तुमारे हृदयमे यज्ञकी अ

भिलाषा जोहै वृथाहै क्योंकि भीषमजी जो सरव

सुरा सुरको जीतने हारेहैं सो जगतमे जीवतेहैं और

तैसेही जरासिंधभी जीवताहै जिसके आगेरणमे

९२
भं०
६५

65

कौन स्थिन होने वाला है और बडे प्रबल और महा स्व
र वीर सब जादव कि जिनोने अनन्त शत्रु रण रूपी
नदी मे मारकर बहाये हुये हैं फिर तिनके बीच महा
वीर धीर खल जोडे हुऐ हैं तिनका क्षै करने वाले कृ
ष्ण भगवान हैं तिनके मन सबे रण मे युद्ध करने को
कौन सामर्थ्य है और कैसे हैं कि अनेक ब्रह्मांडों के उ
त्पन्न करने वाले अनंत भगवान कि जिनका अ
न्त नहीं आवता है और माया के पती अखंड अवना

सीहैं और सूरवीरोंमें प्रधान बलरामनाम जिनके
भ्राताहैं सोकैसेहैं किसरसोंके दाने वत जिन्होंने ए
थ्वीको धारन किया हूआहै जगतमें शेषनागका
अवतार और सरव सृष्टी के आधार प्रसिद्दहैं तैसेही
बलके धाम और बडे प्रचंड वीर सात्यकीकि जिनके
जीतनेकी रणमें किसीको सामर्थ्य नहींहै ऐसे महा
प्रतापी सूरवीरोंके जीतनेकी तुम अभि लाखा रख
तेहो रुद्र तुमारा अभिमान वृथा हीहै तुमतो मनी

रा॰ भ॰ ६६

नायक दुर्वासाजीके अपमान करनेसें भागोंसेही न होगाये और ब्रह्म ज्ञानके समान पाप जोहै सोतो मारे दोनोके माथे लग गयाहै दुरवासा मुनी सब शिष्योंके सहित बडा दुखी होयकर और निरादर पायकर तुमारी करनी कथन करनेके वासते कृस भगवानकी शरणको द्वारिकामें चलागयाहै।

२३ चौपाई। सुनत हंस बोल्यो रिस मानी। दुज क म करत भौनि बस बानी। भीषम निरबल जठिर

६६

अनीती। धनुष धरन कछु लावहिं न रीती। समर
ठाढ़ हम सनमुख सोई। तीन काल दुज कबहुं न
होई भने तुमहुं जादव वर जेते। निबल दीन काय
र सब तेते। वीर धीर जिन कवन उबारा। हरे सम
र मागध बहुवारा। मान्य कि सोउ सुभट किमि
जोगू। भीरु विकल जानत सब लोगू। इह बाल
क घरही के बाढ़े। परे काहु संगर नहिं गाढ़े। रा
म वीर तुम जवन बखाना। सो सुनि अचरज होत

र
भं
६७

67

महाना । वाकहि मन रहत नित सोई । यनुष
यरन नहिं ज्ञानन कोई । जाहि क्रम कहे ईश्वर
लेखा । सो कबहिं भ्रम नसहिं वसेखा । नेदको
प कर स्रवन कह्यावा । हमरे कबहूं नसन मवे
आवा । पंडूक मोर मित पति यरना । तोकी
करत गोप अज करना । दोहा । यरन यमे
यरनी विदन जरासिंध हनवोय । मोर महा
यक होहिं सो करहिं नवैर विरोय २४ ॥ टीका

६७

तब जनार्दन का बचन सुनकर हंस बड़े कोप
मे कहने लगा कि अरे ब्राह्मण क्या डरके वश
भया हुआ बचन करता है भीषम भीषम जो
रटता है मूढ़ सोतो निरबल और बूढ़ा अनी
ती परथ है यनुष धारने की रीती को क्या जान
ता है हमारे सनमुख रण मे कदाचित नहीं हो
सकेगा और जो तुम सब जादव कहते हो सो
भी मुझ भी हु डरने वाले दीन और कायर नि

रा॰
भा॰
६८

नको महावीर कौन कहताहै सो गाथ जो जरा सि
थ तिसने रणमें अनेक बार ऊपदशा करके भगा
ये हुयेहैं और साध्यकी जोहै सोतो अनसे काय
र और बलहीन भयसें कांपने वाला सब कोई
जानताहै वे किस प्रकार ज्झके लायक सम
झा जावे इहतो घरकेही बालकहैं कभी रणकी
गाढी गरमाई और घाम नहीं देखी और बल
रामको जो तुमने वीर कहा सोसुनकर बज

६८

आवजी आवता है वारुणी जो शराब है सो पीक
रके नित सोया ही रहता है धनुष धारने का जि
सको कछु ज्ञान ही नहीं है और जिस हमको
तुमने ईश्वर समझा हुआ है सो कहो कि इस ब्र
मनुमको कबका भया हुआ है वे तो नंद गोप
का पुत्र कहावता हमारे सनमुख तोरणमें क
वी नहीं आया पांडुपुत्र जो राजा जुधिष्टरमे रामि
त्रै है सो गोप तिसकी नकल करता है और जो ए

बि॰ रा॰

61

धर्मीपर धर्मके धारने वाला बड़ा ज्ञान मान औ
र विचारमान जरासिंधहै सोतो सर्व प्रकारक
रके मेरा सहाय करैही होवेगा और मेरेसाथक
वी वैर विरोध नहीं करेगा २७ चौपाई । तब
ॐ जनार्दन प्रकट बखाना । स्फदरप बश
पवहिं नजाना । भीष्म देव पाडव कुरुवंसी ।
जीयत सकल जादव रिपुध्वंसी । कहि विधि
राजसूय तब होना । काबर धरनि बीज जिमि

६५

बीना । हंस अनय कछु गिरा न मेरी । नवमनि हीन प्रकट विधि फेरी । बोल्यो हंस ऊपन अधि काई । जायन विप्र नोर जळनाई । पुनि पुनि भ नऊ प्रबल रिपु काही । जानऊ निबल हमहिं म न माही । इह अपराध छिमा हम कीना । जा निदीन जाचिक मतिहीना । पेअब सासन मा नि हमारी । विप्र जाऊ द्वारिका सिधारी । नंद गोप सुत सन गत त्रासा । मोर कथन अस करऊ

प्रकासा। रह्यो राजमह जनक हमारे। हमहूं स
कल महि जीनन हारे। हमरे देस लवण अधिका
ई। बलहू लेन वहू हृषभ भराई। आन देउ हमतें
नहिं लेहू। देहूं न कछु धन हेतु कलेसू। दोहा।
जो अनुसासन हेस नृप तव न सीस धरि पड़ ॥
तो कहियो कुल सकल तव हरहिं विगत संदेहु।
२५ टीका। जब इस प्रकार हेस अभिमानके वश
होकर सबको निदरता भया तब जनार्दन ब्रह्मण

तिनका मौन जो है सो प्रकट करके फिर कहने ल
गा कि हे मूढ़ तेरेको हंकारने ग्रस लिया अब कु
छ सूझता नहीं है देखने भीष्म देव पांडव कु
रुवंसी और महावीर शत्रुंका नाश करने वाले
सब जादवंसी जीवते जागते हैं तुमारा राज सु
किस प्रकार होवेगा तुमने कलह वाली मसी
मे बीज बीजना चहने हो सो कैसे उगेगा हे हंसमे
रा वचन झूठा नहीं है तेरी बुद्धी विधाताने फेर

दशैहै। तब हंस फिरकोपसे कहने लगा किहे ब्रा
ह्मण तेरी जपता नहीं जाती है जोतू हमको निब
ल जानता हैं और बार बार शत्रुकी प्रबलता जग्गा
वता हैं मै तेरेको दीन और जाचिक जानकर इहम
पराध क्षमा कर देता हूं पर अब तू इहकामकर
किमेरी आज्ञासे द्वारिकामे जायकर और निर्भय
होकर नंद गोपके पुत्रसे कहो कि हंस और डिंभ
क के पिताने राजसू यज रचाहै और वे दोनो सं

हुए पृथवी को जीवन होवेहैं तुमारे देशमें जो ल
वण वहुत करके होताहै सो तिसके तुम वेल भरा
य करके लेवलो तुमारेसे और कुछ दंड ना लेवैंगे
और ना थुन आदि कुछ कलेश देवैंगे और जेकर
कदी इह इस राजाकी आज्ञा तुमने सीस पर नही
धारन करी तो निश्चय करके जानलेना जोवे तुमा
रे सर्व वंसका नास करदेवेगा २५ चौपाई हेसक
पन सुनि इउ वरज्ञाना । भये सहाय हुस मु

नि जाना । मोहि मलीन वदन दीन नहि जेहू । सब कु
र भयो कवन संदेहू । उपज्यो हृदय विषम खेद भा
री । चल्यो प्रवाह जात दृग वारी । निकसत वचन
हरष वस नाहीं । कुलदेव मन मिले नहाहीं । बो
ल्यो वहुरि हेम ग्रस गाथ्या । मेरी सपथ तोहि उज
नाथ्या । मैजस कह्यो तहो तस कहना । भीति वि
वस कछु मौन नरहना । सुनत जनार्दन वचन
वखाना । सुनहु नरेस श्रवण गण खाना ॥

नव नदेस द्वारिका सिधारी । वरनन करऊं कथन
नव सारी । अव मै करऊं सदन निज जाना । होहि
सदिन सभ सुखि पयाना । अस कहि विप्र हरख
उर छाये । चल्यो भवन मन संपति पाये । करत
विचार जात जीय नेहू । निश्चय भये काल वश
एहू । पै मोहि मन रूप हेम भलाई । कीनी वद
न कहि न कछु जाई ॥ दोहा रही जनमदै लाल
सा करणा दास सावबैन । भई सफल अव भावा

वम देखतेहुं भरि भरि नैन २६ टीका ऐसे हंसका
कथन सुनकर जनार्दन ब्राह्मणने जाना कि अव
मुनीके सहायक कृष्ण भगवान भये और जौनसा
मुनीने मेरेको बरदियाथा सोभी अव सफल भया
है इसमें कछु संशय नहीं है इह विचार कर ब्राह्म
ण अपने हृदयमें ऐसा हरष मानता भया कि ने
त्रोंसे प्रेम जलकी धारा चली जाती है और मुखसे
वचन नहीं निकलता मानो कृष्ण भगवान अवी

७३

मिल पडे हैं तब हंस कहने लगा कि मन ब्राह्मण ने
रे को मेरी सुगंद होवे मैने जो कछु कहा है मोन नहीं
अभय होकर सब यथावत कहि देना मोन नहीं रह
ना जनार्दन कहने लगा कि राजा हंस मैं नमस्कार
पान स्पर्श करके सब कहूंगा अब मैं अपने घर को
जाता हूं सुभ दिन देखकर द्वारिका को चला जाऊं
गा ऐसे कहता हुआ ब्राह्मण मानो बडी संपती को
पायकर अपने घर को चल पडता भया तब माया

१२
भं
७४

मैं विचार करताहूं कि इतने निश्चय करके कालके व
श होय गयेहैं परन्तु मेरेसाथ जो राजा हैं उनने भलाई
करीहै सोकछु कही नहीं जाती क्यौं कि जन्मतें लेक
र ही मेरे मनमें भगवान कृपानिधानके दरसनकी
लालसा लगी हुईथी सो अब भाग्योंके उदय होनेक
रके सफल भईहै जोमें स्यामल मूरती वाले नंदकु
मारको भलीप्रकार नेत्र भर भरकर देखूंगा २६ ॥
चौपाई ॥ अस गुणि जाय भवन निसि सोयो । ततक

७४

74

न नैन नीर्द्वस होयो । चल्यो प्रात उठि वाजि सहल्का॰
प्रभु दरसन सुभि लावन ललका । जेठ मास जिमि चा
तक पयासू । धावत सर पीवन जल आसू । तिमि
द्विज चल्यो द्वारिका धाई । लीनसि मनहु कलप द्रुम
पाई । न्नरनाहिं वेग यद्यपि वडुदीना । तद्यपि मेंदग
ति मानस चीना । छुधा पिपा दिन श्रम कछु दूजा॰
पथ विश्राम परो नहिं सूजा । कब पहुंचहुं द्वारा
वति यामै । देखहुं कमल नैन घनस्यामै । मोहि

रा०
भ०
७५

सन हेस कीन उपकारा। दससायो वसुदेव कु
मारा। आज कवन मे सार महाना। धन्य धन्य
मोहि सदृश आना। जदि इन नैनन हेरिहं सुख
बा। नेदलाल दरसन मनभावा। भयो विदित
दारुन मोहि याता। देखव बदन केजजग त्रा
ना। दीन याल दरसन ने काहू। नहिन प्रवि
क संसृति उनमाहू। दोरा। यवजे उपायन क
वनैन प्रभ मनभावे अवजाय। करव निछावर

७५

75

शरण मन तन चरनन सिर नाय । कवित । भयो
एक मेरोई जनम जीवन सफल मेरोई सुभाग
जागे जाते जग जानतहैं । मेरोई प्रभाव प्रम सूरसो
उदित हरव दूषण उलक हर दारद दगतहैं । मोको
यस भयेवेको भयो न प्रसंग भव प्रवलो विनायो
अपदामे दिनरातहैं । आज विधिदाहन विचारकै
निरहहै जाय राधावर स्यामल सलोने जौने गातहैं ।
मेटिन मलिन मनो मानस हरन कीट कंडिल स

रम्य कुञ्ज कानन विराजैं जास । हीयरो विसालथें लसित वनमाल मांथें कौस्तुभ जाल ओ रसाल मु ख मंदहास । नीरज नवल नैन कोटि छवि मैन है न सांवरे ववैया चैन कानन करन वास । अशोभा या करुणा निधान भगवान आज ऐसो ध्यान यो वर विलोकव दरसन दास । दोहा । सुमरन रूपश्च नृप कल कुलदेव भगवान । मोहि आगल जन वतरभजन वलन होन श्रम मान । पैश्क वडे क

७६

76

लेस मोहि उपज परयो जीय माहिं । हेस हूं भंगानल
वन कर कस कहिहैं प्रभपाहिं । जो न कहूं पवउ
गूढ़ नव करहुं कवन भाव जाय । उन कठोर अति
हेस इत अति कोमल जदुराय । पै मम हृदय भ
रोस इह दीन बंधु भगवान । जनहि यकी जानन
सकल यदपि अजोग बखान । धर्म हनन अरु मी
तको प्रीत रीत संसार । बूझत भलहिं कृपायतन
न श्री वसुदेव कुमार । दीन नाथ कहं कपट गात

१२
भं:
८८

77

मिलहिं जो मनमुख जाय । तोकर दोष न गनन हिं
कछु यति उदार जड राय । तोते जाउ अमेकमें यय
ति हंस पठेउ । मेरो दोष न गनन हिं कछु जडपति दी
न सनेउ । गनत मनहिं मन विप्र अस गायो सरन प
ति नीर । उतरन पार प्रवेस पुर कियो सुमरि जड
वीर । सवैया । बहुरि विचार करै उज मानस ज
हि हित जोगि जती व्रतधारी । संभु समाप अगा
ध यथैं ठोकरैं हठ कोटि तपीस्वर झारी । आवत

८८

ध्यान नमे भगवान थके सब अंतर्हें ने तितउचारी ॥
आज सु ग मर्मै नैनन जाय सु देवि इंद्रे रूप अनन्त सु
धारी । टीका । मुविभाग मोहि सरस जग आज न
दूजोकोय । बिन श्रजासु जाके सुपाम फूल मिला
वा होय । असप्रकार उज ग्वान मन मन प्रमोद
सुवेणाय । आय भवन हरि द्वार थिर भयो नेत्र सि
रनाय । २७ । टीका । नव जनार्दन हरषके वश
भया हुआ मनमै विचार करता करता घरमै जाय

भै ७८

कर सोचता भया परन्तु भगवानके दर्सनका जो
उत्कण्ठा हुया तिसनें नेत्र जोड़ें सोतीदके वशनहीं हो
नेभये शान होतेही घोडेपर सवार होकर भगवान
के मिलनेकी अभिलाषा वाला भयाहुया जैसेजे
ठके महीनेमें रस्ते चलने वाला पुरुष त्रिषाकरके
व्याकुल जल पीवनेके वास्ते सरोवरको धावताहै
तैसे ब्रह्मण द्वारिकाको धावता भया मानो कल्प
वृक्षको प्राप्त हुये चलाजाताहै घोडयोंको यद्य ७८

पि बहुतही बलावनाहै तथापि थोड़ेही बलते धनी
न होतेहैं ऋष्य श्याम रमनेका विश्राम इहकछ न
ही सहजताहै करनाहै कि हरिकामै कब पडूंहूं श्री
र कमल नैन घन श्यामको कबनेर भरकर देखूं धु
हो हैं सने मेरे साथ बड़ा उपकार कियाहै जो त्रैलोकी
के नाथका दरसन करवायाहै आज संसारमै मेरे
समान धन्य कौनहैं कि जिसको इननेत्रोंमै नेदला
ल महाराजका दर्शन होगा मेरेको आज विधाता

१२
भ
७५

दरसने भयाहै जो भगवानके चरन कमल देखनेका
संजोग बना दीन बंधुके दरसनते संसारमें औरको
ई अधिक लाभ नहींहै ऐसे विचार कर कहताहै कि
अब जायकर कृपासिंधुके आगे भेटा क्या धरूंगा औ
रतो कछु नहींहै परन्तु तन मन प्राण इहजोहैं सो
निछावर अर्थात वारने कर देऊंगा मैं जानताहूं कि
आज जगतमें एक मेराही जीवना और जन्म सफल
है और मेरेही भाग जागे हुये जाने जातेहै और मेरेही

७५

प्रभु का प्रभाव सूर्जकी नाईं उदय भयाहै जिसनें दो
ष रूप उलूक और दारिद्र रूपी उलक जो उहुतहैं सो सब
दीन होकर छिपगयेहैं और मेरे धन्य होनेको प्र
वनक कोइभी समय नहीं बनाथा अपदामेंही
दिनरात व्यतीत करता रहाहूं आज विधाता मेरे
दहने भयाहै जोराधावर स्याम सलोने भगवान
का जायकर [illegible] दरसन करूंगा सोकैसे भगवा
नहैं किजिनके सीसपर मनियोंके मनको हरने

१२
भ.
द.

वाला मणियों करके जटित बड़ा मनोहर मुकुट है
और कानोंमें मकराकृत कुंडल बड़े विशाल हृदय
पर शोभा देतीहै तुलसीकी माला और कौस्तुभ
मणी गलेमें सुंदर मधुर मुसकान और नवीन
कमलों वत नेत्रोंकी उपमा कामदेवकी कोटिछ
वीको लज्जा देनेवाला श्यामल शरीर गौ अनके च
राने और वनके विचरनेमें जिनकी प्रीती अहोमे
रे भाग्य जोमैं ऐसे ध्यानके सहित भगवान कृष्ण

8

निधानको आज जायकर देखूंगा दीन बंधुका
ध्यान स्मरण करते करते ही मेरेको ऐसे अती
न होताहै कि मानो भगवान वलभेज रूप मेरेअ
नत मन भावहैं परन्तु एक कलेश मेरे जीयेमें
अतसे करके उपजरहाहै कि हंसके लवण मांग
नेकी अनीती भगवानको कैसे कहूंगा और जो
नहीं करता तो नहीं जाय करके क्या उत्तर देउंगा
इह मेरेको बड़ी कठिन बनी है जो ऊहो अति क

होरहेंमें और इसे अनसे कोमल जडनाथ मैंकिस
की कहूं और किसकी नाकहूं परंतु इसके बीच एक
मेरे हृदयमे भरोसाहै कि दीन वंधके मनभावय
द्यपि कोई अयोग्य कथन भी होवे तथापि जनके हृद
यकी भगवान जानने हारेहैं संसारमे इनके धर्म
और सील की प्रीतीको श्रीवसुदेव कुमार जोहैं सो
भली प्रकार जाननेहैं दीनानाथको कपटसे रह
त होकर जोकोई मनभाव जाय मिलताहै तब श्र

82

तैसे उदार भगवान जो हैं सो तिसका कछु भी दोष नहीं
गिनते हैं तो ते मैं भी निरसंक होकर जाता हूं क्या भया
जो हंसका भेजा हूआ आया हूं भगवान कृपानिधान
मेरा कछु भी दोष ना गिनेंगे इस प्रकार मनमैं विचार
करता हूआ ईलगा सरन पती जो समुद्र है तिसके
किनारे पर पहुंचकर और तहां से तरन ही पार होय
कर जड़वीरको रटना रटना पुर मैं प्रवेश करता भया
तहां फिर मनमैं विचार करने लगा कि जिस परमा

१२
भं
८३

त्साके नमित्त जोगी जती व्रतधारी और तपी इहस
व अनेक साधना और हठकरतेहैं और शंभु आदि
भी अगाध समाधको धारन करतेहैं सो परमात्मा
भगवान जिनके ध्यानमें नहीं आवते मेरे भागोंकी
वडाई देखो जो जिस परमात्माको आज जायकर स
हजेही नेत्रभर करके देखूंगा मैंधन्य हूं मैंधन्यहूं कि
जिसको ऐसे उदाराध भगवानका कि जो वडी कठ
नसे अराधे जातेहैं विनायतनकेही मिलावा होता

८३

है ऐसे विचारता हुआ जनार्दन ब्राह्मण बडे उछाव क
रके हर्षित भया हुआ भगवानके भवनोके द्वारे पर
आयकर सीस नावता भया । २८ । चौपई द्वार पा
ल तहां देव समाना । पहिरे सकल माल मणि ना
ना । तिनसौं विप्र स्हष्ट हरषाई । नम्रवदन अस
गिरा अलाई । मैउज जाति जनार्दन नामा । साल्व
नगर द्वारप मम धामा । हेमभूषण मन मोर मिला
ई । आवा करन दरस जडुराई । अब तव कृपा

सिंधु तें जाई। मोहि बचन सब देहु जनाई। हारण सुन
त विप्र वर भाषा। हरषत गयो दौं विप्र प्रभु पासा।
जोरि जुगल कर विनै प्रकासी। सालव नगर वर
विप्र निवासी। कहत जनार्दन नाम सुहावा। प्रभु
तुम्हार दरसन हित आवा। जो न देस करुणानिधि
होई। तो आवहिं प्रभु मन मरवे सोई। कृपासिंधु सु
नि वचन उचारा। लावहु तुरत उजहि दरबारा। प्र
भु न देस वस हारण नाही। लावा उजहिं सभासद

२८

२८
मं
२४

84

मांहीं। हरिछवि देखि विश्रमन हरनी। व्याकुल
परयो देहवत धरनी। दोहा। सुधि संभार पुनि उ
ठ्यो ध्रुव लखि सुनाथ निज काहिं। बिन बन श्रम
मिटे सूल तन करि चिंतन मन माहिं। फूलना
छूट। जाहिहै ग्रीव पर रूप सेवा सहैं करत वय
वेद शंखुप निकास्यो। मच्छ श्रीकच्छ वपु धरत
कीनो चरित सुजस विस्तरत सुरनर उचार्यो।
होत मृगराज नर हन्यो प्रह्लाद उबारि दीन गजराज

रज दीनदास्यो । कोलकल रूप भवकूप भय हरन
हरि चरित निज परन परनी उबास्यो । दोहा । सोई
म्रगवर खगवर सोई सोई जड़वर जग माय । कीने
ग्रग नित चरित प्रभु धरि नाना निज काय । ग्रम
मानस निज गनन उज भगवन सभा सुहाई । छ
वि अनूप लोकन लग्यो प्रेम हरष सरसाई ३८ ॥
टीका । तब भगवानके द्वारेपर द्वारपाल जोहैं सो
देवनोंके समान सुंदर मोतियोंकी माला पहरे हुये

85

स्थितहैं तिनको ब्राह्मण कोमल बानीसे कहने ल
गा कि हे भाई मैं विप्र जाती हूं और जनार्दन मेरा ना
म है साल्व नगर में बसता हूं हंसराजा के साथ मेरी
मिताई है और ईहां यदुनाथ महाराज का दरसन क
रने को आया हूं अब तुम कृपासिंधु के पास जायक
र मेरी खबर जणाय देवो ऐसे ब्राह्मण का वचन सु
नकर द्वारपाल ततकाल भीतर भगवान के पास
चला गया और हाथ जोड़कर विनती करने लगा

कि महाराज एकसाल्व नगरके रहने वाला जनार्दन
नाम करके ब्राह्मण हमारे दरसनको आया है जोक्ष
पानिधान की आज्ञा पाऊं तो सनमुख लेआऊं तब भ
गवान सुनतेही कहने लगे कि जावो ब्राह्मणको शी
घ्र मेरे पास लेआवो दीनवेधकी आज्ञा सुनकर द्वार
पाल जो है सो तत काल जनार्दनको ले आवता भया
सो तहां भगवानकी मनोहर छबी देखकर प्रेमसे
व्याकुल भया हुआ दंडवत पृथ्वीपर गिरपडा फिर

ऊध्वक वेरके पीछे शरीरकी सधी संभाल कर और
अपने आपको सनाथ लखकर नेत्रोंकी दृष्टी को प
कटक जोडकरके भगवानके रूपको देखना और हृ
दयमे विचार करताहूं किजिस परमात्माने हेग्रीव
रूप धारण करके संखा सुरको बधकिया और समुद्र
मे वेदोंको निकालाहै और जिस परमात्माने मच्छ
कच्छ इत्यादि अवतार धारकर अपने अदभुत कौत
कमे संसारमे सुंदर सुजस बिस्तारण किया और गौ

१२
भं
८७
87

ब्रह्मण पृथ्वी और देवताउंकी रक्षाकरी जिसभगवा
नने नरसिंह रूप धर कर प्रह्लादका दुख निवारण
किया और नहो ग्राह करके ग्रसा हूआ गजजो था ति
सकोभी सहायताकरी और जिस परमात्माने सूक
र रूप धारकर पृथ्वीको समुद्रसे निकालाहै इससे
ई हम परमात्माहैं जो परसराम और रामचंद्र इत्या
दिनाना शरीर धारकर अगनित कि जिनकी कोई
गिनती नहींहै सो चरित्र करते रहेहैं इसप्रकार वि

८७

चार करके ब्राह्मण हरषसे मगन भया हुआ भगवान
की सेंदर सभा जो है जिसकी अनुपम छवी को देख
ने लगा २८ चौपई । नाचहिं अपसर गण नाना ।
गनि गंधर्व करहिं कल गाना । सुन वंदि मागध स
भवानी । हरिजस करहिं कथन सुष्माणी । उग्र
सैन महाराज विराजे । विभव विलोकि जेहि सुरप
ति लाजे । कनक सिंहासन सुखद सुहाये । राम
कुल मंजुल छवि छाये । सात्यकि अरु उद्धव अभि

रामा। सोभित ज्वाल दिसन घन स्यामा। जादव
ध्यान सुभट सावदाये। प्रबल उदार सिंह जन भा
ये। पट अमोल कल आगुप धारे। प्रभु करे सक
ल प्रानतें प्यारे। फूलत चमर विजन छवि देही।
सकल प्रमोद परस्पर लेही। राम कमल छवि क
नक सेंहासन। मनहु मेरु रवि चंद प्रकासन। पी
न स्याम पट श्रेण विराजे। जिनहिं विलोकि मदन
छवि लाजे। लोल कपोल कुंडलन सोभा। गीव

बान बनि मानस लोभा । तकन मोहि प्रभु बीर प्रबे
ड़ा । सासन होत कवन करि उंड़ा । दोहा । तब नार
द कहँ निकट लखि हसि हसि कृपा अगार । उरवा
सा कर बिथा सब भाखिस बदन उचार । २५ । टी·
का । भगवानकी सभाके मीहैं जहां अपसरा नृत्य
करतीहैं और गुनी गंधर्व जोहैं सोभी नाना प्रकार
की मधुर स्वरोंमें गायन करतेहैं सूत बेदी मागध
जोभाट जनहैं सो भगवानके अनेक जशोंको ब

रा. भा. ८५

भवानीसे उच्चारन कररहेहैं और राजाउग्रसैन कैसे
विराजमानहैं किमानो जिसके प्रताप को देखकर
इंद्रभी लज्जाको प्रापत होताहै और स्वर्णके मनो
हर सिंघासन पर राम कृस्न दोनो भ्राता बैठे हूये ग्र
सेन छवीको उदय करतेहै मानकी और उद्धवजी
रह घनश्याम भगवानके दहनी वाई और बैठे हू
ये शोभादेतेहैं और सब बीर धीर अनसे प्रबल
औरउदार जादव जोहैं सो अमोल भूषण वस्त्र औ

र शस्त्र सजाय कर मानो सभा को शिंगारे हुये बैठे
हैं और भगवान को सब प्राणों से प्यारे हैं चमर् औ
र पंखा जहां तहां झूलता छवी देता है सब कोई
आनंद मे मगन हो रहा है स्वर्ण के सिंघासन प
र कृष्ण और बलरामजी कैसे शोभाय मान हैं कि
मानो सुमेर् पर्वत पर् चंद्रमा और सूरज दोनो उद
य हो रहे हैं और कामदेव की छवी को हरने वाले
पहिरे हुये जिन्हो ने मनोहर पीत और स्याम वस्त्र

१२
भ. पु.

जैसेही सखियोंके मनको मोहित करने वाले जिनके कोमल कपोल और कानोमे दिव्य कुंडल इसप्रकार दीन बंधु भगवान सभामे विराजहूयेहैं तबनारद को पास बैठे हूये देखकर भगवान हस करके उरवा सा सुनीका वृतान्त जोहै सो सब सुनाय देते भये ॥

चौपई ॥ सुनत जनार्दन प्रभु सुखवानी । मानसम सकल लोक सुख मानी । पहो लकुट इव दौरि सि धाई । चरन कंज मंजुल जडुराई । प्रेमाकुल तन

१०

९५

चेत विसारी । चल्यो प्रवाह जानि दृगवारी । कन्छुक वे
र पाछिल जब चेत्यो । छक्यो देखि छवि कृपा निकेत
यो । पुनि धरि धरनि सीस अनुरागा । जैजैजैति उ
चारन लागा । हे भगवान मान प्रद स्वामी । अखिल
लोक विश्राम निमामी । कर आकर सामर्थ्य कृपाला ।
द्विज सुर धरनि धेनु प्रतिपाला । सदा दीन रक्षक भ
गवंता । अज भव अजर अनादि अनन्ता । मैद्विज व
संसै साल्व कल गाजे । हेस भूप कर मित्र कहाजे ॥

२२
श्री
५१

जनक जनार्दन नाम धरावा । तुम्हरे दरस हेत हत आ
वा । प्रथम अपावन दुरमति भारू । अनाचार रत वि
षय विकारू । पैतव पतित मलीन कृपाला । दैद
रसन मोहि कियो निहाला । अब मैं चरन सरन प्रभ
लीन्यो । जनम सफल निज संस्रति चीन्यो । मोहि जा
नियै अब आपन वाला । राखिये कृपा दृष्टि ने दला
ला ॥ दोहा ॥ नव उदि उजहिं कृपायतन लीन मि
हृदय जुडाय । बारबार सकुन अमल हरषवार हृदा

५१

ध्याय ३०। टीका। तब जनार्दन भगवानके मुखसे उ
खामाजीका वृतांत सुनकर हृदयमें अत्यंत सुखमान
ताभया और दौड करके दंडवत भगवानके चरनोपर
गिरपड़ा प्रेमकरके आकुल नेत्रोंसे जल बहा चलाजा
ताहै कुछ कवेरके पीछे जब सुधी आई तब भगवा
नके रूपको देखकर उनमन होजाताभया फिर
प्रणामकरके मनसुख हाथजोड कर अस्तुति कर्ता
भया कि जैसे हमारी हे मान दानके देनेवाले भगवा

मै
५२

न है सर्व लोकके आधार तुमहारेको नमस्कारहोवे
दैव तुम कैसेहो किसर्व सामर्थ्य और सर्वके पालक
हो गौ ब्रह्मण देवता पृथवी की रक्षा करनेको तुम
ही योग्यहो जराजा मरन जिससे रहित और अनादी
हो तुमारा आदभी नहींहै अपने आपसेही प्रकाश
मानहो और अनन्तहो तुमारा अन्तभी नही पायाजा
ताहै हेनाथ मै ब्रह्मण जाती साल्व नगरमे बसनेवा
ला और हेम राजाका मित्र कहावताहै पिताने मेरा

५२

जनार्दन नाम रखोया हुआहै अब ईहां आपके दर्श
नके वास्ते आयाहूं और मैं कैसाहूं किवडा प्रथम
अपावन उईही और प्रथम आचारी मेरा आचारवि
वहारभी भेदहै और विषय विकारोंमें ततपरहूं प
रन्तु हे कृपा सिंधु तुमपतित पावन जो पापियों
को पवित्र करने वाले हो मेरेको दरसन देकर नि
हाल करदियाहै अबमें दीनबंधु तुमारे चरनोकी
शरण लेकर अपने जन्मको जगतमें सफल जाना

१२
भं
५३

हे हेभक्तवत्सल मेरेको अपना बालक जानकर अब कृपा दृष्टीही रखतेरहो जब जनार्दनने ऐसे विनतीकरी तब भगवान वारंवार कमल छूकर आनंद जलसे नेत्र भरेहूये ततकालही उठकर जनार्दनको हृदयमे लगाय लेते भये । ३० । चौपाई । इनि सेंघासन दीन बिठाई । लीन कनक भ्रिंगार मेंगाई । उजकर दीन थाल अनुरागे । निजकर चरन पखारन लागे । नेवरणो दिक विप्रमहातो । कृ

५३

पा सिंधु निज सीस चढावा । करि मज्जन विधि संज्ञ
न सारी । दीन थाल उनि गिरा उचारी । अहो भाग्य
नव द्विजवर आई । जो मोहि दीन दरस सुखदाई ।
जनन्हि आज मैं सरवस पायो । धन्य धन्य मैं सारक
हायो । नव द्विजनाथ आग्या श्री यमेरो । मोहि जि
य मरम विदत सबतेरो । अब नहोहि हमरे संसा
रा । मन्मबचन द्विजसहज हमारा । स्वनन जनार्दन श
भ सुखबानी । सकल लोक मानस सुखमानी ।

रा॰
भं॰
५४

जोरि जुगल कर विनय सुनायो। मैं जड़ नाथ हृदय न आयो। प्रभु सिंहासन लीन विठाई॥ हृदय जु विन मोहे जड़राई। द्विज आसन सोभित मधि माहीं। हृदय राखि प्रभु वरनन काहीं। दोहा। अब प्रन वि न कछु विनय मम कहि नमस्कार जड़राय। जहिं हि त हेस नरेस इन पठयो सि हृत वनाय ३१॥ टीका॥ फिर भगवान निसजनार्दनको वडे सनमानसे सिं हासन पर विठायकर और रुक्मीका गंगा सागर मे

५४

गवायकर अपने हाथोंसे तिसके चरण धोवने लगे फिर बडी प्रीतीसे सोई चरणो का जल भगवान आप ने सीसपर धारन करलेते भये तिसतें उपरान्त वि धी अनुसार पूजन करके दीनदयाल कहने लगे कि हे ब्रह्मण मेरे अहोभाग्य हैं जो तुमने घरमें आयक र दर्शन दिया और मेरेको धन्य धन्य किया तुमतो मेरे को प्राणोंसे भी प्यारे हो तुमारे हृदयकी मैं सब जानता हूं हे प्यारे अब तुमको जन्म मरन इत्यादि

संसार का कलेश जो है सो कदाचित नहीं आवेगा
इह मेरा सत्य वचन है तब जनार्दन भगवानके व
चन सुनकर अपने हृदयमें माना सर्व लोकका सु
ख मानता भया और दोनो हाथ जोडकर विनती
करने लगा कि हे दीन बंधु मैंनो हंसराजाका रूप
बनकर आयाथा और आपने मेरेको सिंहासन पर
बैठार लिया कृपानिधान इह मेरेको योग्य नहीं था
आपके चरन कमलोंको हृदयमें धारकर ब्रह्माणों

का आसन पृथवीपरहीं नीका लगताहै अवहे दी
ना नाथ मेरी कुछ विनतीहै कि जिस हेतन्करके हे
म राजाने मेरेको दूत वनायकर आपकेपास भेजा
है परन्तु सो अनुचित जानकर कुछ कहिनहीं स
कताहूं ३१। चौपाई। काभाखहुं करुणा निध
तोही। होत सकुच अति भाखत मोही। विहसि
बोले प्रभु हनहिं वानी। नहिं अयोग्य जानत बुध
ज्ञानी। कहो हेम डिंभक जरा भाई। ऐहिं कुसल

कछु खेद न पाई। अभय सकुच मान दुजवर होई-
वरनहु हेस कथन अव सोई। इहिमे तुम अदोषहु
जे भाई। जनि धावहु कछु मरम दुराई। मोरतोर क-
छु अन्तर नाही। तव अनन्य सेवक मोहि काही। हू-
त सत्य जे भनहि न वागी। सोअनि होहि पापकर भा-
गी। ताते हेस भनन सव आजू। मोहि मन कर-
हु कथन दुजराजू। सकुचि उतर तव दुजवर दीन्हो-
अस जब नाई हेस प्रश्न कीन्हो। जस अप मान कीन

96

डुरवासा । तुमहिं विदित सब विश्व प्रकासा । बहुरि
कैस जब मदन सिधावा । तब मोहि मन भ्रम बच
न अलावा । जाहु विप्र द्वारा वनि माहीं । कहहु क
थन मम जड पति काहीं । दोहा । पिता हमार स
ब राजसु करत हरष सरसाय । हम जीतव निज
भुजन बल सकल प्रबल महि राय । तुमरे देस ब
सेष कर उपजत लवण अपार । सो तुम हम कहं
देउरहु पठहु वृषभ बहु भार । ३५ । टीका । जना

१२ मं· ८०

97

दन करता है किहे दीन सुखदाता मैं आपको क्या कहूं कहने मैं तिनको बड़ा संकुच आवता है तब भगवान हसकरके कहने लगे किहे भक्त इनका कष्ट जो है तिसको उथजन विचारमान अयोगशरीर बुरा नहीं जानते हैं तिसका एही धर्म है जो सत्य सत्य कहि देना तातें तिनकी तुमको जो आज्ञा है सो कहो और इह भी सुनावो कि हंस और डिंभक राजी तो हैं बहुत दिन भये तिनकी कछु खबर न

ही पाई तुमसब ऊधवमतकरो अभय होकर सब हतो
न सताय देवो इसमैं तुमको कछु दोषनहींहै मेरे
तेरेमैं कछु अन्तरानहीहैं तुममेरे अनन्य भक्तहोजो
मेरे बिना दूसरेका भरोसा नहीं रखतेहो हेप्यारेजो
हत होकर सत्यनाकरे तो पापका अधिकारी होता
है इसप्रकार भगवानके वचन सुनकर जनार्दन
कछु सऊचके वशभया हुआ उत्तर देनाभया किहे
भगवन हेसने अतसे जडनाई और प्रथम करमकि

१५
भं
५८

या है। पहिले तो दुर्वासा मुनी का अपमान करना सो आपको भली प्रकार विदित है सब जानते हैं। जिसके उपरान्त हंस जब घर में आया तब मैरेको बुलाय करके कहने लगा कि ब्राह्मण तुम द्वारिका में जावो और तुम मेरी आज्ञा जदुपती से कहो कि पिता हमारा राजसूय यज्ञ किया चाहता है और हम अपनी भुजों के प्रचंड बल से सर्व पृथ्वी मंडल को जीतेंगे हमारे देश में जो अधिक करके लवण होता है सो तिसके तुम बैल भराय

५८

कर हमारे पास ईहां भेज देवो हमारेसे और कछु दंड नहीं लिया जावेगा ३२। चौपाई। जो हम कबहूं लव ण उद्ध लीनो। मानमें दिल आवन नहिं कीनो। तोनि श्चय इहवात हमारी। होहि हनन जादव कुलसारी। अस उरवाद हेम जफनाई। और हु कथन कियो न हिं जाई। सुनि हरि हेम कथन मसकाने। ते ज्ञा भ्रान काल वस जाने। उजमसन कह्यो ववन जड़ता ई। हेम वावान मस्त मत भाई। हमनो लवण दंडक

रजोग्र । भलहिं विदत जानत सबलोग्र । उजनन्नमजा
य हेमसन कहियो । अब हम देत देउ न्नम लहियो ।
सुनत वचन बलराम खरारी । विहसे वदन दै दै कर
तारी । अस अविलोकि हास बलराई । हसी सभा जा
दव समुदाई । विप्र जनार्दन लजत महाना । वारवा
र मानस पछताना । कहत हुत वनि मै कन आयो ।
अब कहे कत कटु वचन सुनायो । पावक जरउं कि
वारि बुडाऊं । अबहिं वदन कहि भांति दिखाऊं । दो

हा । पाहि पाहि मखे नेम्रवत कस्यो विप्रकरजोर ॥
तुह्र भवन कस जाऊं प्रव घाल शरन तजि तोर । ३३

टीका । फिर हेसका कथनहै कि हो हम्सजो कवी
नम लवण के भार लेकर यज्ञ मंडलमै नंही आये तो
निश्चय करके जानना जो हमारे सव जड वेसका मे
नास करदेंगेगा जनार्दन कहताहै कि हे भगवन इस
प्रकार हेसका डवांद और जष्ठनाई जोहै सो कही नंही
जाती तव भगवान हेसका कथन सुनकर वडे हसने

द्व०
मं०
१००

लगे और जानने भये कि इन्ह दोनो भ्राता कालके वश होउकेहैं फिर जनार्दनको कहने लगे कि भाई हम का कथन सम्झेहैं लवणाके देउ देने योग्य हम हीहैं सवकोई जाननाहै अव हम जायकर तिसको कह ना कि हम देउ देतेहैं तव लेवो ऐसे भगवानके मुख सेवचन सुनकर वलरामजी वडी नाडी देदेकर हं सने लगे तव वलरामजीका हसना देखकर जाद वोंकी सेफ्णा सभाहीं हसने लगी तिनको देखकर

१००

जनार्दन जो हैं सो बडी लज्जाको प्राप्त होता भया श्री
र मनमें बार बार पछताने लगा कहता है कि मै क्यों ह
न बनकर आया और भगवानको क्यों ऐसे कटु वच
न सुनाये अब मैं अगनीमें जल मरूं कि पानीमें डूब
जाऊं कि विष खायकर प्राणोंको त्याग देऊं भगवान
को कैसे मुख दिखाऊं ऐसे यहि यहि उचारता हुआ
बडी दीनतासे हाथ जोडकर कहने लगा कि हे दीना
नाथ अब मैं आपकी शरणको त्यागकर किस दुष्ट

२
मे॰
१०१

101

के पास कैसे जाऊं ।३३। चौपाई । तब सात्यकि तन उ
डुपति देख्यो । उठ्यो न सकि रिस मानि बसेख्यो ॥
तब प्रभु कह्यो हे सफिरा जाई । मोर वचन अस देहु स
नाई । हम तें जवन देउ तुम जावा । चाहत हम अहु दे
न सब साचा । जहां न देस होव तब याई । तहां लवण
हम देव पठाई । पितु तुमार मरव जहां कैरैहैं । कौन
हो पठ्यो लवण हम देहैं । उजसन कह्यो बहुरि भग
वाना । तुम सात्यकि सेन करहु पयाना । तुमरो वि

१०१

अदोष कछु नाहीं । मैं जान्यो अपनो भ्रम काहीं । तब
न कह्यो उजमोर बखाना । सब कहिहैं सात्यकि मति
थामा । तब सात्वी वन खनत रहाता । मोर कथन सा
त्यकि सबखेनाना । लौटि आउ इति सात्यकि सेगा ।
रवि भरोस मम चरन अभंगा । सिर धरि प्रभु नेदेस
सबखेदाई । जैसो हूस उज गिरा अलाई । तब सात्य
कि पद वैदि सखारी । लगे करन निज गवन तयारी ।
दोहा । इति सात्यकिसन प्रभु कह्यो भ्रम पकल मति

धीर । जाय हेसमन भननममम भनऊ विदत हूतिवीर
३४ । टीका । तव भगवान सात्यकी की ओर देखते
भये सो नरतन्हीं वडीनमकसे उठ खडा होता भया ति
सको भगवान कहने लगे कि हे सात्यकी मेरा ऐसा
कथन है सको जाय करके कहो कि तुमने जो हमा
रे से दंड मांगा है सो हम भी सत्य करके देना चहते हैं
जहां तुमारी आज्ञा हो हम तहांही लवण पहुंचाय दे
वैं कि जहां तुमारा पिता यज्ञ करेगा तहां भेज देवें

फिर भगवान जनार्दन से कहने लगे कि हे भक्त तुम
सात्यकी के संग नहीं जाओ तुमारा कुछु भी दोष न
हीं है मैने तुमको अपना करके जाना है और इह मेरा
कथन तुमने कछु नहीं कहना सब सात्यकी ही कहना
य देवेगा तुम इसके कहने को केवल साखी होकर ब
नेने रहना फिर जब सात्यकी इधर को आवेगा तब तु
म मेरे चरनों का भरोसा रखकर इसके साथ ही लौ
टकर चले आना इस प्रकार बड़ी सुखदायक भगवा

नकी आज्ञा सीस पर धारण करके ब्रह्मा जो है सो जै हो कृस्न जै हो कृस्न ऐसी वानी उच्चारण करता भया और सात्यकी भी भगवानके चरनोपर प्रणाम करके चलने की तयारी करता भया तब सात्यकी को फिर भगवान कहनेलगे कि हे मनीके वतर यद्यपि तुमसु केल भी हो तद्यपि मेरा कथन जो है सो वीरोंकी हती से कहना सज्जयमान नहीं होता । ३५ । चौपाई ॥ नीति मरम तुम रे नवराहा । मे ग्रव करडे सिखोवन

१२
भ
१३
103

१३

कारा। कहियो उचित जवन जियमोरे। नाम संदेस दे
ऊ इत मोरे। तब सात्यकि प्रभ चरण जुहारी। स्रुभट
सिरो मणि संक निवारी। लीने विप्र जनार्दन संगा। श्री
त रूढ वरचपल तुरंगा। पहुंचि हेम न्रप नगर सुहाव
न। सभा द्वार कीयो उति आवन। तब जनार्दन आग
ल जाई। हेमहिं आसिख वदन सुनाई। पूछ्यो हेम
कुसल सुखमानी॥ कह्यो विप्र सादिर सुभवानी॥
भयो भूप जहिं ग्रंथी पठीयो। सो कारज हमरो उनकी

सो । कहिं सविस नहिं कारज हेत । सात्यकि पढे कृपा
यन केत । सो निज सखा तम मन सब गाथा । कहिहैं
जथा भयो जदुनाथा । कह्यो हेस सात्यकि कहे त्या
वहु । तम आपन कछु भाषि सुनावहु । ऊसल हु
ल जदु वंस सवाही । हम कहे कर दुज देहिं किनाही
दोहा । तब दुज सात्यकि कहे तरत त्याय हेस दरबा
र । प्रभु प्रताप लागे भजन करि करि विविध प्रका
र । ३५ । टीका । फिर भगवान कहते हैं किहे प्रवी

न सात्यकी तुम नीती के मारग को भली प्रकार जा
नते हो मै तुम को क्या सिखावन करूंगा जो तुमारे
मन मै नीकी लागेगी सो करना ओर तहां का संदेस
जो पावो सो मेरे को देना । तब सात्यकी फिर भग
वान के चरनो पर सीस नावता भया ऐसे सूर वीरो
मै प्रधान जो सात्यकी सो शंका को निवारण करके
ओर जनार्दन ब्रह्मण को साथ लेकर अपने बडे च
पल तुरंग अर्थात घोडे पर सवार होकर के चलता चलता

हंसके नगरमै जाय प्राप्त भया फिर जाय कर सभाके
द्वारमै स्थित होगया तब जनार्दन ब्रह्मण नहांसे भीत
रको चलागया और जायकर हंस राजाको आसीरवाद
देता भया तिसको देखकर हंस बडे आनंदसे कुसल
पूछने लगा ब्रह्मणने कहाकि आपकी क्रपासे सब
कुसल हीहै तब फिर हंस कहने लगा किजिस कार्ज
के वासते तुमको भेजाथा सो हमारा कारज किया
कि नहीं तब ब्रह्मणने कहा हे महाराज तिस कारज

ह॰ भ॰ १०५

105

१०५

के वास्ते भगवानने सात्यकीको आपके पास भेजा है सो
आपने सबसे जिस प्रकार जड़ नाथजीने कहा है सब
कथन करेगा तब हंस कहने लगा कि सात्यकीको ह
मारे पास लावो और तुमभी कुछ अपनी सुनावो कु
छजो है सो सब जड़ हंसके सहित राजी हैं हमारेको
कर देता है कि नहीं देता तब जनार्दन ब्राह्मण सात्य
कीको ततकालही हंसके दरबार में लेगये और कु
छ भगवानका प्रतापजो है सो नाना प्रकार करके क

१२
भं
१०६

106

घन करने लगे ३५। चौपाई। नम सम हंस मोहि ज
गसारी। वयो न जानि परन उपकारी। जहि द्वारा
वनि हत प्रकारा। पद्यो कृपाल कृस दरवारा। न
हो वीर जादव समदाई। वैठे वनर श्रेत जउराई॥
मनहु वीर रस धारि सरूपा। वैठो सभा मह जदु
भूपा। दिपत मान कल कनक सिंघासन। कृस कु
मद जड चंद्र विकासन। गदा पदम दर चक्र विराजे।
वसन पीत द्युति दामनि लाजे। सुंदर स्याम कमल

१०६

कल काया । कैक कीटमनि मानस छाया । खोर

खोर चित्र चंदन भाला । नैन नलिन नव नै सकला

ला । उर विसाल वन माल विराजी । उपमा देषि

सकल जहि लाजी । लोल कपोल भ्रकुटि कल

बांकी । देखत दृष्टि मृगासाधों की । कुंडल करन

मकरि कृत बाहू । कच अलि अवलि भक्त मनहा

ह । माधुरि मंद वदन मृदु हासी । नखसिख छ

पासिंधु छवि रासी । दोहा । अमद रसन मै देखि

१२ भ० १८

107

हुआ जड़पति सहित समाज । संहति निजजीवन ज
नम लष्यो सफल सब आज । देव महा ऋषि राजऋ
षि ब्रह्मऋषी समुदाय । सब काल सेवन करन ग
नि अनत्य जड़राय २६ । टीका । फिर ब्राह्मण कहने
लगा कि हे राजा हे स तेरे समान संसारमें और कोई
भी उपकारी नहीं है कि जिसने हम बनायकर मेरे
को जड़नाथकी शरणको प्राप्त किया और भगवा
नके सुंदर दरबारका दरसन करवाया नहीं वीर

१०८

पीरजडवंसी जोहैं तिनके वीच मानो वीररसकाह्
प धारकर सुवर्णकेप्रकाशमान सिंहासनपर ज
डनाथ विराजे हूयेहैं श्रोर शंख चक्र गदा पद्म इन्ह
धारन किये हूयेहैं जिन्होंने श्रोर शरीरमे पहिरे
हूयेहैं बिजलीको लज्जा देनेवाले पीतवस्त्र स्याम
कमल वनहे जिनके शरीरकारंग श्रोर सिरपर
मुनियोंके मनको हरने वाला मोर मुकुट तैसेही
मस्तकमे चंदनका मनोहर तिलक श्रोर कमलों

श्री
भा॰
१०८

वन लाली वाले सुंदर नेत्र वक्षविशाला हृदय निसप
र शोभा देती है तुलसी की माला अतमे कोमल और
चंचल कपोल ते सो हरि वांकी मनोहर भवें कि जिन
को देखकर सर्व संसार की दृष्टी थकत हो रही है
कानों मे मकराकृत कुंडल और भ्रमरयों के समाज
को लज्जा देने वाले सुंदर स्याम केस और मुख मे म
धुर मधुर मुसकयान ऐसे नख सिख तें लेकर भग
वान मानो एक छवी के समुद्र हैं और देवता ब्राह्मणा

१०८

108

महाऋषी राजऋषी ब्रह्मऋषी इत्यादि सब जो हैं सो सर्व कालही तिस परमात्माका सेवन कर रहे हैं मैभी ते दे प्रसादसे ऐसे भगवानका सभ समाजके सहित द र्शन करके संसारमै कृतार्थ रूप होगया हूं । ३६

चौपाई ॥ मागद सूत वंदि जन नाना । मादिर पढहिं विरद भगवाना । उद्धव अति उदेड मति धीरा ॥ दै न्यो दास दाहिन ध्रुव धीरा । कृत वरमादि दान पा नि चाहू । सोहिं सुभट जदुपति दरबाहू । उग्रसैन

वसुदेव सहाये। औरउ हूह वीर समुदाये। हरिभ्रा
ता गन आदि कुलासन। सकल विराजहिं निज निज
आसन। जिमि मयंक उडगन परिवारा। तिमि जदु
पति जादव दरबारा। सबपै कृपा दृष्टि निज हेरैं॥
हरत दीनडर व डसरू बनेरैं। डरवासा मुनि आरत वा
नी। विलपि उवित निज वदन वखानी। मोहु सो
प्रथम अजामिल काहीं। प्रभु निज विरद सुमरि म
न माहीं। सबविधि कीन नाथ अपनाई। दीनी वर

१२
भा०
१५
109

१०५

ण पारण जदुराई । सुनि मुनि निकर अस आरत गाथा
भये तुरत कोमल जदुनाथा । अभय देत मुनिकी
न बिदाये । अस भगवान द्वारिका आये ।। दोहा ।।
कहें लग करउं बखान मैं प्रभु प्रताप अति जोर ।। नि
गम नेति जहिं कथन किये कवन तुच्छ मति मोर । ३२
टीका फिर जनार्दन कहता है कि भगवान की सभा
मैं गुनीजन भाट लोग जो हैं सो नाना प्रकार के जसों
को गायन कर रहे हैं और भगवान की दहनी ओर

उद्धव जी वैठे हूये हैं कृतवरमा अक्रूर वडे वीरधीर म
हा राजा उग्रसैन और वसुदेव उनने लेकर वृद्ध वीर
और भगवान के भ्राता गद जो हैं सो सब वडी सज य
जसे अपने अपने आसनोपर विराजे हूये हैं जैसे चं
द्रमा की चारो ओर तारा गणका परिवार होता है
तैसे जदुवंसियों के बीच जदुनाथ शोभा देते हैं दी
नो के दुख हरने वाले भगवान सबपर कृपादृष्टी
से देखते हैं तहां दुरवासामुनी आयकर वडी दुख

११०

कीभरीहुई वानीसे अपनी सब विथा सुनावतेभये
किहे भगवन मेरे जैसे अधम अजामिलको तुमने
अपने दीनपाल विरदको स्मरण करके चरणोंकी
शरण दीनी और सर्वप्रकार करके अपना वनायलि
या अवमेरे को किन चरनोका भरोसाहै इसप्रकार
सुनीकी दुखित वानी सुनकर भगवान तुरतही
कोमल होगये और तिसको भली प्रकार धीरज
और अभय दान देकर विदायकरदेतेभये हे राजन

१२
भं
१११

इसप्रकार भगवान नाविकामें विराजमानहैं तिनके प्र
तापकी महिमा अपारहै जोवेदभी जिसको नेत नेत ने
कहतेहैं किअन्तनहीं आवता तोमें एक तुच्छसीमती
वाला तिनकी अनन्त महिमाको कैसे कथन करस
हे ३१ । चौपाई । अब जहिमें कल्यान तुमारी । हेसज
नकजन लेहु विचारी । राजसूय मख जवन उपाया ।
सो कीजो अपनो मम वाधा । अहै असाय सिद्धकिमि
होना । गरल पान करि जिमि सुखि सोना । तातेमख

१११

अभि लाष निवारहु । जो आपन कल्यान विचारहु ॥
कमल सरोज वदन चित देखौ । सेहु निजनम सफल
करि लेहौ । जो प्रसन्न प्रभु होहिं उदारा । नवकुंज
ग जन सफल हमारा । भे श्रीरनहुमन्तमंडुवफाईंक
रहु जनवन सव भावतिराई । सुनि दुजवचन हंसवि
स पाया । क्रूर दृष्टि करि भाषन लागा । अरे विप्र
बालक मति हीना । काविलपन हमसे तोहि की
ना । तीन लोक जीत्यो सिव जाने । सवति नसनक

रू
भ॰
११२

इ वचन वखाने । गोप सवन कछु मोहन कीयो । न
व मति जनङ्के प्रकट हविलीयो । हमरे श्राताल तास
वडाई । करन वार वड् लाज नश्राई । मैजाने जादव
सवदाया । ऊजनव सषा वदन जसगाया । कीन
होहिं नव विन जन सेवा । नवङ्के प्रेमसन लगपा श्रभे
वा । दोहा । सिसुपनतें श्रवलगा वस्यो मोहि समीप
ऊज कोहि । भयो मीन यानें नमें करङ्के हनत सठतो
हि ३८ ॥ टीका ॥ जनार्दन कहमाहैं किहे हेस मेने

तुमको सब कुछ सुनाय दिया अब जैसे तुमारी और तु
मारे पिताकी मरजी हो तैसे करो तुमने जो राजसू यज्ञ
का आरम्भन कियाहै सोतो अपने मरनेका उपाय बना
याहै और तिस यज्ञका सिद्ध होना बडा असाध्यहै जैसे
विषखायकर सावधानक सोना तैसे जो अपना भला
मानतेहो तो यज्ञकी अभिलाषासे न हनतेहो जावो
इसीमें तुमारी कल्यानहै हमसभगवानके चरण क
मलोंकी प्रीती वालेहोकर जगतमें अपना जनम

१२
भ
११३

113

सफल करो ऐसे जब भगवान तुमारे पर प्रसन्न हो
वैसे तबही तुम अपना यज्ञ सफल भया जानो लो
अब मैं तो अपनी मिताई का यश तुमको वारवार सु
नाय कर पुरा कर चुका हूं आगे जैसी तुमको
भावती है तैसी करो इस प्रकार ब्राह्मण का वचन
सुनकर हंस बडे कोप से क्रूर दृष्टी करके कहने ल
गा अरे बालक ब्राह्मण बुद्धी के हीन क्या तेरेको कुस
ने जबरु बाउला बनाय दिया है कि जो तीन लोकको

११३

जीतन हारे हैं मूढ ते तिनके मनमें रखे ऐसे कटु वचन
कहे हैं मै जानता हूं कि गोपके पुत्रने तेरेपर जब्ब मंत्र
जंत्र किया है कि जिसने पतनते तेरी बुद्धी हरी गई है
हमारे आगे तिसकी वारंवार वडाई करते हुये जड
तेरेको लज्जा नहीं आई मैने तो इह सब जादव जाने
हुये हैं तेने तिनका झूठा ही इतना जश मुखसे गा
या है तिन्होने तेरी जब्बपन करके पालना करी हो
गी तब ही ते तिनकी इतनी वडाई करता है क्या करें.

किन्ते वाल अवस्थासे लेकर मेरेपास निवास करता
रहाहूँ और अनुमीत करनेका विचार आवता है इस
कारनते प्रथम तेरेको मारनहीं सकताहूं ३८। चौप-
नतर अवहिं आवत जीय मोरे। दे असि करउं खंड ज
गतोरे। पैउज जाति होत मन संका। अव नदिखा
ऊ वदन सकलंका। जाउ वेग जित भावति मोरे॥
देखि देखि उपजत रिस मोरे। हंस वचन सुनि उजर
रषाना। उठो भनत नाचे आशिष बाना। चल्योवे

ग मन सरवस पाई । सुमरत चरन कमल जडताई । ब्रा
ह्मावती आय मति धीरा । लागयो वडुरि चरन जड़वी
रा । प्रभु मत कारि लीन उर लावा । निज पार्षद पद
दीन सुहावा । व्रला नंद मगन इज भयऊ । जीय
जग भीति सकल मिटि गयऊ । जिमि उद्धव गद
श्रात उदारे । तिमि प्रभु कहे इज भाग्न प्यारे । दि
न दिन कृपा दृष्टि अधिकाई । इजवर लीन जनम
फल पाई । कछुक काल करि हरि अनुरागा । शनि

१२
भ॰
११५

115

गावत्यो हरि शर वडभागा। प्रभु प्रसाद उज सुगाम सुहा
वा। मुनिन अगाम पद लीन सिपावा। सोरठा। इह
हरि वंस पुराण भनतो कथा जनार्दन। अव आगल
व्याख्यान करहूं हंस डिंभक कथा ३९। टीका। हंस
कहता है कि हे भेद नं ब्राह्मण जानती भी हैं इसतैं शंका
मानता हूं नहीं तो अवी खड्ग का प्रहार देकर तेरे दो
खंड करदेता पर जावो हे कलेकी अव नाव ना दिखा
वो तेरे को देख देख मेरा क्रोध प्रचंड होता है मन मेरे

११५

हाथोंसे मारा ना जावे शीघ्र उठकर चलाजा ऐसे हंस
का वचन सुनकर जनार्दन बडे हरषसे आसीसा देक
र उठखडा भया मानो सर्वस्वको पायकर चलपडा न
व भगवानके चरण कमलोंको ध्यावताहूआ हरि
कामें आयकर फिर जडनाथ महाराजके चरनोपर
सीस धर देताभया तव भगवानने बडे सनमानसे उ
ठाय कर हृदयमें लगायलिया और आन तरह कर्केश्व
पनापार्षद पद जोहै सो तिसको देदिया इसप्रकार जड

नाथकी कृपा देख कर ब्रह्मणा मानो ब्रह्मानंदमें मग्
न होकर संसारके भयसे न्यूत होताभया जैसे उद्धव
और गदआनाशण भारैय नैसेही भगवान निसको
भी पारामाननं भये दिन दिन कृपादृष्टी अधिकही
होतीगई ब्रह्मणानेभी अपने जन्मका फल प्राप्त
कर लिया तब कुछककाल भगवानके चरनोका
अनुराग और सेवाकरके फिर सहजेंही शरीरको
त्यागकर भगवानके परमधामको चलागया दीन

वेश्वकी कृपाके प्रसादसे ब्राह्मण मुनी श्रौर जोभी
जनोको जो दुर्लभ पदहै सो सुलभही अर्थात स
त्वोलाही पाय लेताभया इसप्रकार इह इनतीज
नार्दनकी गाथाजोहै सो हरिवंस पुराणमै विद
तहै श्रव जिस प्रकार हंस श्रौर डिंभक की गाथा
है सोआगे कथनकी जाती है । ३९ । दोहा । उग्र
सागकी जाय जब हंस भूप दरबार । देखो निर
भय शोक गात कृश बरन उरधार । चौपाई ॥

१२
भं
११७

117

हँस वदन नव वचन अलाये। सात्यकि ईहो कवन हिन
आये। नंदगोप सुत सासन मोरा। मान्यो नहिं न क
वन कर जोरा। मित्र मोर पौंड्रक पति परना। कव
न गोप [illegible] नो कर अनुकरना। उपजी कवन कुमति
जीय ताके। जो ना मान्यो मोरी अनुसाका। अब न
होहिं कछु तासु भलाई। आयो कसन आप जदुराए
ई। पठोन लवण हृष्ठभ भरि भारा। अहो गोप उ
न मन विचारा॥ अब सात्यकि तव देहु सुनाई॥

११८

ऐहीं कुसल गोप समुदाई । तरुनी वृद्ध बाल सब कोहीं
निज निज सदन सिधावित सब होहीं । हंस कथन सु
नि सात्यकि धीरा । बोले वदन वचन गंभीरा । तुमसे
जेही कुसल कर लेवा । तसे कुसल सब भांति अभेवा
वडो कुसल तुम कहें कर देना । सो अवलेऊ जथ्था न
म लेना । नीके तुमहुं लखे नरनायक । जदुपति अे
हिं दंड करतायक । दोहा । जाकर विधि सेकर सवे दे
व अदेव मुनीस । सेवत रहत अनन्य गति चरन रेन

स
भं
११८

परिसीस ।४०। टीका। तबजहां सात्यकी जोहै सोकृ
ष्ण भगवानके चरन हृदयमै धारकर निरभय औरशं
कासे रहत होकर जाय करकै हंस राजाके दरबारमै बै
ठ जानाभया तबहंस कहने लगा हो सात्यकी इहांकि
स कारण के वास्ते आयेहो और कहो कि नंदगोपके
पुत्रने हमारी आज्ञा किसके बलसे नहीं मानी मेरा
मित्र राजा जुधिष्टिर जोहै सो गोप तिसकी रीस कर
ताहै इह कौन कुमती तिसके हृदयमै उपजी है कि

जिसने मेरी आज्ञानहीं मानी और आप नहीं आया भेजा
नगाहै कि अब तिसकी भलाईना होगी देखो तिसने
लवणके बैल मार भगाय करनहीं भेजे अहो गोप बडा
उनमन होगयाहै अब सान्यकी तुम कहो कि गोप
सब राजी तोहैं स्त्रीपुरुष बाल वृद्ध अपने अपने घर
मे सब सुखी तो रहतेहैं ऐसे हंसका कथन सुनकर
सान्यकी जोहैं सो बडा गंभीर वचन बोलते भये कि
हे हंस तुम्हारे जैसे जहां ऊमल लेनेवालेहैं तहां सर्व

प्रकार करके कुसलहीहै परवती कुसलतो वमागकर
मोगनाहै सो अबलेवो जिसप्रकार लेनाहै तम बडन
प्रश्न समझाहै ३५ जडपति जोहैं सोयथार्थ करकें देउ
के लायँहीहैं कौंकि जिनको विधी शंकर हर अमर
मनी ऋषी सब निरन्तर करके सेवते रहतेहैं और
तिनके चरन कमलोंकी धूडीको बडे सनमानसे
सीस पर धारन करके त्रैलोकीमे धन्य धन्य होतेहैं
७० । चौपई ।। तब नामो कर लवण अहोरी । मोगषो

धिग धिग धिग मति तोरी। पापनि तोरसकल कुल
दहनी। गिरी न जीह वचन अस कहनी। इह सिखि
दीन कवन अस तोही। भलो मित्र तव मानस द्रोही
म रहो आउ तोहि मारन हारा। कपटि इह सठ मी
न तुमारा। भावै भूरि भलाई भाई। नहिं विरोध
कीजै जडुराई। कहां हंस तव निबल सृगालू॥
कहां प्रबल जडुपति जडुपालू। बिडु सिंघ जिमि
सहश नाई। ममतामेरु करहिं किमि राई। पबो

१२
भं
१२०

मोहि प्रभु तुव हित जानी । करहु न हेस वंस निजहानी
दोहा । यद्यपि कबमंगान तव नव अपराय महान । स
रण गहित तद्यपि नरत तमहिं हक भगवान । स्रनि
सात्यकि कर वचन अस हेस परम बिसमानि । अवन
नैन फरकन अधर भयो वदन कटु वानि ५२॥ टी
का ॥ फिर सात्यकि कहता है किहो अथम हेस त
म ऐसे त्रैलोकीके नायक जउ नायक से लवण का
दंड मांगा धिग धिग धिग है तेरी बुद्धीको इह पापनी

१२०

सर्व जलके दग्ध करने वाली तेरी जिह्वा जो है सो
ऐसा वचन कहती हूई कौंनसी गिर गई ग्रेरमंद जि
सने इस शिला तुमको सिवोई है सोतो बाहर से तु
मारा मीत और भीतर से तुमारे नास करने वाला
शत्रू है वेडष आपतो मराहूआ है और तेरेको मारन
हारा है अब जो तूं अपनी भलाई चहता है तो जड
नाथ के साथ वैर मन कर देखो कहां तुम निरब
ल गीदड और कहां जडनाथ प्रबल सिंघ जलका

वि० स०
भ०
१२१

सिंह समुद्रकी क्या बराबरी करेगा और राईका दा
ना सुमेरकी समताको कैसे पहुंचेगा मेरेको भग
वानने तेरा हित विचार करके उन्होंने तेरे पास भेजा है
हे हंस तू अपने वंसकी हानी मतकर यद्यपि इन्द्रल
क्षणके कर मांगनेका तेरा अनसे महा अपराध भी
है तथापि शरणागत होनेसे दीनबंधु नरनरहीं क्षमा
करदेवेंगे तू अपने हठको छोडकर उनकी शरण
को प्राप्त होजा इस प्रकार सात्यकीके वचन सुनकर १२१

है सर्जो है सो परम कोप मे लाल नेत्र करके घर घर को

पता हूआ जिस प्रकार बडी कटु बानी से बोलता भया

सो आगे कथन किया जाता है । ७१ । चौपाई ॥ अरे

अधम जादव मति हीना । इह कस कथन बदन तें

बकीना । कोवल कवन हस किन लेवे । गोप

कवहूं सेवा रथिर देवे । जरा सिंध सन जान्यो सोई ।

भाग्यो जमन ग्राँव मे होई । तें अहीर तुम बडो बखा

न्यो । कहत न मन कछु लाज कछु मान्यो । आवो तुम हूं

स

१२
भं
१२२

बसीठि हमारे। जोंते नतझें आयस उरधारे। ननरका
टि तव सीस कृपाना। पटकउं सामीप गोप अभि मा
ना। करउं बदन मर्दन मति मंदा। अब न भनउं
कछु अनुचित छंदा। तव सात्यकि बोले दिस मा
नी। अरे अदमकारक कुल हानी। मोहि सन म
ख जड नेदन लागी। कस डर बचन भनत हतभा
गी। दीनो प्रभु आयस नहिं मोरे। करतौं अबहिं य
धम बधतोरे। लतुतें लङ्ग अनुचर जडताई। करब

हनन लव डरमति आई । समर सूरा सूर जीतन हारे-
विदत महारथि ग्रैहि निवारे । दोहा । कृत वरमा
अक्रूर जत आन वीर वलधाम । उद्धव साम गदादि
सव परम सुभट संग्राम ।४२। टीका । हेस कहू
नाहै कि औरे उग्रीके होन जादव इहन्हने सुवेस
कैसा कथन किया है तिस हूलसको किसका वल
है और कौन है किस गिनती मै है सूफ कवी गोप
भी रणमे स्थिर भये देखे है मैने जाना हूआ है कि

१२
भं
१२३

जरासिंके साथ जमनजो आयाथा तिसके भयसे भा
गे हुये को मैंरनहीं मिलीथी सो शरीर तुम वजा व
जा कहतेहो अरेमूरख तुमको लज्जा भी नहीं आव
ती क्या कहूं तेतो हम वन कर आयाहूं इसने छोड
देनाहूं नहींतो खडगसे तेरा सीस काट कर तिसी
गोप अभिमानीके पास भेज देऊं हे मेर अवतूं
अपने मुखको मुंदन कर और कछु अबाविन वच
न मत कहो ऐसे हंसका कथन सुनकर सात्यकी

१२३

123

जोहै सो बड़े क्रोधमें कांपता हुआ कहने लगा कि अरे
कुलकी हानी करने वाले अधम अभागी तैंने मेरे मनसु
ख जड नंदन भगवानको ऐसे दुर्वचन कहता है अ
हो महाराजने मेरेको आज्ञा नहीं दई नहीं तो तुझतेरे
को अबी वध करदेता मेरी बात रहने दो तेरेको एक
छोटेसे छोटाभी जडनाथ महाराजका सेवक आय
करके मारसक्ता है और सभ तो रणमें शूर असुरोंको
जीतने वाले वीर धीर मारे रहे जैसे कि हृतवरमा अ

१२४

कूर उद्धव बलरामजी गाद इननैं लेकर और अनेक
वीर प्रधान कि जिनको कोई रणमैं जीत नहीं सक
ताहै। ५२। चौपई। सिव बर दान विवस भट बा
ण। अबै नप स्यो समर तोहि गाण। जद्यपि को
टिकिन्न सेम्ब उबारैं। तदपि हतन जडबीर नटा
रैं। सिवगण जगल सें उनव जीते। भूत कबडं
भट सब मरे होते। असविस भवन भूरि उरमोरे।
करहुं अबहिं हत उर मति तोरे। हन यसं पै सोवि

बिचारी । तजहु नाहि डर धीरज धारी । कह्यो मोर प्र
भु सन सठ बानी । जो मति समर करन कुलघानी·
तो गोवरधन मथुरा कासी । कै प्रयाग पुसकर
थलमाही । आवहु सजन सैन निज सारी । देखहु
समर होहिं कस रारी ॥ तमकहि पड़ दंड हमरेना·
वाकहु सनित वैर धरि लेना । बोल्यो सनत हं
स रिस मानी । तब भावति मोहि बान बखानी ।
पवैं प्रान प्रहकर तमसारे । आवहु निज निज बिर

१२
भ·
१२५

125

द संभारे । मैवल गोप गारव भटनाई । देखवनसो स
मर महि आई । दोहा । अवलो लाख्यो नजीवजया
जेमोहि देउ नदीन । मीच परैरे कवन इह गोप यान
ति कहि कीन । ५३ । टीका । फिर साम्यकी कहना
है कि मूढ तेरेको शिवजीके वर देनेसे मद होगया
है अवतक कोई गाफारण नहीं पडाहे पर ते जान
कि यद्यपि कोटि शंभू भी तेरे सहायक बनेंगे तोभी
जडनाथके हाथसे तेरे वधको नहीं निवारसकेगे

१२५

और जो तेरेको शिवजीके गणोंका अभिमानहै कि मे
रे रखवायेहैं सो मंद कबी भूतभी रणमें सूरवीरोंके सन
मुख होसकतेहैं तेरी जडताको देखकर मेरे चितमें
ऐसी आवतीहै कि उरमती तेरेको अबी मार देऊं पर
न्तु हम धर्मको हृदयमें विचारकर तेरे प्राणोंका ना
श नहीं करता क्षमा करताहूं अब जब तू मेरे स्वामी
की आज्ञा सुण कि जो कबी युद्ध करनेका ते चितमें
उल्लास है तो गोवरधन मथुरा अथवा प्रयागराजवा

१२
भ°
१२६

पुष्कर तीर्थ पर अपनी सब सेना सजाय कर चले आ
वो देखो तो रण में कैसा क युद्ध होता है तुम को हम
ने पूरी दंड देना है अथवा ऊंच मुनियों का वैर लेना है
ऐसे सात्यकी का कथन सुनकर हंस कोप से भरा हुआ
आ कहने लगा कि अहतो तुमने मेरे मन को भावती
कही बहुत शुभ बात है जो परसों के दिन प्रात होतेही
तुम अपनी सब सेना और सूर वीर लेकर पुष्कर तीर्थ
पर चले आवो तहां मैं रण भूमी के बीच गोपका सब

126

ग्रौर बल चतुराई सब देखहुंगा अबतक तो संसारमें
मैंने कोई नहीं देखा कि जिसने मेरे को दंड नहीं दि
याहै इह रत्नके थेरे हूये गोप क्या बसन्त् ग्रौर कि
स गिनतीमेंहैं ४४। चौपई। सुनि ग्रस हंस बदन
डरवानी। भने वचन सात्यकि रिस मानी। जहि
निज प्रभु निंदा सुनि लीना। नहिमलो खल वचन
ग्रग कीना। भयो काल बस तब उजडोही। बिघ
ल उठाय कहेका तोही। ग्रस कहि सात्यकि ह

भट सयाना। समर वीर धरधीर महाना। उठ्यो श्र
शेक नमकिनर नाहीं। चल्यो चपल हारा वनि का
हीं। आयो नंदनंदन दरबारा। करि प्रणाम अस वि
नय उचारा। दीना नाथ हंससैं जान्यो। काल विव
स कछु कथन नमान्यो। अब जनि करहु विलम ज
दुराई। वेग सुभट निजसैन सजाई। प्रहकर च
लहु धान भगवाना। आवहिं तहां हंस अभिमाना
सुनि सात्यकि अस वचन मुरारी। सेनापति सवलि

१२७

१२
भं
१२७
कृ
127

ये हेकारी। दीन नदेस सजन छिन सैना। उमगे सुभट

सुनन रणबैना। जाय वेग सब कीन नयारी। लीने शु

स्त्र शास्त्र निज धारी। दोहा। पायक पार न परहिं कछु

है गै सिंधन सेग। जड्ड जल कमल दने सकर सजी

सैन चतुरंग। देखि सुदिन सुभ ठेठ शुभ श्रायस दी

न पयान। श्रवे सुनि सासन सकल समर सुभट बल

ल वान। फूलनाछंद। चली रणधीर चमू जँवै ज

डवीरबर उमठ महावीर रवि धूरि छायो। उठो

१२
भं०
१२८

128

रव शोर चहूं ओर अनसे अघट भटन मन जोर जुरा
फर फरायो । चल्यो दल जान जिमि मरुत प्रेरन ज
लध बाजिहैं नान दस दिसन धायो । गजन चिक्का
र झिंकार घंटन घरन परन कंपन करन थर थरा
यो । लपन दिनमान रज रथन उड्डाननैं उघार अन
भान भौ भीर भारी । जैति जदुवीर जै जान बोलन स
फट सुभट भुव धीर रण करण तारी । शक्ति सर प
रध पनबाखरन बांधे बिरद सवद्य निध विविध बिध

१२८

वीर भारी । नाद मृग राज नव गरज गौरव करत डरत
एति धरक रिपु वरग जारी । चढे जहिं जान सावे
केद जड कमद जल चेद नहि वासि कर वक वाहु ।
मणिन गण खचित रथ पवित हाटक स्यन्दन मन
डे मनमथन सज धज सवाहु । सुभ्र सित तरग वन
वतर वेवल चपल नवल निदरत मरुत वेग याहु ।
धुजा फहरात विलसत कलस कनक कृत दिपत
मन दमनि दस दिसन भाहु । दोहा । समर सुरम्र

हलाद प्रद बजहिं अनेक निसान । चल्योजात असक
टक प्रभ सज्जन होत सभ स्थान ५४ ॥ टीका ॥
तब हंसके सबसे दुर्वचन सुनकर क्रपत होकर
सामको कहने लगा कि जिस पुरुषने अपने प्रभ
स्वामी की निंदा आपकीनी सुनी तिसने मानो ब
ह्म घातका पाप कियाहै अरे विप्र द्रोही तैंने अब
ष्य कालके वश भयाहैं तेरे को बहुत बुझायकर
क्या करें ऐसे कहिकर महा वीरधीर और चतुर सा

याकी जोहै सो नहीं से वडी नमक और चमकसे नि से
गा उठकर जडनाथ को स्मरना हुआ द्वारिका को च
ला आवना भया तहां दरवार मे आयकर भगवानके
चरन कमलोंपर सीस नायकर विनती करने लगा
किहे दीना नाथ मैने निश्चय करके जान लिया जो
हे म महाकालके वश होगयाहै क्योंकि मैने वडा न
हीं करा परन्तु आपके चरनोकी शरणको नही आ
या कुछ और ही दुर्वाद वकनाहै तांते अव विलंव ना

२२
भं.
१३.

करिये सुरवीरोंके सहित सैना सजायकर शाताका
नहीं प्रसकर तीर्थ पर चलिये सो दुष्ट अभिमानी भी
नहीं आय जावेगा इसप्रकार सात्यकी का वचन सुन
कर भगवान नरनहीं अपने सैनाथीसोंको बुलायक
र सेनाकेसजावनेके वास्ते आज्ञा देते भये तवभग
वानकी आज्ञा सुनकर रणमै युद्धकरनेके उलास
से सब सुरवीरों के अंगजोहैं सो प्रफलत होजाते
भये और सवि अस्त्र शस्त्र सजाय करके त्यार होयगा

१३.

ये पायक जो पयादे हैं जो घोडे गै हाथी स्पंथन जो
रथ इनका कुछु पार नहीं पाया जाता इसप्रकार
जड़जल कमलोंके सूरज कृष्णभगवानजोहैं तिन
की चतुरंगनी सेना सजसजाय करके मैदानमे आ
यगई फिर सुभमहूरत देखकर चलनेकी आज्ञा
होतीभई तिस आज्ञाको सुनकर सब सूरवीरउता
समें होजाने भये तो जब रणमै धीरजको धारणेवा
ली जड़वीरकी सेनावली तब ऐसे प्रतीत होता कि

मानो समुद्र उमडा जाताहै आकाशमे धूडी छायत
होय गई और चारो ओरसे बडा शोर उठताभया वीरों
की भुजैं जोहैं सोबल करके भरी हुई फरकनेलगाजा
नीभई इसप्रकार दल चला जाताहै कि मानो पवनके
प्रेरेहूये बादरोंके समूह जातेहैं और घोडे हिनकते हू
ये दसो दिसाको धावतेहैं गज जोहाथी तिन्होकी चि
कार और घंटयोंकी झंकार का अनुपनसी शबद हो
ताहै रथोंके चलनेसे धूडी उडकर आकाश भरगया

और सूरज लुप्त होयगया इगारजो रसना सोदिखाईन

हीं देता अंमृत भीर होयगाई और सुभटजो सूरवीरहैं

सो जे जइवीर जै हूल ऐसे उचारन करतेहूये चलेजा

तेहैं शक्ती त्रिशूल धनुष तरवार परशु इत्यादि सब शा

स्त्र धारे हूये बडे धीरजके धामहैं शत्रुके भय देने वा

ला महा घोर सिंह नाद जोहै सोवडी गरजसे करते

जातेहैं कि जिसको सुनकर पृथ्वी भीकांपती है औ

र जिस रथपर सूर्यके केंद जइनंद महाराज चढेहु

भै॰
१३२

ऐसे जिसके बड़े सुंदर सुवर्णके चक्र और मणियों कर
के खचित सुवर्णकाही सब रथ मानो कामदेवने आप
ने हाथसे सजाया हुआहै तैसेही मनोहर स्वेतवर्णके
चंचल और चपल चार घोड़े कि मानो अपने वेगके प्रभा
वसे पवनकोभी निदरतेहैं और बिजलीवत चमकतेहू
ये कंचनके कलस और फहरातीहुई धजें अपने छवी
को उदय करतीहैं रणमें सूरवीरोंको हरष और उत्
साहके देनेवाले सुंदर बाजे बाजतेहैं और जड़वीरके

१३२

दलको मार्गमे जाते हूये वडे शुभंही सकुन होते हैं ।

५४॥ चौपई ॥ रणा वांकुरे सकल जडवंसी । वीरयी

र रिपु वर्ग विध्वंसी । जिन निज उग्र भजन वल पाई ।

जीते समर प्रवल जिनराई । द्वादस ग्रच्छूहणिदल

संगा । उर उत्र साह लरन महिरंगा । राजत उग्रसे

न महाराजा । चारु चमर सिर छत्र विराजा । यादव

उद्धव सात्यकि वलरामा । अगनित आन सुभट व

लधामा । सवके उरगिरजीतन केरी । वढ्त जात

रा
म
१३३

अभिलाषबनेरी । देरा भूमि रिपु मन मरवजाई । रू
मकवह्लो वरव्राढ समदाई । करिप्रणार अश्वयवजरे
गा । अरिदल करिडे सकल बल भेगा ॥ दोहा ॥ अस
प्रकार जडनाथजत सभटवीर समदाय । करन क
थन रिपु मथन मद अक्षर परतेवे जाय ४५ ॥ टीका ।
इसप्रकार शत्रुवर्गका नास करनेवाले महोवीरथी
र रणमै वांकुरै जडवंसी किजिन्होंने अपनी भुजोंके
उग्र वलसे पृथवीके वडे वडे प्रवल राजे जीते हुयेहैं

१३३

ऐसे वारो अव्रहरणो सेनाकि जिसको रण भूमिकामे
युद्ध करनेका अत्यंत उत्साहहै और महाराजा उग्रसे
न तिनके वीच छत्र और चमर झूलते हुये शोभा देता
है गद उद्धव इत्यादि और अगिणित शूर वीर जो वलके
धाम हैं सवके हृदयमे शत्रूके जीतनेकी अभिलाखा
वढतो जातीहै कहतेहैं कि हम रण भूमीमे कव श
त्रूके सन म्हारव जायकर होवेंगे और कव शस्त्रोंके प्र
हार करके शत्रूके दलको भंगानकरेंगे इस प्रकार ज

१२
भं·
१३४

134

ड नाथके सहित सब महावीर शत्रुके मदको कथनसे मथन करने हुये पुष्कर पराग्राय प्रापत होने भये ४५

चौपाई ॥ तहां करत मज्जन जल पाना । वसे विचित्र रजनि सुख माना । समर हरष हग नींदन लीने । ल खन दिसा दिन रैन वलीने । भोरहिं सुभट सदल मति धीरा । उठि कीन्हों मज्जन सरनीरा । उनै हेम डिंभक जग भाई । आये पुष्कर सैन सजाई । सपत तीन अ क्षूह गिण भारी । चम् वनरेग करन रण गारी । परेय

१३४

नष जग वीर विसाला। लसन त्रिपुंड तिलक कल भाला। सज रुद्राक्ष सकल तन धाहू। भस्म वलेपन अंगन चाहू। धरे मौलि वल पिंगल भारी। सिव सिव सिव सब्द जान उचारी। लोचन वदि जगल भटिवीर- उर उन साह समर नित धीरा। उभय भीम गण भया वन भारे। नचे सिवे काल रूप मन मारे। क्रूर क्रोध लंब धूम काया। कृश्ण नगन बिन वसन प्रदाया- कटकटा नर व करत मशाना। वमन वदन पावक भय

१२
भं
१३५

135

भाना ॥ दोहा ॥ इत उत डिंभक हेस कर दडे दिसि दि
व गगण सोय । करत जात रत्नाण उगार सगार सुभटन
खि दोय ॥ ४५ ॥ टीका । तहां पुष्कर तीर्थपर स्नान पा
न करके राजीको विविंन होकर निवास किया परंत
रणाके उल्लासमे रात्रीभर नेत्र जो हैं सो निद्राके वश न
हो भये सूरजको देखनेही रात व्यतीत करी फिर प्रा
तःकाल उठनेही सरोवरमे सब सूरवीरोंने स्नान करके
अपना नित्य नेम कर्मभी किया तब जहां हंस और

डिंभक दोनो आता अपनी सेनाको सजाय कर शङ्कर पर चले आवते भये तिनके साथभी दस अक्षोहणी चतुरंगनी और वडी प्रचंड सेनाथी आपदोनो भाई म हां प्रवल वीर और मल्लकर्मे दिये हुये त्रिपुंड तिलक हृदयमे रुद्राक्षोंकी माला और सब अंगोमे रमाई हुई उज्वल भस्म सिर पर जटा उंके पंच शिव शिव शिव उचारन करते रथ पर चढे हुये चले आवते हैं औ र दोनोके हृदयमे रण करने का अतमे उनमाहउदय

होरहा है तिनके साथ बडे भयानक भैरव वाले दो शिव

गण हैं सो कैसे कि नवे सिरे मानो काल का ही रूप

हैं और बडे क्रूर और ऊमेवों लंबी भुजों वाले शरीर के ब

डे रूप अर्थात डवले और नगन दयासे रहित नवे

बोले हुये वडा कटकटान शबद करने और अगनी व

त दाय करने वाले स्वास भरते हैं सो हंस और डिंभक

की दोनो और मै रक्षा करने चले आवते हैं ४९ चौपाई।

एक वि चक्र नाम दनु जाना। मित्र हेस डिंभक जग

136

भ्याना । वरुण कुवेर इंद्र जम सारी । जीते नाम समर
करिरारी । भये देव सब मखरण जवहीं । पायो वि
जय दनुज पति तवहीं । शक्र धाय ऐरावत चढकैं
हन्यो विचक्र समर महि वढकैं । श्रीपति सनरण कि
ये महाना । प्रवल जानि भय मानि पलाना । तव तै
रिसकि दनुज डरचारा । हारावती जाय वरु वारा । कर
त उपद्रव रह्यो अनन्ता । अव सुनि सुन्यो समर श्रीकं
ता । जैहिन लिये दनुज वहुरंगा । आवा हेम भूपकर

र
भं०
१३७

संगा । एकहू डिंभ नाम दृढ भारा । सोवि चक्र करमी
न पयारा । माया निपुण प्रवल भट धीरा । वाहन कु
मति विजै जडु वीरा । सहस अठासी नमि वर संगा । वि
कट भीम रण सुभटन भंगा । अस वस साजि जगालह
नराई । आये प्रहकर गरव वढाई ॥ दोहा ॥ अविअग
मन अस सुनत हरि सजन सैन समुदाय । वजन वाज
जूझन समर [illegible] दीन सुनाय ॥ ४० ॥ टीका ॥ नव
एक विवक्र नाम करके दैत हंस और डिंभक दोनो आता

१३७

का भिड्या जिसने रणमें युद्ध करके वरुण कुबेर इंद्र य
मराज इत्यादि सबजीते हुयेथे और देवताभी जब जब ति
सके सनमुख होतेरहे तब तबही तिनको जीतता रहा
इंद्रभी ऐरावत हसती पर चढ़कर रणमें आया परंतु ति
सके आगे नहीं ठहरसका अंतको हार मानगया औरप
नीजो लक्ष्मीके स्वामी भगवानहैं तिनके साथ वडा
जोर युद्धकिया परन्तु तिनको प्रबल जानकर डरता
हुआ भाग गया तबतें सो लज्जित भया हुआ अनेकवार

१९
भ·
१३८

138

बडे क्रोध से द्वारिका मे जाय कर कई एक उपद्रव कर
नारहा अब फिर श्रीपती का रण स्थान कर सो दुष्ट जै की
अभिलाषा से हंस और डिंभक के साथ नाना प्रकार की
सेना लेकर आया है और एक ह डिंभ नाम करके बडा भा
री दैत विचक्र का मित्र अन्त से प्रबल वीर और अनेक मा
या के जानने वाला रण मे प्रबल अठासी हजार रा[illegible]स
साथ लेकर जदुवीर के जीतने की इच्छा धार कर आया
है इस प्रकार सब सहायकों के सहित सैना सजाय कर

हेम श्रौर डिंभक दोनो राजाके शत्रु जोहैं सो तिनमे बडा
गौरव करके प्रकार नीश्रेणर श्राय प्राप्त होते भये नव
ईहो जडनाथ्य शत्रूका श्रगमन श्रर्थात श्राना सुनक
र सब सेनाके सजने श्रौर युद्धमे जूझने वाले राजोंके
वजने की श्राज्ञा श्रपने सैना पतियोंको सुनाय देते
भये ४७ ॥ चौपाई ॥ हरि श्रनुसासन पाय सब वीरा
भये उछाद समर तिथ धीरा ॥ बाजिन लगे श्रनेक
निसाना । छायो घोर रव दसहु दिसाना । गण माते

२९
भं
१३५

ग नेग सनरेगा सिंधन सजे सुभट वज्ररेगा। वीरधी
र भारथ अनुरागे। सिंह नाद सब गरजन लागे॥
अस उदेउ निज सैन निहारी। चढे आप सिंधन गिर
धारी। पांच जन्य कीन्यो नव शोरा। छायो दसहुं दिस
न रव घोरा। चल्यो कटक जड वेसिन भूरी। भयो सि
भाव लूपनन भ पूरी। वीर धीर भव रण अभिलाखे।
बले जान सन सब विष माखे। डिंभक हंस साजि उन
सैना। आये समर सुभट भरि चैना। दोदल मनहुं उमग

१३५

137

निशिचरनीरा । बरनिन जाय समर भट भीरा । डेंदबि द
लन डेंद बज्रबाजी । भैरव फीरवोर धुनि गाजी । प
नव सेव सभ सैनाई । बजे निसान गगन धुनिछाई ।
भट भेद उर हरि उमंगा । दोदल मिले आय मह्रिरंगा ।
भिंडि पाल सर सूल कृपाना । मुद्गर पास त्रास प्रवि
दाना । पाहन परस कवच करवाला । चरष गदादि
चक्र धन भाला । अस प्रकार सब वीर प्रवेश । लागे ल
रन समर महि मेश । दोहा । बदन प्रकारि प्रकारि नर

कवहि परस्पर वार । जुझि सुभट सन्मुख समर सुरपुर जाहि सिधार ॥ ४८ ॥ टीका ॥ तब भगवान की आज्ञा पाय कर सब वीर धीर जो हैं सो रण मे जाने को त्यार हो जाते भये अनेक प्रकार के जुझने वाले बाजे बजने लगे दसो दिसा मे घोर शबद व्यापत होगया और हाथी घोडे रथों पर सुरबीर चढे हूये अत्यंत शोभा पावते हैं रण के उत साह से उमगे हूये वड़ा सिंह नाद करके गरजते हैं ऐसी वड़ाई और सजावट अपनी सेना की देखक

१५८

र आप जउ नाथभी रथपर आरूढ होते भये तब पांच
जन्य शंख जो है सो अत्यंत नादसे ऐसा शोर कर्ताभयाजो
तिसका शब्द दसो दिशामे व्यापत होगया जउवंसि
योंके दलकी धूम धडीसे आकाश पूर्ण होकर दिन मा
न लुपत हो गया और वीरधीर रणकी अभिलाषाका
ले कोपसे उनमत्त होकर शत्रुके सन्मुखको धाये चले
जाते हैं उन्हो भी डिंभक और हंस सैनाको सजाय करके
दोनो वीर अपने सब वीरधीरोंके सहित आनेदमे मगा

२२
भं
१४१
141

न भये हुये रण भूमी को चले आवते हैं तब दोनो दलों
का ऐसा प्रभाव देख पड़ता है कि मानो दो समुद्र उमड़
करके परस्पर मिलने को आये हैं रण की भीर भार कछु
वरनी नहीं जाती है और दोनो दलों मे डंदभी भेरी नफी
री संख इत्यादि अनेक बाजयों के बड़े घोर शबद होने ल
गे तब सहजे सहजे रण भूमी में दोनो दल जो हैं सो आ
य करके मिल जाते भये और सूरवीर अपने अपने भु
जों के बल से बरछी त्रिसूल मुदगर फासी तलवार

चक्र पाषाण भाला और धनुष बाण इत्यादि अनेक श
स्त्रोंके प्रहार कर कर बडे कोपसे परस्पर लडने लगे
और मुखसे एक दूसरेको ललकार कर वार करतेहैं
फिर रणमें सनमुख जूझकर स्वर्ग लोकको चले जा
तेहैं ॥ ४८ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ उड्यो छिन्न चक्रे
किन छायो गगान पुरी । रह्यो मारथर मुखर दस दि
सन पुरि ॥ परी समर आयुध झनकार भारी । क
हैं रिस कि किलकार भट प्रबल जारी ॥ उडें सीसन

२२
भं·
१४२

न नीछ नर सरन लागे । चले चपल कादर समर भ्रम
भागे । बह्यो जान श्रोणित सरित समर भारी । भैरवगी
य रवग गण प्रमिद भटन जारी । जरी जोगनी भू
त प्रेतं पिशाचैं । करैं पान श्रोणित समर यरन नाचैं ।
सुभट परस्पर गरज तरजन प्रचारैं । गहैं एककर एक
यरि यरन मारैं । उतै विकट दनुजान दल बल प्रचं
डा ॥ इतै वीर धनयीरजादव प्रचंडा । महा विक्रमी
सुभट जग दलन केरे । लरैं परस्परं दंगन करि घ्रकन

१४२

142

रेरे। रह्यो मार यर शावद दङ्के दिसन हरी। भिरैं भट भ
योत्राम संग्राम भूरी। लरैं सर समर स्त्रूर गारजन प्रवे
डा। परैं त्रुरमिचायल अनक रेवड रेवडा। उडैं वङ्गीरि
से भार करिकोपथावैं। परग शक्ति सर करनकरि भ
ट चलावैं। गजन सों गजनकी रथन सो रथनकी॥
परी रारजन रगा गगान छेंदचनकी। दोहा। याय
जाल यरनी विष्ठल गाहि कवेय करवाल। भयो घोर
भारत समर प्रलै कालके हाल। अस प्रकार करि रार

मै
१४३

143

भट भये थकन समुदाय । लगे करन पुनि हंदरण वीर
वीर रसकाय ४९ टीका ॥ इस प्रकार घोर रण होताभ
या कि पृथ्वीकी धूडी उडकर चारो पासे आकाशमे चा
यत हो जाती भई और दसो दिशामे मारो धरो मारो धरो
इह शब्द जो है सो पूर्ण होरहा है रणमे अनेस करके
शस्त्रोंकी झनकार पडजाती भई और बडे कोपसे सू
र वीर किलकार कर कर ललकारते हैं बडे तीक्ष्ण
बाणोंके लगानेसे वीरों के सीस तनसे कट कर उडजाते

१४३

हैं और कायर गीदी भयमान कर भागते हूये रणको त्या
ग चले हैं श्रोणत जो रुधर तिसकी नदी वही जाती हैं पं
ती और गीदड शूर वीरोंके मांसको भक्षण करते हैं औ
र जोगनी भूत प्रेत पिशाच इत्यादि वडे हरषसे वीरोंके
रुधरको पानकर कर रणमें नाचते हैं भटी जो शूर
वीर हैं सो वडी गरजसे गरजकर एक दूसरे को पकर
कर पृथ्वी पर पछाडते हैं उहां अनेक प्रचंड वडे कठि
न और प्रवल दैत ईहां वीर प्रधान रणमे प्रवल और प्र

खेड़ जादव इसप्रकार दोनो दलोंके महा पराक्रम
वाले वीर धीर कोपसे लाल नेत्र किये हूये परस्पर लड
तेहैं धरो मारो यही शब्द जहां तहां होरहाहै रणकी
धूम धाम और घाम कुछ कहीनही जाती वाणोके ल
गनेसे वीर गरजतेहैं अनेक घूम कर और घायल होहो
कर भूमीपर गिरते जातेहैं और अनेक मूर्छासे उठ
कर फिर साव धानतासे नाना शस्त्रोंको चलायक
र रणमे अपनी सामर्थ दिखावतेहैं गजोंके समूहसे

१४४

राज रथोंके समूहसें रथ ऐसे लड़ने लगे कि मानो र
णरूपी आकाशमें दोनो ओरसे बादरोंके समूह भिड़ते
हैं तब कबंध जोहैं सो सीस कटे हुये हाथोंमें नंगी त
लवार चमकती हुई पृथ्वीमें घमते और धावते चले
जातेहैं ऐसा युद्ध भया कि मानो प्रलै कालही प्रतीत
होताहै इस प्रकार बड़ा घोर रण होनेसे सब वीर य
कतहो जाते भये तब फिर एकके सनमुख एक हो
कर कोप करके द्वंदरण जोहै सोकरने लगे ४९ चौपई

१२
भं
१४५

भट विचक्र दानव जदुवीरा । लागे करन युद्ध रण धीरा । इंस भए बलराम प्रचंडा । लरन लाग गहि मुसल प्रचंडा । डिंभक सन सात्यकि मतिधामा । लागे करन घोर संग्रामा । उग्रसेन वसुदेव रिसाये । समर हृडिंभ दनुज पै धाये । गद अक्रूर आदि कृत वरमा । लरहिं सुसमर निरत भट धर्मा । हरि अरविंद बदन जरि लाई । किये विदलन दनुज समुदाई । रही न धीर विकल मन मारे । चले जान का हर रण

१४५

145

हारे । नव विवक दनुजान रिसायो । गहि कर पव
घवान संधायो । तानि श्रवण लगदीन सिङ्काडे ॥
लागे सो मखें दउरगाडे । कछुक वेर मरख्याय म
गारी । उदे वडुरि निज वेन संभारी । मारयो रिसकि
यनुष परिवाना । ध्वज पताक दनुजान उडाना ।
पुनि सारथि जुत गरव प्रहारी । कीने दनुनन तुरग
रथ चारी । दोहा । पांच जम कर शोर नव कियो चोर
जडराय । प्रलै मेघ सम जनकुं रव दियो दनुजेन दल

१२
भ०
१४६

146

ध्याय ।५०। टीका । तब हंदरण जोद्धोने लगा तिस
मै महावीर विवक्र दैतके साथ रणमै धीरज धारक
र आपजडनाथ महाराज जद्ध करनेलगे और ऐसे
राजाके साथ बडे अर्वेड शस्त्र धारकर बलराम जी सा
मथी हो जाते भये डिंभकके साथ युद्ध और बलके धा
म सात्यकी हरिंभ दैतके साथ महाराजा उग्रसेन
और वसुदेवजी महो कोपसे रण करने को धाय च
ले और गद अक्रूर कृतवरमा उद्ध तिनके और वीरयो

१४६

गैंमे लड़नेको सनमुख जातेभये इसप्रकार हेदश
ह होने लगा तब भगवानने बाणोंकी अखंड झड़ी
लगाय कर तिसमे अनेक दैत्योंको मार कर बहा दि
या किसीको धीरज नहीं रहा व्याकुल भयेहुये काय
रोंवत रणभूमीको त्यागकर भागे चले जाते हैं ऐसे
अपनी सेनाकी दुरदशा देखकर विचक्रजो है सोब
ड़ा क्रुपत होकर धनुषको हाथमे लेकर और तिस
मे बाण जोड़कर कानतक खैंचकर जड़नायकेस

भैं० १४८

147

नमरवे घोड़े देताभया ऐसे तिसके अनंतर तीन बाण औ
र प्रचंड छुटे हुये बाण भगवानके हृदयमें जाय लग
ते भये तब तिनके प्रहारसे ऊक्षक वेदनके मारे ग
रवगारी भगवान मूर्छाय हुये मौन रहे फिर तदन
न्तर सावधान होकर कोपसे जोड़कर ऐसा बान मारा
कि रथके ध्वजा पताका उड़ाय [illegible] कर सारथीके स
हित चारो घोड़े भी हनन करदिये अर्थात मारदिये
तिसके उपरांत भगवानने पांचजन्य संखका नाद

जो किया तो दोनो दलों मे मानो प्रलै काल के मेघ गरजत घो
र शबद जो है सो कायत होजाता भया ५० ॥ चौपाई ॥
वैरी विकल नभ कपि निज जाना । गौरव गदा गहि रन
गगन गहि नि निज पाना । गर्जो सिंह नाद जिमि घो
रा । हस्यो मकरंद मरकट भुज जोरा । नाम वार प्रभु
लीन बचाई । नव प्रवेश कोप्यो दनुराई । साथि करन
सट सिला महाना । मारेउ ताकि बच्छ भगवाना ॥
सो प्रभु पेरदीन नहि ओरा । लाग्यो हृदय उष्ट सिल

२२
मं
१४८

148

घोरा । गिरह्योसिसुरमियरन सरकाई । उठ्यो वह्यो
बिसरति जब आई । लेन लगन कर परच विसाला ॥
बोल्यो बचन सुनहु नंद लाला । हरहिं परच इह दव
पन म्हारा । तमहिं बाहु बल विदन हमारा । भयो
सुरासुर जब रण घोरा । हम तम लरे जगल इक
ठौरा । सो भुज बल हमारे हम सोऊ । काहु पै बि
सर गई अब तोऊ । अइ वीर नव परच बचेहौ । न
तर नवेर आण अब लैहौ । अस कहि हन्यो परच मु

न जोरा । सो आवत जड नंदन तोरा । दोहा । भयो
ऊपर तब दनुज सठ समर भूमि अति क्रूर । हन्यो
उपारि साखि सन बिटप बेग बल पूर । ५१ । टीका
तब विवक्र दानव तुरंतही चमक कर रथसे कूद
पडा और महा भारी गदा हाथमे लेकर सिंह नाद
करता हुआ भुजौंके जोरसे जडनाथ के मकट
पर चलावता भया तब कौतुकसे भगवानने ति
सके वारको बचाय लिया दैत पती देखकर फिर

वडे कोपसे एक महाभारी शिला उठायकर ना
क करके भगवानके हृदयमे मारता भया तवसो
शिला ग्रुवती हुई कौनकी भगवानने तिसदुष्ट
की ओरही फेर दई तरतही जायकर तिसके हृदय
मै ऐसी लगी कि घूमता हुआ मर्छायकर पृथवी
पर गिर पडा फिर ऊछक वेरके पीछे जव सरत
संभाली तव वडा भारी परवत जो ऊसाउहै सोउ
ठायकर कोपसे कहने लगा कि हो नंदके पुत्र इस

149

परशु जोहै सो अब हमारे गारवका नास करताहैह
मको मेरी भुजोंकावल भली प्रकार विदतहै जा
नोतो जब सूर और असूरोंका परस्पर घोर युद्ध भया
था तसे हमतुम दोनो लडेथे सोई हममें और सोई
हमारी भुजोंका वलहै क्या हमको कछु सुधी विस
र गईहै अब जो वीर होतो हमारे परशुसे वचो नहीं
तो अवी हमारे प्राणोंको लिया चहताहै ऐसे कहि
कर दैत राजने सो परशु भुजोंके जोरसे मारा तब भ

श्र
भ॰
१५०

150

गवान आवते कोही नरन दो खंड करदेते भये नि
सको देखकर सो विचक्कैन अपने क्रोधमे सो
साली वाला वडा भारी हुनउ खोड करके भगवान
पर जोरमे अमाय करके चलावना भया ५१॥ भ
येगा अयादछंद ॥ करयो खंड खंडा सहुम जनन
मेडा । भेरे भुगिरिस समर थलवल अखंडा ॥
वचन दनुज पति सुमरि मानस मरारी । हयो
पत्रि सर नीत्र नरकारन धारी । लग्यो जाय दन्न

१५०

तन अनल अरु चेरा । भयो भस्म तन दागा हरन
रिपु अवेरा । पवनी वहुरि एवस हरि न्नुगा आई ।
भये लुपत दानव सकल जलथ जाई । उतै हेम ब
ल रण लगे करन घोरा । हने वाण दस विसष गोर
नि कशोरा । हलीकरहने पोच सर हेम गाठे । लि
ये सुभट सन सुख समर् यरन ठाढे ॥ हयो विस
कि वलवान उति सीम हेसा । गिरेयो धरनि सर
विन विकल वल विध्वंसा । उठयो वहुरि करि यो

रा
मे
१५१

रजन सिंह जोरा। हन्यो बान रामै भव किभजन जोरा-
हली के लग्यो बान यद्यपि महाना। रहे सुभट नद्य
पि समर सावधाना। सपत सहस्र हनि बान हलि हे
म कोरी। प्रहारे कठिन कोप करि धनुष जोरी॥
उड्यो वाजिरथ सारथी मरन लागे। गिरयो हेम म
च्छिन धरनि धीर त्यागे। उड्यो वर्डारि सर पंच हनि
हेम नामा। दल्यो छत्र सारथि तुरग तूणरामा॥
दोहा॥ तब सिंधन बल राम तजि गदाधारि करया

१५१

(15)

य । उतंक आय गौरव गदा गहित हेम गरजाय ५२
टीका ॥ तव दीन वेष भगवान जव कोणमै भये तोति
म हृदको आवनेहीं खेड खेड करदिया फिर तिसदै
तका मारना हृदयमै विचार कर पनशी जो अगनवा
ण है सो धनष मै जोडकर मन मखे छोड देते भये
जव वे वाण तिस दैत राजको जायकर लगा तव ल
गनेहीं सो देवताउंका शत्रू तरत भस्म होगया और
पनशी वाण फिर आयकर भगवानकी तूणमै अर्थी

न उठीमें समाय गया तव और जितने गोत्समथे सो
तिसका भसमहोना देखकर भयकेमारे सब समुद्र
मैं जायकरके छिपजाते भये और जहां हंस और बल
रामजीका जद्धजो जटा हूआथा तव रोहनीकेपुत्र ब
ल रामजीने हंसको विषके भरे हूये दसवाण मारे
और उपरसे हंसनेभी उनसे नीवाण और गाढे पांच
वाण छोडे सो वलरामजी तिनको रणमें मनभावे
सहारतेभये फिर हलधरने कोपसे खैंचकर एक

१५२

बाण इस के सीस को मारा तिस के लगते ही सो वी
र घूमता हुआ मूर्छा खाय कर पृथ्वी पर गिर पड़ा फि
र थोड़ी बेर के पीछे सुधि संभाल कर उठा और सिं
घ वत घोर गरज करके एक बाण भुजों के जोर से खैं
च कर हलधर को मारता भया सो बाण बलराम को
यद्यपि बड़ा कठिन ही लगा तथापि वीर प्रधान रण
मैं साव धान ही रहा तब फिर बलरामजी महा को
प करके सात हजार बाण इस पर छोड़ते भये तिन

१२
भ०
१५३

बाणों करके तिसका रथ सारथी और घोडे सब हर
हर होगये और आपभी हंस मूर्छा होकर धीरज
से रहित होगया और गिर पड़ा फिर जब चेत मे
आया तो उठतेही तमकके पांच बाण ऐसे गाढे
मारे कि बलरामका छत्र बाणों को उड़ी रथ सार
थी और घोडे सब उड़ाय दिये तब बलरामजी रथ
से हीन भये हुये हाथमे गदा धार कर धावते भये
और उधर से हंसभी रथहीन भया हुआ गदाही

१५३

उत्तम्यकर कोपसे गरजता चला आवता है ५२ तोट
क्छंद ॥ उभय बीर बिकाल परस्पर गदा चलावैं निज
निज वार प्रचार परस्पर मार बचावैं । कैरै मत्त गज
मत्तड़े समर मेदनि अति जड़ा । भिरैं भीम जरा सु
भट होकि भुज देडन कूदा । असतिन कर संग्राम
गगन सुर चढे बिमाना । देखहिं निज निज ठाठ
मानि अस्त्र जे महाना । धाय धाय हलि जवै जोर भु
ज गदा चलावैं । नवै बरषि सुर सुमन जैति जै जैति

१२
भं
१५४
15४

घलावै । टूटे गदा खंड भिरत भट जुगलन केरे । तब
धाये बलराम कृपन करि नैनन तेरे । हेम बरन थल
जाय ललकि निजलात प्रहारी । गिरयो तुरत महि
विकल सकल तन स्त्रवति बिसारी । तब बोले बल
राम उदंड सठ दुष्ट घमंडा । हमडे प्रहारन देहु खेर
गमज जोर घमंडा । जब लग उदंडन हनडे सख
तब लग भय लोभा । मरे परोपकार करत कछु
बीर न सोभा । दोहा । उठि न मरकि न हेस तप

टाडरहे वलराम । डिंभक सात्यकिको लगे लछण उग्रसंग्राम ५३ ॥ टीका ॥ नव वलराम और हेम दो
नो महावीर उमग उमग कर भुजोंके जोरसे गदा च
लावतेहैं और परस्पर मारकर और ललकार कर वार
भी वचातेहैं दोनोका भिडना ऐसे प्रतीत होताहै कि र
ण भूमीमे उनमत भयेहूये मानो दो हसती जुड कर
तेहैं और कोपसे भरेहूये वारवार भुजों कोठोकतेहैं
इसप्रकार तिनका रण जोहै सो देवतागण विमानो

पर चढ़े हूये अकाशमै खेड़े देखतेहैं और सब आव
जेको आपत होतेहैं और हली जो वलरामहैं सोथा
य थाय कर जब जब भुजों के महान वलसे गदा च
लावते तव तवहीं देवता गण पुष्पोंकी वरषा क
रके जै जै जे शवद को उचारण करतेहैं तव दोनो
भटियोंके भिड़ते भिड़ते गदा जोहैं सो टूट गये
फिरतो वलराम कोपसे नेत्र घुमावते हूये थाय

कर और नमकसे उछाल कर हेमके वक्षस्थलमे

लातका प्रहार देने भये नवमो आकुल और अ

चेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा वलराम कहने

लगे कि अरे मूढ मेद वेग उठो और मेरेको भ

जौके जोरसे खड्ग का वार करनेदेवो हो पृथ्

वीके लोभी प्रथम जवलग हे नही उठेगा

तव लगमे तेरेको शस्त्र नही मारुंगा क्यो कि

रा॰
भा॰
१५६

मरे और पडे पर वार करना वीरोंको कछु शो
भा नहीं होतीहै इसप्रकार वलरामजीने
वहु नहीं कहा परन्त हंस मूर्छासे नही जाग
ता भया तव हलधरजी नहे स्थित भये हूये
डिंभक और सात्यकी का वडा घोर जद्धजोहै सो
देखने लगे ५३ ॥

156

चौपई। करत परस्पर बान प्रहारी। उभय प्रबल
भट बदन प्रचारी। तब सात्यकि दस बिसिख प्रचं
डा। हने न र्द्ध प्रबल भुज दंडा। भेदि बच्छु तन
डिभक सोई। प्रबसे धरनि वेग गत होई। यद्यपि
लगे कठिन सर बाना। तद्यपि रह्यो सुर सब थाना।
धनु संधानि लच्छ सर गाढा। वेग कुपत सात्यकि
तन छाढा। सो आवत रोहनि कुमारे। राहि पि
नाक निज बान प्रहारे। टूक टूक सायक करि ना

सा । किये धनुष डिंभक कर नासा । हेम धनुज
हुमर धन धारी । लग्यो करन नव बान प्रहारी ।
छाडे श्रम निराच विसहरे । भये विकल घायल
रण सरे । श्रोणित भरे सुभट तन कैसे । फूले ब
न किंसुक ब्रुंवि जैसे । नव कोपे सात्यकि बल
धामा । लेत बदन डिंभक कर नामा । भ्रमे प्रथम
कादर मति हीने । इह बिध कत घायल नव की
ने । पर्यो समर मोहि सन नव गाढा । हुयारो

ष औरन परकाष्ठा । दोहा । अस कहि सात्यकि
तमकि तर हन्यो धनुष धरिबान । भंज्यो धनु रिपु
चूर्ण जन भनि भनि वचन प्रमान ५५ ॥ टीका
तब डिंभक और सात्यकी जोहैं सो दोनो वीर भाव
से ललकार ललकार बाणों के वार करते हैं फिर
सात्यकीने तिसके भरे हुये दस बाण जोरसे खैं
चकर जो मारे तो डिंभकके हृदय को भेदन कर
के पृथ्वी मे जाय धसते भये यद्यपि ऐसे कठि

त बाण भी लगे तथापि सो वीर सावधान हीं रहा तब
तिसने भी महा कोप करके सात्यकी के शरीर पर ल
त बाण छोड़े सो रोहणी के पुत्र ने अपने बाण मार
कर आवते हीं टूक टूक कर दिये और तिसका धनु
ष भी खंड खंड कर दिया तब हंसके भ्राता डिंभकने
दूसरा धनुष धारन करके बड़ी शीघ्रता से ऐसे विस
ख बाण मारे कि जादवों के अनेक सूरवीर रण में घा
यल होय गये तब रुधिर से भरे हुये वीर ऐसी उपमा

को उदय करते हैं किमानो वाणों मे नाना के रङ्गों के फू
ल फूले हुये शोभा पावते हैं जब इस प्रकार वीरों को
घायल भये हुये देखा तब क्रोध से लाल होकर सात्य
की कहने लगे कि अरे अधम कायर तुही के हीन डिं
भक इह तैने वीरों को क्यों घायल किया है और क्यों
इनपर वृथा ही रोष करता है तू ठहरा तो मेरा और
न माराथा ऐसे कहिकर सात्यकीने क्रोध से धनुष
मे धरकर बाण जो मारे तो तनतकाल ही शत्रु का धनु

भं
१५५

159

ष और बाणोंकी उड्डी चूर चूर करडाली ५४ दोहा
छंद । तब डिंभक अतिकुपित गर्जत रथ खेड़ उडा
यो । सिंहनाद करि गाज्ज तरज रिपु सन मन भय छा
यो । उतरे यान तजि पयदघ गहिन करवाल करा
ला । धाये सात्यकि तमकि तडत जनु पडत उल्का
ला । लागे करन प्रचार परस्पर खड्ग प्रहारा ।
एक एक कर पाव सुभट विक्रम नहिं पारा । परे
श्रम मरहाय धरनि जगा वीर प्रवेश । चलो न उ

र उनमाद करन लगा मेदनि खेड़ा । दोहा । श्रम नि
न कर संग्राम महँ चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान । डा
फ विलोकहिं गगन पथ पावहिं मोद महान ५५
टीका । जब डिंभक धनुष से हीन होगया तब रथ
को छोड़कर कोप से सिंहवत गरजना हुआ खेड़ा
उठायकर शत्रु के मनमें खेको वला और ईहासा
न्यकी भी रथको और धनुषको त्यागकर बिजली
वत चमक चमकके उछलते हुये अति प्रचंड नल

१२
भ॰
१६०

160

वार खैंच कर तिसके मनसूबेको थावते भये नव रणमे दोनो वीर परस्पर ललकार कर ऐसे वार करने लगे कि एकके पराक्रमका दूसरेको पार नही पडताहै अन्तको दोनो वीर मूर्छीय करके पृथ्वीपर गिर पडे परन्तु रणभूमीमे खेडे के प्रहार करनेका दोनोके हृदयोंमे उतसाह नही घटता भया इस प्रकार तिनका जुद्ध जोहै सोदेवतागण विमानोपर चढे हूये आकाशमे स्थित

भये हूये देखतेहैं औरबड़े आनंदको प्रापत होतेहैं ५५ चौपाई ॥ उग्रसेन वसुदेव प्रवीरा । बलि विज्ञान समर अव धीरा । ज्ञान निरत विज्ञान सुजाना । प्रजापाल गुण नीति निधाना । जेहंकि समर करन अनुरागे । रथ चढ़ि बानप्रहारन लागे । उन हरि भिम दनु प्रबल प्रवेशा । मन मारव आवसम रथपर वेशा । दाढ़े लोम वपुख कचपीका । गाढ़ विलेव दसन पटभीना । गिरीगोह मनुनासिक

१६२

१२

मं

१६२

162

भयावन। विवक विकट भट जीह अपावन। बड़व

कराल वेथ गिरि भासा। कढ़त वदन मन्न पावक

स्वासा। असहि डेव टन भीम कराला। पावा भत

ण भटन विसाला। गज उठाय गजन पर मारै। य

रि वाजिन पर वाजि प्रहारै। रथपै रथ धरि पायप

छारन। सिंहनाद वड़े वीर प्रकारन। मन डै कूत

न हप धरि धावा। गहि गहि समर सुभट वड़ लो

वा। कीन सकल दल घायल नासा। परे इसत महि

न रणनासा । दोहा । भनत मारथ वरमार सठ लेत न
तनक विराम । नव आऊल वसुजादवन वली न
जन संग्राम ५९ टीका नव वीरोंमे प्रधान रणमे धी
रज धारनेवाले ज्ञान ध्यानकी निधी और नीतीमेप्र
वीन राजाउग्रसैन और वसुदेव जोहैं सोदोनो रथोंप
र चढकर रणमें वडे उतसाहसे वाणोंके प्रहार कर
ने लगे और उधर हिडंब नामादैत महा प्रवल और
प्रचंड हाथमें खड्ग धारे हुये मन मावे वला आताहै

१२
भ॰
२६३
163

सोकैसा भयानक रूपहै कि शरीरके सबरोमउ
ठेहूये और पीले केश लंबीभुजें और वडे भयान
क लंबेहूी दांत पर्वतकी कंदरा समान नासिका
वडी कराल ठोडी और मुखमे वड़ी अपवित्र जीभ
विंध्याचल पर्वतके समान अतिसेऊंची काया औ
र जैसेही मुखमें अगनीवत दग्ध करने वाले
स्वास ऐसे महाकराल हिडंव दानव जोहै सो मू
रवीरोंके भक्षण करनेको धावना भया तब हम

स्तियोंको उठायकर हस्तियोंपर मारता और घोड़
योंको घोड़योंपर रथोंको रथोंपर धर करके पछा
ड़ता जाताहै और सिंहनाद करके चारो ओर गरज
ताहै मानो प्रलय कालही रूपधार करके धावता
फिरताहै अनेक शूरवीरोंको पकड़ पकड़ खाव
ता जाताहै तिस दुष्टने जदुवंसियोंका संहरण द
ल घायल करदिया और अनेक मूर्छी होकर रण
भूमीमे पड़ेहैं तोभी सोदुष्ट मारो धरो मारो धरो

१२
भं
२६४
२६५

164 + 165

ऐसा भयानक शब्द करता हूआ विश्राम नहीं लेता जिसके भयके वश भई हूई जादवों की सैना रणभूमी को त्यागकर भागी चली जाती है कुछ ठौर नहीं लेती ५६ चौपाई । जिमिरण कुंभ करन कपतायो । मरकट कटक कोटि भट खायो । तिमिहलिंदेव द नुजान प्रचारी । भखो जदु बंसिन बल भारी । का हू सुभट मनमाव न नहिं लेवा । तब न्रप उग्रसैन वसुदेवा । वीरमहान वृद्ध बल वेरा रथ्या हरुष गा

ह्नि करन कुंदेउ । गेह डिंभ मन भावे विननु वेरी·
कुयन वाद आगें जिमि केरी । हदन लषि आव
त दन वोरा । यावा गमन करन करि सोरा । ग्रंथ
कूप सदृश भावे वायो । मनक मनुज वावन व
ट आयो । उग्रसेन आह्नक जग वीरें । भस्यो वद
न रातम नवनीरें । वावि सकल सर दानव वो
रा । यावा गारजि गमन तिन ओरा । उभे हद
वीरन कर जाई । लीन तोरि यनुसार यि वोई ॥

भुजन पसारि धरन तिन हेतू । भयो वह्नी दृग
जानस चेतू । बोल्यो वदन हास जुत बानी । रे
हरि जनक सुनहु मति ज्ञानी । उग्रसैन संजुत
नव काही । अब मैं ग्रसहु बैर कछु नाही । ज
द्यपि जटिर भ्रमत न बहु काला । तद्यपि मैं इहु भ्रम
तरण भरुवा । अब उपाय नव बवनन कोई ।
आज परहु मोरे सावदोई । जो नहिं मनि हुज
बिरगाय मेरी । तो मैं लैहुं अबहिं चिन बैरी ॥

दोहा। अस कहि भुजा पसारि निज वदन भयंकर बा
य। दौरयो भक्षण करन तिन यरि हनुमंतन जन्तु काय॰
५७ टीका॥ जिस प्रकार रणमें कुंभकरनने कोप कि
याथा और कोटहूं मरकट सूरवीरोंको ग्रासन कर
लियाथा तिसी प्रकार अबहू डिंब नामा दैत कोप
करके जदु वंसियोंकी सैनाको भक्षण करलेना भ
या कोईभी सूरवीर तिसके सनमुख नहींभया तव
महां हद्धवीर राजा उग्रसैन और वसुदेव रथपर आरू

१२
मं॰
१६७
167

ढ होकर और हाथमे धनुष लेकर हडिंबके सनमु
ख ऐसे जावते भये किजैसे मृग सिंहके आगे ब
करेकी छेली जाती है तब वृद्ध वीरोंको आवते देख
कर सो घोर दानव ग्रासन करनेके वास्ते बडा शोरक
रके धावता भया और बडे गहिरे मुखके छिद्रे वन मु
ख खोलकर मरे हुये मानषोंको चावता हुआ सन
मुख चला आया तब उग्रसेन और वसुदेवने तिस
के आवतेका बाणोंसे मारव भरदिया सो तिन बा

गौंको चाबता हुआ तिनके ग्रसनेको कोपसे बड़ा हा
ह्लाद करके धाया और आवतेनेही वृद्ध वीरोंके ध
नुष तोड़कर तिनके साथियोंको खोयलिया फिर
भुजा पसार कर तिन वृद्धोंके पकड़नेको भी त्यार
होकर बड़े अट्टहाससे कहने लगा कि हे हरीके
पिता अब मै उग्रसैनके सहित तेरेको ग्रसताहूं कु
छ वेर नहीं है जद्यपि तमारा मांस वृद्धसा ऊखरु
खा देखपड़ता है तद्यपि मै रणके खेदसे थकत और

१२
भं
२६८

1.68

मृषा होयगाहूं अब तुमारे बचनेका तो कोई उपाय
नहींहै इसतें तुम आपही मेरे मुखमें आयकरके
पड़जावो होहूं अबजोमेराकहा ना मानोगे तोमैं तु
मको अबीपरके खाय जाउंगा ऐसा कहि करके दां
तो मुजापसारकर और बड़ाभयंकर मुख खोलक
र तिनके भक्षण करनेके वास्ते मानो कालके समा
न धावता भया ५७ चौपाई जासो अब तन जत सठ
पहा। गहन गमन कर कवन संदेहा। निजरक्षक

कौ नाहिंन लेखौ । चहुंकित चितय धाम अवसेखौ
यत्नषवान आश्रुय विसराई । जहिंर जान नजिवले
पलाई । नव हरिंभ पाखिल तिन लागा । हाहा
मच्यो चहूं कित बागा । उग्रसेन वसुदेव जुंकाहीं
भछिन दव रछिन कौ नाहीं । अैसो शोर मच्यो व
जुं बौरा । ह्वयो अबला रोहनि किशोरा । भिरत है
स सनम्हाल रणमाहीं । लोचन फेरि ताख्यो दव
काहीं । जामें महा अबला विल सैहैं । निश्चय

१२
भ
२६९

169

पित महीपकर बैंही। अस उर गनत हैम संग्रामा।
हरि कहं सौंपि रामबल धामा। धाये कपन सिरह्न
न गाजे। देरेह्ले हरिड़ि बगात लाजे। कन थावा सठ
हूफन पाछू। इह न प्रथम नव साहिम प्राक्रू॥
छाड छाड जफ हूफन काहीं। इह नथरम बीरन
रग माहीं। मोहि खाय भनि जडिरन खोना। तो
बल तोर होहिं भ्रन माना। अस कही ह्नली सुभट
रग गाछे। जाय मत्त राक्षस पिनडाढे। बोल्यो

देखि दनुज हरिजीके । आज अहार दीन विधिनी
के । खायन वल तन तरुण तमारा । इन दृष्ठन
करत जन्है अहारा । दोहा । दोल्यो उत असमनन
खेल भुज पसारि महबे वाय । प्रबर वीर बलराम
कहे यह्यो धरणि रण आय । ५८ । टीका । तब
उग्रसेन और वसुदेवजीने जाना कि इह उह प्रबन
हैं औ इतना इसके शासन करनेमें कोई संदेह नहीं
है ऐसे विचार करवाते और देखतेहैं कोई रत्नक

१२
भं॰
१८०

170

सकतेही पडताहै तब धनुषबाण इत्यादि सब शस्त्र
छोड़कर भयके वश होकर भागचले और हिडिंबदा
नव जोहै सो तिनके पीछे लागा जाताहै इस प्रकार
दैतको प्रबल देखकर चारो ओर हाहाकार मचगया
कि उग्रसेन और वसुदेवको दैत भक्षण करताहै र
क्षक कोई नहीहै तब इस शोरको रोहणीके पुत्र ब
लरामजीने सुनकर और नेत्र फेरकर जो देखा तो
जाना कि इह महा प्रबल और प्रचंड राक्षस जोहै सो

१२

अब निश्चय करके पिताको और राजाको खोय लेवेगा
ऐसे सोच कर हंसका युद्ध कृष्ण भगवानको सौंपकर
आप बलके धाम बलराम बड़े घोर गरजते हुये धायक
र दैतको ललकारते भये कि अरे हा डिंभ निरलज मू
ढ़ने इन वृढयोंके पीछे क्यों धावता चला जाता है इह
तेरा क्या पुरुषार्थ है प्रथम वृढयोंके पीछे जाना कु
छ वीरों का धर्म नहीं है आ पहिले मेरेको खा पीछे इ
नको खाना तबतो तेरा कुछ बल भी प्रतीत होगा ऐसे

१२
भं·
१८१

कहिकर महा वीर धीर हलधरजी राक्षस और पिताके बीच जायकर स्थित होयगये तब देखकर सो दानव हसकर कहने लगा कि आज विधाताने बडा शुभ शृङ्गार दियाहै जोमैं तेरा नवीन मांस खायकर इन वृक्षोंके प्रहार को छोड देताहूं इस प्रकार कहिकर रणभूमीमें दोनो भुजा पसार कर और धायकर बलवीरजीको जाय पकडताभया ५८। चौपई। रूप त राम तब आयुध डारी। तमकि दनुज उर मुष्ट प्र

ह्यारी। सोजनु वज्र सरस नहि लागी। परो उरसि
मूर्छित ह्यपि त्यागी। दोकर वरन पकरि तिन का
ढो। धाय धाय बल राम पुकारो। परो जाय खे
ट कोस हुडिंबा। मानहुं गिरो गगन पथ षंवा॥
भयो दनुज जन म्रतक समाना। विपुल काल न
हो परे विताना। रह्यो भीम करना कर घाता। याते
अव न मरो दनु जाता। उठो वहुरि जव तन सु
धि आई। बल अनन्त सुमरत वलराई। आसिन

१२
भं·
१७२

172

समर भूमि नजिनाह । गयो समाय उदधि अवगा
ह। बलको बल विलोकि जड़ वैसी ।। जैजैकार
किये अरि थैसी । तोला गावन करन दिनराई ।।
भयो सिव पन अस्त गिरिजाई । प्रकटो ग्रंथका
र अनि भारा । स्रुजि परहिं निज करन पसारा ।
नवदङ्ग दिसन मिलो संग्रामा । जब मयंक सूर
ण उदनाना । दोहा । कैमजगण भटि हेद दल
निज निज सैन सजाय । लगे लरन द्रुति धरनर

१४

॥ आश्रय करन सहाय ५५। टीका। नव बलबीर
जीने कोपसे शस्त्र जो हैं सो डार दिये और तमकके
उछलकर तिसदैतके हृदयमे एक ऐसी मुष्टका प्र
घात मुक्की मारी कि मानो वज्रके समान तिसको
लागती भई और घूमता हुआ मूर्छागत होकर
पृथवीपर गिर पडा नब फिर बलरामने लातसे प
कडकर और घुमाय घुमायकर ऐसा पिछाडा कि
छे कोस पर जाय पडा मानो आकाशमे कोई षंभ

२२
भं
१७३

173

टूटकर पड़ाहै और मेरे हृये अरघवन्त कुछ कालतक
नहीं ही पड़ा रहा तिसका मरना भीमसेन के हाथ से
था इस कारणसे मरा नहीं फिर बहुत देर के पीछे ज
ब खबर संभाली तब बल रामजी के बल को अनन्त
जान कर भय के वश भया हूआ रणभूमी को त्यागकर
समुद्र में जाय प्रवेश करता भया ईहो हलधरजी का
महा पराक्रम देख कर सब जड़ चेतन जो हैं सो जैजै
कार शब्द करने लगे इतने में सूरज भी अस्त गिर

मै जायकर स्वपन होगया वडा अंधकार पडगया

अपना हाथ नही सूझपडता तब दोनो दिसोंसे जुद्ध

जोहै सो मिट गया सबकोई विश्राम करता भया तोज

व सूरी चंद्रमा उदय भया तब दोनो दलोंके सूरवीर

अपनी अपनी सैना और शस्त्रोंके सहित सावधान हो

कर रणकरनेमै तत्पर होजाते भये ४४ ॥ चौपाई।

उतै हेम डिंभक जगवीरा । भये सैन आगल रण

धीरा । इतै कृस्न वलराम सहाये । विजै करन रिउ

१२
भं·
१८४

174

सनमुख आये । लागे लरन हेंद दल भारी । सुभट सू
र सम विक्रमधारी । निज पर भान रह्यो कछु नाहीं ·
भिरत प्रचारि वीर रण माहीं । इत उत प्रबल होत द
ड़े ओरा । करत रजनि चम भारन जोरा । अस प्रकार
रण करत अनंता । भये अनन्त हनन बलवंता । गो
वरधन तट जानि न पायो । लरत लरत लोचन दल
आयो । जमुना नीर भयो भिन सारा । भिरत वीर
वर लेहिं नवारा । भिस्योन संध्याकर अब कारू ।

होत बरोबर वीर विनासू । मारनादि सात्यकि हवि

रामा । कियो मनहिं मन गीरहिं संग्रामा ॥ वहुरि

हेस हिंभक जग वीरें । वेरि महा वृष्णि जादव धीरें ।

वसुदेवें कहाे सर सात । नरपति तिहुँबर वान निपा

ता । दोहा । सात्यकि मार्यो सात सर निसठ तिहु

नर मान । पंच वीस मारत हन्यो केक कान दसतान

न । वबर वीस विपृथ कियै वान सबचन नहि पो

र । उद्धव दस उष्ट हन्यो नव तानि प्रवल भ्रज जोर

१२
भा॰
१७५

175

२-।टीका। नव ऊधो ह्मस और डिंभक दोनो आता जोई है सो अपनी सेनाके आगे होकर रणमे आयजा ने भये और इनो ह्मस भगवान और वलराम शत्रुके जीतनेकी अभिलाषा वाले होकर सनमुख चले आवतेभये नव दोनो दलोंके वडे पराक्रमी वीरथी र परस्पर अनसे घोर जुद्ध जोई है सोकरने लगे ऐसे ल डतेभये कि अपना विराना कछु सुझनही पडता रात्रीके समय घोर जुद्ध करने कवी इधर प्रवल होते

हैं और कवी उधर इस प्रकार अनन्तही जुद्ध होना भ
या कि जिसका अन्त नहीं और अनन्तही सूरवीर
भी मारे गये किसीको जान नहीं पडा होनोदल ल
डते लडते गोवर्धन के निकट चले आये तब जमु
नापर पहुंचतेही प्रातकाल होगया सूरवीरोंके
चितसे लडनेका उतसाह नहीं घटता किसीको
संध्या करनेका समयभी नहीं मिला वीर धीरोंका
बरोबर घात होनारहा तब भगवान बलराम सा

रन सात्यकी इत्यादिकोंने गोवरधन को मनमें
ही प्रणाम करलिया फिर हंस और डिंभक दोनो
भ्राताओं महारथी जादव जोहैं सो घेरकर तिन
पर एक वारही वाणोंके प्रहार करने लगे तब व
सुदेवने दस। राजाउग्रसेनने तिहत्तर। सात्य
कीने सात। निसठने भी तिहत्तर। सारनने प
चीस। कंकने दस। विपृथने चौवीस। और उ
द्धवने दस इसप्रकार सब भ्राताओंके वलसे खैंचखैं

व कर बाण जो हैं सो मारन ते भये ॥ ६ ॥ चौपई ॥ डिंभक हंस सुभट रणधीरे । काटि तीरिहन सब कर सीरे ।
हन्यो सबन कहे भरि भरि बाना । सुदिदियो धुज सार थि जाना । बहुत रुधर तन चीर बिहाला । जिमि उक्ष मन तरु किंसुक लाला । शेलि उठी जादव बल सा री । हंस बिसवे सरस किन सहारी । उद्धव सात्यकि आदिक जेते । सहिन परे सर सरहिं केते । आन सु भट सब बले पराई । डिंभक हंस सरन ऊरिलाई ॥

ए
भ.
१८८

177

राम कुल वढि आगल आये । हनन हेम डिंभक कहे
धाये । करत जुद्ध भट खारियो क्रुद्धा । एक एकनै वी
रविरुद्धा । शंभ जगल गण अवसर जानी । रनण
हेत आय सारव मानी । डिंभक हेम भूप हन दोई ॥
ताके मद्ध शंभ गण सोई । लगोसि आग करन वड्डे
घोरा । माया वरन वरन वड घोरा । उन अवगरि डिं
भक मन जुद्धा । लागे करन राम वल क्रुद्धा ॥
दोहा । हेम भूप मन समर मही कोपि कठिन छन

स्याम । वीर वचन भनि भनि वदन लगे करन संग्राम
६१। टीका। तब रणमें धीरजवाले महा वीर हैंस
और इंसकने तिन सबके बाणोंको टूक टूक कर
दिया और अपने अत्यंत गाढे बाण मारकर तिन
के रथ सारथी ध्वजा पताका सब नास कर दिये वी
रों के तन घायल और रुधर बहा जाता ऐसी शोभा
देताहै किमानो जहां तहां रणभूमीमें केसूओं के वृ
त फूले हुयेहैं जादवोंकी सैनाजोहै सोसब डोलउठी

१२
भं०
१७८

178

हेम और डिंभकके कठिन बाण कोई नहीं सह स
का उद्धव और सात्यकी से लेकर जितने थे सो सब
मूर्छी होकर पृथ्वी पर घायल हुये पड़े हैं इनने भि
न्न और जो सूर वीर थे सब रणभूमी को त्याग कर
भागे चले जाते हैं हेम और डिंभकने मानो बाणों
की एक झड़ी लगाई हुई है तब राम कृष्ण दोनो भा
ना दीन खेदाना अपनी सेना की ऐसी दशा देख
कर तिन दुष्टों के वध करने को आगे निकल आये

२०

और कोपमे मार मार करते पाये तब वो दो वीर एक
से एक विरुद्ध अपने अपने बल और सामर्थ्य से लड
ने लगे तहां शिवजी के दोनो गण जो थे सो समय
जानकर बडे क्रोधमे आवते भये जिनोने हंस और
डिंभकको बीचमे राखलिया दोनो और रतनक हो
कर नानाप्रकार की घोर माया जो है सो करने लगे
तब बलरामजी क्रोधसे ललकार कर डिंभक के
साथ जाइ भेजट जाते भये और घनस्याम भगवान

शि॰ भं॰ १७५

179

बडे अपमानके वचन सुनायकर हंसके साथ जब करने लगे । ६१ । चौपाई । ते शंकर गण जंगल में छाया । लागे करन विविध विधि माया । डिंभक हंस सेन खुंन करहीं । बारबार निज जैनि उचरहीं । सरहिं अतंडे सेन वडे घोरा । बारबार देवकि क सोरा । हंस डिंभकें सिथल निहारी । भये ग्रम षि शंभु गण भारी । उभय भयंकर रूप कराला । धाये गहि त्रिसूल करवाला । दडंन ओरतें ग्रस

य छूटे। ग्रेगा निसंग भंग भरि टूटे। नरकि वेग ननका
ल मनारी। गहिन चरण गण जगाल धारी। शंभु
लोक कहे वेर बिहाई। जाइ प्रथम भावेन जुडवाई·
भूमि भवाय थाय बडवासो। दीन बडाई कैलास·
पछारो। परे नहे महिंचिन साथि बीसो। हर हसिसा
बयान शुनि कीस्यो। बडरिन समर करन रवि कीने·
हरि विक्रम बिलोकि भयभीने। हेस त्रिविक्रम वि
क्रम देखी। मानि त्रास निज हृदय वसेखी। कहन

१२
भ०
१८०

180

हमार राजरह माही। तब हरि करहु बिचन मतना
ही। जो नव मो श्रह लवण हमारे। तो औरहु कर टे
रु हमारे। करहु सरवदा जो तम नाही। तो कैसे
हमनै सहि जाही खिन कर भूप गरव लखु जेही।
हमरी सासन सिर धरि लेही। दोहा। जो तुम कब
हु किदरप वस देहु न कर हम काहि। तो देखहु ति
ज दसा अब गोप कुंवर इहि ठाहि ६२। टीका॥
सो शिवजी के दोनो गण तो अनेक माया करने लगे

और आप हंस और डिंभक संखेकी ओर धुनी करके बार
बार जै जै शबदको उचारण करते हैं और ईहो देवकी
नंदन भगवानभी बारे और बार बार संख धरते हैं त
ब हंस और डिंभकको जख्मिथल जानकर बडे घोर
भयंकर रूप शंभू गण जो हैं सो महाकोप करते भये
और हाथमें त्रिशूल और खड्ग धारकर मारमार करते धा
य पडे दोनो और ते शस्त्र छूटते हैं और सर बीरोंके अंग
टूटते हैं तब कौतुककी भगवानने अर्जुन गरबमें तम

क करनिन गणोंको चरनोसे पकड्कर और घुमाय
घुमायकर ऐसे बलसे पछाड़ा कि शंभूके कैलास प
र्वही जाय पड़ते भये नहीं मूर्छागत और अचेत होकर
कुछ काल परजंत पड़े रहे तब महा देवने देखतेही
हस करके फिर सावधान कर लिये तिसतें उपरांत ति
नको फिर रणाकरने की रुची नहीं होती भई भगवा
नका पराक्रम देखकर भयसे कांपने लगे और हे
सभी त्रिविक्रम भगवानका प्रचंड पौरष और प्रता

पछिताकर हृदयमें बड़ा त्रास मानता भया और ऊपरसे
कहने लगा कि हे हरी तें हमारे राजमें विघन क
रता है इस तेरेको भला नहीं है जो कर तेरेसे यह लव
ण नहीं बन सकताथा तो तें हमारेको कुछ औरही
कर देना हम लेलेते अब जो तुम सर्वदा नाहे करोगे
तो हमारेसे कैसे सहारी जावेगी देखो पृथ्वीके छो
टे बडे जितने राजे हैं हमारी आज्ञा सब सीस परधार
न करते हैं अब जो तुम अभिमानके वश होकर ह

१२
भे·
१८२

182

मको कर देउ नहीं देवोगे तो हेगोपप्रत्र अबीदेखलेना
कि तुमारी क्या दशा होवेगी । ६२ । चौपई । एक
हिं बाण प्राण हरि तोरे । पठऊं भवन जम वैर न मोरे
अस कहि धनु सायक संधानी । हन्यो सीस जदु नंद
न जानी । हरि लिलाट सर सो हत कैसे । पुच्छ सरा
हत ससि उर जैसे । नव दारुक पाछे प्रभ कीन्यो ।
सात्यकि कहे सारथि करि लीन्यो । भन्यो हेम सों
अब करले हो । इहि अब सर नहिं सोच करे हो ॥

उजछोरी नव अगि जग माही । करि पाखंड भज्यो
शिव काही । मोरे जियत विप्र अप माना । करन क
वन समरथ जग जाना । अस कहि वेग रूपन भगवा
ना । मारयो अनल अस्त्र यवनाना । नहिं तें मन कें
जरन अंदेसा । जग्यो ज्वाल चहुं ओर प्रवेसा । हन्यो
अस्त्र वारुण नवरेसा । अनल ज्वलन सब कियो वि
ध्वंसा । मरुत अस्त्र जडुनाथ प्रहारयो । हनि मसेंद्र
सर हेम निवारयो । रुद्र अस्त्र पुनि हन्यो मुरारी ॥

२२
भ·
१८३

183

रोको सोऊ हेम व्रत धारी । दोहा । तब मारे हरि ऊपत
यन्त्र ग्रह तीन संथान ॥ जोगनि दनुज पिसाच बड़ भूत
प्रेत प्रकटान ६३ । टीका । फिर हेम कहता है कि हे गोप
एकही बाणमें तेरे प्राण जम धाम को पठाय देऊंगा ऊ
क बेर नहीं है ऐसे कहिकर यन्त्रमें बाण जोड और खैंच
कर जड नाथके सीसको मारा सो सब जाय कर भगवान
के मस्तकमें कैसे शोभा देता भया कि जैसे बाणाकार प्र
धान बाणके आकारमें सूर्य चंद्रमा के हृदयमें छवी पा

वते हैं तब जडवीरने भी अपने साथीको पीछे करदिया
और सात्यकीको साथी करके हंसको कहने लगे कि
अब हम तुमको करदेते हैं लेवो सोचनेका समय नहीं
है हेपापी द्विजद्रोही तैंने पाखंड करके शिवजीको भ
जा है परन्तु मेरे जीवते ब्रह्मोंका अपमान करनेवा
ला जगतमें कौन है और किसको सामर्थ्य है ऐसे क
हिकर भगवानने महाकोपसे अपनी अस्त्र जो है
सो यज्ञषमें तान करके मारा जिससे वाये और अति

प्रचंड ज्वाला जागा उठनी भई मानो सर्व ब्रह्मांड ज
लने लगा तब हंसने उधर से वारुण अस्त्र मार कर
तिस प्रचंड अग्नी को तत्काल ही शांत कर दिया फिर
भगवानने मरुत अस्त्र जो है सो प्रहार किया तिस
ने महेंद्र बाण मारकर सोभी निवारण कर दिया
फिर मुरारीने रुद्र अस्त्र मारा हंसने सोभी रण मे
धीरज धार कर रोक लिया तब भगवानने अत्यंत
कोप करके और तीन अस्त्र जो धनुष मे जोड कर

मारे तो तिनमें अनेक जोगनी और दानव पिसाव भूत प्रेत इत्यादि जो हैं सो वडे भयानक भेषसे प्रक ट होजाते भये ६३। चौपाई। हे सङ्गे तीन अस्त्र प्रति जोरे। समरत शेष धनष निज जोरे। तिन तीनन कहं तीनङ्गे मार्‍यो। हरि पै ब्रह्म अस्त्र प्रति डार्‍यो। राक्षस भूत प्रेत समुदाई। ब्रह्म अस्त्र सब दीन मिटाई। वैस्नव अस्त्र कुल प्रति मारा। ऐहिं नवारण जाह प्रकारा॥

१२
भ॰
१८५

185

तड़ितै खंड खंडेन दिसिआई । उपजी अनल भीम भय
दाई । जरन लाग जन लोक सबाही । हाहाकार म
च्यो जग माही । तजि दीन्यो सागर मरजादा । बिधि
शंकर किय विषम बिषादा । मनुज देव सब करत
उचारी । हेमकुंड जप हेत मुरारी । लागे प्रलै कर
न जग केरी । बनी बात इह कठिन घनेरी । बिस्व
ग्रस्त ग्रस भीम निहारी । भयो हेम उर व्याकुल भा
री बिगत कोप तन मथित बिहाला ॥ छूट्यो कर

नै धनुष बिसाला । तब डरपत निज जीव बचाई । कू
दि जानते चल्यो पराई । काली दह इत जाय डराना ।
भयो गिरत नहि सोर मह्लाना । दोहा । नहि परान
जडनाथ नकि रथने कूदि नरेन । तौरे साथहिं रोष
भरि करत अमनि अरे अन ६४ । टीका । तब हेम
भी फिर शिवजीका सुमरण करके तनि जड वीरके
तीनो अस्त्रोंपर वडे घोर तीनही अस्त्र छोडकर एक
ब्रह्म अस्त्र भगवान पर डारता भया सोतिस ब्रह्मास्त्र

ग्ने जातेही भूत प्रेत पिशाच इत्यादि जो सेना को
भक्षण कर रहे थे सब मिटाय दिये तब फिर हस्त भ
गवानने सो वैसब भस्म मारा कि जिसका कोई नि
वारण ही नहीं था जिससे घोर और महा प्रचंड अग
नी जो है सो बडी भय के देने वाली चारो दिशा मे प्रज्व
लित हो जाती भई मानो सब लोक जलने लगे हैं जग
त मे हाहाकार मच गया समुद्र नेभी अपनी मरजादा
को त्याग दिया शिव ब्रह्मा के हृदय मे भी बडा विषाद

180

उत पन्न होजाता भया मानुष्य ग्रौर देवता सवकोई
कहने लगे कि देखो इस हंस महा कुदजफके वास्ते
भगवान मेरणी जगतकी प्रलै करने लगे हैं उह
प्रतसे कठिन वाती वनीहै तव जिस विस प्रस्वको
काल वत महा भयानक देखकर हंसजोहै सोर
णमें व्याकुल होजाता भया ग्रौर कोणसे रहन सि
घल ग्रौर वेहाल भये हुयेका हाथसे धनुषभी छू
टगया तव डरताहुग्रा जीवको वचानेके लिये रथ

१२
भे॰
१८७

187

से कूदकर भागा चला जाता जाता काली कूदमें अ
र्थात काली नागके निवासस्थान मैं जलके भीतर
जायलुका तिसके नट्टो गिरनेसे बडा शोर होता
भया तिसको भागते हूये देखकर जदुनाथ भी
तुरत रथसे कूदकर उसके नाश करनेको साथ
ही धावते भये ९५ । चौपई । जाय सबल देव
कि ऊमारा । उभरि कीन नहि चरन प्रहारा ।।
बूडि गयो काली कूद मांही । अबलों देखि परो

२९

सठ नाहीं । आषन काहू हंस वश काला । भयोक
हनकौ भक्षण काला । देखि नपस्यो हंसजब ना
हीं । तब हरि आय बैठे रथमाहीं । देवन मदिन दुं
दुभी दीनी । वर्षि प्रसून जैति धुनि कीनी । हन्यो
हंस हरि दीन सनेहू । रह्यो डिरिंब सेसहनि पहू ॥
भ्राता मरन विलोकि नहांहीं । भयो विकल डिंभक
मन माहीं । हलिकहं प्रबल देखि पुनि भागी ॥
भागि चल्यो तजि जान अभागी । डुस्योसि जाय हं

१२
भं
१८८

188

स थल जाहीं । हृदि परो डिंभक डुत नाहीं । दौरे
नहि पाछिल वलरामा । काली दह डुत विक्रम
थामा । नव डिंभक निज अग्रज काहीं । खोजन ल
गो जमन जलमाहीं । कहुं बूडत निक मत अकु
लावा । हंसवीर निज नाहिन पावा । राम निराशु
य नाह निहारी । हनहिं नवीरन धरम विचारी ।
नव डिंभक हरि काहिं प्रकारा । अरे नेद सत भ्रा
न हमारा । कहांदिखाय देहु कत नाहीं । नातो

इनतें वेग नसकाई्री । मैजानो सब सक्ति नसारी ।
अबलन ग्रह हेदावन चारी । दोहा । इक्कड़ जमना
नैनकन कह्यो कुल सब काय । पह्यो नोर अग्रज
जहां सोसव देहि बताय । ३५ । टीका । सब नहो
काली डवर मै जाय कर भगवानने उछल करके
जोरसे तिसको चरनका प्रहार जोदिया तो डुष्ट न
होंही डुब कर मरगाया अबनक कहीं दोख नहीं
पडा कोई कहना कि ऐस कालके वशहो गया ओैर

२२
भं
१८४

184

कोई कहता कि सर्पने भक्षण करलिया जब नहीं दे
स देखे नहीं पड़ा तब जड़नाथ आयकर अपने रथ
पर चढ़ बैठने भये तिस समय देवतागण आनंद से
आकाशमें दुंदभी बजाने लगे और भगवान पर वे
गम्भूमिकामें फूलोंकी बरषा करकर जैजै शबद
को उच्चारण करने भये तब संसारमें जहां तहां
यह खबर घरनहीं फैलगई कि दीन बंधु भगवा
नने हंसको मार दियाहै डिंभकने जब भ्राताका मर

नासना तो अत्यंत व्याकुल होगया और हलधरजी को
प्रबल जानकर भयका मारा धीरज और रथको त्याग
कर भागचला जहां जाय करके हंस छुका था तहांही
तुरत डिंभकभी कूद पड़ता भया तब तिसके पीछे
ही महा पराक्रमी बलरामभी कालीदवमें कूद प
डते भये तहां डिंभक जमुनाके जलमें अपने भ्राता
को खोजने लगा कहीं डुबता कहीं निकसता है परंतु
अपने भ्राताको नहीं पावता है और बलरामजी तिस

१२
भ०
१९०

190

को शास्त्रसे रहित बोली हाथ देखकर हृदयमें सूरवीरों
का धर्म विचार करके नहीं मारतेहैं तब डिंभक हंस
भगवानको कहने लगा कि अरे नंदके बालक मेरा
भ्राता कहांहै दिखाय क्यों नहीं देता नहीं तो मैं तेरेको
अबी मार देऊंगा मैं तेरी सब बातकी भली प्रकार जानता
हूं तूं तो गौओंका गुरू वृंदावनमें विचरने वालाहै जिसका
वचन सुनकर भगवान मुसकावते हुये कहने लगे
कि मूढ जमुनामें क्यों नहीं पूछताहै जहांतेरा भ्रा

३२

ना जिस दशासे परा होगा सोवे आय कहि देवेगी ६५

चौपई । नव जमना सों छकन लागा । डिंभक परम शो

क रमणागा । हलि हसि भयो वदन अमवाना । हम्यो

तोर अग्रज मम भ्राता । कार छकसि जलतें मति ही

ना । डूब्यो सलिल परत नहिं चीना । सुनत रामम

ख वचन कठोरा । भयो विकलमति डिंभक भोरा ।

वेपु विनासन हृदय विचारी । लग्यो विलाप करत

जळ भारी । हाय आज मोहि परिहरि भ्राता । कहां

१२
भं
१९१

191

गवन कीन्यो सवदाना । प्रम इंभक मनविकल वसे ली । रोदन करत मग्न निज लखो विरहे भ्रात नहिं सको सहारी । जानि प्रवल वलराम खरारी । प्रैवत कारन जीह निज काहीं । वूडि मखो जमुना जल माहीं । न व देवन नभ हन्यो नगारा । वरषि सुमन जैजै तिउ चारा । रामहे निकरि चढे रथ आई । मिले परस्पर अनंदपाई । मदनक सैन सब लीन जिवाई । वारि ओर जैजै धुनि छाई । चपि सिपन वल हसम वहोरी ।

सात्यकि आदि सुभट सब जोरी । गिरि गोवर्धन आ
ने दबाये । कृपा सिंधु प्रनि सेतु न आये । निसि नि
बसे नहे सारंगपानी । भयो बिगत श्रम बिथा गिला
नी । बीर परस्पर हरष बढाये । सुमरि प्रभाव कृस्न
बल गाये । दोहा । करन कथन रिपु मद मथन रतन
बिन चौगान चाय । भये नैन नहिं नीदबस गयो रैन
निसराय ९९ । टीका । जब इस प्रकार भगवानने
कहा तब शोकसे व्याकुल भया हुआ डिंभक आपने

१२
म०
१५२

152

भ्राताका वृत्तांत जयंतासे पूछने लगा और ईहो हू
सकरके हलधरजी कहतेहैं किमूढ तेरे बडे भाई
को मेरे भ्राताने मारदियाहै रेअधम जलसे क्या पू
छताहैं सनमुखहुवा हुआनहीं देखपडता ऐसे
बलरामके मुखसे वचन सुनकर डिंभक जोहै सो
व्याकुल और बावरा होगया भ्राताका मरनादेख
कर परम विलाप करने लगा कहताहै कि हाय
वीर आजमेरेको तजकर तूकहां चला गयाहै ॥

३४

इस प्रकार डिंभक अत्यंत कलेशासे रोदन करता अप
ने मरनेको विचारताहै भ्राता का वियोग महाशान
होजाता तब महाप्रबल शत्रू बलरामजी को सिर
पर देखकर हाथोंसे अपनी जीभको खैंचकर जम
नाके जलमैं डूबकरके मरजाताभया जब डिंभक मर
णको प्राप्त होगया तब आकाशमैं देवताउनें फूलों
की वरषा करकर और जैजै उचारकर डुंदभीका शोर
मचायदिया और बलरामजी भी जमुनासे निकल

ऽऽ
भं
१९३

193

कर अपने रथपर आयबैठे और वडे आनंदसे पर
स्पर मिलते भये जितनी सेना रणमे मारी गई थी सब
जिवाय लई चारो पासे जैजै शबद छायत होगया
तिसते उपरान्त कृस्न परमात्मा और बलराम सात्य
की के सहित रथपर आरूढ होकर सब सूर वीरो
को साथ लियेहूये वडे आनंद पूर्वक गोवरधन
पर्वत मे आय प्रापत भये तहांदीन वेपूने सेनाके
सहित रात्रीको निवास किया रणका स्रम और

३५

सोच गिलानी जोथी सोसब दूरहोगई सबकोई अपने अपने मनमे पावन भया औरसूरवीर जोहैं सो संग्राम परस्पर रणमे राम दूल दोनो भ्राता का प्रभाव और शत्रु के मदमथन करनेकी चरचा करते करते राती भर ने नैंमे नींद नहीं लेते भये इसी प्रकार सबको हरष और उतसाहमै जागते जागतेही प्रात काल होगया ।६६

चौपई ॥ हरिजे डिंभक हेंसविनासा । फैलिगयो संसृति चहुंपासा । गोप गोवरधन येन चरावन

१२
भं
२९७

194

आयेउ तेजमुन जल पावन । तिन हेंदावन जाय नरे
ना । जसुमति सन कहु सकल सुन्नता । कौन्दप
अगी प्रथम उज दोही । पै श्रुति समर सुभट जग
सोई । कालीदह जमुना जल माहीं । राम कृस जग
ग हन्यो नहोंही । तिनकर विजय पाय जगवीरा ।
वसे आय गोवरधन नीरा । गोपन ववन सुनन सु
खदाई । नंदजनक जुत जसुमति माई । वात्रिक
स्वाति हेद जिमि पाई । त्वपति प्रोमोद लेत अपि

३८

काई । जननि जनक तिमि आनंद छाये । राम कृ
ल दरसन हित धाये । कव देखव भरि नैनन जाई-
गवर स्याम मंजुल जग भाई । जीवन जीव प्राण
आधारे । सवकर सावद सवन हितकारे । छिन
वि जोग जिनकर नहिं सह औ । तिन विछुरे दिन
विपुल वितय औ । आज नैन फलरि जगवारे । सो
आये सरवस हमारे । [illegible]य नर आन नगर समुदा
इ । हनि आगमन कुसल वलराई । नेदजसो मति

१९
भं.
१९५

195

मन भ्रमरागे। गावने इतन यन धाम ल्यागे॥ आमनि
भनन परस्पर परी। हमहूं आज इन नैनन हेरी॥
दोहा॥ गौर स्याम सडु माधुरी मूरति जुगल किशो
र। हमन को दिखवि मन मथन हुज वैनन चित
चोर ९०। टीका। नव भगवानकी जै और हंस डिं
भक का मरना संसार मै चारो ओर फैलगया गोप
जो हैं सो गौग्रन के चराने और जमुना मै जल पियाने
के वास्ते गोवर्धन मै आये हुयेथे तिन्होंने तुरत ही

वृंदावनमैं जायकर जसोथा माईमे सब वृत्तान्त क

हि सुनाया कि कोई राजे महा पापी और अधम ब्रा

ह्मण द्रोही रणमैं बड़ेवीर थे वह्य सो कालीकी उद

रमै राम कृष्ण दोनो भ्राताने मारदियेहैं तिनको स

ब सैनाके सहित जीतकर आज गोवर्धन गिरीपर

बड़े आनंद पूर्वक उतरे हूयेहैं इसप्रकार गोपोंके

वचन सुनकर नंदपिता और जसोधामाई जैसे चाति

क अधीन पपीहा स्वांती बूंदको पायकर आनंदमै।

१२
भा.
१९६

196

अघाय जाताहै और नृपतीको आपन होताहै तैसेंही
सबैमे मगन होकर तिन अपने बालकोंके दरस
नकी अभिलाषासे ततकालहीं धावते भये और म
नमे कहते जातेहैं कि सर्व लोकोंके सुखदाता ह
मारे जीवन और प्राण आधार गौर स्याम दोनो भ्रा
ता जोहैं सो कबनेत्र भरकर देखेंगे हम तिनका छि
नभरभी विजोग नहीं सहार सकतेथे तिनके वि
छुडे अब बहुत दिन बीत होगयेहैं यथ्याभागकि

आजसो हमारे सर्वस्व और नेत्रोंकी पुतली दोनो बाल
क आय गयेहैं इसी प्रकार नगरके सब और नर नारी
भी राम और घन स्यामका आगमन सुनकर नंद ज
सोधाके साथही अपना धन धाम बिसार कर चलप
डते भये नवस्त्रीगण परस्पर कहतीहैं किहेसखि
आजहम ब्रजकी स्त्रीओंके मनको मोहन हारे और
कोटि कामदेवकी छबीको लजादेने वाले वडे मनो
हर और माधुरी मूरती गौर स्याम दोनो भ्राता जो

१२
भं
१९७

197

हैं सो नेत्र भर भर कर देखैंगी ६०। चौपई। गोपी
ग्वाल बाल समदाई। खनत अगामन श्रवण जड
राई। चले जात गोवर्धन काहीं। हरि दरसन ला
लस मन माहीं। ब्रज वासी जन सकल सुखारी॥
तरुण वृद्ध बालक नर नारी। भेट देन नंद नंदन का
हीं। हरष पूरि पग्य दौरत जाहीं। पथि कन सो
सबैं हरषाई। नमदेव कहे ऊवर कन्हाई। हरि
दामन लाल सो चनेरी॥ जुगा सम इक इक

छिन बिन परी। कौ नवनीत लिये करमाहीं। हमहुं
देव नंद नंदन काहीं। कौ दधिलिये कहन हम जाई
आजलाल कहंदेव खवाई। चीनव हमहुं कुल यों
नाहीं। बनी भेट वड़ दिवमनमाहीं। हनियन स्या
म विभो वडपायो। नवल नाम जड नाम्यधरायो।
हमहुं प्रथम देखेव अब आई। नंदलालकहं ओंक
उलाई। हमव वदन लेव वलि हारी। महो गिरहेड
खे देवनिहारी। ब्रजवासी भाखन हरखाई। नंद

९८
भं
१९८

198

लालकन्है बरबस ल्याई । हम जैतै अति दावा बन माहीं·
अवनो जान देव हम नाहीं । ऐसै संगाकर सखा खिला
री । बारबारते करहन उचारी । भये अपनो नहिं क
छु खोरी । हम निज दाव लेब बरजोरी ॥ दोहा ॥
जद्यपि जीते योसबड बिछुरे कमलदगारि । तद्यपि
मिले पर लेब हम अपनो दाव संभारि ॥९८॥ टीका
फिर सब गोपी ग्वाल भी भगवान का आवना सुन
कर दरसन की लालसा से सब गोवर्धन कौ दौड़े चले

जाते हैं और ब्रजवासी लोग सब ह्वावी भये हुये नंद

नंदन को भेंट देने के लिये एक तें एक आगे धावता है

और पथिक जो रस्ते चलने [illegible] वाले हैं तिन सों

पूछते हैं कि भैया तुम ने कहीं कुंवर कन्हैया जी देखे

हैं सब किसी को नंदलाल महाराज के दर्शन की अ

भिलाषा है तिन को एक एक पल युगसमान ब

तीत होता है किसी ने नवनीत जो माखन है सो लि

या हुआ है और किसी ने दधी लिया हुआ है कहते हैं

कि हम लालजीको अपने हाथोंमें खेलावैंगे फिर कहू
नेहैं कि कन्हैया हमको पहिचानेगे कि नहीं तिनसों
बहुनेही दिनोके पीछे भेट भईहै अब सुनतेहैं कि
स्यामने बहुत विभौ और वडाई पाईहै अपना नवीन
नाम जदुनाथ धरायाहै परन्तु हम निरसंक हो क
र नंदलालजीसे भुजा भर भर प्रथमहीं भेटेंगे औ
र सब तुम हम कर बलिहार जावैंगे तब हमारा
विरह विषाद सब मिट जावेगा ब्रजवासी कहते

हैं कि अब नंदलाल महाराजको त्याग कर हमजाते फि
र ब्रज वनी को कवी नहीं जाने देवेंगे औरजोजो ला
लजी महाराजके साथके खेलने वाले सखाथे सो सव
वार वार कहते हैं भैया क्या भयाजो नंदलाल महा
प्रतापी होगया है और यद्यपि विछडे को बहुतही दि
न भये हैं तथापि हमको मिले पर अपना दाउ जोरा
वरीसे भी लेलेवेंगे ६८ । चौपई । हम हम गोपिका
सयानी । गावनत करत परस्परवानी । जेब्रज क

१२
भं
२००

२००

रत रह्यो नजि खोरी । सुपि कैहैं दधि माखन चोरी । बाल चरित का सुमरण रहेऊ" अवतो भूप नेद सुत भयेऊ । रही गोपिका जे हरि प्यारी । ते प्रेम कहत नै न जल ढारी । आज लखब हम प्राण प्यारे । जो हू ज बासिन सुरति विसारी । लै जिय दैदु खे गयो कन्हा ई । ऊवरी के कर रह्यो बिकाई । लेव वैर सगरो गहि साँसे । जो दै दगा गयो ह्ज बाँसे । सुनि यत किये वि विय उतसाहू । नेदलाल कल नवल विवाहू । श्री व

ऊं रंग रंगे जड़ताई । दीन हमारे सब मनि विसराई । ग्रसह
ज वासनि हृदय ऊलासी । चली जात प्रभु दरसन प्या
सी । राखि बीच जसमति नंदकाही । ब्रजवासी बड़े
किन पथजाही । आये जब गोवर्धन नेरे । जड़ मैना
नैनन नवहेरे । दोहा । हृतन हरि सो जाय ड़ुत भने
मुदित मरड़ वैन । ब्रजवासी सबमेरे सकल प्रभु दरस
न लव लैन । आये नर जीय सकल जत नंदजसो या
माई । हरखे हृतन कथन ग्रस सुनत हुलस बलराई

१२
भं
२०१

701

६५। टीका। तब बूढ़ बूढ़ बडी स्यानी गोपिका जो थी
सो जाती जाती परस्पर कहती हैं कि हे सखी जो नंद
लाल लज्जा को त्यागकर दधिमाखन की चोरी और
बाल चरित्र करते रहे हैं सो तिनका कहा सुमरणा र
हा होगा अब तो नंद कुमार भूप होय गये हैं और जो
भगवान की प्यारी गोपी थीं सो नेत्रों से जल ढार क
र कहती हैं कि जिस प्राण प्यारे ने ब्रजवासियों की
खरती विसारी हुई थी तिसको हम आज जायकर

देखोंगी और संसारमें नेत्रोंका लाभ लेऊंगी परन्तु दे
खो इह कन्हैया कैसा निरदयी है जो हमारा चित हरकर
और महा दुख देकर आप कुबरीके हाथ जाय बिकानो
है इहजो जिसने हमारे साथ दगा किया है तिसको
हम पकडकर बैर लेवेंगी और कहना है कि लाल
जीने बडे उत्साहसे बहुत विवाह किये हैं अबतो और
ही रंगोंमे रंगे हुये हैं हमारी सुरती कहां रहनीथी इ
सप्रकार ब्रजबासनी नंद जसोदाके बीचमें रोवे हुये

१२
भं
२०२

२०२

बडे उतसाहसे चली जाती हैं सो जब गोवरधन के निक
ट आयगये तब जादवों की सैनाने देखकर भगवान
से जायकर खबर जणाय दई कि हे दीनानाथ नमा
रे ब्रजवासी जो हैं नंद और जसोधा माई के सहित स
बही प्रकष दरसन की लालसासे चले आवते हैं
तब भगवान बलरामजी के सहित ब्रजवासियों
का आगमन सुनकर बडे हरषको प्राप्त भये ६१
चौपाई । जैसे जहं बैठे दउभाई । तैसे तहे धाये थ

नवाई । दलमैं मच्यो शोरवडं भोरा । गावने कहुं वह
देव किशोरा । सात्यकि उद्धव आदि सवाही । धाव
त नहिं पावन प्रभु काही । छत्र चमर व्यंजन कर धाइ
जहं तहं चले जात परिवारू । नंद लाल कर खोज नैपै
ही । चहुं कित फिरत चकत चित थैहीं । खरभर प
यो सकल दल माहीं । धाये कौतुक देखन काहीं ।
गोप समाज जसोमति नेहू । जव समीप आये जव गे
हू । नव दृग देखि विकल नरनारी । लाल लाल

१२
भं
२-३
703

सखे सखब उचारी । बाय बत्स जनु धेनु लुभाई । ली
न्यो श्रेक उठाय कन्हाई । चूमि बदन गहि हृदय जुडा
यो । मानहुं रंक देव द्रुम पायो । कुसम परहिं धुनि धुनि
पट माता । ठाढि हरष लोम सब गाता । आनंद ब
स निकसत नहिं बाता । बस्यो जात जल दृग जल
जाता । दोहा । जसुमति पी छवि बदन सुड लाल
न बचन बखान । आज मिले जगभाग बस मोरे जीव
न प्रान ७०। टीका । नव सब ब्रजवासियों के सहि

८४

न नंद जसोधाको आवना सुनकर राम कृस दोनों भ्रा
ता जैसे वैठेथे तैसेही उठकर आगे मिलनेको धाय
चले जाने भये दलमें शोर मचगया कि वसुदेव कु
मार भगवान कहांगये सात्यकी उद्धव इनतें लेक
र सवधाये चले जाते हैं परन्तु भगवानको नहीं
पावते हैं और भृत सेवक भी छत्र चमर पंखा लये
हुये पीछे भागे जाते हैं तिनको भी कहीं खोज न
हीं मिलता संपूर्ण दलमें खरभर शब्द मचगया

१२
मं
२०४

204

सबकोई कौतक देखवेनेको धाय चला जब दोनो आता
गोप समाज और नंद जसोधा माई के निकट जाय पहुं
चे तब माता नेत्रोंसे देखकर व्याकुल भई हुई लाल ला
ल करिकर जैसे बछडेको गाई प्यारसे हुंकार शबद
करती धावती है तैसे धायकर गोदमें उठाय लेती भई
फिर बारबार मुख चूमकर हृदयमें लगाई लेती भई
मानो रंक निरधनने कलप वृक्ष पाया है हर्षभरा
वान जोहें सो हरषसे प्रफुलित भये हुये बारबार माता

४६

के चरनो पर सीस धरते हैं और ऐसे आनंद के वश होग

ये जो मुखसे बचन भी नहीं निकसता नेत्रों से जल चला

जाता है तब जसोधा माई बड़े लालन अर्थात लाड औ

र प्यार के बचन बोल बोल मुख पोंछती और कहती

है कि आज भागों के वश से मेरे जीवन प्राण दोनो

भ्राता जो हैं सो आय मिले हैं ७० ॥ चौपई । लाल

दिवस बहु कहां बिताये । बिछुल दिनन पाछिल

हुज आये । तो लो परे चरन बलराई । हरषि मात

रा॰
भा॰
२०५

205

लिये ग्रेंक उठाई । चूमति वदन हरष रस बोरी । देत
असीस जियो जगजोरी । नंद चरन पुनि परे मुरारी
मिल्यो उठाय छाति दृग वारी । हुंढन सिर चूमत
भाव स्यामै । मोहि सम करहु नन यत्न यत्नामै । राम
जू नंद चरन पुनि वंदे । मिले नंद उर सरि अनंदे ।
राम स्याम कहुं पुनि हरषाई । लीन नंद निज ग्रे
क उठाई । नहि छिन कर हावे आनंद भारी । एक
वदन किमि सकहुं उचारी । हुह हुह सयारे हृज

गोपा । राम स्याम देखेन बिन चोपा । आय आय व
न धीति बनेरी । करहीं निछावर हरि बलकेरी ।
प्रेमाश्रुजल दृग वारि बहाये । वार वार मिलहीं उर
लाये । राम कृस्न सब गोपिन संगा । भेटहिं भरि
भरि भुजा उमंगा । दोहा । बृंदावन करे धनि वेदिश
भ लीन्यो स्वभग असीस । धनि आनंद रनरस्हजैन
त नव द्वारिका अधीस ७८ । टीका । जसोधा मा
ता पूछती है कि रे लाल इतने दिन कहां विताये

१२
भ॰
२॰६
206

बहुत॰ फिर के पीछे हजमे आयेहें नव बलरामजोहैं
सो बरनोपर सीस नावते भये जसोधामाईने उठा
य कर हृदयमे लगायलिये और हरष रससे भीगी
हुई बारबार माथ चूमकर आसीसा देने लगी किहे
पुत्र तुमारी दोनो भाईयोंकी जोडी जुगजुगजियो
तिसते उपरान्त भगवान नंदके चरनोमे लागते भ
ये सो नेत्रोंमे हरष जल भरकर और उठायकर हृदय
से लगायलेता भया फिर सिरकों संगकर और

मखको चूमकर कहताहै कि आजमेरे समान संसा
रमें कोई धन्य नहींहै तब बलरामभी चरनोपर
सीस नावते भये तब नंदने रामस्याम दोनो भ्राता
को बडे प्रसन्न होकर गोदमें लेलिया तिस समय
का सुखजोहै सोकछु कहा नहींजाता फिर हृष्ट
हृष्ट सब गोप किजिनके हृदयमें रामस्याम दोनो
भ्राताकेदर्शनकी अत्यंत अभिलाषाहै सो आयआ
य करके घन स्याम और बलराम के सिरपर निछा

१२
भं
२.७

वर अर्थात बोरड़े करतेहैं । औरस्थ्रजा भर भर भेटतेहैं
नव राम स्याम दोनो भ्राताभी तिन गोपोंकेसाथ
बड़े आनंद पूर्वक मिलतेहैं तिनमे वृद्ध वृद्धजोहैं सोप्र
सन्न होकर भगवानको आसीसा देतेहैं किहे हा
रिकाधीस तुम सर्व काल आनंद और सुखमै हरेभ
रे रहो ।७। चौपई । मिले सखेन सन स्याम बहो
री । कहिनजाय कछु प्रीति अघोरी । नेभाषतन सु
न गहिन कन्हाई । हज सखि भूलिगई हजराई ।

हरिकहु जवहिं हृजविलगावे । तवहिं कवहूं न छिन
सुख पावे । इह इह गोपी जरि अैयें । राम स्याम कर
लेत वलैयां । चूमत वदन निहारत रूपा । तोरत ति
ण लषि रूप अनूपा । वरषहिं अंषिन आनंद आसू-
लेहिं अंकभर रमानिवासू । हरिपैं हरषि रतन गण
वारत । जसुमति लाल वदन उच्चारत । तुम विन हु
मऊं लालित नंदवाला । इह जगजीवन भयो जंजा
ला । मिलहिं सषी हरि प्राणप्यारी । जेअभिहित

रा
भ
२०८

यन याम विसारी। निज निज हृदय प्रीति जगाई। करत कराह वदन मुसकाई। काहू परस्पर करत वि
चारा। मिल्यो बहुत दिवसन पिय प्यारा। अब कछु लिया छूटन नहीं पावैं। हमकहं ब्रज वसि रसिक
रिझावैं। कोऊ सखि करि हरि करकाहीं। कहत कान्ह कमचीनत नाहीं। रामश्याम ब्रजवासिन के
रो। भयो समागम मोद घनेरो। यमयमुना जडु वे
सि बखाने। प्रभुकर रीति देखि बिसमाने। परहिं

५

बरन सब नसमति नेहू। जड समाज उर हरि सनेहू

दोहा॥ जस जानै पितु मातु कहे कृष्णदेव बलराय। तसमानैं सनमानजन जड वंसी समुदाय। हरिबल मन जिमि करहिं कल नंद जसो मति प्रीति। तिमि जड वंसिन मन रुचिर करहिं प्रेमरत रीति।७२। टीका॥ फिर भगवान जिस प्रकार अपने सखोंको मिलेहैं सो प्रीती कुछ कथन नहीं कीजाती वे जड नाथका हाथ पकडकर कहतेहैं कि हे कृपानिधान

१२
मं
२-९

ब्रजकी सखी भली बिसर गई तब दीन वेष करहते हैं
कि हे सखा प्यारे जबसे मैने ब्रजको त्यागा है तबसे
कबी छिन मात्रभी सुख नहीं पाया फिर ढूढ ढूढ
जोहैं सो आयकर राम स्याम की बलैयां लेती औ
र मुख चूमती हैं नेत्रोंसे प्रेमके आंसू ढोरती और
रूपकी छवी पर त्रिण तोरती हैं कन्हैयाको बार बा
र गोदमें धारती और जसुमति लाल कहिकर सिर
पर रतन न्योछावर करती हैं फिर कहती हैं कि हे नंद

ऊमार नमारे विना हमको जगत मैं जीवना जंजाल
ही होरहाथा तिसतें उपरान्त भगवानकी सोप्राण
प्यारी सखी मिलनी भई कि जिनको महा राजके ए
मसैं धन धामकी ह्यथी नहीं है औैर आयकर आप
नी अपनी एकैकी श्रीनीको जणावनी और अनेक
कटाक्ष भावकर कर मसका वनी हैं कोई परस्पर
विचार करती हैं कि हमको प्राण प्यारा बहुत दिनों
के पीछे मिला है अब छलिया जाने नहीं पावे इह

१२
भं
२१०

रसिक सिरो मणी जोहैं सो हमको ह्रजमैंहीं वसक
र दिखावैं और कोई सखी नंदलाल जीका हाथ
हाथसे ऊनक कर कहती है कयौं जी हमको वीन
ने नहीं हो इस प्रकार रामस्याम और ह्रजवासियौ
का परम आनंदके देनेवाला समागम होताभया
नव जडवेंसी जोहैं सो भगवानके हसने वोलने मि
लनेकीरीती देखकर धन्य धन्य कहते हूये वडे आ
चरजको प्रापत होगये फिर सव जडवेंसी आनंद

मे नंदजसोधाके चरनोपर दंड प्रणाम करते भये तिन

कोजै मे कृष्ण और बलराम माता पिता जानतेथे तै

सेंही सब मानसे सब जंतु वेसीभी मानते भये और

नंदजसोधाभी जैसे राम और घनस्याम से प्रीती प्या

र करतेथे तैसेंही सब जंतु वे सियोंसे सनेह करते भ

ये ।२२। चौपाई। तब घनस्याम राम करजोरी। भा

खि मृगिरा नेप्र रसबोरी। हमरे सिवव वलजु पितु

माता। नंदजसो मानि सुनि सुभवाता। गोप गोपि

२२
भं
२११

कासेंग सुहाई । औरउ जदुवंसी समुदाई । निज निज हरष प्रफुल्लित काये । सकल सुबंद सुभ सिंधु सभा ये । परम दिव्य कनकासन माहीं । हरि बल नंद जसो मति काहीं । बैठायो सादिर गहिपाना । जदु बंसिन अवरज मन माना । जब जसुमति बलरामस याम । हरषि गोद लीन्यो अभिरामै । पौंछति मुख बहुमति बहुबारा । कहत अवै नहिं कियो अहारा । न वदधि उय नव नीत खवैया । मैं छिन छिन सुनत

पु३

सुनि दैवैया । कबहुं मोर सुरति बिसराई । कहत रहे मा
ई सब माई । एक बडो अचरज जियमोही । सकुचेमे
उरपत सुत तोही । बडे बडे नृपदैतन कांही । मारे
तात सभो सकति मांही । दोहा । आयुध विद्या भटन
गुण कब सीख्यो सुत पञ्च । कस जीत्यो अरिसमर ट
छ मोरे विश्चल संदेहु ५२ । टीका । नव नंद जसोदा
को घनस्याम और राम हाथ जोडकर नेम्रवानीसे क
हने लगे कि हे माता पिता अब हमारे घरको चलो

१२
भ॰
२१२

इसप्रकार नंद जसोधा मानकर सब गोप गोपिका
और जदुबंसियोंके सहित आनंदसे जदुनाथके भ
वनोंमै चले आये नब राम स्यामने सबोंके दिवस
यासन पर नंद जसोधांको बडे सनमानसे विदाय दि
या जदु बंसी जोहैं सोदेखकर आवरजको आपनहोगा
ये नब जसोधां माईने बडे हरषसे राम स्यामको गो
दमै लेलिया फिर गले पोछ कर और बारबार हंस
कर कहती है कि हे पुत्र अबी अहार नहीं कियाहै

नमने हय दथी और मारवेन के बैदेयाध्ये मै छिन

छिन देती रहतीथी अब हे पुत्र नमने मेरी सुरती वि

सार दईहै जानाजनो मैया मैया कहतेहुये माधन के

लालचसे पीछे पीछे लागे फिरतेथे हे पुत्र एक मेरे

हृदयमै बडा आचरज आवता है सो शंका करके ए

कु नहीं सकती हूं मैसुना कि वडे वडे भारी राजा

और दैत्यों को नमने रणमे मार कर जम धामको

पठाय दियाहै सोहेपुत्र ऐसे प्रबल शत्रु नमने कि

२२
भं
२१३

स प्रकारजीने इह शास्त्रविद्या और रण कहो पाये और किससे करवसीखे इस प्रश्नतका मेरे हृदय मे बडा संशयहै ।७३। चौपाई । दानव भूप भये कर भारे । हमडुं अंग कोमल सुकमारे । उनस न समर कियो कसरारी । इहमानति अबरज महतारी । राज काज कस करहु कन्हाई । छूटि न ब्रजके तान लरिकाई । जो हम करत रहे त जि खोरी । विसरिगई सुधि माखन चोरी । हूब

गनाई लाल खावेनैं । देखि परत इन नैननमैं ।का
गोरस दधि माखन माखा । मै जान्यौं कछु नाहिन
खावा । तजि विलंब अब लेहु कन्हाई । मै व्यंजन बहु
बमहिन त्याई । भोजन करहु लाल हरिकाला । वै
ठि संग सब बाल गुपाला । अस कहि जसुमति वि
विध प्रकारू । दधि माखन मिसरी रसवारू । कद
ली पदम पल्लव दोना । भरि भरि आन धरो बहु
कोना । वैठे बीच राम घन स्यामा । ग्वाल बाल व

१२
भं
२१८

२१४

हे बोर निलामा। हरिबल कहे जसुमति सुखे सा
नी। लागी पाक करावन पानी। दोहा। बिलगा बि
लगा एकुनि वदन सुचि व्यंजन रस स्वाद। भनत
मदिन बलराम हरि भरि भरि उर अहलाद। ७४
टीका। फिर जसुमति कहती है कि हे पुत्र सोतो
राजे और दानव महा भयंकर बडे कठोर थे और तु
म अनसे सुनम कोमल अंगो वाले तिनके साथ
कैसे रणमे जुद्धकिया इहमे बडा आश्चर्ज मानती हूं

और इहु भी करो कि हे पुत्र तुम राजकाज कैसे करने हो
अबी तो तुमारी लड़काई छूटी ही नहीं जानो तो जो तु
म ढीठ होकर दधी माखन की चोरी करने रहे सो सबही
तुमको विसर गई है और हे पुत्र मेरे नेत्रों मे तुमतो दु
बले से देख पड़ने हो क्या कछु मिसरी माखन मावा न
ही खाने रहे हो अब लाल विलंब को त्याग करके अ
पने सब ग्वाल बालों के सहित भोजन पावो मै तुमारे
वास्ते अनेक व्यंजन लै आई हूं ऐसे कहिकर जसोधा माई

दूध दधी माखन मिसरी इत्यादि सब पदार्थ केले
और कमल पत्रोंके दूनोंमे भरभर कर आगे धरदेती
भई तब नंदलालजी सब ग्वाल बालोंके बीच भोज
न करने को बैठ जाते भये माता जसोधां जोहै सो प्री
तीपूर्वक राम स्यामको अपने हाथोंसे जिमावती औ
र व्यंजनोका स्वाद पूछती तब राम और घनस्यामदो
नोभ्राता आनंदसे सबरसोंका भिन्न भिन्न स्वाद क
हि सुनावतेहैं ॥ ७४ ॥ चौपई ॥ जबतैं हम निज हू

ज तजि आये । तबतें अस भोजन नहिं पाये । मा
त कहहु मोहि बदन उघारी । ऐहिं सकल हृज कु
मल हमारी । सुनि शीये बचन जसोमति कहुवो
तम बिन कहति विकल हृज जनवो । हरि कहु
मै जननी न बदाया ॥ जोनो महां प्रबल रिपुरा
या ॥ पैउ रवेही उरवमै दिनबीते । कबडेनका
रजनै हम रीते । हृज सम सुख त्रिभुवन नहिं
जाना । जदपि शाक सत विभो समाना । सवाल

रा.
भ.
२२६

216

बाल नव बदन उचरहीं । नव अनेन वलअन नप
रहीं । हम देखे हजमें बडवारा । किये अनेक
अमर संघारा । भव भसकाय नेद अनि कारा
किये स्याम बड रुचिर विचारा । बसड मदन हा
रावति माही । सषा महद नव संग सवाही ॥
अवनी मनियत बडे बडाई । कोटिदई लालन
लरिकाई । बार बार मत विनय हमारी । लाखि
निज जठर नात महनारी । दोहा अवनतजड हज

५८

काहिं नम ब्रज प्यारे ब्रजराऊ । आये हमरे भागवस ब्र
ज वेसिन ग्वालराऊ ७५ टीका ॥ भगवान कहते हैं
कि हे माता जब तें हमने ब्रज को त्यागा है तब तें ऐसे
भोजन कहीं नहीं पाये अब हे मैया मेरे को कहो जो तु
मारी ब्रज सब खाती मोहै ऐसे सुनकर जसोदा माई
कहने लगी कि हे पुत्र तुम्हारे विना सब ब्रज के लोग
व्याकुल रहैं तब ग्वाल कहने लगे कि मैया मैने तुमारी
कृपा प्रसाद से यद्यपि रणों में बडे बडे प्रबल शत्रुओं को

ए.
भ.
२२७

217

जीताहै तद्यपि उव देखनेकोंही दिन वतीत भयेहैं कार
जसे कवी हूटने नहीं पाया मै जानताहूं कि इसके समा
न स्वव तीन लोकमे भी नहींहै और यद्यपि सो इंद्रका
विलासभी होवे तोभी इसके आगे एक नहींहै तवयवा
ल वाल कहतेहैं किहे अनंत भगवान तेरे वलका क्र
क अंत नहीं आवताहै हमने इसमे वहुत वार देखा
हूआहै भगवान तमने अनेक असुरोंका संहार कि
याहै फिर वेदजोहै सो हस करके कहने लगा किहे

नाहै स्याम तुमने वहुत विवाह कियेहैं और सव सषा
के सहित सुख एवंक द्वारिकामें वसनेहो वडाईभीव
डी थापन करी और लडकाई चपलताई सव छोड दईहै
अव हेप्रभु वारवार हमारी विनतीहै कि हमको छडजा
नकर हे व्रज राज हे व्रजके प्यारे और व्रज वासियोंके
सुखदाता व्रजको मांगकर कहीं नहीं जावो हमारे
अहो भाग्यहैं जो तुम दोनो भ्राताने फिर आयकर दर
सन दियाहै ७५ ॥ चौपई ॥ नगर वलव हम संग

१२
मे·
२२८

218

सिधारी। राम बिन जीवन वृथा खरारी। कह्यो कान्ह
तव जनक किशोरा। कारक दमन सकल खलघोरा·
पै मम हृदय परम संदेहू। जो तव संग चलन पिय क
हेहू। मैनो निज तव हृदय बसैया। कोकर संग चल
नि पिय मैया। खनउ मान संदेह बिसराई। लखेउ स
दा मोहि संग सहाई। गिरा गरुड प्रभु कृस उचारी॥
खनन नेद जल मति महमारी। भये मगण खग सिय
श्रुणारा। नैनन बहति प्रेम जलधारा। प्रभु प्रकार कीरि

पाक कन्हाई । वैठे नंद ग्रेक कल जाई । हरि रवना ग्र
व चरित निहारी । भनत परस्पर जादव सारी । धम नं
द जस भाजन भाई । धम धन्य जग जस मनि माई । को
उ रलम सेभारन ताके । तीन भवन नायक स्तन जाके
सन्य सनेरु कुल परकीमो । जीवन सकत विदन इह
वीमो । दोहा । नवनंद नंदन नंदसों ग्रानंद ववन उ
चारि । कहो ग्रहे ब्रजमै कुसल पित सव धेन हमारि
२६ ॥ टीका ॥ फिर नंद कहते हैं कि जो लाल तुम ब्रज

मै नहीं रहोगे तो हमभी हमारे संगही जावेंगे तब भग
वान कहने लगे कि हे पिता हमारा विछोड़ा जो है सो मे
रे सरव सुखोंके नास करने वाला है परंतु मै बड़ा आ
स्चर्ज मानता हूं कि जो तुम संग चलने को कहते हो
मै तो सदैव तुम्हारे हृदयमै निवास करता हूं तुम कि
सके साथ चलने को कहते हो हे पिता इस भ्रमको
दूर करके मेरेको सदा अपने अंग संगही जानते र
हो इसप्रकार भगवानकी गूढ वानी सुनकर नंद

219

६१

जसोधा दोनो हरष हुयी समुद्र मै मगन होकर नेत्रों से
प्रेम जल का प्रवाह बहावने भये तब कृस्न भगवान
भोजन पायकर बडे आनंद से नंद की गोद मै जाय बै
ठे ऐसे जदुनाथ की लीला देखकर सब जादव जो हैं
सो परस्पर कहने लगे कि भाई धन्य है व्रजस का भाग
न नंद और धन्य है जगत मै जसोधा माई इनको संसार
मै क्या दुरलभ है कि जिनके तीन लोक के नायक कृ
स्न परमात्मा पुत्र हैं इन्होंने भगवान पर सत्य सनेह

पालाहै जगतमै इनकोही जीवन मक्त जानो तिसतेउ
परांत नंदलालजी महाराज वडे आनंद से नंदको पूछ
ने लगे किहे पिता ध्रुव इह सुनावो कि व्रजमै हमारीगौ
अनकोतो कुसलहै अर्थात सब राजी तोहैं ९८ चौपाई
वनसि वत्स सव धेहि सुखारी। जिनमह छिन छिन
सुरति हमारी। कहहु कुसल व्रज जेजन नाना। वि
सरत जो नहमडे सुखदाता॥ वाग तडाग सकल फूल
फलवारी। कुसल वारि वरभानु कुमारी। कदलि क

देव ग्रेब कल छाया ॥ जहां रहत मनमोर लभाया ।
केलिस्थान आन हृज जनकी । देहु ऊमल मोहि ज
नक सवनकी । सुनत नेंद कान्हर असवानी । बोले
तुमि वदन साव मानी । हृजकर ऊमल कवन हम
कहिहैं । जहां स्याम इक समझे न रहिहैं । और ऊम
ल नीकी सवनाना । पैविजोग तब सह्यो नजाना ॥
सुननेमै वलराम सुधीरा । आये हरष भरि हगनीरा ·
नेंद गोद आनंद वधाई । वैठे मेंद मेंद मुसकाई ॥

६२

१२
भं०
२२१

221

कछुक काज बस भीये पिनाकी । गये हमारे सिवरहु
काकी । इहां नंद व्रजसे अनुरागे । जदुकुल कुसल
सु पूछन लागे । हल धर करहु कथन मोहि काही ।
रहहिं कुसल वसुदेव सदाही । सुनि विन भोज नृप जा
दव सारी । कहहु राम वल सकल उचारी । हसि
हसि कहि कल कृपा नमारी । ऐहि कुसल जादव
कुलसारी । इनै इकोन कोन कहै पाई । गोपी सक
ल हरष सरसाई । गवनी पुरि प्रेम द्रगवारी । परि

६३

बाधिन कीने गिरधारी। तिन कहूं देखि स्याम निजकीने
अथो बदन कछु नैनन जीने। तब बोली हसिकै हरि
प्यारी। अब कत मानिये लाज बिसारी। भली करी जो
करी कन्हाई। बीनी बात कौन सखि गाई। दोहा। अब
तो मन भाव कीजिये नैन नलिन नंदलाल। तमै नदी
नै दोष कछु बिधि गति अगम गोपाल। जो लिलार
बिधना लिष्यो होत मस फर जउपाय। राई घटै न तिल
बढै कीजै कोटि उपाय। तब कर सखि कान्हर तमै वि

555
91.
55

१२
भं
२२२
222

सर गई सगरीय । सब कर हरि बाखेन रहे ग्रव कछु री
ति नईय ७७ ॥ टीका ॥ फिर घनस्याम कहते हैं कि
हे पिता मेरे सो बछरी बछरे तो सब खावी हैं कि जिनमें
मेरी छिन छिन सुरती लगी रहती है और हे पिता ब्रज के
जेजन की भी कुसल कहो कि जो मेरे परम सुख दायक हैं
और भी बण त्रिण फूल फल वारी कदली कदंब ग्रंब इ
त्यादि सीतल छाया वाले ब्रछ कि जिनके बीच मेरा चि
त लुभाय मान रहता था और जमना का सुंदर निरमल

जल इनसब की ऊसल सुनावो कि अपने अपने सब आ
नेद हवैक नोहैं इस प्रकार नेदजोहै सो वन श्याम की
वानी सुनकर वडी प्रीतीसे मुख चूमकर कहने लगा
किहे श्याम जैसे एक तुमही नारहे तैसे हम सुजकी
क्या ऊसल कहैंगे हे प्राण प्यारे औरतो सब कुसल भ
लीहीहै परंतु एक तुम्हारा विजोग नहीं सहाजाताहै
इतनेमै वलराम जोहैं सो वडे आनंदसे मेद मेद हसका
वतेहूये आयकर नेदकी गोदमै वैठ जानभये और उ

553

मापती जो शिवजी हैं तिनके प्यारे रमापती भगवान
कछु काज विचार कर उठ करके दूसरे भवन को च
ले गये तब ईहां नंद बडे सनमान पूर्वक हलधरजी
से जदु कुल की कुसल पूछने लगे कि उग्र कहो वसु
देवतो राजी प्रसन्न रहते हैं और सब जादवों के सहित
राजा उग्रसेन सुखी आनंद हैं तब हली जो बलराम
सो हस करके कहने लगे कि हे पिता तुमारी कृपा से
से एसी जादवों में कुसल हीं हैं तब उन्हों कौन को एकां

न पायकर सब गोपी नेत्रोंसे प्रेमजल बहानी हुई आय
कर भगवानको परिवारन करलेनी भई अर्थात चारो
ओर होयगई तिनको देखकर घन श्याम सबके निका
य कर नेत्रोंको कछु लजीनेसे करलेने भये तब भगवा
नकी प्यारीजोहैं सो कहने लगी कि हे बिहारी लाल
अब क्यो लजावनेहो आपने जो करी सो भली करी
बीती बातोकी क्या चरचा चलावनीहै परन्तु हे महा
राज अब नेत्र उठायकर तो मनसबके देखो तमारा कु

१२
भं॰
२२८

224

कु दोष नहीं है विधाना की गती अगाय है जिसने जो म
स्तक में लिख दिया है सो यद्यपि कोटि उपाय भी करिये
तद्यपि नाराई प्रमाण घटता है ना तिल प्रमाण वढ स
क्ता है हे रसिक विहारी तब की सुधी तुमको सब विसर
गई है देखो अनकूल होकर सब की कैसी रुची राखने र
हनेथे अब तो जक्ष और ही नई रीती सी देख पडती है
७७॥ चौपाई ॥ जानि पवन सो हृदय विरागी। मानहुं
लगन आन कहुं लागी। चेवरी कचित रीत नमारी।

रहहु नवल नित वेलि बिहारी । तुम कहं दोष नहीं
कछु प्यारे । रहे प्रेम सही भाग हमारे । सदा रीत तुम
री मन भावन । मन सुख देखि प्रीति उपजावन । पी
ठ हिये पर श्रीमन केरे । बनहु स्याम नीके हम हेरे ॥
श्रवनो आलो राज कुमारी । बिसरि गई सुधि कान्ह
हमारी । जानि अहीर गवारिनि जोई । कब भावति सु
व कान्हर तोही । छल करि साखी स्याम बहुरंगी ।
गाये सकल ब्रजकर सावभंगी । जान समय भाखो

२२
भ
२२५
225

शह गाई । हम ऐसें ह्रजवेग पराई । सबी सोच जनिमा

नस करहो । हम तुमरे सब विधि अनुसरहो । सो अव

साव भये भल स्वामी । वने जाय औरन अनुगामी । ह

मरी खबिकस करहु पयारे । इह कुल छंद सदाशिव

मारे । दोहा । मिली एक कुवरी तुमें जहि सोख जिय

जु निहारि । तास कटाक्ष निरावबस हमरी सुरतिवि

सारि ७८ ॥ टीका ॥ फिर गोपी कहनीहैं कि हे नंद

लाल महाराज तुम हृदयसे विरागी देख पडते हो

मानो कहीं और ठौर लगन लगी हुई है तुम्हारे चितकी

रीती जो है सो भ्रमरे बन है नित्य नवी नहीं वेलियों के

लोभी बने रहते हो पर हे प्यारे तुमको कुछ दोष नहीं

है हमारे भाग्य ही ऐसे हैं तुमारी तो सदा ऐसी ही री

त रही किसन भाव देखकर प्रीती करनी और पीठ दि

येपर औरों के बन जाना हमने भली प्रकार देख लिये

हो अब तो कान्ह तुमने राजकन्या विवाही हैं हमारी

सुधी विसार दिये हो क्यों कि हम जाती की अहीर गवा

१२
भं
२२६
226

रनीहैं सो तुमको अब कैसे भावतीहो हे सखी इह बड़ूरे
गी स्याम जोहैं सो छल करके सर्व ब्रजका सुख भंगाक
र गयेहैं जाते समय सबको धीरज देगयेथे कि हम हू
जसे उतायलही आय जावेंगे तुमचिंता नहीं करनी ह
म तुमारे अब सारीहैं सो देखो सखी स्याम भले अनुसा
री बने जो तहां जाय कर औरोंके हाथही बिकाय गये
हमारी सुधी किसने लेनीथी इह छल छेद इनके तो
सदा तैंही चले आवतेहैं हम जानतीहो कि तुमको

६२

एक कुंवरी मालन मिलवाई है जिसका भाव देख देख तुम राती दिन जीवते हो तिसके कटाक्ष रूपी बाणों के घायल घनस्याम तुम हमारी सरनी कहां ले सके थे ७८

चौपई ॥ पै कुंवरी मन हमहूं लिलामा । जब तुव हमो नेह घनस्यामा ॥ तब पछ्नाय कह्यो हमजीके ॥ इहि परिणाम होहिं कवनीके । सदा एक रस स्याम न थैहीं । छल बल नवल करत नित ऐहीं । भयो सत्य सोऊ कथन हमारो । तजि कुंवरी द्वारिका सिधारो ।

१२
भं
२२८
227

तहाँ रह्यो इक समनी विवाही । कछु दिन ताकी पी
ति निवाही । नागर वरी श्रेष्ठ पटरानी । षोडस सह
स बहुरि मन मानी । प्रथमहि तैं विगरी जिनगौनी-
तिनकर कबहुँ न परत पतीनी । हमकहँ बारय
विरहैं बहाये । अब नाख कौन दिखावन आये
अति उपकार हँस नृप कीना । जहि मिस नमहेव
रन इन दीना । अबलौं गई न वेदल नाई । भली ति
हारी प्रीति कन्हाई । पै जो भयो गयो कछि काला-

अव सो विन डरवे जाहिं नटाला । तव दरसन डरलभ
जग लीने । हम इह नैन सफल निज कीने । दोहा ।
आन लाभ याते अधिक कछु जान्यो नहिं जाहि । इहि
लगि रहेसि प्राण इह प्राण नाथ नन माहिं ॥ ७४ टीका
गोपी कहती हैं कि हे घन श्याम जव हमने तमारा नि
स कुवरी से नेह सुना तव हम सवने पछताय करक
हा कि इसका फल शुभ नहीं होगा क्योंकि श्याम
सदा एक रस नहीं रहते हैं नित नवीन ही छलछंद

दिखावनेहैं सोहमारा कथन सत्यही होगया जोकृ
षजीको मायाकर द्वारिकाको चलेआये तहां रहना
कि रुक्मनी विवाही और कुछदिन तिसको पीनी
निवाही फिर और आठ रानीको वरकर तिसने उप
रान्त सोला हजारको अंगीकार करतेभये हेसखी
जिनकी प्रथमनेंही रीती विडी होतीहै तिनकी
कवी प्रतीत नहीं होती फिर कहतीहैं किहे घनश्या
म हजको विरहे रूपी समुद्रमे डबोयकर अबकोन

सव दिखावने आयहो हमारेपर हेमहाराजाने बडाउप
कार कियाहै कि जिसके नमित करके स्याम नमने
ईहो चरन पायेहैं अबतक वे चिलताई जोहै सोनहीं ग
ई प्रीतकीरीत भली निवाही पवन हेस्याम जोभया सो
भया कालनो वनीत होगया अब सोचनेसे दुःख नहु
आ नहीं होना इहनमाया दरसन जोहै सो संसारमेदु
लेभहै हम अपने नेत्र सफल कर लियेहैं इसनै अवि
क हमको औरकोई लाभनहींहै हे आणनाथ २६२२

मारे प्राणजोहैं सो शरीरमें केवल इसी नमित्त ठहरे हुयेथे नहीं तो चलेजाते ॥ ७४॥ चौपई ॥ अब निज कमल कहो गिरधारी ॥ वहे राम जन नमडं सबारी। जबतें नम नजि ब्रजचन स्यामा। जहें जहें विचरन रहे ललामा। नहे नहे रसिक सिरोमणिनीके ॥ पायो ब्रज सदृश सुखजीके। कहहु सत्य जियकी गिरधारी। यों ब्रजकर सुखदियो बिसारी। सुनि गोपिन अस वचन कन्हाई। बोले लजित मंदमुस

कयाई । सखी भाग सीया तुम मोहि काहीं । बिस
रीत मति सुरति पल नाहीं । काहु कहे कछु कार
ज हेनू । गवन कियो पितु मातन केनू । तुज वेत
न सदृश सखि मोही । त्रिभुवन भाग स्या नहिं
कोही । छिमहु छिमहु अपराध हमारा । तुवड
व देखि न जाहिं सहारा । तुम जो कही सखी सब
सांची । मोहि तें भयी करी सब कांची । तुम्हें दोष
नहिं दोष हमारे । चलन न जानि दाव सखि हारे ॥

मै
२३०
230

तुमहिं कौन विधि मैं समझाऊं । अपन किये पर जीये लजाऊं । दोहा । जो कछु कियो सो मै कियो दोष काहु कर नाहिं । उधि विरहे वारद तुमै गयो द्वारिका माहिं ८० ॥ टीका ॥ गोपी कहती हैं कि हे गिरधारी स्याम अब अपनी कुसल सुनावो जो बलराम के सहित सुखी नो रहे और इह भी कहो कि जब तें तुम ब्रजको त्यागकर जहां जहां विचरते रहे हो तहां तहां ब्रजके समान भली प्रकार सुख

पावते रहे कि नहीं अब हे जदुनाथ अपने हृदयकी स
म सत्य कहो कि अथवा ब्रजका सब विसार दिया है
आया इसप्रकार गोपियों का वचन सुनकर भगवान
लज्जा से मंद मंद मुसकाय करके कहने लगे कि हे स
खी तुम तो मेरेको प्राणों से प्यारी हो तुमारी सुरती
मेरेको पलभर भी भूली नहीं पर क्या करे कछु
काजके निमित्त करके माता पिताके घरमे चला गा
याथा ब्रजकी स्त्रीयोंके समान मेरेको प्राण प्यारा

रा
मे
२३१

231

कोई तीन भवनमें भी नहीं है हो साखी मेरा अपराध
क्षमाकरो मैं तुमारा डुखदेदेकर सहार् नहीं सक
ता हूं तुमने जो कही सो सब सोची मैंने जोकरी औ
र मेरेने जो करी सोहे साखी सब कोची है तुमको कुछ
दोष नहीं इह सबमेरे कोही दोषहे सूनो प्यारी दाउ
के हारे हूये कुछ वस नहीं चलता है तुमको मै कि
स प्रकार समझाऊं अपने किये पर् लजावता हूं
इसमै जो कुछ किया सो मै किया और किसी का

८३

दोष नहीं है मै आप तुमको विरहके समझमै अल
कर द्वारिकाको चलागया तोइह मेराही दोष है ९
चौपाई। पैतव सखी भलो ग्रण धारा। सत्य नित्य
हो प्रेम हमारा। अब निज घरहु धीर जियमाही। सो
च विषाद करहु कछु नाही। पैहो तुमहु सरवदा
प्यारी। मोर मिलन प्रह्लाद सुखारी। अस कहि
उठि सानंद कन्हाई। मिले सखिन टग वारि वहाई।
भरि भरि भुजानि नहे हरि भेटे। उसह विजोग सोग

१२
भे.
२३२
232

दुख मेटे। मिलनन नजहिं स्याम घन कांही। परहिं सुधाजिमि मृन मुखमांही। विछ्ल द्रजाय कह्योगि रधारी। अब मोहि देहु रजा यस प्यारी। जाउं वेगा वृदावनि मांही। देहुं अभय पीरज सब कांही। व्याकुल लोग नगर नर नारी। देखन होहिं मोर पथ सारी। गिरा गमन जब स्याम सुनाई। व्रज वेना मानस अकुलाई। विरहे सिंधु मन बूडन लागी। स्याम सरोज चरन अनुरागी। बोली बार बार हगणहारी॥

पुनि मिलिहैं कब कुंज बिहारी ॥ दोहा । ससिआ
नन चन स्याम तव इह दृग जुगल चकोर । कबदे
खब हमरे बड़र सुनद्द रसिक सिरमोर ।८१। टी
का ॥ भगवान कहते हैं कि हे सखी तुमने भला
प्रण धारा जो हमारा प्रेम सत्य करके निभाया पर
न अब हृदयमें धीरज धारो सोच विषाद कछू म
त करो हे प्यारी तुमको मेरे मिलने का सुख और
आनंद जो है सो सरब काल प्रापत होता रहेगा ये

१२
भं
२३३

233

से करिकर भगवान उठे और सब सखियोंको ने
नैंसे औरहू प्यार प्यार हृदयमें लगावते भये और
भली प्रकार मिलकर विरहे विजोगका परमदु
ख जोथा सो निवारण करते भये और सो सखीभी
मिलतीहुई भगवानके हृदयसे नहीं छूटतीहैं
मानो जैसे मराहुआ प्राणी मुखमें अमृत पडने
से सजीवन होजाताहै तैसेही वे सबजी उठती
भई तब फिर भगवान वारवार कहतेहैं कि प्या

गी अवमेरेको आज्ञा देवो जोमै द्वारिकामै जायकर
सबको धीरज देऊं और अभय करूं क्योंकि नहींके
सब लोग नारीनर और बाल वृद्ध सब मेराही मार
ग देखते होंगे इस प्रकार जब भगवानने चलने
की चरचा चलाई तब सुनतेही रुक्मणी जोहैं
सो मूर्छाखाकर होयगई और विरहके समुद्रमै डूब
ने लगी नेत्रोंमे जल भरभर कहतीहैं किहे घन
श्याम फिर कब आवोगे और हमारे मुखे चंद्रमा

१२
भे·
२३४

234

को इकइक मारे चकोर नेत्र फिर कब देखिबेगो ॥ ८२॥
चौपाई ॥ सुनत सखिन सब वचन ललामा ॥
बोले मुसकि मेट घन स्यामा । सखि तुमरे मानस
मम वासा । मैतो रहऊं सदा तुव पासा । क्रहू वेत्र
कहे आउब जबही । इह सुवे हम तुव पाउब तब
ही । जब सखि करहू ध्यान सुपिमेरी । तब मे होइ
प्रकट विनवेरी । असकहि हृज भामनि अनुरागी ।
वारवार मिलि प्रभु पद लागी । तब तिनतें हरि सो

न बिदाये। हरषि नंद जसुमति फिरि आये। मा
गयो सासन जुग कर जोरी। अब पितु भैहिं चलन न
मति मोरी। सुनि अस नंद जसोमति कान्हीं। बि
रहे बान लागयो उरमाहीं। सिथिल अंग तन उठे
उखारी। लिये लगाय हिये गिरधारी। बिल
पि कह्यो दम्पति असबानी। नव बिजोग सुत प्रा
नन हानी। चलन बान जनि कहहु मुरारी। देहु
नहमंडे उसहु उखभारी। कह्यो कृस्न अब ते पितु मो

१२
भ°
२३५
235

रा। तुमरे कबहूं नहोहिं बिछोरा॥ दोहा। मोपैं रा
खि रहहु नित तव निज कृपा महान। अस कहि स
मुझाये पिता करि हरि विविध बखान। नंदजसो
मति होये करहरि उरबे सकल मुरारि। मानकुलनि
न वदन प्रभु पुनि अस गिरा उचारि १८। टीका
तब सखियोंके मुखसे बचन सुन कर भगवान
मुसकाय कर कहने लगे कि प्यारी मैंतो सदैव
तुमारे पास बसताहूं क्यों कि तुमारे हृदयमे मेरा

निवास है और मै जब कुरुक्षेत्र को आऊंगा तब फि
र हम तुम इस अनन्त दरसन मेले का सुख पावैंगे
और जब तुम मेरा ध्यान और सुधी करोगी तब मै
तत्काल ही तुमारे पास आय जाऊंगा इस प्रका
र सुनकर के सब ब्रज बासनी बडे आनंद और प्रेम मै
मगन भई हुई बारबार मिलकर भगवानके चरनो
पर सीस नावती भई तब घनस्याम तिनतै बिदाय
लेकर हरषसे नंद जसोदा के पास आय जाते भये

१२
भ-
२३६
236

तिनके आगे हाथ जोड़ कर विनती करने लगे कि
हे दयानथी अब आज्ञा करो तो मैं चलने को चहता हूं
ऐसे सुनकर नंद जसोधा के हृदय मैं मानो विरह का
बाण लग जाता भया सब अंगों से सिथल भये हुये
उठने से चरन प्रणाम को हृदय मैं लगाय लिया और रव
दे विलाप के बचनों से कहने लगे कि हे पुत्र तुमारा
वियोग हमारे प्राणों की हानी है लाल तुम चलने
की बारता मत कहो इससे हमको महा कलेश उपज

८८

ताहै तब भगवान कहने लगे कि हे पिता अबसे आगे
तुमको मेरा वियोग कबी नहीं होगा तुम मेरेको
बालक जानकर अपनी कृपासे सदैव ही निहाल
करते रहो ऐसे बार बार कहिकर और समझायकर
नंद जसोधाके हृदयका दुख सब हर करके फिर भग
वान बडी कोमल बानीसे जिसप्रकार कहते हैं सो आ
गे कथन किया जाताहै । ८२। चौपाई । जनक मो
र कुछ सोच न माही । होव मिलाप रुचिर तुमका ही ।

१२
भ
२३८
237

मैं सुत तात मात तुम मेरे । कोटि कलप लगि फिरहिं
न फेरे । अस कहि बसन आभरन नाना । देत भे
गाय कृष्ण भगवाना । गोपी गोपिन कहे समुदाई-
ऋषि विप्रगन कीन जडुराई । इति अस बार बार
सब काहीं । मिले मोद हर्षित मन माहीं । राम स
हित मानस अनुरागे । बहुरि नंदजसुमति पग
लागे । कै गये प्रेम विकल गिरधारी । छारन लो
चन वारज बारी । नंदजसो मति विकल अधीरा ॥

भये निमग्ग विरहे निधिनीरा । गोपी गोप सकल सुधि त्यागे । कलस कलस करि रोदन लागे । स्याम जान जब भये सवारा । गिरे लोग सब खोय पिछारा । जल वह्नीन जिमि मीन दुखारी । नरफत निमि व्याकुल नरनारी । तिनकर दसा देखि भगवाना ॥ आये तजि दौरेत निज याना । करि करि वदन प्रबोध सुहावा । बारबार सबकर समझावा । दैदै आश्वासन गिरधारी । साव धान कीनी ब्रजनारी । दोहा

१२
भं
२३८

जनक जननि कहे दीन श्रुनि धीरज क्षपान केन ॥
वार अनेक लगायहिये दम्पति प्रेम समेत ॥ ५० ॥
टीका ॥ भगवान कहते हैं कि हे पिता मेरा मिलाप
तुमको कुछ दिनमें होवेगा मैं तुम्हारा पुत्र और तुम मे
रे माता पिता कोटि जन्म तक भी मिटाये नहीं मिट
ते हो ऐसे कहिकर नाना प्रकार के वस्त्र और भूषण
मंगवायकर बडे आनंदसे सब गोपी गोपोंको बांट
दिये फिर वारंवार सबको मिलकर रामश्याम दोनो

भ्राता नंद जसोदाके चरनोपर जाय प्रणाम करनेभ
ये नवबन प्रणाम जो हैं सो प्रेम करके व्याकुल और
अधीर होगये नैनोंसे जलका प्रवाह चला जाता
है उन्हे नंद जसोदाभी आकुल भये हुये विरहके
समुद्रमे डूबे जाते हैं और गोपी गोपभी सब सुधीको
त्यागे हुये कलम कलम करते रोवने लगे और जब श्या
म रथपर आरूढ भये अर्थात् चढे तो तिनके वियो
गसे सबलोग चक्र खाय करके गिरपडते भये जैसे

१२
भ०
२३५
239

जलके बिना मछली ब्याकुल होकर तड़फती है तै
से ही सब ब्रजवासी तड़फनेलगे ऐसे तिनकी द
शा देखकर भगवान कृपानिधान तरतही मथुरा
को त्यागकरचले आये और तहां अनेक प्रकार
का प्रबोध करके सबको समझाया और भलीप्र
कार धीरज देकर सबको सावधान किया फिरवा
रंवार नंदजसोदांको भी धीरज और संतोषदिया
सो प्रेमसे ब्याकुल भये हुये भगवानको भुजाभर

भर हृदयमे न्हवावनेहूं ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ जसमन
मकै भुनि होत विदाये । चले स्याम चढि जान
स्हाये । इत पश्य नेद जसो मति लीन्यो । कृस्न
विरहे व्याकुल मति कीन्यो । भुनि भुनि विनयजा
नयन स्यामै । नकत नेन नहि लेत विरामै । देखन
वह्रुरि वह्रुरि सब ग्वाला । कहूं लग श्रवै गाये नेद ला
ला । उत फिरि फिरि पश्यत कहि कन्हाई । कमज
हिहैं गरह्रजसु मनिमाई । अमप्रकार वल राम सु

२८
भ.
२८०
240

रारी। जीति हेम त्रिभक रणरारी। गये द्वारिका
सा नेद भरी। रह्यो सुजस सुभ त्रिभुवन पूरी॥
जसु मति नेद लोग समुदाये। इनै सुमरि हरि
गोकुल आये। एक आधार कृस्न जीय जानै। व
यो भरोस सपन नहि मानै। काहू कहूं ब्रज वासि
न रीनी। जो की इसट कृस्न पद पीनी। करि कारि
प्रेम अनंत सुरारी। लोक परलोक लियो जस भा
री। धन्य धन्य भाजन जग एहू। रहन सदा रत कृ

स सनेह । अस ब्रजवासिन की सब भाई । मै इह
कथा अलप कछु गाई । नतर अगाध जलथ ज
ग गाथा । अगनित चरित चारु ब्रज नाथा । को
सामर्थ कथन कर ऐहैं । पैरे पयोधि पार किमि
पैहैं । मति अनरूप समय अनुसारा । जासों प्
रभु भयो बिसतारा ॥ दोहा । प्रेम नेम जस कीन
कल ब्रज गोपिन भगवान । स्रवनउ मंन श्रोता स
कल ऐहि ननास प्रमान । ब्रज बासनि ब्रज बल

१२
मे
२४१

२५१

भी ब्रजपति आगा पधारि । सदा रहत तो कर हृदय निवसत कुंज विहारि ५४ ॥ टीका ॥ तब फिर कृष्ण भगवान जैसे तैसे करके तिन सब ब्रज वासि यों से [illegible] विदाय होकर रथपर चढकर चल पडते भये और इधर कृष्ण की विरहे से व्याकुल भये हुये नंद जसोधा भी अपने रसन को लेते भये परन्तु तिनके नेत्र चन श्याम की ओर फिर फिर कर देखते जाते हैं शोनी को आपन

नहीं होते और सब ग्वाल भी वारवार तकते जाते
हैं कि ग्वलो नंदलालजी कहांतक गयेहैं और उ
हो हल भी फिर फिर रमनेको और देखतेहैं किनं
द और जसोधामाई किस प्रकार घरजावेंगे ऐसे रा
म स्याम दोनो भ्राता जोहैं सो रणमें हंस और डिभ
कको जीतकर बडे आनंद और सुजसते सव समा
जके सहित द्वारिकामें जाय प्रापत भये और उहो
सब गोप समाजके सहित भगवानको सुमरतेहैं

१२
भ॰
२५२

252

ये नंद जसोधा भी गोकल में चले आये जिनको के
वल एक कृस्न काही आधार है और हमारा कोई भ
रोसा नहीं है ब्रजवासियों की रीती और महिमा क
हांतक कही जावे कि जिनकी कृस्न भगवान के च
रनो में अमिट और अनन्त प्रीती है और जिन्होंने भ
गवान से पवित्र प्रेम और सत्य स्नेह करके लोक
परलोक में बड़े महान जस को थापन किया है ३२
यम ३२ थयाहैं सजनके भाजन कि जो राती दिन

सदैव कृष्णके स्नेहमेंही लीन रहतेहैं इसप्रकार
इह ब्रज वासियोंकी गाथा कुछ थोडी सी गायन
कीगईहै नहींतो इह बडी अगाध कथाहै और अ
गाधही कृष्ण भगवानके चरित्रहैं तिनके कथन
करनेको कौन सामर्थहै येरने अर्थात तरने करके
समुद्रका पार कैसे पाया जाताहै तातें हे शुर देव
स्वामीजी जथा मती और समयके अनुसार इह
पवित्र गाथा जोहै सोगायन कीगईहै इहभग

भै
२४३

243

वानका पवित्र प्रेम नेम जो गोपियोंने कियाहै
सो अप्रमाणहै जिसका कोई प्रमाणनहीं सो हु
ज वाला ब्रज वासनी ब्रजपती की [illegible] प्यारी जो हैं
तिनके हृदयमे भगवान सदैवही निवासकिये
रहतेहैं ॥ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवदभ
क्तीमहात्मेभाषाटीकायां ब्रह्मदत्त उ.सहस्रमित्र
वरित्रं नाम सर्गः ॥

मिहांसिंहकृत

अथ सुरथ और सुधन्वा चरित्रं । दोहा । अब म
न हरन प्रमोद प्रद कमल चरन रति कारि । व
रन हुं कथा पुनीत सुभ सुजस भरन भ्रमहारि
सुरथ सुधन्वा भूप जग जिमि निज भगति प्र
भाव । मुनि जोगिन दुरलभ अमल लीन सक
ति पदपाव । चौपाई । अवसर एक जुधिष्ठिर रा
ई । कीन्हा बाजि मेध मख आई । छाड्यो विधि
जुत पूजि तुरंगा । चले महान सुभट तिहि सं

१६८
भ०

गा। इंद्र स्रवन मधुमन सुहाये। आन महांरथी वीर निकाये। अभि लावन रण राजिन संगा। भ्रमत देस देसन सतरंगा। आवा चंपक पुरी र साला। पारथ जुत दल सुभट विसाला। तहां नरेस हंस धज नामा। परम प्रवीन धीरधुव रा मा। तास हुत ड्रत आय अलावा। सुनहु हृतांत नवल नृप भावा। करत अहै विधि मंजन आ ला। अस्व मेध मख परम भुवाला। दल आवं

उ जव नाम नरंगा। आवा हमरे नगर निसंगा।
भट प्रद्युमन पारथ संग राजे। और हु इमन
सूर छबि छाजे। मैकीन्यो परि चित न्रपनोही।
अब कीजै मनभावति जोही। सुन वचन अम
सनन सुहाये। भूप हंसधज हरष अघाये। दो
हा। बोलि वेग भट सचिवजन उर विचार असकी
न। इन अगमन हमरे नगर विपुल लाभ विधि
दीन। सवैया। स्रवण प्रेम मकंद को भाजन भूप

१८
मे
२

जधिष्ठिर संस्तुति गाये। नहि अस्वमेध आरंभ कियो कल छाड तुरंग चमू चल लाये। पुत्र प्रद्युमन अर्जुन और हूं संग सदास हुलास सों आये। बांधि तुरंग करो रणरार सदास सुरार ले है पट पाये। तोटक छंद। जहां अर्जुन वीर सुभट प्रद्युमन सुहाये। अहैं तहां जदुनाथ हरन दुख दीनन काये। एहि आज जदुराज दरस दुरलभ जगजेह। भरि भरि लोचन लेहु सदल जन सुभट

२

सनेह। कबहूं नदेखे स्याम जलथ तन मंजुल सो
भा। रंजन सरउज धरन करन मुनि मानस लो
भा। बीत्यो जनम अमोल मोर जग हथ्या सवाहीं ॥
तांते आज रिझाय समर हरि दासन काहीं। दोहा
होऊं कृतार्थ आजमै जन समाज समुदाय। बिन
आजास हरिदास पद लेहूं सुगम सुभ पाय। ९।
टीका। नाभादास कहतेहैं किहे गुरुदेव स्वामी
जी सुरथ और सुधन्वा राजाने अपनी भक्तीके

१६ भ० २

प्रभाव से मुनी और जोगी जनो को दुर्लभ भक्तीका निरमल पद जिसप्रकार प्राप्त कियाहै अब तिस की बडी आचर्ज और मनोहर गाथा जोहै सो कथ न करताहूं आपध्यान देकर श्रवण करिये कैसी भी गाथहै कि कृश्न भगवानके चरन कमलों मे नित्त नवीन प्रीतीके सरस करनेवाली और सुज सके सहित सर्व सुखों के देने वाली और भ्रम कलेशों के हरने वालीहै कहतेहैं कि एक सम

२

य राजा जुधिष्टिर ने अस्वमेध यज्ञ किया तब घोडा जो
है सो वेदकी विधी अनुसार सज करके छोडा तिसके
साथ रणमे राजयोंसें युद्ध करने की अभिलाषावा
ले वडे सूर वीर अर्जुन प्रद्युमन इत्यादि और अने
क महारथी वीर धीर जोहैं सो सब चलते भये
तब सब देस दिसां ओंमे भ्रमन करता हूआ सो
घोडा संपूर्ण दल और सूर वीरोंके सहित चंप
क पुरीमे आय प्रापत भया तहां धरम मे प्रवीन

और धीरज मे अचल सर्व गुणोका धाम हंस ध्वज
नाम करके राजाथा तिसके इतने नतकाल हीं
आयकर तिसको कहा कि हे राजन धर्म भूप जो
राजा युधिष्ठिर है तिसने अस्वमेध यज्ञ कियाहै
सो तिसका घोडा बडे अखंड दल के सहित तेरे
नगरमे आयाहै और प्रद्युमन अर्जुन इत्यादि और
अनंत सूर वीर वडे सज धजसे साथ आये हूयेहैं
मैने तुमारे को खबर जणाय दईहै आगे जैसी वि

नको भावती है सोकरो इस प्रकार इनके वचन
सुन कर राजा हंस ध्वज जोहै सो परम हरष को
प्रापत होता भया और ततकाल अपने मंत्री औ
र वीर धीर सेना पतियों को बुलाय कर कहने
लगा कि भैया इनका हमारे नगर मै आना वि
धाताने हमको बड़ाही लाभदियाहै क्यों कि मुकुं
द भगवानके पूर्ण प्रेमका पात्र राजा युधिष्ठिर ज
गतमै गायन किया हुआहै तिसने अश्वमेध का

प्रारंभ किया और चतुरंगनी सेना साथ लगाय क
र घोड़ा छोड़ाहै तिस सेनाके सरदार कृस्नभग
वानके पुत्र प्रद्युमन और अर्जुन इनतें लेकर औ
र भी महाराजके अनेक दासबड़े हुलाससें आ
य हुयेहैं तातें अब योग्यहै कि तिस घोड़ेको बां
ध कर तिनके साथ युद्ध करो और रणमें सन
मुख जूझ कर भगवान के दासोंका सुंदर पद
जोहै सो सहजे हीं प्रापत कर लेवो और तुमने

५

इह निश्चय करके जानलेना कि जहां अर्जुन और
प्रद्युम्न इत्यादि वीर धीर शोभायमान होंगे त
हां दीनोंके दुख हरने वाले और भक्त जनोपर
कृपा करने वाले जदुनाथजी महाराज साक्षा
त आपहीं हैं इसमें कुछ संशय नहीं है जानो
कि इसी वहानेसे हमको भगवान का दुर्लभ
दरसन संपूर्ण दलके सहित नेत्र भर भर कर
प्राप्त भया हो भाई मैने अपना सब जनम ह

१९ भ. ६

याहीं गवायाहै इह गो ब्रह्मण पृथवी देवताउंके व
ख वारे औार मुनी जनोंके मनको मोहित करने
हारे सुंदर स्याम मेघवत शरीर की आभा वाले
भगवान कवी दरसेही नहीं हैं आज भागोंकी
वडी वडाईहै जो भगवान के दासोंको रणमे रि
झाय करके अपने सव समाजके सहित कृतार्थ
होताहुं औार भगवानके दासोंका सुंदर पदजोहै
सोई जतनके विना सहजेही प्रापत करताहुं। ८

६

चौपाई। सैनप सचिव पुत्र पुरवासी। रहे सकल ह्
रि दरसन आसी। सुनत हंसधज वचन सुहाये।
निज निज हृदय सकल हरषाये। भनत नाथ ह
रिदासन केरी। हमरे दरसन प्रीति घनेरी। इहन्न
व मग संकुल सुखदाई। नाथ निसंक निसान व
जाई। चमु समेत भट वीरन काहीं। आयसु देहु
वदन नर साईं। राउ सुनत मानस हरषाये। स
जन सैन हित सुभट बुलाये। करहु वेग जन।

समर तयारी। कमल सरोज चरन उरधारी। राज र
जाय सीस सव राखे। वैस्नव वीर समर अभिलाखे
रथ मातंग मत्त रणगाजे। वाहन इसत आन भट
साजे। अगनित प्रवल पदाति सवारा। चलत रंगति
चमु चढ्यो अपारा। मुदगर सक्ति सूल असिपासा
कवच कृपान प्राण विष नासा। धारे धनुष तूण क
टि सूरे। वीर प्रधान समर वलपूरे। अस जव सैन
सुभट सजि आये। तव नरेस अस भूप अलाये॥

एक नारि व्रत जे हरि दासा। जाके कमल चरन वि
स्वासा। दोहा। नित्र्प्रावहिं रण धरनि ध्रुव वांधि वि
रद निजवीर। हरि दासन समर लरि लेहिं अमर

पदधीर। ४। टीका। नव राजा हंस धजके सेनाप
ती मंत्री पुत्र और पुरवासी इह सब भगवान के
दरसन की आसा वाले थे जब तिन्होंने हंसधज
के मुखसे वचन सुने तो सब अपने अपने हृद
यमें बड़ा हरष मानते भये कहने लगे कि हे

सो०

१९ भं ८

नाथ भगवान के दासोंके दरसन करनेकी हमारे
हृदयमै अत्यन्तही लालसाहै इस समय सर्वसुखों
के देनेवालाहै अब निसंक हो कर रणमै जूझने
वाले राजयों की और सेनाके सहित सब सूरवी
रोंके सजनेकी आज्ञा दीजिये तब राजा सुन करके
बडे हरष को प्रापत भया और सब सूर वीरों को
बुलाय कर कहने लगा कि भाई इस परमात्मा
के चरन कमल हृदय मै धार कर रणकी शीघ्र

त्यारी करो इसप्रकार राजाकी आज्ञा पायकर वे
सब वीर जोहैं संग्रामकी अभिलाषा वाले हो
कर मातंग जो उन मत्त हस्ती और रथ और नाना
प्रकारके इमत वाहन कि जिनकी गिनती नहीं प
दाती जो प्यादे और सवार ऐसे महा प्रवल चतुरं
गनी सेनाको सजाय कर और शक्ती जो वरछी
शूल जो त्रिशूल असी जो तलवार पास जो फासी
कवच जो संजो इत्यादी मदगार कमान और धन

ख बाण शत्रुके प्राणोका नाश कर्नै वालेहैं धारन
किये हूये सजस जाय कर्के चले आवते भये इस
प्रकार जब सब सूर वीर सेनाके सहित तयार हो
करके चले आये तब तिनको देख कर राजा आ
ज्ञा देता भया कि सुनो भाई जो कोई एक नारीके
व्रत वाला भगवानका भक्तहै और जिसको केव
ल कुल भगवानके चरनोका हीं भरोसाहै सो अ
पनी शक्ति और सामर्थके अनुसार रण भूमिकामै

चला आवे और नहां भगवानके दासोंसे सनमुखवज्र
कर सुंदर अभय और अखंड पद जोहै सो प्राप
त कर लेवे।२। चौपाई। हरिदास न विनु आन न
कोई। हरि दासन रण सनमुख होई। नृपति मे
न अस काहू नहेरा। जो न होहिं हरिदास घनेरा
विधिवत दान होम करि सारे। ऊर्ध पुण्ड्र दे तिल
क लिलारे। पहिरि पहिरि तुलसी कल माला
सजे सुभट वरवीर विसाला। पांच पुत्र भूपति

१६
भं॰
१०

10

अभिरामा। करहुं कथन तिन कर अवनामा। स
सि केतु ससिसेन प्रवीरा। सुबल सुधन्वा सुरथ
सधीरा। इह बलि सुभट सैन सरदारा। अभि ला
षत रण राज कुमारा। समर गमन तिन करती
य देखी। मानि हरष निज हृदय बसेखी। दोह
भये अधर नव स्याम सषी भनत परस्पर बात।
नव पति होय कदराई नव अधरन प्रकट जणा
न। नाम कह्यो सखि कादरी मोरे पतिको नाहिं।प

नि हत गुनि हरि करन मै समसेग जड पनि का

हिं। सोऊ स्यामता अथर मम रही प्रकट स

विह्राय। वीर धीर जड वीर जन पति नकवइं

कटराय।३। टीका। फिर राजा कहता है कि भा

ई हरि दासोंके विना रणमै हरी दासोंके मन

माव ग्रौर कोई नहीं होवे नव राजाके दलमै ग्रै

सा कोई नहीं जो भगवानका हफ सेवक नहीं

था सब कोई विधी वन दान होम करके ग्रौर

१९ भ॥

रामानंदी तिलक मस्तक मै देकर सुंदर तुल।
सी की माला हृदयमै पहिर पहिर कर वीर प्रधा
न जो हैं सो सज सज जाय कर त्यार हो जाते भये त
व राजा के महा वीर पांच पुत्र कि जिनके नाम
ससीकेतु ससीसेन सुबल सुधन्वा और सुरथ
प्रसिद्ध थे इह पांचो अत्यंत बली और सब सेना
के सरदार रणमे जुद्ध करने की अभिलाखा
वाले थे जब इह रणको चले तब तिनकी स्त्रीजो ॥

हैं सो देख कर अपने अपने हृदय मै बड़े हर
ष को प्राप्त होतीभई और एक दूसरी को प
रस्पर कहतीहैं किहे सखी तुमारे अधरों पर
अर्थात ओठोंपर स्यामता छाय गईहै इससे तु
मारे पती के हृदय की कदराई अर्थात काय
र ताईसी जानी जातीहै और वे तिसको उत्तर दे
तीहै किहे सखी मेरे पती की कायरताई नहीं
है मैने पती कारणमे जड़ नाथके हाथसे मर

१९ भ॰ १२

ना विचार कर तिस घनस्याम भगवान का स्व
मरण जो किया तोहे साखी सोई स्यामता मेरे
अधरों पर प्रकट आयकर छायगई है पती वी
र धीर तो जड़ वीर महा राजके हम सेवक क
भी कायर होने वाले नहीं हैं ।१। चौपाई । अस
प्रकार बधु बीर सयानी । हरषत भनत अनेक
न बानी । भूप हंस धुज सीस सुहावा । चलै छ
त्र चोवर मन भावा । लागे बहु विधि बाजन बा

जा। कह्यो संत पुनि गगन दराजा। सैनप सुभट इमन दल साजे। नगर वहिर सब आय विराजे। तव प्रण रोपि हंस धुज राई। सनहु सुभट अस भयो दिखाई। मम शासन मानव नहीं जोई। तिन कहं सनहु दंड अस होई। संत लिखन ड परो हित मेरे। रहे जगल पाछिल तव हेरे। तिनक र पूर्व वृतांत विचारी। करहुं कथन कछु सम य निहारी। संत विरच्यो एक आरामा। सुमन

१९ दुमन छवि छयो लिलामा। ता मध लिखेन गये
भ दुक काला। वदरी फल हग देखि रसाला। खो
१२ ये तरत तोरि लखि पाके। पाके उपज ग्यान जीय
ताके। विन पूछे फल किये अहारा। अहो विछ
ल अपराध हमारा। जो मै याको डंड कदाई। इ
हि तनमै नहिं लीनसि पाई। तोसहर पुर गवने
मोहि काही। है हैं उर गति संशय नाही। संसा
रहुं सांव सपन नमोही। अस विचारि निज मा

नस सोही। दोहा। गयो नरन निज वीर ढिग क

हो वदन अनुरान। भयोपाप मोहितें विपुल भ्रा

त भन्यो नहीं जात। ४। टीका। इस प्रकार वडी च

तुर वीरों की स्त्री जोहैं सो आनंद से परस्पर अ

नेक चतुराई की वातें करतीहैं और तहां राजा

हंस धजके सीस पर वडा शोभायमान छत्र औ

र चमर झूलता और वाजे भी अनेक प्रकारके

वाजतेहैं शंखोंकी नाना धुनी जोहै तिस करके

१९
भं.
१५

अकाश परिपूर्ण होरहाहै सेनापती मंत्री और
सूर वीर नाना दलको सजाय करके नगरके
वाहर आय करके स्थित होजाते भये तव राजाहं
सधज प्रण प्रतिज्ञा करके वडे कोपसे कहने
लगा कि मेरी वार्ता को सव सूर वीर कान देक
र सुनो क्या कि मेरी जो आज्ञाहै तिसको जो को
ई उलंघन करेगा सो अैसा दंड पावेगा कि सं
ख और लिखत दोनो भ्राता मेरे उपरोहित जोहैं

१५

तिनको मै पीछे छोड चला हूं सो वणसे जो वे
मुख होगा तिसको दंड देवेंगे अब तिनकी ए
वली गाथा कहते हैं कि संखने एक वडा सुंदर
वगीचा वनाया सो सुंदर हीं वृक्षों और पुष्पों
करके वडा शोभायमानथा एक दिन तिसके
वीच संखका आना लिखत जोथा सो चला जा
ताभया तहां तिसने वदरीफल कि जिनको वे
र कहते हैं पाके हूये देखकर तोडे और खाय

१६
भं०
१५
15

लिये तब पीछे तिसको ज्ञान उपजता भया कि
देखो मैने बिना इच्छे ही इन वेदोंको खाय लिया
है इह मेरा बडा अपराध है जो मैने कदी इसी श
रीरमै इह दंड नहीं पाय लिया तो आगे परलो
कमै जाय कर क्या जाने मेरी कैसी डर दशा
होगी। और ईहां लोक मे भी मेरे को सुख नहीं
होगा ऐसे अपने हृदयमै विचार कर तुरत
अपने संख नामा भ्राताके पास बडी व्याकुल

१५

तासे जाय कर कहने लगा किहे भ्राता मेरेसे व
डा पाप हो गयाहै कि जो मै कहि नहीं सक
ताहूं ।४। चौपाई ॥ताकर दंड अबहिं नव देहू ।
नातो टरन अगम अग एहू । कियो विचार सं
ख मन माहीं । याकी गती दंड विन नाहीं । पै
रहु दंड देन नरनाहा । उचित मोर अधिकार
नराहा । अस कहि छित पति सरण सिधारे ।
जगल भ्रात निज विथा उचारे । भन्यो भूप पं

रित नम होई। यामै जस नदेस नवहोई। सो मो
ह्हि करन उचित स्तुई कारा। नव प्रवीन पथ्य वे
द विचारा। नव वोल्यो ग्रस संख प्रवीना। ह्हो
हिं वीर मम करन वहीना। उज कर जगल पा
नि मह्हि पाला। दीन कटाय नरन नहि काला।
लखि प्रा लवध भोग जगवीरा। करन कटन
कछ्छ मानिन पीरा। ग्रस तिन कर हद्ध परमनि
हारी। भा प्रसन्न मन भूपति भारी। संख लि

खन कहं निकट बुलाई। भूप वदन अस गिरा अलाई। पुरि महं इक तैल कराहू। बैठहु न गर बहिर तब जाहू। दोहा। अनल चंडता कर तेरे तब हुत देहु जराय। तुरत तैल जब अकन अति होहिं अनल बल आय। तव जे वे मुख स मरतें होहिं सुभट कदराय। तपत तैल हुत ता सु तम करहु भसम जराय।५। टीका। लिख न अपने संख नामा भ्राता को कहताहै कि इ

१९ म०
१८

स मेरे अपराध का दंड तुम अवहीं देवो नहीं तो
इह पाप छूटना वडा कठिनहै तव संखने भी
विचार किया कि इसको दंडके विना कोई गती
नहीं है परंतु इह दंडदेना राजाको योगयहै मे
रा अधिकार नहींहै ऐसे विचार करके दोनो
भ्राता राजाके पास जाय कर सव विथा सुनाय
देते भये तव राजा कहने लगा कितुम आप
दोनो वडे चतुर पंडित वेदके जानने वाले हो

जैसे योगपड़ै तैसे कहो मै सोई कहूंगा ऐसे
राजाका वचन सुन कर संख कहने लगा कि
इसका दंड इहहै जो मेरे भ्राताके हाथ कटाये
जावें तव राजाने सुनते ही तुरत तिस ब्रह्म
णके दोनो हाथ कटाय डाले सो विचार मान
ब्रह्मण अपना पापलवध भोग जानकर हाथों
के कटे जाने की कुछ पीडा नहीं मानते भये
इस प्रकार तिनका दुःख धरम देख कर रा

जावडा प्रसन्न होगया इसीते तिनको धरम मे प्रवीन जानकर तहां रणके समय निकट बु लाय कर कहने लगा किहे संखे लिखन उप रोहित तुम एक तेलका कडाह भरकर श्रीर तिसके नीचे श्रागन लायकर नगरके वाहिर वैठरहो जव सो तेल तप करके श्रगनी समा न दगध करने वाला हो जावे तव जो सुभट वीर रणसे वेमुख श्रीर कायर हो जावे तुम ति

१८

सको ततकाल पकड कर तिस तपेहूये तेलमे
डालकर जलाय देवो।५। चौपाई। संख लिखत
न्टप आयस लीन्यो। तेल कराह तपत क्रत की
न्यो। और वीर न्टप संग सिधारे। सुमरत श्री व
स देव डुलारे। लछुमन भूप सुधन्वा जोई। स
मरसुभट जानत सबकोई। कृस सरोज चरन
हृढ दासा। उर उनमाद समर नित जासा। स
ज सजाय रणहेत प्रवीना। मात समीप गयो

१९
भ॰
१९

मति धीरा। बंदि चरन सठ गिरा अलाई। मै अ
व चलो धरणि रण माई। तव प्रसन्न मन आसि
ख देहैा। अभिमतव लरहू समर जसलेहैा। हृ
रिसन धीये प्रद्युमन सुजाना। नमहिं सुहृद पा
रथ भट माना। आये सखे तुरंग कर संगा। संग
न सुभट सैन चतुरंगा। हरिदासन कहूं नैनन
देखी। अरु रफाय रण धरन वसेखी। अभिम
न फल सह जहिं सुखदाई। लेव मातु भव भी

१९

ति विहाई। हरिजन दरसननतें जगमाहीं। वयो
लाभ जननी कोउ नाहीं। जोकर हृदय मात
विस्वासा। हरि सरूप दरसन हरिदासा। दोहा
भन्यो मात इत जाहु सुत मोद प्रमोद समेत।
रणतोषत करि हरिहिं तव ल्यावहु रुचिर
नकेत। पारथ जुत प्रद्युमन सब और हुं हरि
जन काहिं। मोहि दर सावहु सुवन तव आ
ति सदन निज माहिं। ६। टीका। तव संख औ

१४ भ० २०

र लिखत राजा की आज्ञा पाय कर नेलका भ
रा हूआ कडाह तपाय लेते भये जहां और स
रवीर जोधे सो सब जड वीर को सुमरते हूये
राजाके साथ रणको चलेगये और राजाका ।
छोटा पुत्र सदैव रणकी अभिलाखा वाला कृ
स्नभगवानका दृढ सेवक और वीर प्रधा
न सबलोगोंमें विदतसुधन्वा नामकरकेजा
था सो रणके वास्ते सजसजाय करके माता

२०

के पास आज्ञा लेने को चला जाताभया तहांजा
य कर माताके चरनो पर सीस धरकर बिनती
करने लगा किहे कृपावती जननी मै अब रण
को चलाहूं तू प्रसन्न हो कर मेरेको आसीसा
दे जोमै रणमै सनमुख जूझकर सुंदर जश
को प्रापत करूं क्यों कि तहां रणमै कृस्न भग
वानका प्यारा पुत्र प्रद्युमन और तैसेही म
हां वीर भगवान का प्यारा अर्जुन वडे वडे सू

१९ रवीर और चतुरंगनी सेनाको लेकर यज्ञ संवं
भ धी घोड़ेके साथ आये हुयेहैं सो आजमे तिन
२१ भगवान के दासों के दरसनसे नेत्रों को सफल
करके और तिनको भली प्रकार रणमें रिझाय
करके अपने मन वांछित फलको सहजेहीं पा
वताहूं और अभय होताहूं हे माता भगवानके
दासों के दरसनतें अधिक संसार मे और कोई
लाभ नहीं है जिस पापके हृदय मे दृढ़ विश्वा
२१

स होवे तिसको हरीके दासोंका दरसन होना साक्षात हरी काही दरसन है इसप्रकार पुत्रके वचन सुन कर माता बडे आनंदसे कहने लगी। किहे पुत्र हरषसे शीघ्रजावो और भगवानके दासोंको शरणमें भलीप्रकार प्रसन्न करके फिर प्रद्युमन अर्जुन इत्यादि और सब वीरयोधेरोंको घरमें लेआवो और मेरेको दरसन करावो ६

चौपाई। जो तुम जाकि समर सुन जैहो। तौ सुचि

१६
भ.
२२

22

भलि सुजस जग लैहौ। जियत रहहु तव हरि
कहँ पावहु। मोहि समेत सुत धन्य कहावहु।
सब विधि तात तुमार भलाई। करहु समर ध्रु
व मनभाव जाई। धन्य सो जननि जगति तलवा
रू। जासु पुत्र महि समर जुझारू। अरु रणवि
मुख जासु सुत होई। भली बाँझ जननी जग
सोई। सुनत सुथनैं गिरा उचारी। तब आसिष
प्रसाद महतारी। होउं न विमुख कबहुं महि रे

गा। लरहुं समर हरि दासन संगा। अस कहि वंदि चरन निजमाता। जीयपै गयो हरि मद माता। मागो नहितें विदा उचारी। देहु रजायस रण कहं प्यारी। हरषि वदन जीय वचन वखाना। मोहि सम आज न संसृति आना। जहि पति जड पति धारण विचारी। चल्यो करन मन भाव रण रारी। जाहु प्राण पति विलम नकीजै। श्री जड वीर दरस हग लीजै। दोहा। पेरति

१९
भं०
२२

दान सुजान पति इहि अब सरदै मोहि 'बड़हरि जा
झ रण धरनि हुत नव विशद वपुहोहि ।७। टीका
फिर माता कहती है कि हे पुत्र जो तुम रणमें जू
झ जावोगे तो सुंदर मुक्ती और सुंदरही जशको
प्रापत करोगे । और जो जीतेरहे तो भगवान कृ
पा निधान को पावोगे आप भी धन्य होवोगे औ
र मेरे को भी धन्य धन्य करोगे हे पुत्र तुमारी
सर्व प्रकार करके भलाई हीं होवेगी जावो र

२३

णमे सनमुख सावधान होकर युद्ध करो सो जन
नी जगतमे धन्य है कि जिसका पुत्र रण भूमीमे
सनमुख जूझेगा। और जिसका पुत्र रणमे वि
मुख होगा सो जननी अर्थात माता जगतमै
बांझही भली है ऐसे माताका सुख दायक व
चन सुनकर सुधन्वा कहने लगा कि हे जननी
तेरा आसीरवाद पाय कर तेरी कृपासे मै रण
मे कबी विमुख नहीं होऊंगा भगवान के दासों

१९ भं. २४

से दासभाव करके मनमुख हाथ जोड़कर लड़ूंगा इसप्रकार कहिकर और माताके चरनोपर वारवार प्रणाम करके फिर आनंद पूर्वक अपनी स्त्री के पास चला जाताभया और तिससे जाय करके विदाय मांगने लगा कि हे प्यारी अव तू प्रसन्न हो कर मेरेको रणमै जानेकी आज्ञा दे तव तिसकी स्त्री वड़े हरषसे कहने लगी आज मेरे समान वड़भागी संसारमै हमरा कोई नहींहै कि

24

जिसका पती जड़नाथ महाराज की शरण विचा
रकर रणमै मनमथ जड़ करने को चला है ऐ
से किहिकर फिर कहने लगी किहे प्राणपती
अब जावो वर नालगावो तहा जायकर भगवान
का और भगवानके दासोंका दरसन पावो प
रंतु प्राणनाथ मेरी प्रार्थनाहै कि अब समय है
मेरेको रति दानदेजावो फिर ततकाल ही युड़
हो कर जड़ करने को रणमै चले जावो।।७।।चौ

१८ भ० २५

पाई। तव भामनि कहं दै रतिदाना। करि सनान आयुध पहिराना। हरि हर सुमरि वहुरि सुनता ई। गवन्यो रथ चढि संख वजाई। भई तासु जव विलम महांहीं। भेटन भवन जननि जीय काहीं उत नकिसै नहंस धजटेरा। कहा सुथन्वा नाहिंन हेरा। आये सकल वीर मोहिसंगा। रह्यो सुभवन डरत महि रंगा। अवहिं जाहिं डुत जमनसिथा ते। लावहिं तासु वांधिरि सराते। राज सुवन।

25

गुनि जनि तजि आवहिं। ताते कठिन दंड मम पा
वहिं। सुनि नदेस न्रप इन चांडाला। चले करन
गहि खड्ग कराला। आवत उग्र सुधन्वा पाये।
न्रप शासन तिन ताहु सुनाये। सुनत सुधन्वा वे
ग सिधावा। आय जनक चरनन सिरनावा। भन्यो
भूप तब वचन कठोरा। अरे मंद तव सुत नहिं।
मोरा। जोरणतें कद राय अभागी। रह्योसि सुद
न वीरता त्यागी। दोहा। भन्यो सुधन्वा वचन तव

१९
भ.
२६

26

जोरि जुगल निज हाथ। जहि हितमै पाछिल रह्यो
सुनहु गाथ नरनाथ। विदा लेन निज जननि पें
गयो भवन इह दीन। याते भई विलंभ कछु जानि
नम्रन चित कीन। ४। टीका। तब सुधन्वा ने स्त्री के
कहने को विचार करके कि जो ऐसे नहीं करता
तो दोष लगता है तिसको तुरत ही रतीदान दे
कर फिर स्नान करके शस्त्र वस्त्र सजाय कर
हरी हर भगवान का स्मर्ण करना और।

संख बजावता हुआ रथपर सवार होकरके चल
पड़ा इस प्रकार जब मातासे और स्त्रीसे भेटने भेट
ने तिसको बहुत बेर होगई तब जहां सब सेना
और सूर वीरोंको देखकर राजा कहने लगा कि
सुधन्वा कहांहै सोनहीं दीख पड़ता सब वीर धी
र मेरे साथ आयेहुयेहैं बेरणमे डरकर और का
यर होकर घरमे लुकरहाहै अवी यमन चोउ
ल जोहैं सोकोपमे जायकर तिसको बांधलावें

१८ भ० २८

27

मत राजकुमार जानकर शंका करें और तिसको
छोड आवें तव तोवे मेरे हाथसे वडा कठिन दंड
पावेंगे ऐसे जव राजकी आज्ञा भई तव चांडाल
जोहैं सो हाथों मे तलवारें धार कर मार मार
करते चल पडे तहां तिन्होंने सुधन्वा को रस्ते
मे आवते पाया और राजाकी आज्ञा सव स्पष्ट
करके सुनाय दई तव सुधन्वा सुनतेही वडी उ
तावलसे धाय कर और आयकर पिताके चरनो

पर भीम नावनाभया तब राजा देख कर वडी क
ठोर वानीसे कहने लगा कि अरे मंद तूं मेरा पु
त्र नहीहैं कि जो वीरताको त्याग कर और काय
र होकर घरमे छिप रहाहैं ऐसे पिताके मुखसे निरा
दरके वचन सुनकर सुधन्वा नम्र वानीसे हा
थ जोडकर विनती करने लगा कि हे नाथ मै
जिसका रणसे पीछे रहाहूं सो आप कृपाक
रके सुनिये जव सव सेनाके सहित सूरवीर

१९ भ० २८

सजस जाय करके निकलेथे मैभी तिनके साथ हीं निकला परंतु रसतेसे फिर कर विदाय लेने के वास्ते माता के भवन मै चलागिया तहांहीं कृपानिधान मेरेको कुछ देर लग गईहै कुछ जान बूझ कर अपराध नहीं कियाहै। ८। चौपाई। तव जग हत हंस धजराये। संख लिखतपैं वेग पठाये। हतन जाय नरेस वषाना। भलेपास कल कछु सकुच नमाना। सैनप सवन मेंचि

२८

भट मारे। आयसु समर हित संग हमारे। श्रीहनुमंतं
इन्हतन जोई। ऐसो सदन रण कादर होई। सबतें पा
छिल मोहिं पै आवा। याको सासन दंड कस गावा। जथा
उचित तब देहु विचारी। शिरदंड याको अतिभारी।
सेव लिखन नव भूपति पासा। पठेहन अस वचन
प्रकासा। तब नरेस वस तैल कराहू। कीन्हा तपन
अनल वन दाहू। कादर समर विमुख नरकाहीं त
व सासन जारन नहि मांहीं। जो अब पुत्र पत्र वसहोई

१९ मं. २६

२९

करहु भंग मग आपन सोई। सोहम नन[illegible]व देस न
वराई। पाछे करहु जवन मन भाई। हंस केत फिग हू
ननजाई। दयो परो हित कथन सुनाई। दोहा। त
व नरेस निज सचिव सबि वोलि निकट सम
झाय। करहु हनन इह सबहिं नव जन नमोर म
एजाय। ९। टीका। नव हंस धज राजाने अपने दोह
न संख और लिखनके पास भेज दिये तिन हतोंने
तिनके पास जायकर और निर संक हो कर रा

२६

जाका कथन सब सुनाय दिया कि सेनापती मंत्री
और सब सूरवीर रणमै लड करनै के निमित्त हमारे
साथ आये और इह भीरू अर्थात डरनैवाला मेरा पु
त्र सुधन्वा जो है सो रणसे कायर होकर घरमै बैठ र
हा और बहुत चिर वर्तीत करकै सबके पीछे मेरे पा
स आया है तांते इह बडा अपराधी है इसको शास्त्रकी
विधी अनुसार जो दंड होना है सो देवो तब सेवक
लिखत ने सुन कर अपना दूत राजाके पास भेजा ।

१९
अं.
३.
30

कर कहा कि हे राजन तुमारी आज्ञा है कि तेलका
कराह तपाय राखो जो कोई रणसे विमुख होगा
तिसको तुरत ही तिसमें डालकर भस्म कर दे
वो सो अब तुमारा ही पुत्र रणसे विमुख भया है जो
कदी पुत्र पक्ष करके तिसकी रक्षा करनी चाहोगे
और अपने प्रणको भंग न करोगे तो हम तुमारे
देसको त्याग जावेंगे पीछे तुमारी जो इच्छा हो सो करनी
तब दूतने हंसध्वज राजाके पास जायकर अपरोहितोंका कथन ३.

सव सुनाय दिया राजाने सुनतेही मंत्री जोवजीरथा
तिसको निकट बुलाय कर आज्ञादे दई कि जातेहीं
इसमेरे पुत्रको तेलके तपत कड़ाहे मै जलाय क
रके मारदेवो कि मेरे प्राण की हानी नाहोवे।४।
चौपाई। मंत्री नृप सुन लियो हंकारी। संख लि
खत पहं चल्यो सिधारी। मारग भवन सुनङ्ग
सुनराई। अहोदेव गति लख्यो नजाई। इह त
सुहार हग दसा विलोकी। उपज मोहि उखज

१८
भं०
३१

31

नष्ट त्रिलोकी। छूटत आज नकाय अभागी। जो
इह चल्यो हनन तव लागी। मोरे प्रभु कर तव
खल प्यारे। कहि प्रकार अब हनहुं तमारे। जो
नकरहुं फुर सासन स्वामी। तोमै होइहुं नरक
पथगामी। लोक अलोक जगत इह मोरे। वि
गरहिं किये हनन विन तोरे। सचिवन सनि व
व सचिव सधन्वा। भन्यो वदन उर धरि प्रसन्वा
सकुच सोचतजि सचिव उदारे। पित नदेसजस

दीन नम्हारे। करहु सफर निज धरम विचारी।
सचिव होहिं कल्पान नम्हारी। इहि विधि म
नन परस्पर दोऊ। आये संख लिखन हिग सो
ऊ। तिनहुं देखि हग राज कुमासो। महुं को
पि सख वचन उचारो। दोहा। पावन छत्री वं
स नव जनमेगो भूपति गेहु। होत विमख र
णतें अधम अपकीरति जगलेहु। अतप त्रा
म संग्राम नव सहो नमठ कदराय। नपन

१६ भ० ३२

तेल ग्रव जरहूं तोहि मरहु मंद दुरवपाय। ९०।

टीका। मंत्रीने राजाकी ग्राज्ञा पाय कर तुरत ही रथवां को वुलाय लिया ग्रोर संख लिख नके पासलैचला रसतेमै कहताहै कि हे राज कुमार दैवगती ग्रपारहै कुछ लखी नहीजा ती इहतमारी दशा देखकरके मेरेको मानो त्रि लोकीका दुख ग्राय प्रापत भयाहै इह मेरा ग्रभागी शरीर ग्राज कों नहीं छुट जाता जो

तमारे वध करने को चलाहै तुममेरे प्रभुके प्या
रे पुत्रहो वडा अनर्थ मै तुमको कैसे मारूं और जो
कदी स्वामी की आज्ञा मरी ना करूं तो नरकका
अधि कारी होताहूं इसदोनो ओर सेवडी कठि
न वारता वनीहैं जो तुमको नहीं मारता तो मे
रा लोक परलोक विगड जाताहै और जो मार
ताहूं तो स्वामी घातके पापकी शंका होतीहै
इस प्रकार मंत्रीका हृदय व्रत और स्वधर्म देख

१८ भ॰ ३३

करके सुयज्ञ बड़ा प्रसन्न होताभया और कह
ने लगा किहे प्रवीन मंत्री अब तुम शोक संकोच
सब त्याग देवो और अपने धरमको पालो पिता
ने तुमको जैसी आज्ञा दईहै तैसीही पूरनकरो
इसमें तुमारी सुंदर कल्यान होवेगी ऐसे परस्प
र दोनो वार्ता अलाप करते हूये सब लिखन
उपरोहितोंके पास आय प्रापत भये तब सो।
ब्रह्मण राजाके पुत्रको देख कर महा कोपसे।

३३

कांपते हूये कहनेलगे कि हे अधम तूंने बडे प
वित्र क्षत्री वंस मै राजाके घर विषें जनम लिया
और धिग है कि रणसे विमुख होकर इह संसार
मै कैसे अपजस को प्रापत किया और जद जुद
के धूप घाम को तो तूंने कायर होकर नही सहा प
रंतु अब देख कि मंद तेरे को इस महा तपे हूये ते
लमै कैसे जलाते हैं और कैसे उखपाय पायक
र मरता है। ९। चौपाई। हरषि सुधन्वा वचन अ

१८
भ.
२४

लावा। करहु विप्रवर जो तोहि भावा। मैं तो प्रभ
य अचल मनमाहीं। वणते भयो विस्मय कछु
नाहीं। मम कदराई वीरता जोई। जानतहूं नंद
नंदन सोई। घटघट की प्रभु जानन हारे। भ
क्तेटक जग रावन वारे। सुनि अस उग्र वचन
मुनि राई। बोले संख लिखन विसकाई। मंद कर्म
निजजे तुम कीना। ता सलेहु फल अवहि नवी
ना। अस कहि कोपि परोहित पापी। राज कुव

र कहं कादर पापी। भन्यो सचिव सन अव परि
पहा। उरहु इत नव नपन सनेहा। पकरत स
चिवस पन्ना काहीं। सकुच विचार कियो क
छु नाहीं। सायुध सेजन वसन अभरना। उरन
चले तेल नप तरना। नव कि शोर नृप सुभट
सुपरमा। अग्रगन्य रण विक्रमि वरमा। परि
हरि आन गनी मनमाहीं। लागेपा सुमरण
जडवर काहीं। छंद। पहो जव जवे भव भी

र स्वर येन उज धरा तव थीर तव दीन देवा। उतै
प्रल्हाद प्रल्हाद दै हरन उाव भये मनि तरन
जीय जनन सेवा। दीन गज राज ग्राह फंद चु
न की इत विरद निज चीन जग मजम लेवा।
पतितन हूं पातकन पन होत हेपति हुपन गविप
त पतित उवर्न देवा। दोहा। नम प्रनाथ मै ना
थ तव दीन वंधु भगवान। मम हीयकी गति
विदन सव तमरे कृपा निधान। जोवे मव रग

तैं रहो जन कदराय अगार। तपत तेल तवक
रहिं मोहि जारि तरत इत भार। जौकादत्ता ह
दय मम कछु नरही जडवीर। तो सनेह पाव
क तपत होहि सुसीतल नीर।।१२।। टीका।। त
व सथन्वा जो है सो वडे आनंद मै मगन भया
हुआ कहने लगा कि हे ब्रह्मणों मै स्पष्ट ब्रा
ह्मण अवजो तमारे चित्तको भावती है सोई
करो मैतो अपने मनमे अभय और अचलहं

१९ रणसे कुछ कायर नहीं भयाहूं भगवान की कृ
भ॰ पासे मनभाव हूं विभाव नहींहूं मेरी कायरता
२९ और वीरता को जड़नाथ महाराज भली प्रकार
36 जानतेहैं क्यों कि सोई दीनबंधु घट घट की बू
झन हारे और भक्तजनोकी टेक राखने वारेहैं
ऐसे राजाके पुत्रका कथन सुन कर संख
और लिखत दोनो बड़े कोपसे कहने लगे।
कि अरे अभागी तैने जो मंद करम कियाहै।
२९

तिसका फल तूं अवीले इसप्रकार सो पापी उ
परोहि तिस राजकुमारको रणमे कायर ओर

विसुख जानकर मंत्रीको कहने लगे कि क्या
देखतेहो इस अधम निरलज्जको पकडकर न
पेहूये तेलमेडार क्यों नहीं देते अब क्या विलंभहै
तब मंत्री और उसके साथके पुरषोंने ततकाल
हीं निरदय होकर सुधन्वांको बांधलिया और
भूषण वस्त्रोंके समेतहीं तिसको तपेहूये तेल

१८ भ. पु. ३७

मे डालनेके वास्ते लेचले तबतिस समय सोरा
जाका पुत्र रणमे बडे पराक्रम वाला और सूरवी
रों मे प्रधान लक्ष्मी धरम की निधी स्वधन्वा जो है
सो और सबके भरोसेको त्याग कर एक कृस्न
भगवानका स्मरण ही करने लगा कहता है कि हे देवन के देव गो ब्रह्मण
पृथ्वी देवताउं को भी विनती रक्षी नव तव कृपा निधान तुमही धीरज
देते रहे और जहां प्रल्हादका दुःख निवारण
करके जगतमे तुमही तिसको स्वजसका भाज।

२८

न भी वनाया गौतमकी स्त्री अहल्या जो वहुत
कालसे शाप के वश शिला वनी हूईथी तुमारे
हीं चरनके प्रभावसे तरकर वैकुंठको चली जा
तीभई और हे दीनानाथ तहां ग्राहके हाथग्र
से हूये गजराजकी पुकार भी तुमहीं सुनी औ
र द्वारिका तें धाय कर तिसके फंदनभी तुमहीं
छुडाये हे भक्त सनेही तुम सदैवही अपने जनो
की सहायता करने रहेहो देखो तहां कौरवों।

की सभामै दुर्योधन होतो द्रौपदी की पतभी तुमहीं
राखी और अजामिल आदि अनेक पापियोंका
भी तुमनेहीं उद्धार किया है तिसी प्रकार हे ना
थ मै अनाथ भी अब आपकी शरणको आधा
र करताहूं क्योंकि मै जैसा कैसाहूं दीन बंधु।
तुम भली प्रकार जानतेहो जो कदीमै रणसे वि
मुख और कायर होकर घरमै रहाहूं तो इह अ
गनी वन महां तपन देलजोहै सो मेरेको ज

लाय कर अबी भसम करदेवे और जोमै रणसे
कायर और बिमुख नहीं हूं तो इह तपाहुआ ते
ल मेरेको सीतल जलके समान होजावे । १२ ।
चौपाई । अस कहि तपत तेलमै जाई । कूदि प
रेो सुमरत जदुराई । भरो तेल तहां मनुज
प्रमाना । भवकत अनल भीम भय दाना । प
रेो तहां जब न्रप सुत धीरा । पुवसो मन
हूं देव सरि नीरा । तपत तेल पावक प्रद जा

१८ भ. ३९

सा। तासु सखिद सीतल जव भासा। लोक वि
लोकि भनत विसमाई। इह नृप सवन भक्ष
जउराई। संख लिखत तव कोपित बानी। स
नहु सचिव श्रम वदन बखानी। विपुल वैर
कर चह्यो सनेहू। रह्यो तपत नजि सीतल प
हू। याते नसोन राज कमारा। धों जानत कछु
मंत्र विचारा। सचिव कह्यो नहिं तेल जडाना
तम कहं उज सकयो कछु आना। संख लि

39

३९

खन नव हृदय रिसाई। नारिये रफल लीन मं

गाई। नपन तेल महं दीनसि डारा। परन न्हवें

न होत जग फारा। तीव्र वेगसों लेन उछाला

सख लिखनके लग्यो कपाला। फूटि गये ज

गलन कर सीसा। परे धरनि डुन प्राणन खी

सा। देखि सचव अचरज इह भारी। गये हंस

ध्वज सरण सिधारी। कह्यो वृतांत सकल ज

स भयऊ। भूप वेग निज सुत पें गयऊ। नर

१९ न नेलतें लियो निकारी। चूमत वदन लेत व
भ॰ ल हारी। दोहा। सुभट सुथन्वें भूप तव कं
धि॰ चिन रथ बैठारि। चल्यो सइ विन जइ हित
40 करि अनेक मन हारि। ८३। टीका। तव ग्रैसे
कहिकर सुधन्वा जोहै सो जइ वीरको सुम
रता हुआ तिस तपे हुये तेलमैं कूद पडता
भया तवसो तेल अत्यंत भयके देने वाला
मानुष्य प्रमाण जो कडाहै मै भराहु आया
धि॰

तिसमै जव राजाके पुत्रने प्रवेश किया तव
ऐसे प्रतीत भया कि मानो गंगाके सीतल
जलमै जाय पराहै ऐसे सव लोक देख कर
के वडे आचर्ज को प्रापत होगये और कहने
लगे कि इह राजाका पुत्र तो भगवानका व
डा दृढ भक्तहै तव संख लिखत इह चरि
त्र देखकर वडे कोपसे मंत्रीको कहने लगे
कि इह तेल जोहै सो वहुत चिरका चपाहु

१६
भं०
५२

आ सीतल होरहाहै इसतें इह प्रथम जलानहींहै
अथवा कुछ मंत्र जंत्र जांनताहै तब मंत्रीने क
हा इह तेलसीतल नहींहै तमहीं इसराजकु
मारके प्रभाव को जानते नहीं हो तमारे को
कुछ और सूझाहै इसप्रकार मंत्रीके मुखसे
वचन सुनकर संखलिखित बड़े कोपसे दोफ
ल नारियेरके मंगावते भये और प्रीताके बा
ले तरतहीं तिसतपे हूये तेलमें डारदेते भये

५१

तव सो नारियर तैलमैं पड़ते हीं दोफाड होक
र और तीव्र वेगसे उछल कर संख और लिख
नके कपालमैं जाय लगे तिनके लगतेंही सि
र फूट कर दोनो मरगये तव मंत्रीके सहित
सव लोग इस अद्भुतको देखकर वड़े आश्चर्ज
कोप्राप्त हूये और तैसेंही राजा हंसध्वजके पा
स जायकर सव वृतांत सुनायदेते भये राजा
सुनकर आश्चर्ज भयाहूआ तुरत धायकर के

तहां पुत्रके पास चलागया तव जातेही तिसको

तेलसे निकालकर फिर वारवार मुख चूम चू

म कर वलिहारे होनेलगा तिसके उपरांत ति

सको अनेक वडाई और अपनी लघुताई करक

र वडे सनमान से केचिन के रथपर विदाय क

रके शुद्ध चित होकर पुत्रके वासते रण भूमी

को ले आवता भया। १२। चौपाई। तव तिर दोष

कहत सुत साथ। किमहू मोर अन चित अप

राधू। साधु सुयस्वो धरम प्रवीना। बोला पितहिं जो
रि करदीना। तुमरो दोष पिता कछु नाहीं। होन
हार व्यापत सब काहीं। इहिमहं ने सुक सोच नकी
जैं श्री जउ वीर चरन चित दीजै। प्रभुकी गती वि
दत प्रभ काहीं। बपुरो मनुज जनन कछु नाहीं
लखि अनन्य जन करि विस्वासू। हरहिं विपति
डर रमा निवासू। अस कहि सुमरि हास च
न स्यामा। मिल्यो जाय निज सैन ललामा। वीर

१९
भ०
५२

43

सुभट सब हगनन देखी। मानन भये प्रमोद ब
सेखी। दोहा। भूप हंस धुजदीन नव सासन सबन
सुनाय। वनस्रज सकल प्रवीर उर लेहु ललित
पहिराय। शास्र सुनत हरि नाम कल करहु रट
न सब कोय। जो हरि नाम न कढहिं मरव वद्ध
हिं समर जनि सोय। ५४। टीका। फिर राजा कहू
ताहै किहै पुत्र तेतो सर्व प्रकार करके निरदोष
हैं और माथहैं मैही अपराधीहूं और मेराही स

वदोषहै तुम क्षमा करने योग्यहो मेरेको अहंकर
जान कर क्षमा करो तव धरम मे प्रवीन ओर सा
धू स्वधर्मा जोहै सो पिताको हाथ जोड कर कहने
लगा किहे पिता तुमारा दोष कुछ नहींहै इह
होन हार जोहै सो समय पर सबको व्याप जा
तीहै अब इसमै चिंता मत करो श्री जड वीर म
हाराजका स्मर्ण करो भगवान की गती को
भगवानहीं जानते हैं तहां मानुष्यकी का सा

मर्थहै औरका जानताहै भगवान कृपा निधान
अपने जनका दुष विस्राम देखकर और कोम
ल होकर तिसका दुखकलेश और विपती सब
काट देतेहैं ऐसे कहिकर जडनाथका स्मरण
करता हूआ अपनी सेनामे जाय मिला तब सब
सूर वीर तिसको देखकर वडे आनंदको प्रापत
भये तिसतें उपरांत राजाहेम धज सब सेना औ
र सेना पतियों को ऐसी आज्ञा देताभया कि भै

४४

या सबकोई अपने अपने गलेमै तुलसी की मा
ला पहिर लेवे और शस्त्रोंके वार करने और ल
गने पर हरि हरी शब्दके विना और कुछ उचा रणनहींकरोजिसरथ
नेहरिकानामउ चा रण नहीं करना सो रण भूमिका मै कदाचित
नाजावे। ५। चौपाई। वहुरि सुधन्व भयो नरेसा।
एक रङ्ग पारथ वाजि सुवेसा। मानि जनक निज
सासन वीरा। ल्यायो पकरि वाजि द्रुत धीरा। रवि
सुत पदम हंस धज राजा। ठाढ़ भयो जुत भट

१९
भं.
४५
45

न समाजा। तब हनन पारथ फिरि जाई। तुरग ह
रन सब कथा सुनाई। हंस केतु नृप धरयो तुरंगा
ठाढो सैन सहित महि रंगा। तब प्रद्युमन पार
थ ततकाला। बोलि सुभट सब कहयो हवाला। ग
हयो हंस धज वाजि हमारा। ठाढ समर दल सा
जि अपारा। वहुरि धनंजय वचन उचारा। सुनहु
वीर वर कृस्न कुमारा। समर हेतु अनुमति म
म जीकी। लागहिं तुमहिं तात जोई नीकी। तोह

४५

म तुम सात्यकि अनिरुद्धा। समर भूमी सन मावरि

प्रक्रुद्धा। लैसंग सुभट प्रवीर महाना। लरैं समर

करि कौतुक नाना। दल नायक तुम सुभ उलारे

तुमसों सकल सुरासुर हारे। दोहा। तुम मोरे प्री

य प्राण अति सुभट सूर सिर मोर। आगल हमरे

इकुन रण लरन उचित नहितोर। हम आगै भेट

नि समर लरैंधीर हठधारि। तव पराप दल नात

नकि लीजोजतन संभारि। ५। टीका। फिर राजाने

४९ म ४६

46

सुधन्वाको कहा कि हे पुत्र जाके अर्जुनके सुंदर
और शुभ भेषवाले घोडेको पकडो इस प्रकार पि
ताकी आज्ञा पायकर सुधन्वाने जातेही तुरत ति
स घोडेको पकडलिया तब हंसध्वज राजा सुंदर
पदम व्यूह रचकर सेना और सब शूरवीरोंके स
हित रणमें स्थित हो जाता भया और इन्हो हतोंने
अर्जुनके पास जाय कर घोडेके पकड लेनेकी
खबर सुनाई कि महाराज हंस ध्वज राजाने आ

पका घोड़ा पकड़ा और सब सेना भलीप्रकार स
जाय करके रणमें स्थित भया हुआहै ऐसे दूतों
के मुखसे वचन सुनकर प्रद्युम्न और अर्जु
नने ततकाल अपने सब सूर वीरोंको बुलाय
कर घोड़ेके पकड़े जानेका वृतांत सुनायदिया
कहा कि हंस ध्वज राजाने हमारा घोड़ा पकड़ा
है और दल अपार सजाय कर रणमें स्थित
भया हुआहै फिर अर्जुन कहने लगा कि हे

१८ भ. ४०

वीर धीरोंमें प्रधान प्रद्युम्न जो तुमको भावती
हो तो रण करने में मेरी इह समझती है कि हम
तुम साम्बको और अनिरुद्ध सूर वीरोंके सहित
सबसेना लेकर शत्रुके सनमुख रणमें युद्धकरें
और वेह हलस ढुलावे तुमजो हो सो सब दलके ना
यक रहो तुमारेतें सुर असुर सब हारे हुयेहें
और मेरेको तुम प्राणोंसे भी अति प्यारे हो हमा
रे होते रणमें तुमारा लडना योग्य नहींहै हम

धीरजको धारकर आगे मनमाव जायकर लड़ेंगे और तुम वीर पीछे अपने दलकी जो किसी प्रकार हानी देखना तो तिसको संभाल लेना। ५। चौपाई। बिहसि प्रद्युमन तव वचन अलाये। साची सुनहु सुभट समुदाये। इह सम समर सुराह रनाहीं। औरहिं प्रसंग आन इहि माहीं। इह अनन्य हरि दास नरेसा। परम धीर ध्रुव सुभट सुवेसा। छची विदत वीर वलधामा। सव कर करहिं।

नोष संग्रामा। उर्ध पुंड्र मसतक कल टीको। उर ब
नमाल ललित ग्रीव जीको। इह सब विधि आप
नो नरनाहू। पैइलैभ जीतन रणताहू। कह पार
थ तुम सत्य उचारा। इह हमरे न्रप प्राण पयारा
छत्रि धर्म लखि दै रणडंका। आयो अजै विजै न
जिसंका। अस पारथ प्रद्युमन बलधामा। करि
सम्मति जग सुभट ललामा। समर हेत समर
न जडराई। दीन्यो मन मानव सैन चलाई। नव ह

49

घकेत वीर बलवाना। अरजन सों अस वचन ब
खाना। दोहा। लखहु जउ मम छिनक रहि पति
विक्रम निजवीर। कीजो जस रुचि रुचिर नव स
मर धारि उरधीर। ९। टीका। नव प्रद्युमन जो हैं
सो हस करके कहने लगे कि हे सब वीर धीरो
मेरा वचन सत्य करके सुनो जो इह रण सर अस
रोंके रण समान नहीं है इसमें कुछ और ही प्र
संग है क्यों कि इह राजा जउवीर महाराज का।

१८
भ.
४५

वड हढ भक्त है और धर्म धीरजमे अचल महा
सूर वीर वल प्राक्रम की निधी और छत्री है रण
मै भली प्रकार सबको संतुष्ट करेगा अर्थात प्र
सन्न कर देवेगा देखो जिसका महा प्रवल दल
चारो और परिपूर्ण हो रहा है जे हरी जे नंद कि
शोर पद्दीशाह है जिनके मुखमै मस्तकों मे सुंदर
उर्ध पुंड्र अर्थात रामानंदी तिलक और [illegible] ह
दों मे तुलसी की सुंदर माला जिनको प्यारी लग

नेवालीहैं यद्यपि इह राजा सर्व प्रकार करके श्रप
नाहीं है तद्यपि इसको रणमैं जीतना बड़ा दुर्लभ
हीं प्रतीत होताहै अर्थात कठिनहीहै तब अर्जुन
कहने लगा कि हे हंस कुमार तुमने सत्यहीं क
हाहै इह राजाभगवानका भक्त हमको प्राणोंसे
भी प्याराहै जो दच्छी धर्म विचार कर और जीत हा
रकी शंकाको निवारण करके डंका बजाय कर
रणमैं युद्ध करने के वास्ते आयाहै इस प्रकार।

१९ भं ५

वल पाक्रमके धाम प्रद्युमन श्रौर अर्जुन परस्पर

सम्मती करके फिर आनंद पूर्वक जडवीर का

सुमरण करते हूये सेनाके सहित जडकी अ

भिलाषासे रंग भूमी को चल पडतेभये तव महा

वीर श्रौर वलकी निधी हृषकेन्त जो था सो अरज

न को कहने लगा कि हे महावाहु श्रौर पाक्रम

के धाम अर्जुन अवकुछ छिन भर रहि जावो प्र

थम मेरा युद्ध देखलेवो पीछे जैसी तुमारी रुची

५

50

होगी जैसे रणमै धीरज धारकर अपना अपना
वल पराक्रम जोहै सो मन माखे हो कर दिखाव
ना। ९६। चौपाई अस कहि कियो संख धनि घोरा
छायो हंस केत दल शोरा। चल्यो जात मन माखे
मनमाषा। भटि नृप केत समर अभिलाषा। देखि
सुधन्वै कह्यो उचारी। कोइक सुभट करन रणवा
री। आवत चल्यो एकलो सोई। नव इत रहो ठा
ढ सब कोई। यासों मै अब जाय अकेला। करहूं

१९ मे० पा

धर्म भारत रण मेला। अस कहि सनमाव चलो सि धारी। गहि कुदंड कर हास उचारी। सुह्योना सु समर महिजाई। कवन वीर नव देहु बताई। मै वृषध्वज सुत करन कहावहुं। तुमहुं नाम नि ज जनक सुनावहुं। दोहा। मैसुत भूप मराल ध ज जन जड वर निसकाम। कहत सुधन्वा नाम मम विदत वीर संग्राम। सुनत कथन वृष केत अस गहि कुदंड धृति धार। कुत संधानत वान

५१

शत्रु सन मख किये प्रहार। ९। टीका। ऐसे क
हिकर वृष केतु जोहै सो संख की महां छोर धु
नी करता भया तिसका शोर हंस धजके संपू
र्ण दलमें व्यापत होगया फिर जङको अभिला
खा वाला परम कोपसे गरजता हूआ शत्रुके
सन मख कों चलपडा तब तिसको आवनेको
देख कर सथन्वो कहने लगा कि इह कोई
वीर रणमें जुद्ध करने को अकेला हीं चला

१६
भं.
५२

आवताहै अब तुम सब शूरवीर ईहां स्थित रहो
इसके साथमै हीं अकेला जाय करके रणमै य
र्म युद्ध करताहूं ऐसे कहि कर और हाथमै धन
ष धारन करके हस्स हस्स उचारण करता हूं
आ सनमुखको चलपड़ा और रणमै जायकर
ऊचीस्वरमै पछता भया कि हो वीर तुम कव
नहो मेरेको अपना नाम सुनाय देवो तव सो।
कहने लगा कि मेरा नाम हूष केतहैं और क

रण का पुत्र हूं तुम अपनी कहो कि तुम कौन हो
तव वे कहता भया कि जडवीरके दासों मै जो हं
सुध्वज नाम करके राजा है मै तिसका पुत्र हूं श्रोर
सुधन्वा मेरा नाम कहते हैं श्रोर कृस भगवानकी
कृपातें रणमै अचल श्रोर धीर्ज के धारने वाला
सव लोगों मै प्रसिद्ध हूं इस प्रकार सुनते ही हु
षकेतु जो है सो तुरत धनुष लेकर श्रोर धीर्जको
धारकर तिसपर एक वारही सो वाण छोड देता

१६ भं० ५२

भया ।९। चौपाई । लखि आवरन सरन जीय माहीं । सुभट सधन्वा जडु वर काहीं । हृदय सुमरि निज बान महारो । कादि तुरंत नास सर डारो । वहुरि हनत सर कोप मलीना । रथ समेत सारथि हत कीना । पुनि मारो सर वृष धज काहीं परो विकल मर्छिन छिन माहीं । सारथी आन नवल रथ ल्याई । चल्यो डारि द्रुत नास लिवाई । निजदल जात जग्यो मुर्छीना । आयो वदन भट स

दय लजाना। नास प जय हगान निहारी। म्रान
वीर उर धीरज धारी। म्रज मंनस लखि सुभट ति
काये। सिंह नाद गर जत रणधाये। उतै हंसधज
सैन प्रवीरा। म्राई भनत जैति जडवीरा। जुगदल
मिलत भयो म्रति सोरा। मानहुं मिले जलध द
हुं ओरा। भा म्रनन्त तहं घाव प्रहारा। छयो धूरि
धरनी अंधयारा। भये सुभट घायल समुदाई।
श्रोणत सरत वहो रण जाई। समर सुरासुर सर

१८
भ
५४

54

स अपारो। भयो इमन वरवीर जकारो। तहांस
थलै रथहिं चलाई। अरजुन दल वाणन झरिला
ई। मारत सर जय जड वर भाखी। कुल मिलन
मानस अभिलाखी। रह्यो महा रथि अति रथि सोई
भयो वीर सनमुख नहिं कोई। दोहा। चाहत छि
न महं हनन सव पारथ दल रण धीर। लखि।
सात्य कि अक्रूर जन कृत वर मादि प्रवीर। और
ऊं जेजे समर भव सूरवीर वलमान। सुभट स

धनुवैं धरो विस लगे प्रहारन वान। उनै सुधन्वा।
वीर वर करत धनुष टंकोर। हनन लाग सर
टरि सब जैजै नंद किशोर। ८। टीका। जब इस
प्रकार वृषकेतु के बाण सुधन्वा को आवर्नेक
रलेते भये अर्थात छेद लेते भये तब सो वीर
प्रधान जदुनाथ का सुमरण करता हुआ अ
पने धनुष में जोड कर एक ऐसा बाण मारता
भया कि जिसने छूटते हीं तिन बाणों को खंड

१९
भ॰
५५
55

खंड कर दिया फिर तैसेहीं कोपसे हसता और
बाण मारा कि जिसने सारथी को मार कर र
थकोभी भंजन करदिया तिसनैं उपरांत एक
बाण हषकेतुको मारा कि जिसके लगते हीं
सोवीर मूर्छासे व्याकुल हो कर पृथवी पर गि
र पडा तब नये सार्थीने नयाहीं रथ ल्यायकर।
और तिसको तरत ही तिसपर डार कर ऐसी
शीघ्रता करी कि मानो उडाय कर लेगया तब

अपने दलमें जाय कर कुछक वेरके पीछे ति
सकी मूर्छा खुली और जागा अपने प्राक्रम।
की हानी देख कर लज्जित भया हुआ मुख ऊ
पर नहीं उठाय सकता ऐसे तिसकी हार देख
कर और सब सूर वीर हृदय मे आचर्ज मान
ते भये और फिर धीरज को धार कर सिंह व
न गरजते हुये रणको सनमुख चल पड़ते
भये और जहां हंस धजकी सेना जै जइवीर

की ऐसे उच्चारण करती हुई चली आवती है दो
नो दल इस प्रकार मलते भये कि मानो परस्पर
दो बादलों के समूहों का संजोग भया है शस्त्रों
के अनंत प्रहार होनेलगे जडकी घनी धम
सानसे धूरी उडकर आकाश छायन होगया
और अंधेरा पडगया सूरवीर जो हैं सो अनंतहीं
मारे गये और अनंतहीं घायल होगये रण भू
मीमै जहां तहां रुधिर बहा चला जाता है सूर

असुरों के समान बड़ाघोर जुद्ध होता भया तब
सुधन्वाने रथको आगे चलाय कर अरजुनके
दलपर ऐसे बाण मारे कि मानो झडी लगाय
दई और जब जब बाण मारता है तब तब जै
जै वीरकी उचार ताहै और जुद्ध वीरके ही मि
लनेकी अभिलाषा रखताहै फिर कैसा महा
रथी और अति रथी सुधन्वाहै कि जिसका स
न मुख कोई भी नहीं करसका और जो छिन

भरैमे अर्जुन के सबदल को मारदेना चाहताहै न
व सात्यकी अक्रुर कृत वरमा इत्यादि श्रौर जो र
णमे अचल श्रौर पाक्रम की निधी सूर वीरथे
सो सब सूथन्वा को कोपसे विसके भरे हूये वा
ण मारने लगे श्रौर इन्हो वीरोंमे प्रधान सूध
न्वाभी धनुषमे जोड जोड कर वडे कोपसे वाण
मारता श्रौर जैनंद कुमारको पुकारताहै। ८।
चौपाई। सुनत नाम जादव जडनाहू। भये विग

न भारत उतसाह्न। तव सथन्वे धरिथन्न रण माहीं
छिन मह्नं कियो विरथ सव काहीं। भलो भुजन
वल वान प्रहारे। सुभट सकल महि मछिन उा
रे। हनन धाव पुनि पारथ काहीं। हाहा मच्यो
सकल दल माहीं। आयो तव प्रद्युमन धरिधीरा
सलभ सरस छाडन धनुतीरा। छुट्यो प्रवाह्न स
रन जन्न सरता। हृदय धीर वीरन मन्न हरता।
हने सुभट महि समर उदारा। कटे मतंग तुरंग

१८ भं० ५८

58

अपारा। तदपि न डरत मरनतें वीरा। सहत समर

सनमुख सरधीरा। जैजैजै जड़वीर उचारी। देत

प्राण तृण धरनि जकारी। भूप हंस धज दल क

लमाहीं। सकल सुभट कादर कोउ नाहीं। यथा

रूप भाव हुलस उचारी। चल्यो धाय सनमुख

धनुधारी। दोहा। उनतें आये हुलस सुत विदत वी

र सिरमोर। भये सुभट सनमुख समर ठाढ़ि

जुगल इकठोर। रह्यो गुनतजनजनमनमेंवनत न पै।

हो प्रयास। तवपित तव दरसन चरन रही करन
उर आस। आज काम पूरण भयो तव प्रसाद र
ण माहिं। लेहुं सुजस सुख पगन परि करि तो
षित प्रभु काहि। ९। टीका। तव जादव जो हैं सो
इस प्रकार जिसके मुखसे जगन्नाथका नाम
सुन करके जुद्धके उतसाहसे नहम हो जाते
भये तब सुधन्वांने रणमें धनुष धारन करके
प्रैसे प्रचंड बाण मारें छिन मै सबको विरथ
कि

१९ भ॰ ५५

कर दया और ऐसा भजोंकावल दिखाया कि ति
नके सब शूरवीर मूर्छा करके पृथवी पर गिरा
यदिये फिर कोपसे अर्जनके मारने को धाया
तब संपूर्ण दलमे हाहाकार मच गया इतनेमे
सलभ जो सलया तिसकी न्याई अनेन बाण
छोड़ते हूये धीर्जके धाम प्रद्युमन जोहैं सो आ
य गये तिनके बाण जो नदीके प्रवाह समान
छूटे जातेथे तिनको देख कर किसीके हृदयमे

धीरज नहीं रहा और यद्यपि सरवीर हसती घो
डे रथ पयादे अनेक मारे गये और घायल भी
हो गये तद्यपि सो वीर धीर डरते नहीं रणमे
सनमुख ही बाण सहारते हैं और जे जड वीर
की पुकारते हूये भली प्रकार जूझ कर प्राणें
को त्यागतेहैं हंस धज राजाके दलमे सवही सू
र वीरहैं कायर कोई भी नहीं है तब इस प्रका
र अपनी सेनाका मरना और घायल होना दे

१९
भ०
६०

60

रवकर महाबीर सुधन्वा जो है सो जै जदुवीरकी
उचारता हूआ रथपर सवार होकर और हाथ
मे धनुष लेकर रणको सन मुख चल पड़ता भ
या और उधरतें वीरोंमे प्रथम गिनती वाले ह
ल भगवान के कुमार प्रद्युमन जो हैं सो आव
ते भये जब दोनो वीर सनमुख रण भूमी मे आ
य कर स्थित होगये तब सुधन्वा कहने लगा
कि हे नाथ तुमारे और तुमारे पिताके चरनो

६०

के दरसन करनेकी मेरेको जनमतें ही लाल
सालगी हुईथी परंत अबतक कोई समागम
और उपाय नहीं बन पडा कि जिसतें मै सहि
त कुटंबके सफल होता आज भागों की वडा
ई और कामनाकी पूरणताई जानताहूं जो
तुमारी कृपातें तुमारे चरनोंको वंदना करके
नाथ तुमको रणमै भली प्रकार विजायक
र मनी और जोगी जनो को दुर्लभ सरव श्री

१८ व सुजस जोहै सो प्रापत कहुगा ।१९। चौपाई। ना
भं. थ रुचिर सुजन रण तोरा। करि हौं पहु परम कु
६१ लमोरा। अस कहि वीर वान संधाना। मारो च
रन स्रवन भगवाना। कियो प्रणाम सुभट सव
हारा। तव प्रद्युमन अस ह्रदय विचारा। इह ह
फ दास चरन पितु केरो। यासन समर कहो क
स मेरो। अस गुनि तास प्रेम वस होई। लागे क
रन सिलरण सोई। अनहु वढन वढन जग।
६१

61

बीरा। छाडन लगे तीव्र नर तीरा। जिमि जिमि भ
रत रोष रण सूरे। तिमि तिमि कफ़न वंन विसतू
रे। होत परस्पर घायल बीरा। परे समर मूर्छित
गत धीरा। कछुकबेर पाछिल सुधि पाई। उठो
सुधन्वा समर बिसाई। हेरो बीर नसन मुखकोई
हरषो हृदय विजन रणहोई। तव कोपित अति
पारथ धायो। मारि सरन रथ नास उडायो। सुव
न हंस धज समर उदारे। हनन सरन सर नास


निवारे। बहुरि सुधन्वा मन अनुरागा। हरषि वच
न अस भाषन लागा। सुनहु सवे जड़ नायक के
रे। आज मनोरथ पुरण मेरे। दोहा। भीषम द्रोणा
चारजी चारज कृपा प्रवीर। सब जीते सब करन
लो धारि धरणि रण धीर। २। टीका। फिर सुधन्वा
कहताहै कि नाथ अबमे अपनी कुलके धर्म अ
नुसार रणमे तुमारा पूजन करताहूं ऐसे कहि
कर वीर प्रधान सुधन्वाने वान संधानकर अर्थी

न धनुष मै बाण जोड कर और नाक करके कु
म्ल कुमार के चरनो मे मारा तिसतें इह सिद्ध
भया कि वीरने बाण द्वारा प्रद्युमन को प्रणाम
किया तव कुम्ल कुमारने हृदय मै विचारा कि
इह तो पिताका अनतसे हुष्ठ सेवक और चर
नोका दासहै इससे मेरा किस प्रकार रण हो
सकेगा ऐसे विचार कर तिसके प्रेमके वश
भयेहुये प्रद्युमन मन तनसे सिथल होकर

१९ म० ६३

रणकरने लगे फिर अंतको बढ़ते बढ़ते दोनो
वीर गाढ़े बाण जो हैं सो छोड़नेलगे ज्यों ज्यों
रणमै क्रोध बढ़ता जाताहै त्यों त्यों हीं विसके
भरे हुये बाणकाफते जातेहैं अन्तको परस्प
र दोनो घायल और मूर्छा होकर रणमै गिर
जाते भये फिर कुछक वेरके पीछे स्वपनाको
सुधी आई और उठ कर क्रोधसे रणमै दखने
लगा जब कोई वीर सनमुख नहीं पाया तब

६३

63

अपनी जै मनाय कर वडे हरष को प्रापत होताभ
या इतने मे अर्जुन जोहैं सो परम कोपसे भरेहू
ये धावते चले आये और आवते हीं ऐसे वाणमा
रे कि तिसका रथ लुपत करदिया तिस समय
सुधन्वा भी वडा कोपाय मान होताभया ततका
ल अपने वाणों के प्रहारसे अर्जुनके सब वाण
निवारण करदिये और फिर हरषसे वडा प्रसन्न
हो कर अर्जुन को कहनेलगा किहे जदुनायके

64

सषे आज भगवानकी कृपासे मेरेसव मनोरथ पू
रण भयेहैं और मै जानताहूं किहमारी भजोंका
वल अनंत ही है कि जिसका अन्त नहीं क्योंकि
तुमने भीषम द्रोणाचार्ज कृपाचार्ज करण इत्या
दि महारथी और अति रथी जो वीर प्रधानथे
सो रणमै सव जीते हूयेहैं ।२०। चौपाई। तव मे
रे प्रभ भारत घोरा। रह्यो धनं जय सार्थी तोरा
अव कत तास महां भट त्यागी। आयो ईहां सम

र अनुरागी। कोटि जतन किना करि करि रैहौ
बिनु साथी निज विजय न पैहौ। तांते साथी बो
लि अपाना। धरहु मोर सनमुख धनु पाना।
मै अनन्य सेवक जड नाहू। सपने हूं आन
भरोस न काहू। हन्यो भनत अस सायक धो
रे। सर प्रहारि पारथ सब तोरे। पवि बान अ
वज्रन तब मारो। हनत सलिल सर तासनि
वासो। अस्त्र दिव्य पारथ पुनि प्रेरे। दिव्य अ

१६ भं. ६५

65

सब हनि ताम नवैरे। जबनिज विजय होत नहिं जाना। तब लागेपा सुमरण भगवाना। ततछण भक्त भीर भै हारी। भये प्रकट सुमरत नगधारी लषत सुधन्वा जड़वत काहीं। रथते उतरि मुदित मन माहीं। त्राहि त्राहि मुख वचन उचारी। नयो सीस पद पदम मुरारी। जैजैजैति जगत उपजावन। हरन त्रास जन सुजस बढावन। सदा पैज निज भक्त रखैया। मंडिन परनि देव उज

गैया। अनघ अज्ञ अज भव अव नासी। चिदानंद

सद भवन प्रकासी। दीना नाथ दीन दुख हारे।

दीन वंधु दीनन हित कारे। जै जै जैति कलपद्रु

म रामा। पुरवहु कस न जनन मनकामा। जैपा

र्थ सारथि जदु नायक। भगत संत सज्जन सुख

दायक। आज जनम जन सफल सुहावा। धन्य

धन्य संसार कहावा। पितर देव सब तोषित भ

येऊ। जोरहु हगन दरस प्रभलयेऊ। दोहा। क

सदेव हृद्ध दास लषि भक्त सुथनैवं काहिं। गासो
वाग पारथ्य सुलन करन केंज निज माहिं। क
रि प्रणाम उत रथ चढ्यो स्यवन हंस ध्वजराय
लग्या करन भारत समर वीर धीर धरिकाय। ५१

टीका। फिर सुथन्वां कहता है कि हे अर्जुन जब
तहां घोर भारतमें तमने सब वीरधीरोंको जीता
था तबतो मेरे प्रभु कृष्णपरमात्मा तिस रणमें ते
रे सार्थीथे ते तिनकी कृपातें सब सूरवीरों को

जीता और अब हमारी बार तिनको कहां छोड़
कर अकेला जुद्ध करने को आयाहैं परंतु तूं
जाण कि यद्यपि कोटि यतन भी कर कर हा
रैंगा तद्यपि अपने तिस साथी के बिना कबी
जीत नंही पावैं गा तांते योग्यहै कि अपने
साथीको बुलावो और फिर धनुष पकड़कर
रणमे मेरे सनमुष आवो क्यों कि मै जुद्ध ना
थ महाराजका इष्ट सेवकहूं तिनके चरनो

१८ भं० ८८

के विना मेरेको और कोइ भरोसा नहींहै ऐसेक
हिकर वीरधीर सुधन्वा जोहै सो धनुषमें जो
डकर वडे कठिन वाण चलावताभया तव उध
रसे अर्जुनने वाणोको आवने देखकर और
अपने वाण मारकर तिनको तुरतनही खंड
खंड करदिया और वडे कोपसे पन्नी अर्थात अ
गनी अस्त्र जोहै सो मारा तव सुधन्वाने वारु
ण अस्त्र मार कर तिसको निवारण करदिया

67

८८

फिर अर्जुनने दिव्य अस्त्र मारा तिसनेभी दिव्यही अस्त्र मार कर खंडिन करदिया इस प्रकार अर्जु नेने जब अपनी जीत होती नहीं देखी और स धन्वाको प्रबल जाना तब भगवानका स्मरण करनेलगा तिसके स्मरण करतेही भक्त ज नोका भय हर करने वाले दीन बंधु भगवान जोहैं सो तहां रणमैंही तुरत प्रकट हो जातेभ ये तब सुधन्वा जउनाथ महाराज को देखक

१८

मं०

६८

68

र आनंदमे मगन भयाहुआ ततकाल रथसे उ
तर पड़ा और त्राहि त्राहि कहता हुआ धायक
र भगवान के चरन कमलों पर सीस धर कर
और फिर हाथ जोडकर असतुती करने लगा
कहता है कि जैहो तुमारी हे जगतके उतपन्न
करनेवाले और दीन जनोके डुख हरने वाले
भगवान और जैहो तुमारी हे भक्त जनोकी पै
ज राखने वाले हे गौ ब्रह्मणके पालक और ए

थवी देवताओंकी रक्षाकरने वाले हे दीनबंधु त
म कैसेहो कि अनंग रूपहो जो पापोंसे रहि
तहो और अदृहो तमारा देहभी नहींहै अवि
नाशीहो तमारा नाम भी नहींहै और सत्यहो
चैतन्यहो आनंदरूपहो और सर्वभवना केसह
जेहीं प्रकाश करने वालेहो फिर कैसेहो
कि दीनानाथहो दीन बंधुहो दीनोके हितका
रीहो जैहो तमारी हे भक्त जनोके कलप ह

१९ भ० ६९

न हे संत सखदायक जैसे तमारीहे अर्जुनके सा
र्थी भगवान हे दास जनोकी आसापूर्ण करने
वाले कृपानिधान आजमै आपके चरनोंका से
वक संसारमे धन्य धन्यहूं और मेरे देव पित
रोंका भी उधार होगयाहै जो तमारा इह दरसन
भगवान मैने नेत्र भर भर कर पायाहै इसप्रकार कृस्नभ
गवान सधन्वाको अनसे प्रीती और भक्तीवाला आप
ना हृदसेवक जानकर ततकालही अर्जुनके ।

६९

69

रथ पर जाय चढे और आनंद पूर्वक तिसके घो
ड्योंकी वागें हाथमे पकड कर सार्थी वनक
र स्थित हो जाते भये और ईहां प्रणाम करके
हंस ध्वजका पुत्र सुधन्वा जोहै सोभी परम उ
त्साहसे धाय कर अपने रथपर जाय चढा औ
र जड़ वीरको सुमरता हुआ रणमे धीरज धा
रकर अनेक प्रकारके वाण मार कर वडा घो
र जुद्ध करने लगा। २१॥ चौपाई। भांमसु्याम।

१९
भ:
८.

70

भया वन भारी। हरन धन्य नभ गिरा उचारी।
तव बोले पारथ प्रण रोपी। जो मै तीन वान
हनि कोपी। काटहुं सीस तोर अब नाहीं। वहु
रि नयरहुं धनुष कर माहीं। पितर हनन अग
लागहिं मोही। जो नहिं हनहुं आज रण तोही।
तव अस उत्र रथनै दीना। जो न कटहु तव सा
यक तीना। तो हरि विमुख पाप जग जोई। मो
हि लागहिं विनु संसय सोई। सोहि आजस जग

८.

सोई। सोहि लागहिं किन संसय सोई। सोहि सुजस
सदा जग जगमेरो। जोन करहुं वारन सर तेरो।
तव अरजुन सायक इकमारो। हनन तास सर
तुरत निवारो। तज्यो धनंजय हु सर वाना। सो
हुं कह्यो नृप सवन सुजाना। विक्रम देखि वी
र वर केरा। करन सुजस सुर गगन घनेरा।
जव पारथ तीसर्भलीन्यो। तव जउ नाथ भन
न भ्रम कीन्यो। सुधादास दोऊ प्रीय मेरे। क

१९
भ॰

छु नकहूं नव अन चिन द्वेरे। दोहा। छाड्यो छि
म निराव नव इंद्र सवन रण धीर। सुभट सय
नै सोऊ सर हृदय सुमति जडवीर। काटि दि
यो निज हनन सर पै आयो नहि जाय। लग्यो
सीस मेदनि गिरो परो अचेत सरछाय। २२।
टीका। नव लडने लडने ऐसे लडे कि देवता ग
ण प्रसन्न होकर आकाशमै स्थित भये हुये ध
न्य धन्य वाणीको उच्चारण करतेहैं और फूल

वर्णन है फिर अर्जुन जो है सो प्रण प्रतिज्ञा करके
कहने लगा कि जो मैं अब तीन बाण मारकरके ते
रा ईहां रणमैं सीस ना काट डालूं तो फिर आगे क
भी हाथमैं धनुषही नहीं पकडूंगा और भी प्रण
कि जो मैं आज तेरे को ना मारूं तो मेरे को पितर
घातके पापकी पीडा जो है सो आमहों तब सुधन्वा
ने उत्तर दिया कि जो मैं भी तेरे सो तीनों बाण आव
ते खंड खंड ना कर देऊं तो भगवान से विमुख हो

१८ भे. ८२

नेका पाप जो जगतमें है मैं तिसकाही भागी होऊं अ
र्थात मेरेको सोई पाप लगे जो तेरे बाणोंको न नि
वारण करूं तो जगतमें जुग जुग मेरा अपजसही
होवे तब अर्जुनने धनुषमें जोड़कर एक बाण मारा
तिसने आवतेही तुरत निवारण करदिया फिर
अर्जुनने दूसरा और बाण छोड़ा सुधन्वाने अपना
बाण मार करके सोभी काट डाला इस प्रकार ति
न वीरोंका बड़ा भयंकर पराक्रम देख कर देवता ग

ण आकाशमै फिर वराई करने लगे तो जब अ
र्जुनने तीसरा बाण धनुषमै जोडा तब जडना
थ महाराज कहते हैं कि तुम सषा और दास
मेरे दोनोही प्यारेहो मै तुमारा अनुचित देख
कर कुछ नही कहि सकताहूं कि योग्य कौनहै
और अयोग्य कौनहै तब इंद्रके पुत्र अर्जुनने
सो तीसरा बाणकि जो धनुष मै जोडा हुआ
था ततकाल छोड दिया उन्होंहंस धजके पुत्र

१९ म ७२

सयन्ताने जड्नाथ को सुमर कर अपने बाण
का प्रहार करके तिसको भी काट दिया परंतु
तिसमैसे आधा जाय कर तिसके सीस को जो
लगा तो तिसतैं बीर मर्छाय कर और अचेत
होकर पृथवी पर गिर पड़ता भया। २२। चौपाई
नास तेज देखन समुदाई। गयो तुरत प्रभु वद
न समाई। उठि कबंध नाकर रण माही। पांड
व भटिन हनत भयो नाहीं। हन कर मरण

७३

७२

ह्रं सधुज देखी । बिलपत करत रुदन अवसेखी ।
हाहा खवन प्राण प्रीय मेरो । सहहुं बिजोग उस
ह कसनेरो । परम पुरिंदर धीर उदारा । आज तात
तव समर जुकारा । वडे महांन बीर बलवंता ।
कीने तुमहुं समर रुन हंता । मोरे जीय अचर
ज इहभारी । पारथ मरनहिं सको सहारी । ता
त देखि अस मरण तुम्हारा । भयो रुन दल
आज हमारा । कहि भरोस धीरज अब काहा ।

१९
भं.
७४

तव अव लेव वडो सुतराहा। सुनत विलाप ज
नक पछताना। सुरथ नाम भूपति सुत आना
जग कर जोरि भनत अस लागा। तात हमार
वीर वडभागा। जहि हरि दास समर सुरलागे
हरि सन माव निज प्राण तयागे। सो किमि ज
नक जोग जग सोहू। विजय कीन जहि लोक
अलोहू। इहि हित जग जनमति सुत माता। हो
हिं सूर सभ सुजस प्रदाता। दोहा। कीजे जनि

कहुं सोच पितृ अवै जियत नवदास। देखिये नि
ज नैनन नवल मेरो समर विलास॥ २२॥ टीका।
जब सुधन्वा रणमैं जूझा तब सबके देखते तिस
का तेज जोहै सो निकल कर भगवानके मुख
मै जाय समावता भया और तिसका कुवंध उ
ठकर पांडवों की सेना को रणमैं जहां तहां मा
रनेलगा अंत को मारता मारता सो भी गिर
पडा तब पुत्रका मरना देख कर हंसधज रा

१८
भं.
७५

75

जाजोहै सो बडा विलाप कर करके रुदन करने
लगा कहताहै कि हा पुत्र हाप्राण प्यारे मै अ
व तेरा कठिन विजोग कि जो नहीं सहा जाता
है कैसे सहूंगा हो पुत्र तूं महांपरम धारी और
धीर्जका धाम परम उदार और सूरवीरों मै प्र
थम गिनती वाला कि जिसने रणमै महा प्राक्र
मी वीरों को अपनी भुजों के वलसे मारा हूआ
था सो पुत्र तूं आज रणमै जूझाहै आप पडाहै

मेरे हृदय मैं वडा आश्चर्य आवताहै कि पार्थ जो अर्जनहै ते जिसके वाण नहीं सहार सका हे पुत्र आज तेरा मरना देखकर हमारा संपूर्ण द ल सूनाहो गयाहै अब सेनाको किसका धीर्ज और किसका भरोसारहा पुत्र हमारा हीं वडा आधारथा ऐसे पिताका विलाप और पछताना सुनकर सुरथ नाम करके राजाका दूसरा पु त्रजोथा सोहाथ जोड कर कहने लगा कि हेपि

१९
भं.
७९

76

ता हमारा भ्राता अंतसे बडभागीजानो कि जो र
णमै भगवान के दास के बाणसे जूझ करके भ
गवानके सनमुखही प्राणों को त्याग देता भया
हे पिता सो भ्राता क्या कुछ शोक करने के यो
ग्यहै कि जिसने रणमै सनमुख होकर लोक पर
लोक दोनो जीत लिये हैं माताजोहै सो जगतमै
इसी निमित्त पुत्र को जनमतीहै कि सूर बीर सुं
दर जस और बडाई के देने वालाहोवे हेनाथ अ

प हृदयमैं कछु चिंता और सोच मन करो कों
कि इह तुमारा दास अबी जीवताहै अब औरठो
रैसे हुती और ध्यान को उठाय कर रणमैं मेरेनि
त नवीन पाक्रम और सामर्थ को देखो कि भग
वान के दासोंको कैसे प्रसन्न करताहूं। २९। चौ
पाई। पारथ सुत प्रद्युमन बल धामै। कहिहौं स
मर तोष सुन स्वामै। अस कहि शस्त्र धारि र
ण धीरा। दैत्येंदभि रथ चढ़ो प्रवीरा। चल्यो स

१६ भं. ८८

रथ रण अभय सिधारी। जै जै जै जउ वीर उचारी। आवत देखि नाम भगवाना। पारथ सन अस वचन वखाना। महा रथी अतिरथी जग गावा। स्वर्थे नाम रणभेदनि धावा। तव जोई हन्यो समर इहि वीरा। आवा मानि नाम उर पीरा। अव न उचित इहि सन मारव तोरा। स्वर थ अनन्य दास हुफ मोरा। याको विजय कठिन संसारा। महा वीर ध्रुव धीर उदारा। दो

हो। अस कहि वहुरि प्रद्युमन कहं वोलि कह्यो
जदुवीर। जाहु सरथमन लरहु ह्रुत धारि समर
उरधीर। ९४। टीका। फिर पिताको सार्थ कहता
है कि हे नाथ अर्जुनके सहित महांवली प्रद्युम
न और तिसके पिता घनस्याम भगवान को आ
ज रणमै भली प्रकार वोध करूंगा अर्थात प्रस
न्न करूंगा ऐसे कहिकर और शस्त्र धारकर त
तकाल रथपर सवार हो जाता भया फिर जे जदु

भं॰ १८

वीर को उच्चार कर दुंदभी बजाता हूआ सनमाख र
णको चल पडा तब जडनाथ महाराज तिसको
आवते को देखकर पारथ सों कहने लगे किहे
अर्जुन इह सुरथ नामा राजाका पुत्र जोहै सो म
हारथी और अति रथी सूरवीर संसारमें विदत
है तुमने इसका भ्राता जो रणमे हत कियाहै सो
कलेश हृदय मे मानकर अब परम कोपसे अ
भय होकर रण भूमीको चला आवताहै ताते

तुमको अव इसके सनमुख होना योगपनहीं है
क्यों कि इह सरथ मेरा वडा हठसेवकहै तेरेतें
इह जीतना वडा कठिन है अतसे प्राक्रम कीति
थी और रणमें अचल सूरवीर है ऐसे सुनाय
करके फिर भगवान प्रद्युमन को कहनेलगे
किहे पुत्र तुम जावो और सरथके साथ रण
मै धीरज धार कर जुद्ध करो।२४। चौपाई। वय
ड़ु कि देह़ पराजय तासा। तव प्रद्युमन अस

१८ भं० ७५

79

वचन प्रकासा। नाथ समरथ सेवक हम तेरो। ता मन विजय अगाम भव मेरो। पैकपाल तव सा सन पाई। छवि धरम वस करहुं लराई। अस क हि सनमुख समरथ प्रवीरा। चल्यो लेन भट निक रमधीरा। नहि आवत प्रद्युमन कहं दावी। नयो चरन सिर नम वेसाखी। भन्यो वहुरि सन नाथकि शोरा। रणवांकरो वीर सिर मोरा। मोहि जीतन समरथ रणमाहीं। जीतत रह्यो सरा सर काहीं।

तीन घाल नव सर करलागे। तोमै प्राण समर महि त्यागे। तोमै सत्य भनहुं प्रभु तोही। होहिं नकलुष अप जस जग माही। पै इक कृपा सिंधु पछतावा। रहि है हृदय मोर इह छावा। पार थ सषा स्याम जन केरा। सो नसमर इन नैनन हेरा। देहु बनाय भटन कुलकेतू। जनक तोर जहां सषा समेतू। दोहा। नव हरि हुत न कहू ललित छवि कपि धज फहरत जाहिं। सषास

१९ हित जदु वंस मणि रथ विराजत नाहिं ।२५ ॥
भं०
८०
टीका। भगवान कहते हैं कि हे प्रद्युमन तुम
जिसको मारदेवो कि अथवा रणमे कायर कर
के जीतलेवो तव प्रद्युमन कहने लगा किहे दी
नानाथ रथ जोहै सो आपका दृढ सेवकहै
जिसको रणमै जीतना मेरेको वडा कठिन प्रती
त होताहै परंतु नाथ तुमारी आज्ञासे क्षत्री धर्म
के वश होकर अवश्य लडूंगा ऐसे कहि कर अ
८०

पने सब सूर वीर साथ लेकर रणको सनमुख
चल पड़ा तब सूरथने काम कुमार को आव
ते देख कर हरसेही नम्र होकर चरनोको प्र
णाम किया और फिर कहने लगा कि हे रण
मे बांकुरे और सब वीरों मे प्रधान मेरे स्वामी
के पुत्र प्रद्युमन तुम कैसे हो कि रणमे मेरे जी
तने को सामर्थ्य हो क्यों कि तुम महा प्रबल सु
र और असुरों को [illegible]सदैवहीं जीतते रहे हो ।

हे दीन दयाल जोभै तुमारे बाणोके लगनेसे र
ण भूमीमे प्राणों को त्यागूंगा तो मेरेको कुछ
अप जश नहीं होगा सरवदा जशाहीं प्रापतन
होगा परंत हे कृपा निधान एक इछ्हा पछ्हता
वा मेरे हृदयमे रहि जावेगा कि घन स्याम भ
गवानका सषा अर्जन जोहै सो मैने रणमे इन
नेत्रों करके नहीं देखाहै हे बीर कुलमै उजागा
र प्रद्युमन अब कृपा करके मेरेको बतायदे।

१८
भ०
८।
8

कि तुमारे पिताके सहित मो सषा कहां विराज
मानहैं तब कुस्म कुमार प्रद्युमन कहने लगे
किवेदेष जहां वडी सुंदर छवीली हनुमान
के चिह्न वाली धुजा फरक रहीहै हेसरथ त
हांही जडवंसके भूषण भगवान निस अपने
सषाके सहित विराज मानहैं। २५। चोपाई। जा
य करहु दरसन जडु राई। लेहु ललित फल
वांछित पाई। सरथ सुनत श्रम जान उडायो।

१६ भ॰ ८२

दीन दयाल कर मन भाव आयो। कियो प्रणा
म नम्र सिरनाई। बहुरि वदन अस गिरा उचा
ई। आज धन्य जन जनम सुहावा। जो भरि ह
गन दरस प्रभ पावा। मुनि जोगिन दुर्लभ ज
ग जोई। मोरे आज सुलभ भयो सोई। अब फु
र भयो मनोरथ मेरो। करिहुं नाथ सुजन रण
नेरो। अस कहि विसक वान वहु छाडे। चले
आल मन फंकारत गाढे। तव भाख्यो प्रभ पा

82

८२

रथकाहीं। होहै सजग वीर रणमाहीं। सनमुख

सावधान सब होई। कबहु न उठ जग करहि न कोई।

इह रण धीर धर्म धुरसूरा। जिहिसर हनत गगन प

पपूरा। तब बोल्यो अर्जुन कर जोरे। प्रभु प्रसाद क

हु अगमन मोरे। अस कहि जुगल वीर बलधा

मा। लागे करन क्रूर संग्रामा। हारजीत कछु परत न

चीनो। महां जुद्ध जुगलन रण कीनो। दोहा। सरथग

हित सर कर्न निज करि प्रण वचन बखान। मोर बा

न कर सनहु अब तव प्रभु सबै प्रमाण। जो कहो सब
हन तोहि जन हस्तिन पुरपहुं चाऊं। कै पताल देस
न दिसन कहो कि गगन उड़ाऊं। ४६। टीका। फिर प्र
द्युमन कहते हैं कि हे सरथ तहां जावो और भगवा
नका दर्शन पायकर अपने मन वांछित फलको
प्राप्त करो तब सारथने सुनतेही रथको उड़ाया और
भगवानके सनमुख चला आया तहां दीनानाथ
के चरनो को प्रणाम करकै बड़ीनम्र बानीसे कह

नेलगा कि आज मै धन्यहूं और धन्य मेरा जनमहै
किजो भगवान का दरसन मुनी और जोगी जनों
को दुर्लभ होताहै सोमैने आज सहजे हीं नेत्र भर्
भर कर पायाहै अब मेरा मनोरथ सिद्ध भयाहै
जोरणमै आज देवतनमारा भली प्रकार पूजन क
रूंगा ऐसे कहिकर विसके भरे हुये अनेक वा
ण छोडने लगा सो मानो साक्षात सरपहीं फुं
कारे मारते चले आवते हैं तव भगवान अरजु

नको कहने लगे कि हे वीर अवतं रणमैं भाव था
न हो और हृदयमैं धीर्ज धार कर और मनमाव
अचल होकर ऐसा युद्ध करकि दूसरा कोई नाक
रे हेमाव देखो इह कैसा धर्मधारी और रणमैं
धीरजका धाम मूरवीर है कि जिसने अपने बाण
मार कर आकाश मार्गको पूर्ण कर दिया है तब
अर्जुन हाथ जोड़ कर कहने लगा कि हे भगव
न आपकी कृपासे मेरेको कुछ भी कठिन नहीं

है ऐसे कहिकर दोनो वीर वलकी निधीजोहैं सो
वडा घोरयुद्ध करते भये और परस्पर ऐसे लडे कि हा
र जीत का कुछ ज्ञान नहीं रहा फिर रावणजोहै सो
हाथमे वाण पकरकर और प्रणकरके कहनेलगा
कि हे जडनायके सखेतूं अब मेरे वाणका प्रमाण
सुण कि जोतूं कहें तो तेरेको वाण मारकर हस्तना
पुर अधीन दिलीमे पहुंचायदेऊं कीपातालमै कि
सी देसमे की दिसाओंमे कि अथवा कहेतो आका

॥६
भ.
८५

शाकोउगय देऊं ।४६। चौपाई। नव अर्ज्जुन सन कहु जदुराई। स्वरथ सत्व प्रण सत्वान भाई। जो अव ति ज कल्यान चतेहो। तो इहि छद्म विरथ करिदेहो। नव पार्थ पद सुमरि मुरारी। कियोविरथ दुतवान प्रहारी। स्वरथ नवत हसवरथलीना। सोऊ हनन पार्थ रणकीना। तास बहुरि नीसर रथधारा। दलन कीन सोऊ पांडु कु मारा। अस प्रकार सत सिंधन नासा। किये समर पा र्थ भट नासा। नव कोपित भटि स्वरथ सभजन ॥

करो धनुष गांडीव अरजुन। जव जव हनत वाण
मतिधीरा। भनत जैति जैजै जदुवीरा। तव पारथ
हसर धनु धारी। सुमरि चरन जल जात मुरारी
माहोवान तान लग करना। सरथ वाहु डारो
कटि धरना। तवहु चलो सनमुख रणधाई। भु
जव हीन सुमरत जदुराई। तीन वान पुनि अर्जु
न मारे। भुज जुग चरन तास कटि डारे। दोहा।
यदपि सरथ भयो रुंड वत तदपि न रुको प्र

१८
भ.
८६
86

वीर। कह्यो मंड तहि हनन मर तव पारथ रणाधी
र।२०। टीका। तब सारथने इसप्रकार प्रण करके
कहा तब भगवान अर्जुनसें कहने लगे कि भाई
सारथका प्रण सत्यहै झूठा नहीं जो अब तूं अपनी
कल्यान चहताहैं तो इसको पहिलेंही विरथ कर
दे तब अर्जुनने भगवानके चरनो को वंदना कर
के तरतहीं बाण मार कर तिसको विरथ कर दि
या तब सारथने ततकाल ही दूसरा रथ ले

लिया और पार्थने सोभी भंगन करदिया फिर ति
सने तीसरा रथ धारन किया अर्जुनने वाणकेप्रहा
र से तिसकोभी चूर चूर कर डाला इस प्रकार पा
रथने रणभूमीमे तिसके केई रथ खंड खंड जोक
र दिये तो सूरथने भी कोपसे लाल होकर ऐसा
वाण मारा। कि अरजुन के गांडीव धनुषको टू
क टूक कर डाला और वीरों में प्रधान बुद्धी और
धीरजका धाम जब जब वाण मारताहै तब त



१९ भ॰ ८८

87

वजै जड़वीर की उचारताहै फिर अर्जुनने हमरा।
धनुष धार कर मुरारी भगवान के चरन कमलों
का ध्यान करकै धनुषमै जोड़तेही कान तक खैंच
कर बाण जो मारा तो तुरतनहीं सरथ की भुजा
काट कर पृथवी पर गिराय देई तोभी सो वीर
भुजासेहीन भयाहुआ जड़वीर जड़वीर कहता
रणमै सनमुख चला आवताहै तिसते उपरांत
अरजुनने फिर तीनवान और मार कर तिसकी

८८

दूसरी भुजा और दोनो चरन भी काट डाले तो
भी महा सरवीर सुरथ दंडवत भया हुआ सन
मुख ही आवता है तब अर्जुनने कोपसे एक
और बाण मार कर तिसका मुंड भी काटकर पृ
थवी पर गिराय दिया। २६। चौपाई। लखेपा मुंड
मोह अरजुन ज्ञानी। तिसो सुरथि मर्छित दि
पुछानी। सुरथ सीस हरि हृदय उमंगा। पर
सो निज पावन पद संगा। मनि जीय तरन।

१९
भ०
८८

सो चरन प्रभाऊ। पार्षद रूप लयो सुभताहू। उ
नि जगाय पारथ प्रभ लीनो। वहुरि स्मरण सऊ
न पति कीनो। जब आयो खगनाथ प्रवीना। सु
रथ सीस ताके प्रभ दीना। तास प्रयाग राज डु
नजाई। डारो सीस भक्त जउराई। सो थासो धं
कर निज माला। जानि प्रवीर भक्त जउ पाला।
दोहा। सरथ सुधन्वा सरस सुभ सूर वीर द्वै
लोय। जन अनन्य जउ वेस मणी होहिं नहुसर

४४

कोय। करि मन मान वचन स्यामतिन रणरुचि
रुचिर हुलास। हरिदासन हरि कृपाते लीन्हो
हरिपुर वास।२८। टीका। तब सो मरथका में
उड़ाहै सो पृथवीमे ततकाल उछल कर अर्जु
नकी छातीमे ऐसे वेगसे जायकर लगा कि
सो वीर घूमताहुआ मुर्छाय कर पृथवी परगि
रपड़ा फिर दीनबंधु भगवानने तिस मरथके
सीसको अपने चरन कमलोंमे परसन किया

१८
भ॰
८६

89

तवगौतम की स्त्रीको तारना श्रोर पापी जनोको
उद्धारना तिनचरनोका प्रभाव जोथा तिसतें खेद
र पाषंद रूपको धारन करलेना भया तिसतें उ
परांत भगवान कृपानिधानने अर्जुनको भी मू
र्छासे जगायकर सावधान करलिया श्रोर फिर
खगराजा जो गरुडजीहैं दीनवंधु तिनको याद
करते भये सो महाप्रवीन श्रोर सत्तम गतीवा
ले जब श्रायगये तब कृपासिंधूने समझाय क

८६

र मरथका सीसजोथा सो गरुडको देदिया तिस
ने जातेहीं सो जडनाथके भक्तका सीस प्रयाग ।
राजमै डालदिया तव शंकर भगवानने क्तलभ
क्तका सीस जानकर वडे सनमान पूर्वक अपनी
रुंडमालामै धारन करलिया तांते संसारमै म
रथ और सधन्वाके समान सूरवीरों मै प्रधान
जडनाथ भगवानके चरन कमलोंके भरोसे वा
ला भक्त सेवक और दूसरा कोई नहींहोगा कि

९ भं॰ ९॰

90

देखा जिन्होंने बड़े उत्साह और हुलाससे धनसा

म भगवान के मनमाख रणविलास करके भग

वानकी कृपातें भगवान के निरमलधाम को प्रा

पत कर लियाहै। २८। चौपाई। नव हुत सुतन हं

स धुजदेखी। भयो शोक रत उखित बसेखी। पेख्र

व लेव जानि जिय पहु। चल्यो सरन प्रभ दीन स

नेहू। उर अभिलाख लाख श्रम ठाना। करहुं जा

य दरसन भगवाना। बजत निसान भूप जब।

९॰

आयो। कृपानकेत मरम नव पायो। जानि दास नि
ज भक्त सहाये। भजनप्रसादि आगल हुनथाये। न
पलषि प्रभहिं कृपा जत आयो। भयो हरषवन्त शो
क विहायो। किये प्रणाम दंडवत धरनी। जैजैजै
जडपति मुखवरनी। प्रेम विवस नव दीन दया
ला। लिये लगाय हिये महि पाला। दोहा। बहुवि
भन्यो प्रभ वदन अस सुनहु धर्मधजराय। धन्य
धन्य नव धन्य जग जत समाज समुदाय। २९ ॥

१८ भ॰ ५१

टीका। तब हंसध्वज राजा जो है सो अपने पुत्रोंका

मरना देख कर शोक करके बड़ा दुखी होजाता

भया तिसको जब भगवान कृपानिधान के बिना

और कोई आश्रय नहीं देख पड़ा तब दीनबंधुके

दरसन की अभिलाषा वाला होकर तिनके च

रनो की शरण लेने को चला आवता भया इस प्र

कार जब राजाको आवते देखा तब दीन हितका

री भगवान तिसको अपना दृढ़ सेवक जानकर

५१

और बडे प्रेमसे दोनो भुजा पसार कर आगेही मि
लनेको बडी उतायलसे धाय चले तब राजा दीना
नाथको कृपाके सहित आवते देखकर हरष मै
मगन भयाहूआ सब शोकको त्यागकर जै जै
जै जडवीर कहता हूआ दंडवत चरनो परगिर
पडा तब दीन याल भगवान प्रेमके वश भये
हूये तिसको उठाय कर तुरत हृदयमे लगाय
लेते भये फिर कृपादृष्टीसे प्रसन्न होकर कहने

लगे किसे धर्म मै उजागर भूप मै तेरी क्या वडाई
कहूं आज जगतमै तेरा जीना और जनम सफल
है और तूं धन्यहैं तेरा संपूर्ण समाज और परि
वार भी धन्यहै।२९॥ चौपाई। तव सुत सहश
त्रिभुवन माहीं। मोर अनन्य दास कछु नाहीं॥
करहु न पुत्र शोक गुणग्रामा। निवसत सोवि
कुंठ मम धामा। तव कर जोरि भन्यो नरराई॥
सुत पित मात भ्रात समुदाई। दीना नाथ तुम

हूं जगमेरे। सपनेहूं शोक न आवत नेरे। अब
की जिये पावन जन गेहू। धारि चरन निज दी
न सनेहू। प्रेमाकुल अस विनय उचारी। गिरो
धरनि नृप सुरति बिसारी। तव कृपाल कल
करन उठाई। लियेभूप निजहिये जुडाई। अन
पायनि निजभक्ति रसाला। नृपहिं दीनप्रभु
दीन दयाला। पुनि पारथ प्रद्युमन सन लाई
कृपासिंधु नृप भेट कराई। औरहूं मिले सकल

१९
भ०
९३

93

हरिदासा। हृदय हंसध्वज मोद प्रकासा। सवकर
वार वार सिर नाई। मन्दिर पुर कहं चल्यो लिवाई
भवन ल्याय जन भक्ति अभेवा। कीन्यो विधि जन
पूजन देवा। हरि सखा सन्त दास न होहीं। तोष
न किये भूप सव काहीं। पुनि केविन आभरन
सुहाये। मणि गण दिव्य वसन मनभाये। दोहा
कीने अरपण कृस्न कहं न्टप मघ वाजि समेत।
भक्ति प्रीति लखि भक्त अस हरषे कृपा निकेत।२४

९३

टीका। फिर भगवान कहतेहैं कि हे राजन तेरे पु
त्रौं के समान तीन लोकमै मेरा हढ सेवक और
कोई नहीं है अव तिनका शोक मतकरो सोतो
मेरे वैकुंठ धाम मै निवास करतेहैं तव राजा हा
थ जोड कर विनती करने लगा कि हे दीनाना
थ मेरे तो मातापिता पुत्र भ्राता एक तुमहीहो।
तातेमै शोक का सपने मै भी नहीं देख सकताहूं
अव हे दीनवंधु कृपा करकै चलिये और मेरे दी

नके चरको अपने चरन कमलों से पवित्र करिये
इस प्रकार विनती करता करता प्रेमसे व्याकुल
भया हूआ राजा अचेत होकर पृथवीपर गिर पड़ा
तब कृपासिंधु भगवानने तुरतहीं उठाय कर अ
पने हृदयसे लगाय लिया फिर अतसे प्रसन्न हो
कर अपनी अन पायनी भक्ती कि जो अनेक ज
तन और हठ किये से भी प्रापत नहीं होती सो
कृपा निधान तिस राजाको देतभये फिर आनं

द पूर्वक पारथ और प्रद्युमन से राजा हंसध्वजकी
भेंट कराई अर्थात परस्पर मिलाप करवाया ति
सके उपरांत और भगवानके दास भी सब आय
कर मिले तब राजा अत्यंत हरष और आनंद ।
को प्रापत होता भया फिर सबको बार बार सीस
नाय कर बडे आदर सतकार से अपने नगर को
लेचला तहां भवनों मै ल्यायकर अनसे प्रीती
और भक्तीसे कृपासिंधु भगवानका और भग ।

१९ भं. ८८

वान के पुत्र सखा और दासों का विधी अनुसार प
वित्र पूजन करके सब को भली प्रकार प्रसन्न कि
या और फिर मणियों करके जटित भये हूये सु
वर्ण के नाना भूषण और बडे सुंदर दिव्य वस्त्र ति
स यज्ञवाले घोडे के सहित मंगवाय कर राजा ने
प्रीती पूर्वक कृष्ण भगवान को अरपण कर दिये
तब तिस भक्त की ऐसी भक्ती और प्रीती देखकर
र दीनबंधु अति से प्रसन्न हो जाते भये ।३०। चौपाई

परम मोद वस दीन सनेहू। न्रप कहं दीन दान व
र एहू। सुर दुरलभ जग भोगन भोगी। लेहु अंत
गति दुर्लभ जोगी। मम पुर वसन दास मम जा
हो। करहु निवास भूप निजताहो। तव कर जो
रि चरन सिरनाई। विनय भूप अस वदन भलाई
मोहि तासो तव दीन सनेहू। पै अभिलाष नाथ
जीय एहू। जोलोजी वहूं जगत उमंगा। तोलो
रहहूं जनन तव संगा। एवमस्तु भगवान उ

१९
भ०
६६

चारे। भक्त प्राण प्रीय तुमहूं हमारे। पांच दिवस द
यानिधी ताहां। किये निवास नगर नृप माहां। पु
र जन नृपति सहित परिवारा। किये कृतारथ कृ
पा अगारा। सबकहूं करि सनाथ भगवाना। ब
हुरि भवन निज कीन पयाना। अस रहू चरित
जथा मति भावा। मैनिज वदन संत जन गावा।
दोहा। सरथ सधन्वा हंसधज भक्त प्रधान सहा
य। जहि सतसाखा समेत रण नंद किशोर रिका

96

६६

या। छवि परम सुरो कियो लियो सजन संसार। दि

यो वास प्रभ भक्ति वृस निज वैकुंठ अगार।।२।। टी

का। तव दीन सनेही भगवान प्रसन्न हो कर ति

सको इहू वर देते भये किहेराजन अब तुम जग

त मे देवताउंको दुलभ जो भोगहैं सो भोगकर अं

तको जोगी जनोकी सुंदर गती कि जो वडे कठिन

हठ और साधन से पावतेहैं प्रापत करो और मे

रे पुरमै जहां मेरे दास वास करतेहैं तहांही निवा

स करो तब हाथ जोड़कर और चरनो पर सिर ना
यकर राजा प्रार्थना करने लगा कि हे दीन हितका
री भगवान तुमने मेरेको तार दिया है परंतु भक्त
पाल अब यही विनती करता हूं कि जब लग इस
संसारमै जीऊं तबलग तुमारे श्री चरणों के साथ
मिला रहूं तब भगवान कृपा निधान कहनेलगे
किहे भक्त ऐसेही होगा तुम मेरे दृढ सेवक औ
र प्राणों से भी प्यारेहो ऐसे कहिकर दीन बंधु।

ने तहां राजाके नगर मै बड़े आनंदसे पांच दिन
निवास किया और अपनी कृपासे परिवारके
सहित राजा और सब पुर वासियों को जगतमे
कृतार्थ करदिया अर्थात भगवान की कृपासे
सब मोक्ष को प्राप्त होगये इस प्रकार सब
को सफल करके फिर भगवान कृपानिधान
अपने भवनों को चले आवते भये नाभादास
कहतेहैं कि हे गुरु महाराज इह गाथा जोहै।

१९
भ०
९८

सो मैने बुद्धीके अनुसार जैसी होसकी तैसी गायन
कर दईहै इह सत्यधन्वा और हंसध्वज भगवानके
दृढ सेवक और भक्तों मे प्रधान कि जिन्होंने सखा
और पुत्रोंके सहित नंद कि शोकको रणमै दिखाय
कर और अपना छत्री धर्म पूरा करके बडे सज्जनके
सहित भगवानका सुंदर वैकुंठ धाम जोहै सो प्राप
त करलिया॥३१॥ इतिश्री भक्तविनोदे भगवद्भक्तिमहा
त्मेँभाषाटीकायां सत्यधन्वा चरित्रवर्णनंनाम सर्गः

९८

मिहींसिंहकृत